

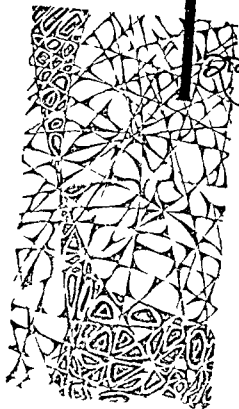
इक्कीस  
बहुरगी  
एकाकी



ब्रह्मद्वितीय भवन प्रा. लि.  
इलाहाबाद

# मयूर पंख

श्रीमकुमारवर्मा





प्रथम सस्करण	१९६४
प्रकाशक	साहित्य भवन प्रा० लिमिटेड इलाहाबाद-३
मुद्रक	पियरलेस प्रिंटम इलाहाबाद-३
श्रावरण	शि० गो० पाण्डेय
मूल्य	ग्यारह रुपये

लक्ष्मी  
और  
राजलक्ष्मी  
की



# सूची

## भूमिका

१

### पौराणिक

१ गल शिखर १९

### धैज्ञानिक

२ प्रगति के चरण ५३

३ चन्द्रलोक ६६

### ऐतिहासिक

४ धरती का स्वर्ग ६५

५ समय चक्र १३१

६ पानीपत की हार १६१

७ बादशाह अकबर का दीने इलाही १८५

८ वापू १९५

९ धीर जवाहर २०६

### सामाजिक

१० जीवन का प्रश्न २२३

११ शहनाई की शत २४७

१२ शक्ति-सजीवनी २७६

१३ चक्कर का चक्कर ३२१

१४ घर का भवान ३८१

## साहित्यिक

१५	वर्षा विहार	३६१
१६	मन मस्त हुआ तब क्या बोल ।	४०१
१७	सूर सगीत	४२६
१८	भारतेन्दु मडल	४४१
१९	प्रसाद परिचय	४६३
२०	छायावाद-युग	६७६
२१	कविता का युग पथ	५०१



भूमिका



पात्र  
भाषा  
कथानक  
शैली  
चरित्र  
लेखक

[ कमरे में हलका सा उजाला है। एक सोफे पर 'कथानक' उदास बठा है। भाया' एक फ़ाइन लकर कमरा साफ कर रही है। कुछ क्षण बाद साफ करते हुए भाया' कथानक की ओर देखती है। ]

भाया ( आत्महारी पोंछत हुए ) बाबा ! अब तनियत कसी ह ?  
कथानक विचारते हुए बाल का आकार क्व एक-सा रहा ह बटो  
भाया ! अब जीवन भा ( खासता है। ) जीवन भी बिखर  
रहा ह। ( खासता है। ) एक बार मछ न युधिष्ठिर से पूछा  
कि जावन का सबसे बडा आश्चय आश्चय क्या ह ?  
( खासता है। ) युधिष्ठिर न कहा कि छण भगुर जीवन  
में भी छण भगुर जीवन में भी मनुष्य चिरकाल तक जीन  
की बातें सोचता ह। आश्चय नहीं ह ?

भाया हाँ बाबा ! बहुत बडा आश्चय ह।  
कथानक उसी तरह मरा स्वम्य रहना भी आश्चय ह। मेरी तनियत  
का हाल पूछतो हा ? अब कितने दिन यह कथानक रहेगा !  
भाया एसी बातें न करा बाबा ! इतनी निराशा की बातें न करो।

कथानक निराशा ? ससार में आशा ही कहाँ ह जो उसकी बातें करू ?  
भाया एसी बातें न करा बाबा ! इतनी निराशा की बातें न करो।  
भाया बाबा मयिन बातें न करो। खासता है। भाया समीप आती है। )  
भाया बाबा मयिन बातें न करो। खासता है। भाया समीप आती है। )  
भाया बाबा मयिन बातें न करो। खासता है। भाया समीप आती है। )

कथानक कोई चीज तो बढ़ रही ह बटो ! खासता है। भाया समीप आती है। )  
भाया बाबा मयिन बातें न करो। खासता है। भाया समीप आती है। )  
भाया बाबा मयिन बातें न करो। खासता है। भाया समीप आती है। )

जाती । ( खासता है । ) जोधा को पुस्तक ( सहता )  
 सभी लेखक नहीं थाया बेटो ?

भापा ( द्वार की ओर देखकर ) सभी तब तो नहीं थाए ।

कथानक बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रहा हूँ । कोई बात रहा था कि भय  
 भाते हूँ तब भाते हूँ लेकिन भान का नाम नहीं । ननाभा  
 के भागमा के समान उनके भागमन के लिए भी ध्यानवार  
 लगवाऊँ प्रवेश कर बनवाऊँ ?

भापा नहीं बाबा ! व भात ही हाग ।

कथानक लेकिन भान का नाम नहीं । इधर खासी भी जोर से भान  
 लगी—( खासता है । ) लेखक तो नही थाया खासी भा गई ।

भापा बाबा ! आपन भोज की भोजपूर्ण दवा तो थी उससे कुछ  
 लाभ नहीं हुआ ? ( पत्ता झलती है । )

कथानक लाभ ही भी जाय तो उससे क्या होगा भापा बटो ? जब तक  
 वह लेखक डॉक्टर न देखे तब तक क्या भरोसा ! भागे  
 खासी फिर बढ़ सकती है । और भव तो उठा भा नहीं जाता ।  
 बग चरित्र कहीं गया से तारा देता—उठाना !

भापा उनकी कुछ न पूछा बाबा ! जान कहीं कहीं घूमते फिरते हूँ  
 सब जगह आपन को आपका उत्तराधिकारी घोषित करते हूँ  
 किन्तु आपकी जरा भी बिता नहीं करते । बस वैसे हूँ !

कथानक वृत्त बस कबीर का उपजा पुत्र कमाल ( खासता है । )  
 जमाना एसा ही भा गया बटो ! जीवन के मूल्यों में फल  
 भा गया ! आज बटा बाप बन गया हूँ और बाप बटा । अब  
 मुझ पूछनेवाला कौन है ? लेखक न भी मुझ छोड़ दिया  
 आपन भाग्य पर ! गता सूख रहा हूँ बटा ! पानी

भापा इस भवर रस से आपको लाभ होगा । लाजिए ।

( पात्र से 'रस भर कर देता है । ) लाजिए ।

कथानक (पीरर) खुश रहो बटा । कितना श्रद्धा होता अगर लख  
भी तुम्हारी तरफ

भापा नही बाबा ! लख महादय ता आपका काफी खाज-खबर  
रखत हं । जब आज का नवा का घरर कम होन लगता ह  
तो व माधुय और प्रसा को दया दत ह । उहान तो  
सबलन त्रय नाम क तीन बच्चा का भो बना रक्ता ह ।  
कथानक लकिन उसस पायदा बया ! पीररिन दवा देत ह लकिन  
नकिन मरा साँसा ता दूर नहीं होतो ।

भापा लख महादय बहत थ नि मनोविज्ञान का शोधधि स आपकी  
साँसी दूर हा जायगी । उहान न जान कहीं-कहीं से आपके  
लिए मनोविज्ञान की शोधधियाँ मगवाई हं ।

कथानक चाह जहाँ स मगयाण—न तो श्रात नही ।  
भापा क्या करें बचार । आजकन रिसच के विद्यार्थी उन्हें बहुत घरे

रहत हं । कत थ नि आपकी और जम ही श्रात को तयार  
होता हूँ कम ही उनके विद्यार्थी पा जात ह । यह भी कहते थ  
कि जम बराबर लत समय माह नमता क बघन मजबूत हो  
जाते ह कम ही आपके कमर में श्रात समय य रिसच के  
विद्यार्थी घर लने हं ।

कथानक ता फिर व लख क्या बनत हं प्राङ्गर बन रहें । दो-नो रूप  
बया घारण किण हुए ह ! बहुरपिए कनी क । बह दो कि  
जिगा भर मुक्त म न टियाए ।

भापा बाबा ! ब्राध न करा । बचार करें भा बया ! विज्ञा क सामन  
मा जान पर बचार मकोच नों ता सक्त

कथानक (बीव ही म ) और यहाँ मरा कमर टूट गाय ! निर्मोही  
निनम (साँसता है ।)

भापा समा करो उन्हें बाबा ! दाने रत पान स साँसा बृष रुक

गई थी वह फिर बढ़ गई । यद् शला बहिन चा गइ ।  
भाभा बहिन ।

( गती का प्रवेश )

शैली बाबा ! प्रणाम ! बन्नि ! तमस्कार ।

भाषा नमस्कार बहिन ! आभा बटो । लख मन्त्र्य अभी तक नहीं  
आए ।

शैली भा रह ह बाबा ! व आभा आ रह ह । ( बटती है । )

कथानक कह दो मर पास आन का आवश्यकता न्हा ह । म या हा  
लासता हुआ मर जाऊगा । कह दना कि अब मुक्त कथानक क  
त्रियोग म एक कविता लिग दें । कवि भा बनते ह तख  
महोत्र्य और कवि आज कौन न्हा ह ? छत्रोवद्ध  
कविता लिखन म कष्ट हा ता ता मनावत्त में ही सही !  
उसे भी कविता का नाम मिन गया ह ।

शैली बाबा ! क्रोध करन से आपका मन स्थिर नहीं ह ! लख  
महोत्र्य तो सदैव आपका चिन्तन करत रहत ह । जस ध्रुव  
सूचक यत्र की सुर् उत्तर का और हा सकत करती ह उसी  
भाति हर बात में व आपका सन्त करत ह । ( भाषा स )  
भाषा बहिन ! बाबा का कुछ मनोरजन करो । व बहुत  
प्रशांत ह ।

भाषा मुभमें तो कोई क्ना नहीं ह बन्नि ! तुमन ता संगीत का  
अच्छा अभ्यास किया ह । तुम्ही कोई सुन्त सा आनाप लो ।

शैली बाबा ! कवि न विजयपव नाटक म एक बहुत सुंदर गीत  
लिखा ह । सुनाऊ ? वही सुनाती ह —

( मधुर स्वर म आलाप लती हुई गाती है । )

श्लो पहिचान गया कलि को ।  
मन्-यवन धीर वहा उर में भर अनुराग ।  
कलित कुज में केतकी मौन रही ह जाग ॥  
खिलन का सम्बाध कौन

देता कुमुमावलि को ।

श्लो पहिचान गया कलि को । श्लो पहिचान  
भापा बाह ! बहुत ही मधुर गाया बहिन !  
कथानक हाँ ! मैं भी प्रसन्न हुआ । तुम्हें गान का प्रम्याम अच्छा ह शलो  
दवि । देखो तुम्हार सगीत स मरी खाँसी भी अच्छी हो चनी ।  
शैली बाबा ! आपकी खाँसी बिल्कुल अच्छी करन के लिए लखक  
महोय्य बड प्रयत्नशील ह । उहोन सक्कन त्रय की  
सहमति स मनोविज्ञान का औपधि देन का निरचय किया  
ह । उनका प्रयोग व पाँच प्रकार से करेंगे । आहा ! जैसे पच  
प्राण हा जग वर्पा-कान म सूर्योय्य हो । वाला की राशि  
जने नाना रगा की प्रशिनो बन जाय । कान वालों के  
मानम में द्यपनुप किसी नारी के हमत हुए मुख की भाँति  
तिरछा हो जाय ।

कथानक कविता कर दा तुमन तो मुख को भाँति तिरछा हो जाय  
घोर म भी तो तिरछा द्दा हो गया हूँ ।

शैली बाबा ! मर धान पर धारको विनो भी शुरू गया । लखक  
धर धारको उमी प्रकार सम्य कर ँगे जैसे धरिनी कुमारों  
न व्यवन श्रुति को स्वस्य घोर युवक बना लिया था ।

कथानक ता व्यवन श्रुति को भा कभी खाँसी घानो थो जो लखक  
मन्य धार टोक कर ँग ? ( रासिता है । )

शैली धवरय टोक कर दंग व धान ही वान ह । एक सत्रन से  
बातें कर रह थे । उहान धनक बार धारका नाम लकर कहा

या कि शोघ्न ही मुझ उनका पाम पहुँचना है । रिश्ताग माणिए  
धाया ! व आपका विनयुन टीक कर देंग ! घान ही हागे ।

कथानक अच्चा बात ह ता उनका स्वागत करन व निण मै भी तयार  
हा जाऊ । कुछ वरा विद्याग ठाक कर लूं ।

भापा म आपक वस्त्र न आऊ ।

कथानक नही भापा बटी । तुम्हें नी मिनेंग । मर वस्त्र मुझ ही  
मिनेंग उहे तुम क्या जाना । म ही जाऊगा अभी घाना हूं ।

( उठने का उपक्रम करता है । भापा सहारा बेजर  
उठानी है । द्वार तरु पहुँचा कर सीटती है । )

भापा बड निबल हो गए ह बाग ।

शैली तखक महोत्स्य के मनाविधान स एमे स्वस्य हो जावेंगे जसे  
प्रथम दष्टि में ही दुष्यन्त का शकुन्तला स अनुरक्ति हो गई  
थी ।

भापा अनुरक्ति हो हुई विरक्ति नी ?

शैली एसी विरक्ति जो आगे बनकर फिर अनुरक्ति में परिणत हो  
जाय अधिक अभिनन्तीय ह भापा ।

भापा होगी । बीती बाना की स्मृति बडा मोटव हुमा करती ह ।

शैली तुम ता जानता होगो वन्नि । अनुरक्ति कभी बीती बात  
नहो बनती । वह तो चिर-नवीन ह । क्या मनका और उवशी  
भी कभी बडा बनो ह ? व तो प्रीति की आराध्या और आरा  
धिका दोनो ही ह । इसमे तो तुम सटमत हागा ही ।

भापा मरा अनुभव उनना नहा ह बटिन जितना तुम्हारा ह और  
फिर तुम तो तखक महोत्स्य के साथ सदैव ही रन्ती हो ।

शैली और तुम ? तखक महोत्स्य तो तुम्हारी इतनी प्रशसा करत है  
कि कभी-कभी मुझ ईर्ष्या हान नगती ह । नगता ह जसे  
तुम्हार सामन मरी काई हस्ता ही नही । यदि आज के युग

मैं अत पुरों की परम्परा हाती ता तुम्हार चरखा पर न जान कितने हृदय समर्पित हात ।

( चरित्र का प्रवचन )

चरित्र ( आते ही ) हृदय समर्पण का बात बसी ? जहाँ म आया कि हृदय-समर्पण हुआ । बाह ! यह अच्छा सोभाग्य ह ? तकिन यह सोभाग्य ह या मयाग ?

शैली दाना ।

चरित्र भापा रानो ? तुम क्या समझता हा ?

भापा सोभाग्य का मयाग अथवा मयाग का सोभाग्य ।

चरित्र ठोक ह मुझमें इनना शक्ति ह कि मैं सोभाग्य का मयाग बना लेता ह और मयाग को सोभाग्य ! ( देखकर ) हाँ ! बाबा कहाँ है ?

भापा भीतर बस भूपा ठाक करन गए ह ।

चरित्र भयनी या किसी और की ?

शैली अर इन अरस्या में व किमकी बस भूपा ठाक करेग ।

भापा शत्रु बहिन ! बरग्य न करो । यन्ति तुम्हारा बस भूपा ठीक न हाती ता व मुझ आना दत कि म तुम्हारी बस भूपा ठाक कर । वह तो तयक महोदय आ रह ह अमनिए उहाँ समझा कि तखक महोदय व समझ उन्हें अत्यवस्थित नहीं रना चाहिए ।

चरित्र अच्छा क्या तखक महोदय आ रहे ह ?

शैली हाँ व किमी भा ममय यहाँ आ सकत ह ।

चरित्र भा मकत ह ? तब मुझ यहाँ नग रना चाहिए । मुझे उनस यन्त डर नगता ह । उहाँ जिन काम के लिए मुझ भेजा पा बह तो हुआ ही नहीं तकिन डर के माय उनसे प्रति अदा भी उमड आती ह । व जीवन में इन गहर उनरते है



जैसे किमी गेट की जड़ें पृथ्वी के प्राणों में प्रवेश करती हैं और उन जड़ों से जल और खनिजों का संग्रहण करती हैं। किमी गेट की जड़ें पृथ्वी के प्राणों में प्रवेश करती हैं और उन जड़ों से जल और खनिजों का संग्रहण करती हैं।

शैली तब फिर दरिद्र बात का ?

चरित्र भाव ! दरिद्र की बात ? पूछो शमी रानी ! जब य किमी पुण्य गंगा का अभिनय करता है तो मैं चकार में पड़ जाता हूँ कि किमी कठ म बार्न ! ए ! बाग से बागुरी वन में कुछ समय तो लगता है । माचो तुम्हें जब रामपुमार भूमक न किमायरो का रूप धारण किया तो हजार पत्ता कठ करन पर भी डान का स्वर निवृत्त हो गया । (हसता है) डान का । क ना पत्ता—(पतल कठ से) तिन भर हान करन के कारण (भोट कठ से) मरे कठ की विवृति हो गई है ।

शैली (मस्कुराकर) तो आप स्त्री का अभिनय करते समय यह क्या सोचते हैं कि आप पुरुष हैं ? बाबा इसीलिए तो आपसे विन्त है कि जिस क्षेत्र में आप पहुँचते हैं वहाँ स्त्री पुरुष में कोई भ्रम ही नहीं रहता ।

पापा और मरु भी उनभा देते हैं । सवाण का वाक्य स्त्री के कठ का है और आप उम बना दते हैं पुरुष के कठ का । उच्छल होकर धमत है इसलिए य आप पर क्रोध हो रहे हैं । देनिए—बाबा भा ही पत्त ।

(स्थानक का नई वे-भूषण में प्रवेश)

चरित्र भी है ! बाबा तो बहुत सज हुए हैं ! कौन कहेगा कि बाबा की सत्रियत अच्छी नहीं है !

स्थानक (चिड़कते हुए) तुम्हें इसका क्या ! म जिऊ ! या मरु ! (खसता)

है।) तुम तो दुनियाँ भर के खेत छानकर भावारागर्दी में नाम लिगाओ ( भाषा से ) भाषा बेटो ! इस चरित्र' नाम के बच्चा का इतनी भी सम्भ नहीं घाई कि मेरे सामने आने पर वह मुझे प्रणाम करता ! आजकल क बच्चा भी क्या ह ! हद ह, इन लोग की भा ।

भाषा प्रणाम कर लीजिए चरित्र जी !

चरित्र प्रणाम ? ( कथानक से ) देखो बाबा ! हृदय में श्रद्धा है तो वह हजार प्रणामों के बराबर है । हाथ जोड़कर प्रणाम करना अभिनय है लिखावा है । म दियाव म विश्राम नहीं करता । मैं वास्तविकता का समर्थक हूँ ।

कथानक तो तू वास्तविकता का बटा है ? म यहाँ बीमार पडा हूँ और तुझे वास्तविकता सूझ रही है ! ( भाषा से ) तू न दया बटो ! एक क्षण मर पाग बठन का भवकाश नहीं है इस । अच्छा तुम दोना भीतर जाओ बन्धियो । इसे म आज सुधार कर ही रहूँगा । ( भाषा और गली भीतर चली जाती है । ) मैं इसे आज सुधार कर ही रहूँगा ।

चरित्र मुझ घाप किस तरह सुधारियगा ?

कथानक मय तरह से । सबसे पहिल यह बताओ कि तुम मेरी बीमारी में मर पाग बठ क्या नहीं ?

चरित्र मैं बच्चा हो क्या करता बाबा ? म कोई डॉक्टर तो हूँ नहीं और फिर बुढ़ापे में आपको करना ही क्या है ? माराम कीजिए राम का नाम लाजिए । जानने ह जीवन कितना मधमय है ? कितना कष्टमय है ? आप इस शरीर से सपथ करेंगे ? इस शरीर से कष्ट मरेंगे ? आप तो इस जीवन सपथ से दूर ही रहें तो अच्छा ! आप विस्तर पर लटिए मयसर पहिए मान... उगाए ।

कथानक ( चिड़ हर म ) घाग्ग उगाश ! बीमारी म घानन् उटाया जाता है ! बटा चरित्र । तू संगार क सोगा से मिनन सगा तो मभ बबखूय समझा को रिमाजत करता है ? म राम घोर कृष्ण का कपासा का रिगार कर गुहा है—विश्रमा त्प घोर इयवडा की कानि का गायक है गीधा घोर जवाहर की जीपन जया का उद्घापन है—मुझे तू समझता क्या है ? ( लासता है । ) गांगो घान सगी ता म कमजोर हा गया ? नीच ऊँच का भू मिटारर कून-गली म तू घूमता ह ता समझता ह कि तू गध क मिर का मोग हो गया ह—जो नो ह ।

चरित्र घच्छा म कुछ नहीं घाय सब कुछ ह । ( हाय जोडकर ) कृपा कीजिए । भव ता घाप प्रसन्न ह ? घाप सब गुण निघान कृपा निघान अनुनित बल घाम सब कुछ ह । प्रसन हुए ?

कथानक तू मुझ पर ब्याय करता जा घौर म तुझ पर प्रसन्न होऊ !

चरित्र घच्छा प्रसन्न न हा म एक आवश्यक काय से घाया है । कहू ? मभ एक हजार चाहिए ।

कथानक ( घाँसे फाडकर ) एक हजार ! चोरी घौर घौर उस पर सीनाजोरी ? म तुझ कुछ नहीं द सकता । मरी चकचक भी इमोनिए खरम हो गई ह कि तुझ कुछ न दूँ ।

चरित्र मत दीजिए । ठीक ह ! आज के साहित्य म घापका एकाउट भा ख म हो रहा ह ! जान दाजिए । भव म एक एक भाग्मी स माँग कर अपना हजार पूरा करे गा । फिर न कदियगा कि म दुनियाँ भर का छाक घानता हूँ !

यही ठीक ह । ( पुकारकर ) शला रानी !

शैली ( नेपथ्य से ) घाँ ।

कथानक ( चिडाता हुधा मह बनाकर ) घा ई ।

( गली का प्रवेश )

शैली कहिए ।

चरित्र चलो मेरे माय । हय लोग दरिद्र-नारायण का व्रत लेंगे ।  
एक एक यक्ति स मांग कर अपना हजार पूरा करेंगे ।

शैली बाबा ! म भी जातो हू । आप बुरा न मानिएगा । मुझे चरित्र  
जी का साथ देना ह । लेखक महोदय शीघ्र ही आने को कह  
रहे थे आते हागे—( देखकर ) व आ भी गए ! अच्छा हम  
लोग चलें । चलो चरित्र !

चरित्र चलो—बाबा का हम दोना अच्छे नही लगते । ( दोनों का  
प्रस्थान )

कथानक ( देखकर ) बडे स्वच्छन्द ही गए ह साथ साथ जायेंगे । जसे  
इतना सारा जग जीत लिया ह । आबारा वहीं के ।  
( पासो ) आबारा

( पुकारकर ) भाया रानी !

भाया ( आकर ) कहिए ।

कथानक ( सांसता हुआ ) चरित्र और शली गए । चरित्र आया था  
एक हजार रुपया मांगन । ( आंखें फाडकर ) एक हजार ।  
इसकी शिकायत लखव महोदय स करनी होगी । इनकी  
उच्छ्वलता मुझे पसन्द नहीं ह । शली को साथ लेकर एक  
हजार फुर से उडा देगा । य रग-ठग मुझ पसन्द नहीं ह !

भाया मुझे भी पसन्द नहीं ह, बाबा !

( लखक का प्रवेश )

लेखक नमस्कार कथानक जो ! नमस्ते भाया देवी ! अमा बीजिए  
मुझे आने में देर हो गई । प्रकाशक महोदय मिल गए थे—  
श्री आचार शरद । बडी मीठी बातें करते ह । व हृषवधन के  
साथ आप सबका स्वागत करने के लिए बड उत्सुक हैं । उसी  
साज साजा में मुझ भी देर लग गई ।

भाषा बाबा बड़ी देर से घानकी प्रतापना कर रहे हैं। इनकी रानी बन की घोषणा घान बड़ गर्द है।

लेखक रानी बड़ गर्द है? देना भा नय प्रकार से माविज्ञान की घोषणा तयार की है। उगमें सफल नय का सहायता भी मग ली है। उगस रानी शीघ्र दूर हो जायगी। जानना चाहती हा भाषा? बीसी घोषणा है? बाबा तुम भी मुनो! मन चरित्र को घाना बी घो कि वर मगार म घूम कर प्रत्यक्ष परिस्थिति की भावनाघा की क्रिया और प्रतिक्रिया जान ल। उससे ही घटना का रूप बनगा और घटना जितनी ही प्रसर होगी उतनी ही पुष्टि घापके शरीर का मिलगी। यह पीष्टिक सत्व ही घापका दोषनोवन प्रणय करगा।

कथानक चरित्र तो घभी घाया था। बडा उच्छद्वन हो गया ह कहता था—बाबा! भाराम करो राम का नाम ली।

लेखक राम का नाम उन की बात में उसका एक अय ह। पीराखिक क्षेत्र म घापका जितना अधिकार रहा ह उतना एतिहासिक और सामाजिक क्षेत्र में नहीं। साहित्यिक क्षेत्र में तो चरित्र का ही अधिकार ह। और मर्यादा बाबा! इसी में ह कि अयन अयन क्षेत्र में सभी स्वाधीन रहें। हौ मर्यादा के लिए मन घापकी इतना महत्व अवश्य क्रिया ह कि घापका सकेत मात्र हो और चरित्र उसी पर काय कर। और जब घाप चरित्र के सकेत पर चलेंगे तो म इमे चरित्र के लिए घापका घासी वान ही समझूंगा।

कथानक उसे में भाशावान क्या दूगा! वह उसकी चिन्ता ही क्या करगा!

लेखक अवश्य करगा। वह घापका भासीवान लन घाया था?

कथानक भासीवान? (हसता है।) भासीवान? वह तो इतना उद्दण्ड

ह कि एक हजार रुपया माँगता था ।

लेखक एक हजार रुपया ? ( हँसता है । ) रुपया ? ( जोर से हसता है । ) अरे, उसे तो दस हजार माँगना चाहिए था । वह एक हजार रुपया नहीं एक हजार आशीर्वाद् चाहता था ।

कथानक एक हजार आशीर्वाद् ?

लेखक हाँ, एक हजार आशीर्वाद् । उमन रुपय का नाम लिया था ?

कथानक ( सोचता है । ) ए रुपय का नाम तो नहीं लिया—सिर्फ यही कन्ना था कि मैं एक आवश्यक काम से आया हूँ । मुझे एक हजार चाहिए ।

लेखक तो यह एक हजार आशीर्वाद् था ।

भाषा मन भी एक हजार का रुपया ही समझा था ।

लेखक तुम बचारी भाषा ! अभिधा में ही सब बातें नहीं होती । लक्षणा और व्यञ्जना में भा विहार किया करा । मने ही उसे भेजा था कि वह बाबा से एक हजार आशीर्वाद् लेकर आए ।

कथानक एक हजार आशीर्वाद् ? तो तुमने ही उसे भेजा था ?

लेखक हाँ मन ही । वह सबलन त्रय को भी अपने साथ लाया था । ब द्वार पर खड्ड ह ।

कथानक शिव शिव मन उसका बाता का दूसरा ही भय लगाया था । वह भी क्रुद्ध होकर शली बँ साथ चला गया ।

लेखक चला नहीं गया शली के साथ मरे पास आया । मन ही भाष का आशीर्वाद् लेकर उन दाना को अपने पास आन का आदेश दिया था । बात यह है कि मरा एक नया एकाकी-मग्न प्रस्तुत होने जा रहा है—मयूरपत्त । जिम तरह मयूरपत्त में प्रमुख रूप से पाँच रंग का विस्तार है उन्ही प्रकार उस एकाकी-मग्न में पीराणिक एतिहासिक वनानिक सामाजिक

घोर गार्हस्थिक पीन प्रकार के पाठकों की कीटियाँ हैं। उन्हीं के लिए मैं चरित्र घोर शमी को शीघ्र ही घाने का धारण किया था। भावना मरने का प्रत्यक्ष काटि में किया है।

कथानक तुम्हारे बाप का स्वरुण बड़ी सुगुणमय है। तो य सारी बातें मर दित के लिए हा हृद ?

लोग्यक घोर बना ! मुझ भावना प्या रगना का बहुत भावमय है बाबा !

कथानक तुमसे बातें करत समय मरी लीगी भी हक गई !

लोग्यक मनाविमान का शीघ्रि स भावना स्वायी साम होगा बाबा ! वय सक्कन वय वह शीघ्रि भावना अभी देंगे ।

कथानक तुम मरा वस्त ध्यान रखत हो डाक्टर ! शतायु बनो ।

भापा मं मा यी कामना तुहराती हूँ ।

लोग्यक धनवान् !

भापा मं भी आपके माय चतू ? शनी तो चरित्र के साथ चली गई ।

लोग्यक तुम ? तुम अत्यन्त हन स ता सत्व ही मरे साथ ही किन्तु प्रत्यक्ष हन स तुम बाबा के पास ही रहो । इन्हें तुम्हारी भावश्यकता होगी । अच्छा म चतू । फिर मिलूंगा । सम्बन्ध से अभा उसी को भापा में बातें करनी हूँ । बाबा नमस्कार ! भापा दवा नमस्त !

( प्रत्यान )

पौराणिक





# शैल शिखर

[ एक देव-सृष्टि रूपक ]

## पात्र

प्रभास	}	मशिवनी कुमार
विभास		
वनचर		शल शिखर का निवासो
उवशी		इद्र की भ्रप्सरा
कुमार कार्तिकेय		देवतामा व सेनापति
विश्वकर्मा		शिल्पी
इद्र		सुरपति
शची		इद्र की पत्नी
दधीच		भूतोक के महर्षि
देवदूत		

प्रभात काल ।

महर्षि दधीच का आश्रम ।

प्रथम रश्मि के आलोक में लता-गुल्मों से आवेष्टित  
कुटी । पक्षियों का झूजन । होम धूप । समस्त वातावरण  
में एक पवित्रता ।

प्रभास फूलों की माला घना रहा है । विभास नेपथ्य  
में यज्ञ के लिए समिधा बनी रहा है । प्रभास माला गूयते  
हुए स्फुट स्वर में कह रहा है 'यह कमल फिर यह  
जही फिर पाटल माला का यह क्रम '

नेपथ्य से विविध स्वरा में क्रम से आग्रह भरे वाक्य  
सुनायी देते हैं

पुरुष स्वर मुझ शक्ति चाहिए ।

पुरुष स्वर और मुझे विस्तार चाहिए ।

नारी स्वर और—मुझ सुगन्धि दे दा प्रभास ।

नारी स्वर मैं ऊँचे से ऊँचे उठना चाहती हूँ ।

पुरुष स्वर मुझे कीचड़ से मुक्त करा प्रभु ।

प्रभास ( मुपत कठ से हसते हुए ) अ ह ह ह ह ह ह ह ह

सबको सब पुछ चाहिए । ( हसता है ) अ ह ह ह ह

ह ह । इस चाहन की भी कोई सीमा ह ? सत्कार सीमित ह

किन्तु इच्छाए ? इच्छाएँ असतोम हैं । महर्षि दधीच के इन

आश्रम में भी इच्छाए ! शक्ति विस्तार सुगन्धि

उच्चता मुक्ति यहाँ तो इच्छाए समाप्त हो जानी चाहिए

किन्तु यदि इच्छाए ह तो उनकी पूर्ति होनी चाहिए

और यह पूर्ति मैं भरिवनीकुमार पुरो करूँगा ।

**विभास** ( नेपथ्य से ) क्या पूरी करोगे प्रभास ? माता तो अभी पूरी की न होगी ?

**प्रभास** तुम तो इतनी दूर हो विभास ! तुम क्या समझो ! यदि मन माना पूरी नहीं की तो तुमन भी मन के लिए समिधा इन्टनी नहीं की । इनसे अधिक आवश्यक मानें यहाँ हो रही ह । ये प्रायनाए सुनो ।

**विभास** ( समीप आकर ) कैसे प्रायनाए ?

**प्रभास** शक्ति विस्तार सुगन्धि उच्चता और मुक्ति की प्रायनाए । देखो यह देवनारू का पेड़—यह शक्ति चाहता ह । यह बट वृक्ष यह विस्तार चाहता ह । यह नन्ही-सी जुही की बली—यह सुगन्धि चाहती ह सुगन्धि । सोचती ह इतनी छाटी होन पर इसे कौन पूछेगा ? ( हसता है ) कौन पूछेगा ? इसलिए यह सबसे मीठी सुगन्धि चाहती ह और यह सोमलता । ऊँची से ऊँची उठान चाहती ह । देवता भी इसकी मान्यता से विह्वल हो जायें । और देखो यह कमल यह बीचड से मक्ति चाहता ह । मुक्ति ! ( हसता है ) और मैं ? मैं क्या चाहता हू ? मैं चाहता हूँ कि इनकी ये सभी प्रायनाएँ पूरी कर दू । अभी पूरी कर दूँ । ( हसता है ) ।

**विभास** ऊँचे स्वर से मत हसो प्रभास ! महर्षि की समाधि भग हो जायगी ।

**प्रभास** यदि प्रायनाए समाधि भग नहीं कर सकती तो हसी क्या समाधि भग करगी ? महर्षि की समाधि सामान्य समाधि नहीं ह । वह इन्द्रिया से परे ह । फिर इन्द्रिया की पुकार कैसे समाधि भग करगी ?

**विभास** तो तुम इन्द्रिया की पुकार सुन रहे हो ?

**प्रभास** पुकार नहीं प्रायनाए ! वनस्पति जगत की प्रायनाए और मैं ये

प्रायनाएँ पूरी करना चाहता हूँ ।

विभास यदि इन्हें पूरी कर दाग तो प्रायनाओं के पल निकल भायेंगे प्रभास ! व सत्कार का सामाए पाछे छाड देंगा ।

प्रभास सीमाएँ पीछे छोड देंगी ? ( हसता है ) भ्रर, सत्कार तो छोटा बडा होता ही रहता ह । किन्तु जबसे मने पशु-भक्षिमा और वृच-लताभा की भाषा जान ली ह तब से मैं इन सबकी इच्छाएँ जान लेता हूँ । इस नय ज्ञान से मुझ सत्कार की विचित्रताभा को बढाने में भ्रान-भ्रान लगा ह । विचित्रताएँ, विषमताएँ क्या, जानते हो क्या ?

विभास क्यों ? किमलिए ?

प्रभास मैं इच्छाभा की शक्ति जानना चाहता हूँ । शक्ति । ये कहाँ तक बन सकती ह । ये वृच ये सत्ताएँ, ये फूल क्या चाहते ह ?

विभास तो अब तुम अश्विनीकुमार न रह कर ब्रह्मा बनना चाहते हो ?

प्रभास तो क्या बुराई है विभास, ब्रह्मा बनने में ? किन्तु हाँ मैं ब्रह्मा से दूर ही रहना चाहता हूँ । ब्रह्मा बृद्ध और हम लोग चिर कुमार । ( हँसता है ) चिर कुमार ( हँसता है ) सम्भव ह ब्रह्मा ही हम लोग से ये सब काम कराना चाहता ह । तुम भी यही करा । तुम भी तो मेरे साथ अश्विनाकुमार हो ! मेरे पूरक ! मुझमें और तुममें यही अन्तर ह यो शीघ्र अन्तर नहीं ह किन्तु यही अन्तर हो सकता ह वि मैं क्या का संचालक हूँ और तुम सच्चा क । मैं सधय चाहता हूँ और तुम तुम शान्ति ।

विभास हाँ मैं शान्ति चाहता हूँ और शान्ति में हा विश्व का सुख ह ।

प्रभास शान्ति तो सधय का विश्राय ह विभास ! विश्व का विकास तो सधय में होता है विषमता में ।

विभास विषमता में ?

प्रभास हा विपमता में । यह गुनो ( बोकिल का बूजन होता है ) यह बोकिल ! यह बोकिल का बूजन गुना ? महा ! कितना मयूर बूजा ह ? ( फिर बूजन ) गुना यह मयूर स्वर ? एग शान होता है कि काम सार धय की और धम का समर कर मोच की पुकार रहा है ।

विभास याह ! वही काम भी मोच की पुकार सबता ह ?

प्रभास ससार यही तो कर रहा ह । इसीलिए मन भी बोकिल को मोटा स्वर दे दिया । उस दिन बोकिल मरे पास आयी । बेचारी कहन लगी—सभी पछी मुमग घृणा करते ह, मैं इतनी बानी हूँ—उधार करो ।

विभास और तुमन उधार कर लिया ।

प्रभास हाँ मन उमो चण उम मोटा स्वर दे लिया । आज उस बालो बोकिल के पास उजबल स्वर ह । इसी प्रकार पाटन न मुम्से प्रायना की कि भरा समस्त शरीर कटका से भरा हुआ ह भरी रक्षा कीजिए । मन उसके कटकित शरीर में इतना सुन्दर पुष्प उत्पन्न किया कि वही पाटन समस्त पुष्पा का अधिराज ह ।

विभास तुम तो विदूषक की भाँति काय कर रह हो प्रभास ! कुछ दिनों में ससार एक विचित्र पहली बन जायगा ।

प्रभास जैसे अभी पहली नहीं बना ह । सम्पत्तिशाली के घर में पुत्र नहीं ह और पुत्रवान के पास सम्पत्ति नहीं ह । गुणवती नारी का पति स्वच्छाचारो और विगान पति को भार्या मूर्खा । महा मर्खा । ( हसता है ) साधु पुरुष को भयानक कष्ट और पापी और अत्याचारो के पास अनन्त वभव । कपट से बातें करने वाले के अनक मित्र और मित्रता और शान्ति चाहन वाल के पडोसी भी भयानक शत्रु । वैसा सयोग ह ! क्या यह ससार की समस्या नहीं ह ?

(नेपथ्य में भयानक विस्फोट और बड़ जोर की गडगडाहट। तीव्र शब्द, जैसे कोई भारी चीज गिरी हो।) प्रभास (चौककर नेपथ्य में देखते हुए) यह क्या भयानक विस्फोट! विभास सारी प्रकृति कांप रही है? देखा प्रभास! बाहर क्या हुआ गया? प्रभास में बाहर जाता है।

(नेपथ्य में धात नाद। बचाओ बचाओ! एक वनचर का हाँफते हुए प्रवेग)  
वनचर दक्कूमर! बचाओ बचाओ रक्षा करो।  
विभास रक्षा करो? तुम कौन हो परप?

वनचर मैं हिम शिखर की तराई में रहने वाला वनवासी हूँ प्रभो! प्राणा पर भयानक भयानक मकट धा गया है स्वामी।

प्रभास सकट! किस प्रकार का सकट? सकट लाने वाला कौन है? वनचर हिम शिखर के उस पार रहनेवाला कोई दुष्ट और भत्याचारी होगा प्रभा! भयानक भस्त्र शस्त्र का प्रहार कर रहा है। हमें यहाँ जाय प्रभा?

प्रभास शान्त शान्त स्थिर रहो वनचर! साहसी बनो!

वनचर उत्तर के शल शिखर पर भयानक बाण उठ रहे बाण उठ रहे हैं बार-बार रिजली तड़पती है? भ्रांथिया से भ्रांथिया से पड़ उलट कर गिर रहे हैं। परा की दुशा हो गयी है प्रभा!

विभास यहाँ तपोवन में तो कुछ भ्रशान्ति नहीं है।

वनचर महर्षि के धात्रम में भ्रांथी भी भ्रान्त से टरती है। हम तपोवन के वृक्षा और सत्तामा को छूने का माहम भी उममें नहीं है किन्तु हम तपोवन के बाहर हमने बाहर पुण्या काँप रही है। पेड़ टूट-टूटकर गिर रहे हैं। प्रलय के बाण उमड़ रहे हैं।



विभास प्रलय के वातन उमट रहे ह ?

वनचर ही, प्रभो ! शन शिगर धूर धूर हो गये । उनसे बीच से दैत्यगण निकन निकन कर जागन्वातिया के घर जला रहे ह । आप अपनी मात्र शक्ति मे जागन्वातिया की रक्षा कीजिए । महर्षि जी स महर्षि जी स प्रायणा कीजिए कि वे हमारी रक्षा करें । ( कदण-स्वर से ) महर्षि ! हमें बचाइए ( नेपथ्य मे देखकर ) वह दगिए वह दखिए ! एक बाना वातन उठ रहा ह वह वह विजली चमकी हाय ! मरे घर पर गिरना चाहती ह । कुछ दत्य भी शस्त्र लेकर भगन ! ओह मं जाऊ बचाऊ अपनी पत्नी को भान वच्च को म आ रहा हूँ ! दुष्टा तुम दूर हटो पहन मुझमे युद्ध करो युद्ध करो युद्ध करो

( जल्दी से भाग कर जाता है उसका गव्व धीरे धीरे धीमा होता हुआ वायु मे लीन हो जाता है । )

प्रभास सचमुच ! बहुत भयानक घटना घटित होन बानी ह । मैंने कहा था न कि ससार कितनी विचित्र पन्ली ह ! सुख में दुख शांति में युद्ध ! सम्भवत इसीलिए य देवगण और वन वृक्ष शक्ति प्राप्त करन की प्रायणा कर रह थ । जैसे ये भविष्य जान रह ह !

विभास तो क्या भविष्य भयानक ह ? यह प्रलय का आगमन काले वातला का उठना विजली का गिरना ( देखते हुए ) सचमुच आकाश काला हो रहा ह । कोई भयानक दुपटना होने का ह !

प्रभास वह वनचर कितना धवराया हुआ था । वह देख रहा था कि विजली उसके घर गिरना चाहती ह । उसकी स्त्री उसके बच्चे !

( नेपथ्य में फिर विस्फोट )

प्रभास यह फिर विस्फोट हुआ । कोई शल शिखर चूर चूर होकर गिरा । विभास ! तुम बाहर जाकर देखा । तुम तो शांति के अप्रद्रुत हो ! अपनी मात्र शक्ति से इस विस्फोट को शांत करा ।

विभास मैं अभी जाता हूँ । जब तक महर्षि अपनी समाधि में हूँ मैं बाहर जाकर दुखिया की रक्षा करता हूँ और अपनी मात्र शक्ति का प्रयोग करता हूँ । मैं चला ।

( शीघ्रता से प्रस्थान )

प्रभास विचित्र सत्कार हूँ । अभी बभ्रव अभी विनाश कौन जानता हूँ किस क्षण सृजन में प्रलय और प्रलय में सृजन हो जाय ।

( नुपूर के गद । उवशी का प्रवेश )

उर्वशी महर्षि दधीच के तपोवन की पुण्य भूमि यही हूँ ?

प्रभास यही हूँ ! कौन ? देवि उवशी । तुम यहाँ ! महर्षि के आश्रम में ? प्रणाम करता हूँ देवि ।

उर्वशी प्रणाम स्वीकार करने का अवकाश नहीं हूँ अश्विनीकुमार ।

प्रभास बड़ी शीघ्रता में हूँ देवि । तपोवन के बाहर प्रलय हो रहा हूँ ।

उर्वशी मैं जानती हूँ । महर्षि आश्रम में हूँ ?

प्रभास आश्रम में तो हूँ किन्तु आश्रम में नहीं हूँ ।

उर्वशी परिहास का समय नहीं हूँ अश्विनीकुमार ! स्पष्ट उत्तर दो ।

प्रभास मैं स्पष्ट ही उत्तर दे रहा हूँ देवि । महर्षि आश्रम में तो हूँ, किन्तु समाधि में लीन होकर आश्रम के वापन में नहीं हूँ ।

कहा हूँ कौन जानता हूँ ?

उर्वशी मैं जानती हूँ । वे समाधि में मेरे नृत्यकी प्रतीक्षा कर रहे

प्रभास तब तो दूगरी भाँति का प्रलय होगा । महाप्रभु इन्द्र की दृष्टि  
कौन नहीं जानता ! महर्षि गौतम का शाप

उर्वशी ( तीव्रता से ) शाप ! दुःसाहसी, भरिवनीकुमार ! महाप्रभु  
का अपमान ? मैं भी तुम्हें शाप दे सकती हूँ ।

प्रभास ( हत कर ) मरा सोभाग्य होगा देवि ! आप मुझ काई शाप  
तो दें । ( विभास के आने का शब्द ) यह कौन आया ?

( विभास का शीघ्रता से प्रवेश )

विभास यह मेरा सोभाग्य है प्रभास ! कि मन कुछ समय के लिए  
प्रलय रोका । ( उवशी को देखकर ) आँचा देवि उवशी !  
प्रणाम !

उर्वशी कौन ? दूसरे भरिवनीकुमार मैं नृत्य करन की इतनी शीघ्रता  
में हूँ और इन प्रथम भरिवनीकुमार न मरा समय नष्ट कर मरे  
काय में बाधा डाली है ! मैं इन्हें शाप दूँगी !

विभास यदि शाप देना है देवि ! तो उस वृनासुर को शाप दो जिसने  
यह प्रलय उत्पन्न किया है । शल शिखर को कुचलता हुआ वह  
भाग बचना चाहता है जनपद वासियों के घरा में भाग लगाता  
हुआ वह बेचारे दीनों को भातकित करना चाहता है । प्रभाम !  
मन अपना मात्र शक्ति से उसे रोका है । वह अपने आप वीस  
धनुष पीछे हट गया है किन्तु मुझ आशका है कि वह वज्रित  
प्रदेश में भी अपने शिविर बनावगा । ( उवशी से ) देवि !  
क्षमा करें ! यह नृत्य का समय नहीं है ।

उवशी महाप्रभु ! इन्द्र की आज्ञा सर्वोपरि है । नृत्य होगा और अवश्य  
होगा ।

प्रभास देवि ! क्षमा करें । महर्षिया के तपोवन में महाप्रभु इन्द्र की  
आज्ञा का कोई महत्त्व नहीं है ।

उवशी महाप्रभु इन्द्र शाप ही मही आने वाले है । उन्हें उत्तर दे

सकोगे ?

प्रभास इस आश्रम में सभी का स्वगत हूँ देवि ।

उर्वशी मैं शीघ्र ही महर्षि के समीप जाना चाहती हूँ ।

विभास महर्षि अतिथि का स्वागत करेगा, किन्तु व समाधि में हाग ।

उर्वशी म समाधि में ही उनके समीप जाना चाहती हूँ ।

प्रभास ऐमा साहस न करें देवि ।

विभास आप आसीन हा । म आश्रम में देखूँ कि महर्षि समाधि में हूँ  
अथवा जाग्रत अवस्था में । ( प्रस्थान )

उर्वशी म भी आश्रम में जाऊंगी । महर्षि समाधि में हा अथवा जाग्रत  
अवस्था में । म वायु बन कर उनके ग्रह रश्मि में प्रवेश  
करूँगी । मरे प्रभु की आज्ञा प्रत्येक परिस्थिति में पूरा हो !

प्रभास देवि ! शान्त हा । आपका स्वामि भक्ति सराहनीय हूँ । किन्तु  
यदि ब्रह्मर्षि ने आप को शाप दे दिया तो वह आपके शाप से  
अधिक भयानक होगा ।

( कुमार कार्तिकेय और विश्वकर्मा का प्रवेश )

कार्तिकेय वृत्रामुरके क्रोध से भयानक न होगा । कौन अश्विनीकुमार ?

प्रभास प्रभु !

कार्तिकेय महर्षि दधीच आश्रम में हैं । मैं सेनापति कार्तिकेय और ये  
शिल्पी विश्वकर्मा हूँ ।

प्रभास दोना प्रभुप्रा को प्रणाम । यदि महर्षि समाधि से जागे हाने तो  
म आप दोना के आगमन का संदेश दूँ ।

( प्रस्थानक लिए उद्यत )

कार्तिकेय और मुना ! यह भी सूचना दना कि महाप्रभु इन्द्र और महा  
देवी शची मा आ रही हूँ ।

अश्विनी कुमार जो आता । ( प्रस्थान )

कार्तिकेय कौन ? देवि उर्वशा हूँ ?

उर्वशी सेनापति को उवशी का प्रणाम । शिखी विश्वकर्मा को नमस्कार ।

विश्वकर्मा नमस्कार देवि !

कार्तिकेय उवशी ! युद्ध की मृत्यु में तुम बहुत उग्नित ज्ञान होनी हो !

उर्वशी सेनापति ! मैं जिनमें शीघ्र महर्षि के दर्शन करता चाहती थी, उतना ही अधिन विनम्र हो गया ।

कार्तिकेय हम भी महर्षि के दर्शन करने आए हैं उवशी ! महागुरु के दर्शन में विलम्ब हो जाना तो स्वाभाविक है । किन्तु महर्षि और नारी को भेंट नहीं हानी चाहिए ।

उवशी कारण ?

कार्तिकेय अतः कारण और इन्द्रिया में विरोध है ।

उवशी आप महर्षि के अन्तःकरण को निबल समझते हैं सेनापति !

कार्तिकेय नहीं नारिया की सबल समझता हूँ । उनके पास बहुत बड़ा धनुर्वेद है । उनके तरकस में नित्य बाणों के समूह हैं । जब वे मौन होती हैं तो एक बाण का सधान होता है गहरी साँस नहीं है तो षण्ण से दस बाण बनते हैं गहरी साँस के साथ सिसकी से बाणों का निर्माण करते हैं और उसके साथ दो आँसुओं में सहस्र बाणों की गति मिलती है । यह विचित्र धनुर्वेद है । मर धनुर्वेद से यह धनुर्वेद महान है ।

उर्वशी सेनापति चमा करें । इस धनुर्वेद का प्रयोग सदा एक-सा नहीं होता । सभी नारियाँ एक ही नहीं होती ।

कार्तिकेय और सभी अप्सराएँ ?

उर्वशी ये महाप्रभुओं की सेविकाएँ हैं । महाप्रभु की आज्ञा ही उनके कर्म की शिक्षा है ।

कार्तिकेय महाप्रभु की आज्ञा से उवशी ! तुम मरी सेना में सम्मिलित हो सकती हो ?

उवशी सेनापति ! मुझ सेना के याग्य समझते हैं ?  
कार्तिकेय यदि अक्षरा अक्षरा न रह कर नारी बन जाय तो वह शक्ति

ह ! दुर्गा ह !

विश्वकर्मा अक्षरा भी तो शक्ति ह सेनापति ! महाप्रभु इन्द्र महर्षिया पर  
इसी शक्ति का प्रयोग करत हं ।

कार्तिकेय शक्ति जब विलास की सामग्री बनती ह विश्वकर्मा तो वह  
समाप्त हो जाती ह । शक्ति वह ह जो सव्य एक-सी बनी  
रहे । अग्नि और वायु की शक्तियाँ क्या कभी खींच हाती  
हैं ? अग्नि और वायु को लेकर ही मन तारका मुर का वध  
किया । आज वृत्रामुर का वध करना ह तो उवशा अग्नि की  
शक्ति क्या नहीं बन सकती ?

त्रिशूलकर्मा किन्तु महाभागा उवशी तो सव्यथल नतका है ।  
कार्तिकेय नतनी ? जब देवता रणभूमि में यत्रणा से कराह रह हं तब

नतकी नूपुरा में नाच भर स्वप्ना के जाल बुन ? जब धनुषा  
पर वध थापा का सघान होना चाहिए तब वह नृत्य के ष्ट्र  
धनुषो पर प्राणा का सघान कर ? जीवन का अपन मोहपारा  
में बांधकर सारी इन्द्रियाँ को कुण्ठित कर दे !

उवशी में एसी अक्षरा नहीं है सेनापति !  
कार्तिकेय तो तुम महर्षि दधीच के आश्रम में किसलिए आयी हा ?

उवशी महाप्रभु इन्द्र की आगा से उनके अनाहत नाच पर इसलिए  
नृत्य कर कि व प्रसन्न होकर देवतामा की रक्षा में अपनी  
शक्तियों का उपयोग करें !

कार्तिकेय और उनका अनाहत नाच भग हा गया तो ? यदि उन्हें  
बुद्ध हाकर शाप दे दिया तो ? जिन प्रकार सभी नारियाँ एक  
सो नहीं होती उगा प्रकार सभी महर्षि समान नहीं होत ! वे  
शाप भी दे सकते ह ।

उर्वशी मा घात शाप भोग ह सतागति ! महाप्रभु की सना में एत  
शाप घोर भोगू गो ।

कार्तिकेय नही उवशा ! तुम शाप नही भोगोगी । संकट काल में परस्पर  
बा अभिशाप धातव ह । मर्त्यि की शक्ति शाप दन म गट  
नही होनी चाहिए ।

उर्वशी महाप्रभु ! इन्द्र मुझ पर दष्ट हाग ।

कार्तिकेय वनासुर क भात्रमण स व बहुत सत्रस्त हा गय ह । उनकी  
बुद्धि स्थिर नही ह । उनका सन्तुनन गा गया ह । जापो  
इमका भार मुझ पर ह । हिम शिखर पर पट्ट घोर भाधम में  
नृत्य । असम्भव ।

विश्वकर्मा आज के युग में असम्भव बातें ही हो रही ह ।

कार्तिकेय इमलिए कि हम असामधान ह । बिना साच-सामझ हम अप्य  
राधा स नृत्य करात ह । उवशी ! यन्त्रि नृत्य करना ह तो मुट्ट  
भूमि में भरवी नृत्य करो । जगज्जननी पावती बनो माता  
गगा बना ! बसुमती कृत्तिका बनो—मरो माँ बनो । देवताभा  
में एसा साहस भरो कि व शत्रु बा विनाश करन में अप्रसर  
हा ।

विश्वकर्मा सेनापति ! मोहिनी रूप से भी असुरा का नाश किया गया ह !  
अपन नृत्य कौशल से महाभाग उवशी एसा नृत्य करें कि  
असुर एन्हें देखत ही रह जायें ! भात्रमण करना ही भूल  
जायें ।

कार्तिकेय विश्वकर्मा ! तुम शिल्पी हो । तुम्हें सौदय मात्र की पहचान  
ह । शक्ति की पहचान नही ह ? मोहिनी रूप से दो असुरों में  
रुच्यो उत्पन्न कर उनका नाश किया गया था सेना का नही ।  
यहाँ हमें असुरा के साथ सेना का भी नाश करता ह । सेना  
का भी । सना मोहिनी रूप से नही शक्ति के रूप से पराजित

होगी ! उवशी ! तुम शक्ति बना ।

उर्वशी शक्ति बनूगी सेनापति ता म महाप्रभु की सभा में अपना पद लो दूंगी !

कार्तिकेय इम सक्काल में तुम्हें अपन पद का मोह ह, उवशी ? पन् क्या ह ? अपन अधिकार और बभब का मिहासन । जब हम शत्रु स आत्रान्त हो रह ह ता किस बभब का हमें अधिकार ह । और किस अधिकार का बभब हमारे पाम ह उवशी । सावधान ! अपन पन् क माह में तुम कही शत्रु से पद दलित न हो जाभा ! अपना शक्ति का पूण उपयोग हो । तुम नारी हो और नारी ही एसी शक्ति ह जो अपना आश पूरा करती ह । निर्माण में जग-जननी पावता और विनाश में महादुगा । पावता ही दुर्गा ह और दुर्गा ही पावती और दोना की पूछता अपने अपन क्षेत्रा में अद्वितीय ह ।

विश्वकर्मा मन दोना के ही चित्र बनाये हैं सेनापति ! पावती और दुर्गा ! माहा ! कितने भय रूप ह ?

उवशी मैं वृताय हुई सेनापति !

कार्तिकेय मैं सुनकर प्रसन्न हूँ । और सुनो । यदि महाप्रभु इद्र तुम्हें अपन पद से हटा भी दें, तो मरी सेना में तुम्हारा स्थान सुरक्षित ह ।

उर्वशी ठीक ह सेनापति ! मैं तुम्हारी सेना में धायना की सेना सुश्रूया करूगी । उन्हें सजीविना दूँगा और भूमन का पान कराऊगी ।

कार्तिकेय ता तुम जाओ । मैं सेना में तुम्हारी प्रतीक्षा करूगा । महर्षि से गया सस्त्र प्राप्त कर मैं शीघ्र हा सेना की व्यवस्था करूगा । तुम्हें सुनकर प्रसन्नता होगी कि हमार भागे के अभिमान में महाप्रभु इद्र ना हाग ।

उर्वशी तब ता हमारी विजय निश्चित ह !



कार्तिकेय विजय तो निश्चित है जब शम्भु के निर्माता विश्वकर्मा हमारे पास ह।

विश्वकर्मा मैं मृग्य क घाटवें भाग का पात्रकर भगवान् शिव का मुग्धन धरु, मन्मथोगी शिव का निरगुन और मन्मथनापति कानिरेय का बाण बनाया ह। महर्षि दधीच द्वारा श्रिये गये शास्त्र का निमाण भा मैं करूगा।

उर्वशी मैं कल्पवृक्ष के कोमल पत्तों की शया बनारर एत विरल देव तापों का विश्राम दूगी। मैं इन्द्रधनुष क पक्ष से हवा करूगी और मन्मथिना क जल से उन्हें शीतलता पहुँचाऊँगी।

कार्तिकेय स्वस्ति ! तुम जाया !

उर्वशी प्रणाम करती हूँ सेनापति ! प्रणाम करती हूँ भद्राशिल्पी !

विश्वकर्मा जब तुम इन्द्रधनुष क पक्ष से हवा करोगी तो मैं सुम्हारी सुन्दर मूर्ति-का निर्माण करूगा उर्वशी !

कार्तिकेय जाओ सन्तप्तों को सुख शान्ति दो।

उर्वशी सेनापति की जय !

( प्रस्थान )

विश्वकर्मा सेनापति ! तुमन तो उर्वशी को दुर्गा बना दिया !

कार्तिकेय यदि प्रयत्न किया जाय विश्वकर्मा ! ता विष भी भ्रमूत में बनना जा सकता ह। यह प्रयोग करन वाले का कौराल ह कि वह परिस्थिति का उपयोग किस प्रकार करता है।

विश्वकर्मा सत्य ह सेनापति ! मैं भी सामान्य वस्तुभा का उपयोग इस प्रकार करता हू कि उससे शिल्प को महान् वृत्ति बन जाती ह। किन्तु उर्वशी श्रापी और बना भी गयी किन्तु महर्षि को समाधि अभी तक समाप्त नहीं हुई।

कार्तिकेय समाधि की सीमा सासारिक समय से नहीं नापी जाती विश्वकर्मा ! तुम शिल्प की सीमा में समाधि बाँधना चाहते हो ?

विश्वकर्मा सीमाहीन केवल विश्वात्मा ह, सनापति ! उनके प्रतिरिक्त समस्त सृष्टि सीमा में ह । शम्भु की समाधि की भी कल्पान्त में सामा ह । (भ्राने का गद्द) काई आया ! (प्रभास का प्रवेश)  
 प्रभास प्रभु ! महर्षि समाधि से जागे ह । ओह ! उनके ललाट में कितनी ज्योति ह । उनके नत्र शूय में कुछ खोज रहे ह ।  
 कार्तिकेय सम्भवत सत्तार की परिस्थिति और वातावरण का विश्लेषण कर रहे हा ।

विश्वकर्मा सम्भवत हमारी ही स्थिति-पर विचार कर रह हा ।

( देवदूत का प्रवेश )

देवदूत प्रभु का प्रणाम ! महाप्रभु इद्र और महादेवी शची अपने यान से उतर कर आश्रम में प्रविष्ट हो रह ह ।

कार्तिकेय उनका आगमन शुभ हो ! महर्षि समाधि से जागे ह ।

देवदूत प्रभु की जय । यह मन्वक द्वार पर उपस्थित रहगा !

( प्रस्थान )

प्रभास इस आश्रम का धन्य भाग कि आज देव-सृष्टि ने ही आश्रम में पलापण किया ह ।

कार्तिकेय अश्विनाकुमार ! महर्षि मानत्र ह किन्तु आज वे देवतामा से भी महान बन गय ह । मानव भा कितना प्रतापी ह कि देव मृष्टि भी उसकी शरण में आता ह । वह नर ही ह जो नारायण बन सक्ता ह । ( देवदूत के सहित महाप्रभु इद्र और महादेवी शची का प्रवेश )

प्रभास स्वागत महाप्रभु इद्र ! स्वागत महादेवी शचा !

कार्तिकेय

और विश्वकर्मा हमारा भा प्रणाम स्वीकार हो ।

इद्र स्वस्ति ! महर्षि के तपोवन का प्रणाम !

शची मैं भा महर्षि के तपोवन का प्रणाम करती हूँ ।

इन्द्र सेनापति कार्तिकेय भरे आदेशानुसार तुम और विररवर्मा यहाँ उपस्थित हो बिन्दु उबरी यहाँ नहीं है ?

कार्तिकेय हम दोनों के ध्यान में पूज ही करे य ! उपस्थित भी बिन्दु महाप्रभु भने उठे धयत्र भेज दिया । भा उठे गेता में नियोजित कर दिया है ।

इन्द्र मेना में ? उबरी को सेना में ( हसी ) मन्नादेवी ! सेनापति कार्तिकेय अब तुम्हें भी मेना में नियोजित करेगा ।

शची धयभाग्य ! स्वामा के गाय यद्ध में जाना हमारे लिए गौरव की बात ही होगी ।

इन्द्र मैं सही हुआ महादेवी ! बिन्दु उबरी न नृत्य किया ?

कार्तिकेय वह रणक्षेत्र में भरवी नृत्य करगी महाप्रभ !

शची कुमार कार्तिकेय कुशल सेनापति ह । व अप्पाराधा को भी भरवा बना देंगे । फिर कुमार के सामने नारिया का धाय क्षेत्र ही बदल जाता है । कोई भी नारी कुमार के समक्ष जननी बन जायगी ।

इन्द्र हम तुम्हारे काम से प्रसन्न हैं सेनापति ! ऐसा ही होना चाहिए । हमारे पुराने सस्वार सरनता से नहीं बन पाते । अब मैं स्थिरमति हूँ । ( प्रभास से ) भस्विनी कुमार ! तुम देवतामा के वर हो । तुम्हारी भी रण क्षेत्र में आवश्यकता होगी ।

प्रभास हम दोनों भस्विनी कुमार प्रस्तुत हैं प्रभ !

इन्द्र तथास्तु ! महिष समाधि से जाग ?

प्रभास अभी जाग है महाप्रभ !

इन्द्र अन्तरिक्ष की वाय तरंग न हमें सूचना दी कि महिष ने अपनी समाधि समाप्त की । उसी क्षण हम चले । जाकर निवृत्त करो कि हम सब उनके दशन के लिए उपस्थित हैं । भगवान

वलषु के आदेश से ही हम लोग ने महलष के आथम में प्रवश कलया ह ।

प्रभास न अभी सूचना देता हू महाप्रभु !

शकी मेरा वलशेष प्रणाम नलवन् करना ।

प्रभास जसी आना, महादेवो ! ( प्रस्थान )

इद्र वृशामुर का भयानक आतक । हमारा वलरवास था, सेनापतल ! कल जिस बाण से तुमने महाअमुर तारक की भुजाए काटी थीं, उसी बाण से वृशामुर का मस्तक भी कटगा कलन्तु वृशामुर सामाय दल्य नही ह । वह अपनी शकलन का वलस्तार चाहता ह । वह कराल बाल के समान भीषण और दावानल से भुलसे पहाड की नाँतल बाला ह । मध्यकालीन सूय के समान उसकी प्रबण्ड आर्ये ह । वह प्रतलनलन तीस गज बढता ह । उसने सभी वलशामा का आवृत कर ललया ह इसीललए उसका नाम वृशामुर ह ।

कार्तलकेय सल्य ह महाप्रभु ! वृशामुर ने हमारा समस्त सेना का नाश कर नलया । उसकी ननकार से समस्त पृथ्वी काँपन लगती ह और एसा प्रतीत होता ह मानो उसने अपने चमचमाने हुए हुए तलशूल पर पृथ्वी और आकाश को उठा ललया ह । मुझे वलरवाग था कल मं अपने बाण से उसका मस्तक काट दूँगा, कलन्तु मरा बाण उसकी भुजाएँ भी नही काट सका और उन्हीं भुजाया से उसन हमार दवतामा के न जान कलतन सेनानलया को बन्नी बना नलया ।

वलश्वकसा और महाप्रभु ! बह बढ गव के साथ हमारे सेनानलया के अलग अलग जलया को क्रम से छाड कर अट्टहाम करता ह ।

कार्तलकेय महाप्रभु ! रक्षा का उपाय शीघ्र हा होना बाललह । आज हमारी सेना के न जान कलतन वीर युद्ध में बढो बनकर शत्रु

के असाध्य अत्याचारों को गहन कर रहे हैं ? म शोषण होकर अन्न रानिका के कष्ट जाता है !

शची कुमार कातिकेय ! तुम्हारे तो बारह नव घोर बारह भुजाएँ हैं । तुम सुप्रह्लाद ही । देवताओं के साक्षात्कार । फिर भी शत्रु के आक्रमण की गति त्रिपि तुम नही जानते ?

कार्तिकेय मुझे लज्जित न करें देवि ! मुझ में आशा ही नहीं थी कि वृत्रामुर इस समय हम पर आक्रमण करेगा । वह स्वयं अन्न को हमारा मित्र कहता रहा और विश्व में अन्न को निरपराध घोषित कर हमपर आक्रमण कर बैठा । वह तो स्वयं अन्न भाई की हत्या का शोष हम पर लगा रहा है ।

इन्द्र सेनापति ! अन्न अपराधों को क्षिप्त के लिए एक अत्याचारी सदैव अन्न अपराध दूसरे पर लगा कर उनका प्रचार करता है । पर हमें इसकी चिन्ता नहीं है । हमें तो चिन्ता इस बात की है कि हमारी योजना एसा होनी चाहिए कि हम वृत्रामुर का भरपूर सामना कर सकें ।

शची स्वामी ! आज से आप अन्न बन्ध और विलास सत्ता के लिए छाड़ दें और प्रत्येक क्षण मुद्रा हा का अन्न वाहुबल का विषय बनावें । क्या आज महर्षि के तपोवन में आप एसी प्रतिज्ञा करेंगे ?

इन्द्र तथास्तु देवि ! मैं अन्न समस्त एश्वर्य को देवताओं की रक्षा में प्रस्तुत करता हूँ । आज सत्ताओं के लिवन की कृत्य नहीं विद्युत्कलाओं के चमकन का कृत्य है । किन्तु इस समय महर्षि के आश्रम में हमें शस्त्र का सामग्री मिलने की आवश्यकता है जिसके लिए हम यहाँ आये हैं ।

शची शस्त्र की सामग्री मिलन में तो कोई शका नहीं होनी चाहिए । इन्द्र महर्षि से वह प्रस्ताव तुम्हें करना है देवि !

शची ढुके ? कसा प्रस्ताव ?

इद्र वह प्रस्ताव बहुत भयानक ह ।

शची भयानक ? ऐसा भयानक प्रस्ताव म कम कर सकू गा ?

इद्र ढुकेमें माहस नहीं ह । सम्भवत कुमार कातिक्य में भी नहीं ।

शची वह प्रस्ताव कौन-सा ह ?

इन्द्र उस प्रस्ताव का आदेश स्वयं भगवान् विष्णु न किया ह । वह यह ह कि वृत्रामुर का विनाश केवल एक शस्त्र से हो सकता ह । ब्रह्मविद्या के कारण महर्षि दधीच जाव-ढुकन हो गये ह । यदि महर्षि समाधि में लीन हावर अपना शरीर छोड दें तो उनकी तेजोमय अस्थिया से एक सुन्द बज्र बनगा । विश्वकर्मा ही वह बज्र बनावेग और उसी से वृत्रामुरका सिर काटना सम्भव होगा । महर्षि दधीच स अस्थिदान पाने का प्रस्ताव तुम्हीं को करना ह ।

शची यह तो बहुत भयानक प्रस्ताव ह स्वामी ।

कार्तिकेय मानव महान ह देवि । वह जीव-ढुकन ह । शरीर छाडन में उस क्या कष्ट होगा । फिर सत्य और ाय की रक्षा के लिए मानव का इतिहास देव-ढुकन पर आज भा अर्षित ह । महर्षि दधीच का अस्थिदान मानव के इतिहास में हा नहीं देवतामा के इतिहास में भा अमर होगा ।

( नेपथ्य म गलनाद )

इद्र महर्षि दधीच इद्रिया की परिधि में आ गए ।

शची अब महर्षि के दशन शीघ्र ही हागे ।

( नेपथ्य सत्वर ग्लोक पाठ )

निष्कल नित्प्रय गात निरवद्य निरजनम ।

अमतस्य पर सेतु दग्धेयन भिवानलम ॥

एको देव सय भूतेषु गूड

सयध्यापी सयभूतातरात्मा ।

कर्माप्य । ताय भूयाधिवात  
ता ती घता षवयो निगण्ण ।

(विभास का प्रवेश)

विभास महर्षि बाहर आ रहे हैं ।

(पाकुशान्नो का गम्द । महर्षि दधीच बाहर आते हैं ।)

समयेत

स्वर् से सत्र महर्षि की जय हा ! जय हा ! जय हो !

महर्षि ( गम्भीर स्वर में जैसे स्वर बदराश्रो म गूण रहा है । )

स्वस्ति ! मुत्पति इन्द्र महाभागा शची बुमार कार्तिकेय शिल्पी  
विश्वकर्मा और देवदूत ! पच प्राणा की भांति मरे तपोवन में  
निवास करो !

इन्द्र तुम प्राण हो !

शची ! तुम मन हो !

कार्तिकेय ! तुम वाक हो !

विश्वकर्मा ! तुम चक्षु हो !

देवदूत ! तुम धोत्र हो !

प्राणा न समस्त इन्द्रियो में प्रवेश किया तो समस्त  
ऋत्विष्यां प्राण ह । पच प्राण ! मरे तपोवन में निवास करो !

इन्द्र मयात्मन् ! हम यहाँ निवास कैसे कर सकेंगे ! हम पर महान  
सकट ह !

सची हमारी स्वर्णभूमि पर शत्रु न आक्रमण किया ह महात्मन् ।

कार्तिकेय देवतामा की सेना बंदी बन गयी ह ।

विश्वकर्मा हमारा भवन हमारा शिल्प नष्ट हो गय ह महर्षि ! महान  
सकट का कान ह महात्मन् !

महर्षि सकट का काल ! देवतामा ! ॐ कार तुम्हारा कवच ह ! तुमने

कृत्वा यजु और साम में प्रवेश किया उनका आश्रय लिया । गायत्री आदि अनेक धृदा के मन्त्रों का—छन्दस का कवच पहना । फिर भी सकट ? मन्त्रों की श्रुति में भी मृत्यु ने तुम्हें देखा तब तुमने ॐ कार में प्रवेश किया । ॐ कार का कवच पहना फिर भी सकट ?

इन्द्र महात्मन् ! ॐ कार से यद्यपि हम भ्रमर हो गए हैं फिर भी वृथासुर बहुत भयानक ह । वह हमें क्षत विक्षत कर रहा ह । हमारी रक्षा कीजिए !

महर्षि मानव को देवताओं की रक्षा करना ह ?

शाची मानव महान ह महर्षि ! उसके रक्त में शक्ति ह उसकी भ्रमियों में शक्ति ह हमारे पास रक्त नहीं ह भ्रमिय नहीं ह । हमारे दिव्य शरीर के पास कबल ज्योति ह । ज्योति घूमिल हो गयी ह महात्मन् !

महर्षि देवि ! वह ज्योति ही कमी जो घूमिल हो ? घूमिल तो परिस्थितियाँ हैं । सूर्य-चन्द्र का ज्योति मलिन नहीं ह—मेघों की परिस्थिति मलिन ह जिससे ज्योति का भ्रमरोध होता ह । यह भ्रम ह देवि ! मेघों की परिस्थिति स्थायी नहीं ह इसलिए सकट स्थायी नहीं है ।

इन्द्र महात्मन् ! हमारी ज्योति जो क्षत विक्षत हो गयी ह उससे जीवन का प्रवाह भ्रवरुद्ध हो गया ह और यन्त्रि ज्योति का वतुल पूरा नहीं होता । ता भ्रमकार हो जाता ह । आज हमारे समक्ष क्या भ्रमकार ह महर्षि !

महर्षि तो दक्षपति ! घनाहत नाम में लीन हो जाओ ! जिस प्रकार पुण्य रस का पान करता हुआ भ्रमर पुण्य की गंध नहीं चाहता उसी प्रकार नाम में लीन रहने वाला दिव्य शरीर सुषुप्तता की अनुभूति नहीं करता । विषय के उद्यान में



विचारने वाला मन एक मनवाना हाथी है। उस परा में करन के लिए मन ही तीक्ष्ण घंटुरा है। मन व मूय की घायन में यह ता ही मुड़ जात है। मन की तरंग रासन व लिए यह ना ही तट है।

**विश्वकर्मा** महर्षि ! शत्रु का वधना हमारी समस्त शक्तिया का चूर चूर कर रहा है।

**महर्षि** देवतामो ! तुमन अपना आत्म-बन खो लिया है आत्म विश्वास समाप्त कर दिया है। तुम्हें शत्रु से कोई बच्य नहीं होना चाहिए जिस प्रकार सज्जना पर क्षत्रजना व दुर्वास्य का कोई प्रभाव नही होता।

**कार्तिकेय** आपका बयन सत्य है महर्षि ! किन्तु इस समय दुर्वास्य के साथ भयानक आक्रमण है। रहे है धीरे युद्ध की अग्नि चारा और से दावानि की तरह जन उठी है। शल शिखर चूर-चूर हो रहे है। भूमि काप रही है और देवतामा के साथ गधव और किन्नर भी क्षत विक्षत हो रहे है।

**महर्षि** जिस प्रकार स्वर्ण आग्नि घातुमा का दीप अग्नि से तपान पर भस्म होता है उसी प्रकार कभी-कभी शान्ति में भी युद्ध की आवश्यकता होती है।

**कार्तिकेय** महात्पन ! युद्ध के लिए शस्त्रा की आवश्यकता होती है। हमारे सब शस्त्र नष्ट हो गय है। हमें नय शस्त्रा की आवश्यकता है।

**महर्षि** सबसे बड़ा शस्त्र पूरुषार्थ है तप है सनापति ! साहस और आत्मविश्वास है। उसे अर्जित करो ! जब तक साहस और आत्मविश्वास नही हागा तब तक व से बड़ा शस्त्र मूल घास के तिनक की भीति है। तुम्हारे भातर शक्ति का जो अक्षय भण्डार है, उसे खोल दो। तुम्हारे भीतर एक एसी शक्ति विद्यमान है कि तुम उसकी सहायता से जो चाहो वही कर

सकते हो ।

इन्द्र यह सत्य है किन्तु आत्मविश्वास के साथ शस्त्र भी चाहिए ।  
महर्षि तो शस्त्र का निर्माण करो ।

विश्वकर्मा हमें शस्त्र निर्माण की सामग्री चाहिए भगवन ।

महर्षि विश्वकर्मा ! तुमने विष्णु के सुदर्शन चक्र का निर्माण किया  
शिव के त्रिशूल का निर्माण किया सनापति कार्तिकेय के  
बाण का निर्माण किया । क्या सूय के प्रतिरिक्त अय नक्षत्र  
नहीं है जिनसे तुम सामग्री सग्रह करो ?

शची अय नक्षत्र उदय और अस्त होते हैं । एक मात्र ध्रुव नक्षत्र  
है किन्तु वह उत्तर गिर्वाण का सौभाग्य बिन्दु है । उसे स्पष्ट  
नहीं किया जा सकता ।

महर्षि इस दिशा में भगवान विष्णु का एक संकेत है । ( अट्टहास  
करते हुए ) अ ह ह ह ह ! वह संकेत मैं तुम्हारे मुख में  
सुनना चाहता हूँ । देवि ! ( पुन हँसी ) नक्षत्र जगत की  
सामग्री समाप्त हो गयी । अय मानव-जगत की सामग्री के  
लिए देवतामा का समूह एक मानव के तपोवन में है  
( अट्टहास )

शची बदन का साहस नहीं होता प्रभु !

महर्षि जब एक व्यक्ति के समस्त साहस नहीं है तो शत्रुमा के समूह  
के समस्त साहस कैसे होगा ?

शची साहस कर कहती हूँ महर्षि ! बुधामुर का मस्तक काटने के  
लिए एक वचन की आवश्यकता होगी ।

महर्षि एक वचन की आवश्यकता होगा ?

शची उग वचन के लिए जो सामग्री चाहिए वह तो देव-जगत् में  
है और न नक्षत्र-जगत् में ।

महर्षि यह सामग्री मानव जगत् में है ।

महर्षि कुमार कातिकेप ! जाओ अब तुम्हारे शान शिगर गुर-गुर नहीं हाग तुम्हारी भूमि क्षणित नहीं होगा । तुम्हारे तीनक बना रही हामे ।

कार्तिकेय मे शृताप है महात्मन !

महर्षि गुरपति इद्र ! म बन ब्राह्म मुहन में यागाग्नि में इन्द्रिया की नष्ट करूगा । अपन प्राणा का विसर्जन करूगा । अश्विनी कुमार प्रभास !

प्रभास आना प्रभु !

महर्षि तुम मरे तपोवन में पश पक्षिया और वनस्पति जगत की भाषा सीख चुके अब मरी अस्थिया से उत्पन्न होनवानी शक्तिया की भाषा सीखो ।

प्रभास जसी आना प्रभु !

महर्षि विभास !

विभास आना प्रभु !

महर्षि उवशी ! मरे अनाहत नाचपर नृत्य करना चाहती थी । उसकी अभिलाषा अपूण रही । उससे मेरा सन्देश कहना कि वह देव सनिका के श्वास प्रश्वास पर नृत्य कर उनके हृत्प में युद्ध करन का उत्साह उत्पन्न करे ।

विभास जसी आना प्रभु !

महर्षि जो सनिक छत विद्यत हो व मरे तपोवन म विश्राम करें । मरे तपोवन में उनकी शत्रुता हो ।

शची आप कितन महान ह प्रभ !

महर्षि देवि ! तुम गुरपति इद्र की शक्ति ही ! गुरपति अशान्त न हा ध्यान रखना ।

शची जसी आना प्रभु !

महर्षि देवपति इन्द्र ! विश्वकर्मा मरी अस्थियो से वज्र का निर्माण

करेंगे । तुम उम वज्र से शत्रु का सहार करो !  
 विश्वकर्मा मेरा निर्माण-काय शीघ्र प्रारम्भ होगा !

इन्द्र महर्षि की जय हो !

महर्षि विश्व-कल्याण में मानव के वलितान की यह कया सदव सत्य  
 रहणी । तथास्तु !

( उच्च नाद से गल का नाद )

[ अन्त्य सगीत ]





## वैज्ञानिक

- १ प्रगति के चरण
- २ चंद्रलोक



# प्रगति के चरण

[ एक प्रतीक रूपक ]



## पान

आकाश

कक्षा

दैत्य ( एटम बम का विस्फोट )

स्पूतनीक

मानव

समय—धीसर्वां शताब्दी का सातवां दशक । रात्रि के बारह बजे ]

आकाश का एक भाग स्थिर होकर तारिका खण्ड पर बठा है और कक्षा चञ्चलता से नृत्य कर रही है । कुछ देर बाद जब कक्षा का नृत्य मन्द होकर फलती हुई सहर का रूप लेता है और एक ओर बढ़ता है तो आकाश उस ओर देखता हुआ कक्षा को सम्बोधित करता है ।

आकाश उस ओर बार-बार क्या देख रही हो कक्षा ?

( कक्षा तन्मय होकर नृत्य के आकार को बढ़ते हुए एक ओर आकृष्ट हुई घली जाती है । )

आकाश ( कुछ ओर अधिक बल देकर जिज्ञासा के स्वरो में ) क्या देख रही हो कक्षा ?

कक्षा ( सहसा उलट कर आकाश की ओर देख कर ) निन्द्य आकाश ! मुझे मन छोड़ो ! ( फिर नृत्य में अग्रसर होती है किन्तु जैसे ही नृत्य की भंगिमा सेंती है जैसे ही मानो अङ्ग निर्मित हो जाते हैं ) तुम मेरा सारा ध्यान सारा स्वप्न—तोड़ लिया ! तुम क्या जानो आकषण किस कहते हैं ? शून्य आकाश ! जिसमें कुछ भी नहीं है ।

आकाश मुझ में कुछ नहीं है, इसीलिये तो सब कुछ है । भूलो मत कक्षा ! मैं तुम्हारी तरह आकषण रूप तो नहीं रखता परन्तु दूसरा को रूप रखने में सहायता देता हूँ । घुरा मत मानो, मैं तुम्हारे रूप की रक्षा के लिये ही तो पूछता हूँ कि कहीं खिंची जा रही हो ?

कक्षा जैसे जानते ही नहीं ! दखते नहीं व शक्तिशाली मङ्गल

कितनी दूर चल गये ह ! ( बहरा स्वर म ) पल्ले मुझे अपनी कक्षा की रसा बनामा फिर मुझे घां कर दूगरी ओर बन जा रहे ह । उनकी गति घण्टाकार की घण्टा सर्पिल हो गई ह ।

**आकाश** ( गम्भीर होकर ) तो कक्षा कब नक्षत्र के साथ चलती ह । नक्षत्र तो अपनी गति से शिशा म बन्ता ह । जिन शिशा को वह पीछे छोड देता ह वही उसकी कक्षा बन कर रह जाती ह । कक्षा पढी रहती ह नक्षत्र भागे बन् जाता ह । उसका बग में गुरुत्वाकर्षण समाप्त हो जाता ह ।

कक्षा तो क्या म सदब एसी ही पडी रहूगी ?

**आकाश** नहीं तुम्हारे घूमने को भी गति ह तबिन बहुत धीरे ! यह तो शताब्दिया की गति ह कक्षा ! तबिन इसी हल्की गति में तुम कितनी सुन्दर बन गई हो । दिक् और काल एक दूसरे में लय हो गए हैं । उन्हान अपनी निरपेक्ष पयकता खो दी ह तुम्हारे इस चंचल नृत्य से गति की सुन्दरता विगड जागगी ।

**कक्षा** भयन नक्षत्र के बिना मरी सुन्दरता का कोई महत्व नहीं ह । दिक् और काल की निरन्तरता ही तो मरी यक्र गति ह । यह यक्रता ही वास्तविक ह । इसके बिना मरा कोई महत्व नहीं ।

**आकाश** महत्व नहीं ह ? कक्षा ! यदि महत्व न होता तो विश्व भर के दूर दशक तुम्हें और हमें इस तरह देखते ? कितन हजार वर्षों के बाद मङ्गल नक्षत्र खिच कर पृथ्वी के इतन समीप आया ! उसी के साथ खिचकर मैं आया और तुम भी इस विशेष दिशा में ! समय शून्य और स्थिति के कितने सम्बन्ध टूट-टूट कर बन । विश्व मडन की कितनी शक्तियाँ किस आश्चर्यजनक गति से काम करती रही । अब दिक् और

काल की निरपेक्षता नहीं रहा। कितने गून् और विचित्र नियम हमें और तुम्हें बना कर इस पृथ्वी के पास छोड़ गये।

कक्षा पृथ्वी के पास ?

आकाश हाँ, पृथ्वी के पास ! यह जो हमारा समीप घूम रही है। बहुत सुन्दर मालूम होती है।

कक्षा इस विरव में तो न जाने कितन पृथ्वी पिएड हागे। जो एक से एक सुन्दर हो सकते हैं।

आकाश हाँ, सुन्दर हो सकते हैं पर बहुताँ में तो जीवन ही नहीं है। विलकुल मृत पिएड है।

कक्षा म कुछ नहीं समझती।

आकाश नहीं समझती ? क्या ? मगल की गति में भ्रूली हो ? उस इस तरह देखो कक्षा ! कि अभी तक हम लाग किन किन नक्षत्रा से खिच कर कहाँ-कहाँ नहीं गये ? गुरुवाक्पण ने हमें कहाँ कहाँ नहीं खींचा ? किन्तु इस बार नक्षत्र मगल की ही यह कृपा थी कि उसने अपनी गति से हमें और तुम्हें पृथ्वी के इतने समीप ला लिया। मगल नक्षत्र की अपेक्षा उमक वरदान की अधिक सराहना होनी चाहिये। यह पृथ्वी देखो न ! अन्य नक्षत्रों की अपेक्षा यह कितनी अच्छी है।

कक्षा तुम प्रत्येक नक्षत्र के समीप आकर ऐसा हा तो कहते थे।

आकाश किन्तु इस पृथ्वी को देखकर मैं अन्य सभी नक्षत्र भूला जा रहा हूँ। देखा न ! यह पृथ्वी कितना मधुर गीत गाती है। तुम जो इतना अच्छा नृत्य कर रहा था वह पृथ्वी के समीप रहने के कारण ही तो है।

कक्षा पृथ्वी के समीप रहने के ही कारण ? ( सोचते हुए आगे बढ़ कर ) देखू यह पृथ्वी !

आकाश देखो न ! कुछ अधिक आगे बढ़ कर देखो न ! ( आगे बढ़ कर

ह ! उसमें रहने जाने न जाा किगन जीव-जन्तु मर गए । मैं भी तो वही स भा रहा है । मरी भूग वृष्वो पर नहीं बुझी ता भव यहाँ भाया है ?

आकाश भविन तुम यहाँ दत्य नही रह्याग । मरौ इतन भधिव भण है कि तुम उनमें भाग नही सगा गवते । एक हि-गी के बवि न कहा ह कि क्या सटार्ड की कुछ बू दा से दूध का सागर फट सकता ह ?

दैत्य मं तो मन्नाश की भाग तिय है । जो रामन भाएगा उसे ही जलाऊगा ।

आकाश यह भाग जल् ही बुझा दी जाएगी । देखो तुम स्वय शात हान लग हो । जाओ यहाँ से और आकाश गङ्गा में स्नान करो ( पूव की ओर देखकर ) भर यह कौन भा रहा ह । यह तो कोई नया नचन नान होता ह । क्या तेजी से भा रहा ह ।

दैत्य उससे तो मभ भी कुछ डर लग रहा ह । भन्धा तो मैं जा रहा हू ( नीग्रता से प्रस्थान )

आकाश कछा अभी तक मूधित पडी ह । ( पास जाकर ) उठो कछा दत्य का तज समाप्त हो गया ।

कछा ( धीरे धीरे उठत हुए ) म कहीं हूँ ।

आकाश मरे समीप ! आकाश के हाया में । वह भणु-बम का दैत्य बना गया ।

कछा ( सिहरत हुए ) भाह ! वह दत्य बडा भयानक था । म तो उसके शरीर से निकलन वाली ज्वालाभा से ही सुलगी जा रही थी ।

आकाश यह दत्य कुछ समय बाद देवता बन जायेगा ।

( दूर से बीच बीच की ध्वनि सुनाई देती है )

कछा ( ध्यान से सुनते हुए ) भव यह कौन भा रहा ह ?

आकाश कोई नक्षत्र होगा। इस स्थान पर नक्षत्रा की क्या कमी ?  
 मैं देखता हूँ कोई बड़ी शक्ति है अणुबम के दैत्य का भी  
 उससे डर लगता है। इसीलिए वह यहाँ से भाग गया !

कच्चा कोई बड़ा दबना होगा। आह ! बड़ा सुन्दर है। अब तो  
 बिल्कुल पास आ गया।

आकाश हाँ, बहुत सुन्दर है।

( स्तूतनीक आता है )

आकाश स्वागत आकाश के माँ।

स्तूतनीक धयवाद !

कच्चा मैं भी आप का स्वागत करती हूँ।

स्तूतनीक आपको भी धयवाद।

आकाश हम लोग आपका परिचय जानना चाहते हैं।

स्तूतनीक मेरा परिचय ? ( मुस्कुरा कर ) मैं अपना परिचय किस प्रकार  
 दूँ। प्रयोग का परिचय क्या ?

आकाश क्या ? अभी अणुबम का दैत्य आया था, उसने भी अपने प्रयोग  
 की बात कही थी। वह तो बड़ा भयानक था और अपना  
 परिचय भी बड़ी भयानकता से दे रहा था।

कच्चा मुझे तो उससे बड़ा भय लगा रहा था।

स्तूतनीक मेरा विश्वास है कि वह अणु का दैत्य भी कभी देवता  
 बनगा।

कच्चा अभी आकाश भी यही बात कह रहे थे। आप भी यही बात  
 कहते हैं। आप स्वयं देवता की भाँति हैं तो दैत्य की भी  
 दरता मानने हूँ। आप अपना परिचय दन का कष्ट करें।

स्तूतनीक मेरा परिचय ही क्या ? मैं एक स्तूतनीक हूँ। सोवियत संघ  
 से आया हूँ। मैं विज्ञान में शान्ति का प्रयत्न हूँ।

आकाश शान्ति के प्रयत्न ! आपका स्वागत है। आप में बड़ा साहस

हैं, जिसमें न जाने कितने शक्ति और सौन्दर्य से रूप सिलने रहते हैं ।

आकाश यह शक्ति और सौन्दर्य का रूप तुम्हें अच्छा लगा ?

कच्चा शक्तिशाली और साहसी किस अच्छे नर्तक लगने का शारा ? परन्तु वे किसी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहते । वे कदाचिन् कठिनाइयाँ को खोजने रहत हैं और कठिनायाँ उसे पाने को व्याकुल रहती हैं ।

( विस्फोट । कक्षा चौंकर ) वह देवो—वहाँ से अग्नि की लपट उठ रही है ?

आकाश ( देख कर भीहें सिकोड़ कर ) पृथ्वी के उठी हुई ज्ञात होती हैं । कहीं फिर किसी दाय की क्रोधाग्नि तो नहीं है ?

कच्चा मुझे डर लग रहा है । नहीं वसी अग्नि नहीं है । इस अग्नि से तो एक यान चल रहा है ! ओह कितन वेग से चल रहा है ! सार गुरुवाक्पण और अन्तरिक्ष की किरछा को चुनौती देता हुआ यह उल्का पिण्ड तो समीप ही आ गया ।

आकाश उसके भीतर कोई व्यक्ति ज्ञान होता है ।

( मानव का प्रवेश )

आकाश कितना निर्भोक पात होता है । ( आगे बढ़ कर ) तुम कौन हो ज्योति किरण ?

मानव मैं मानव हूँ । पृथ्वी से आ रहा हूँ ( रुक कर ) क्या मुझे तुमसे भी युद्ध करना होगा ? अभी तक किए गए युद्धों की क्या समाप्ति नहीं हुई ? युद्ध युद्ध

कच्चा न न युद्ध युद्ध नहीं । मैं मैं तो शक्ति और सौन्दर्य की उपासिका हूँ । अभा यहाँ एक दत्य आया था वह बिना युद्ध के ही संहार करना चाहता था । ये स्थिर रहने वाला आकाश है और मैं मैं तो परिक्रमा करन वाली हूँ ।

मानव म किसी को भी अपनी परिक्रमा करने का अधिकार नहीं देता । किसी भी परिधि का केन्द्र बन जाना स्थिरता है, और मैं स्थिरता में विश्वास नहीं करता ।

कक्षा न न तुम स्थिर न रहो मानव ! तुम गतिशील बने रहो । म तुम्हारी गति का ही केन्द्र मान कर उतने ही बग से तुम्हारी परिक्रमा करूँगी ।

मानव तुम बढिमती पात होती हो ! तुम्हारा परिचय ?

कक्षा ( सजित होकर ) मेरा मेरा परिचय क्या ? म कक्षा हूँ । साहसी व्यक्तिया के चरणा की रेखा हूँ ! अभी एक सूतनोक आया था !

मानव मन ही उमे वायुमण्डल का पता लन के लिए भेजा था । वह तो अब अपनी परिक्रमा समाप्त कर रहा होगा !

आकाश तुम कहाँ जा रह हो मानव ?

मानव चन्द्रलोक ! अपनी ही पृथ्वी के उस भाग में जो सृष्टि के प्रारम्भ में ही हमसे बिछुड गया था । हम उससे पुन अपना सम्बन्ध जोड़ेंग ।

आकाश क्या पृथ्वी तुम्हारे निवास के लिय यथष्ट नहीं ?

मानव छोटी से छोटी वस्तु मथेष्ट हो सकती है और बड़ी से बड़ी वस्तु भी यथष्ट नहीं ! यह तो प्रवृत्ति की लिशा है । क्या आप भी परिस्थितिया के अनुसार घटत और बढ़त नहीं है ?

आकाश परिस्थितिया को रूप देने के लिये मुझे अनेक रूप धारण करन पडत हैं ।

मानव तो फिर मानव भी तुम्हारी प्रवृत्ति का अधिकारी है । एक यान पूछता हूँ !

कक्षा मुझमे भी तो कुछ पूछो मानव !

मानव चरत समय तुमसे भी पूछूँगा, कक्षा रानी ! लेकिन यह प्रश्न



आकाश के लिए है !

आकाश मन सृष्टि के आरम्भ से ही प्रत्यक्ष प्रश्न का उत्तर दिया है ।

मानव इतना गम्भीर प्रश्न नहीं है । मैं तो यही पूछना चाहता हूँ कि यदि कोई वस्तु या व्यक्ति अपने घर में ही सन्तुष्ट होकर बठ जाए और उनके समीप रहने का मन नहीं पड़ोती हों उनसे बात भी न करे तो ऐसे व्यक्ति को तुम क्या कहोगे ?

आकाश जन्म !

मानव तो हमारी पृथ्वी के पड़ोस में जो भ्रमण नष्ट है जो हमें प्रतिरात्रि को निमंत्रण देकर बुलाता है क्या उनके समीप जाना कोई भ्रमण है ?

आकाश नहीं !

मानव तो हमारे सबसे समीप चंद्र है । आज हम वहाँ जा रहे हैं । कल बुध मंगल वहस्पति और शुक का निमंत्रण भी स्वीकार करेंगे ।

आकाश मैं तुमसे प्रसन्न हूँ मानव ! तुम्हारे साहस की क्या भ्रमण रहेगी !

कक्षा मैं भी तुमसे प्रसन्न हूँ मानव ! तुम महान हो ॥

मानव अब तुमसे पूछता है क्या रानी ! मानव की इच्छा का क्या महत्व यदि वह काय में परिणत न हो ?

कक्षा इच्छा तो वही साधक है जिसकी सेवा में काय सेवक की भाँति पहुँच जाता है ।

मानव तो काय को मैं सेवक बनाना चाहता हूँ ।

कक्षा यदि कोई सेविका बनना चाह तो ?

मानव ( मुस्कराकर ) इसका निश्चय तो सेविका पर ही है । मेरे पास इतना समय नहीं है । मैं अब भाग दूँगा ! दोना को नमस्कार करता हूँ ! ( प्रस्थान )

आकारा तुम्हारी यात्रा मञ्जुलमय हो मानव !

कक्षा मानव ! तुम्हारी जय हो ! आज से म तुम्हारी गति की ही  
बच्चा बनूँगी ! तुम्हारे चरणों की रेखा में मैं रग भरूँगी !

आकाश ! तुम मानव की गति के लिए और भी विस्तृत  
बनो ! म उसकी प्रगति के चरणों में माला बन कर समर्पित  
हो जाऊँगी ! चलो !

[ दोनों का प्रस्थान ]





# चन्द्रलोक

[ विज्ञान और मनोविज्ञान पर आधारित रूपक ]

## पात्र

डा० शेरर	एक महान वैज्ञानिक जिसने गुप्त रूप से अनुसंधान करते हुए चन्द्रलोक तक पहुँचन का सफल प्रयोग किया है ।
कुमारी मञ्जुल	डा० शेरर की पुत्री ।
डा० दिलीप	विक्रित्सा शास्त्र में निपुण डाक्टर ।
चन्द्रपुरुष	चन्द्रलोक का निवासी मानव ।
चन्द्रनारी	चन्द्रलोक की मानवी ।

सन १९५६ ई० ।

चन्द्रलोक में सूर्यादय का प्रथम ग्रह ।

चन्द्र लोक के भू-गर्भ का एक कक्ष । ऊपर लगे हुए एक यत्र से नीले प्रकाश की एक छोटी सी झील बन गई है जिसमें प्रकाश जल की भाँति प्रवाहित हो रहा है । कक्ष में यह एक नीले बादल की भाँति भूल रहा है जिससे चारों ओर स्वच्छ और निमल ज्योति फल रही है । कक्ष के कोने में स्थित दूसरे यत्र से जमी हुई पतली हवा तरल होकर प्रवाहित हो रही है । इस्पात और प्लटिनम से मिली हुई धातु से बठने के अनेक तारिकाकृत स्थान बन हुए हैं । यद्यपि यह कक्ष चन्द्र के घरातल से तीन हजार फीट से अधिक गहराई में है परन्तु सामने ही पतले रजतपट पर विद्युत तरंगों से आकाश का चित्र लिखा हुआ है जिसमें नक्षत्रों की घमक सहस्र गुनी होकर जगमगा रही है । दूसरे रजत-पट पर समस्त चन्द्रलोक का दृश्य है जिसमें स्पष्ट के आकार के ऊँचे ऊँचे पहाड़ और बड़ी-बड़ी नहरी लाइयाँ हैं । वहाँ जमी हुई सूक्ष्म वायु की लहरें स्थिर होकर रह गई हैं । गणित और ज्यामिति के सहारे सारा कक्ष ऐसे घुम्बकीय क्षेत्र में सवारा गया है कि कक्ष के मध्य में रखे हुए यत्र का कोई एक घटन दबाते ही कक्ष का सम्बन्ध चन्द्र के ऊपरी घरातल से हो जाता है और इच्छित नक्षत्र की किरण कक्ष में प्रवेश कर जाती हैं । वातावरण में एक सी लगातार हलकी ध्वनि हो रही है जसे आकाशवाणी का प्रसारण समाप्त होने पर बुले हुए रेडियो-सेट से सूक्ष्म वायु की ध्वनि निकलती रहती

है। बीच-बीच में दूर से किसी गस के विस्फोट की ध्वनि निकलती है अथवा किसी भटके हुए उल्लास का घण्टर नाद सुनाई पड़ता है जो धीरे धीरे मन्द होकर शून्य में विलीन हो जाता है।

तारिका कृत मंच पर बसठ हुए डा० शंकर अपने हाथ में एक यंत्र लेकर देख रहे हैं। मजल आशान्त के चित्रपट को देख रही है। प्रसन्नतापूर्ण गंधों में मजल के बसठ से उल्लास की घाणी निकल रही है।

मजल ( एक पूरी हसी हस लने के बाद ) चन्नाव । इस चन्लोक को छोड़ कर अब वही जान को जी नहीं चाहता पिता जी ! देखिए इस चित्रपट को विद्युत् तरंगा से सारा आकाश प्रति विम्बित हो रहा है । आकाश में नक्षत्र मंडल ऐसे जगमगा रहें हैं जैसे अमन पृथ्वी के गुलाब के फूल पर भोस के बिन्दु चमकते रहते हैं और इस दूसरे चित्रपट पर चन्द्रनोक कैसा दीख रहा है । ओह बिलकुल स्पज के आकार का । बढ-बढे ऊंचे पहाड़ और गन्री खाइयाँ । ऐसा भात होता है जैसे किसी बन्दिया का भरीदार चहरा हो । ( हस कर ) भरीदार चहरा ! देखिए न ।

डा० शंकर ( ध्यानमग्न मुद्रा में ) हैं ।

मजल और पिता जी । डा० तिलोप कहते थे कि गणित और ज्यामिति के सहारे सारा कच ऐसे चुम्बकीय क्षेत्र में सवारा गया है कि कच के मध्य में इस यंत्र की कोई भी बटन दबा दीजिये मनचाह नक्षत्र की किरण इस कच में आ जाती है । सूर्योत्थ के समय मन पृथ्वी की किरण की बटन दबाई थी । सारी पृथ्वी चित्रपट पर लिच गई बिलकुल नारंगी जसी । उसमें मैं अपना प्यारा भारतवर्ष देखा था । यहाँ से मने अपना

प्यारा भारत देखा था ।

डा० शेखर ( पूववत्त गम्भीरता से ) हैं ।

मंजुल अब यही देखिए पिता जी ! कमरे की छत से प्रकाश पानी की तरह वह रहा हूँ जैसे कोई सरोवर हूँ । बिनकुल निमल नीला प्रकाश ! बहुत विचित्र बातें हैं । हवा को ही लीजिये । अपनी पृथ्वी पर तो हम हवा में साँस लते थे । यहाँ जमी हुई हवा साँसें हूँ जैसे आइसक्रीम हूँ ! ( हसती है ) हवा की आइसक्रीम । ( फिर हसती है ) और अगर चलने के लिए पर उठाए तो उछल जाऊँ हूँ बांस गज, विलकुल मूढ़क की तरह । ( कुछ गम्भीरता से ) पिता जी । अगर आपकी तरह मैं भी अनुसंधान करूँ तो कहूँगी कि मेडक, चन्द्रलोक का ही जीव होगा । उछलते उछलते चन्द्रलोक के किनारे पहुँचा होगा और फिर जो उछला होगा तो ठीक हमारी पृथ्वी के बीचोबीच घूम से गिरा होगा । तब से बेचारा उछल ही रहा हूँ । वही चन्द्रलोक मिलता ही नहीं उसे ।

डा० शेखर ( गम्भीरता से ) हाँ ।

मंजुल अरे आप तो कुछ बोल भी नहीं रहे हैं पिता जी ! कौन-सा यत्र देख रहे हैं ?

डा० शेखर अपने राकेट-यान का ही यत्र हूँ जिसकी टर्मिनल लौटते समय आवश्यकता होगी ।

मंजुल अमा बोजिये पिता जी मैं आपसे गंभीर चिन्तन में बाधा डाली । मैं बहुत दुःख हूँ ।

डा० शेखर नहीं मंजुल ! अपनी पृथ्वी पर पुनः लौटने की योजना बना रहा हूँ । वहाँ प्रसन्न न हो जाऊँ, इसलिए यह नवीन यत्र बना रहा हूँ । इसके लिये बहुत सावधानी चाहिये ।

मंजुल यह तो ठीक है किन्तु पिता जी ! अपनी हमें यहाँ घाएँ न ही



रह सकता। न वहाँ हवा है न पानी। ज्वानामुग्नी पथना के विस्फोटों और गूथ की घससह धूप १ इम घाटे स चन्द्र का सब कुछ घान लिया। जैसे यह प्रकृति का दंड हो। घससह गर्मी और घससह शीत। तिन म घरातल का तापमान जाननी हो कितना होता ह ? पानी के उबलन के विन्दु स ६० डिग्री अपिक् और शीतमान होता ह बर्फ के जमन के विन्दु से २१० डिग्री नीचे।

**मजुल** भाफ इतनी गरमी और कतनी ठंड ? जस दाना में हाठ लगी हो। पर पिता जी आप तो बड वज्ञानिक ह। कभी मूयु का रहस्य खोजते ह कभी चन्द्रलोक तक खन जाते ह। इस तीखी गरमी और करारी ठंड को भी ठीक कर दीजिय न ?

**शेरर** इसकी अपेक्षा यही अपेक्षा ह कि भू-गभ में निवास किया जाए। चाँद की मिट्टी सड कर सोखली हो गई ह इसलिय चन्द्र के निवासिया न भी यही रहना ठीक समझ। उन्होन विज्ञान में जसी उन्नति की ह वसी हम लोग भी नहीं कर पाए।

**मजुल** यह आपन कसे जाना पिता जी ?

**शेरर** उनके यत्रा से। अब यही यत्रा नो ( पास से एक यत्र उठाते हैं ) जो यही के लोग हमें बल दे गए ह। देखो इसे। इस यत्र से विश्व की कोई भी भाषा समझी जा फरती ह। जब चन्द्र का कोई निवासी बोलता ह तो यह यत्र बीच में रख दिया जाता ह। उस और से उसकी भाषा प्रवश करती ह इस और स वह हिंदी बन कर निकलती ह। इस और से हिन्दी प्रवश कर उस और चनीय भाषा बनकर निकलती ह। ध्वनि सचार के लिए उहान विचित्र प्रकार के ईयर का निर्माण किया ह जो इस भू-गभ में ही संभव ह। घरातल पर नहीं। इसी इयर और भाक्सिजन से इस चन्द्र के भू-गभ में हवा

बनती ह। देखो वह यत्र। ( सकेत करते हैं ) बिना शब्द किए चल रहा ह। इसी हवा में हम और चंद्र के निवासी साँस ले रहे ह।

**मंजुल** सचमुच ! बड़े आश्चर्य की बात ह। और यह भी तो देखिए ! ( ऊपर छल की ओर सकेत करती है ) प्रकाश की भील जिससे प्रकाश पानी की तरह बहता ह। पिता जी ! ये चंद्र के निवासी मुझ बहुत अन्ध लगते ह।

**शेखर** लाखा वर्षों का इसका इतिहास ह। य हमसे अधिक सम्य ह। चन्मा हमार पृथ्वी का ही भाग था जो उससे टूट कर अलग हा गया। यह चंद्र हमारी पृथ्वी से छोटा था इसलिए यह ठडा हुआ और वह अन्क सम्यतामा से गुजरा। उन सम्यतामा से गुजरने के बाद वह प्रकृति और मानवता के सब गृहस्थ जान गया। इगने ईर्ष्या घृणा और गुढ का अन्तिम रूप देल लिया अब तो वह प्रेम और विश्व वधुत्व का उपासक ह। उसका विधान शान्ति और सुग के लिए न जाने कितने आविष्कार कर चुका। मैं समझता हूँ कि एटम बम से अधिक इनके प्रेम में शक्ति ह।

**मंजुल** पिता जी ! इन लोग के सम्यच में एक बात पूछना चाहती हूँ। इन चंद्रवासिया के पर छोन् और गिर बड़े क्या होने ह ?

**शेखर** प्रकृति ने ही उन्हें यह रूप दिया ह। तुम जानती हो कि यहाँ चन्लोक में गुरुत्वावपण बहुत कम ह। वह हमारी पृथ्वी के के गुरुत्वावपण के छठे भाग से अधिक नहीं ह। इसलिये चलने में उन्हें न तो महनत करनी पती ह और न अधिक चलने की आवश्यकता ही होती ह। यहाँ एक डग में बीन गज तक उदा जा सकता है।

**मंजुल** यह तो मैं स्वयं बह रही थी।

शेखर तो पर से परिधम न सन में इनक पर छोटे रह गए ह । सिर इसलिये बड़ा है कि य सोण बड़ बुद्धिमान और मेयावी ह । इलान सबडो आविष्कार कर डान ह । मस्तिष्क से अधिन काम सन के कारण सिर बन्ग हो गया ह । लकिन दसन में मुन्डर और स्वस्थ ह ।

मजुल अगर हमनोग कुछ न्ति यहाँ रह गए ता इटो की तरह हो जावेंग । सिर बडा और पर छोट । छोटे पर होन स म साडी कसे पहिनुगी ?

शेखर तुम भी एही की भाँति सफ सचीती धातुषो के रूपद सपेट लना ।

मजुल तो फिर खिलोने की गुडिया और मुझमें अन्तर क्या रह जायगा ? बिनकुल गडिया जसी दिखूंगी ।

शेखर तू तो मर लिए सदब एक छोटी सी गुडिया ह ।

मजुल अर्था पिता जा । एक बात और ध्यान में उत्तम गई । यहाँ भू-गर्भ में रहन वाल मानवा में जो हम सतह पर मिले थे इतना अन्तर क्या ह ?

शेखर मन कहा न प्रकृति के प्रभावा से ही शरीर में भे हो जाता ह । जैसे अफरोका में रहन वाल हबशिया का शरीर हमारे शरीर स रूप रंग में कितना भिन्न होता ह । इसी तरह चन्द्रनोक के ऊपरी सतह पर रहन बानो का चमडा अधिक कठोर और माटा हो जाता ह जिससे व गर्मी और शीत की अधिकता सहन कर सके जसे बधुव का चमडा होता ह न बसा ही ।

मजुल अर्था यही मानवों के अतिरिक्त और कोई जीवधारी नहीं रहत ।

शेखर नहीं ।

मजुल क्या ? हमारे मही तो साया प्रकार के जानवर ह हाथी से

लेकर मन्धर तक । आदमी से लेकर ऊर्विनाव तक ।

**शेरसर** चन्द्र के घरातल पर पानी और हवा तो हू । जगल भी नही ह । जले हुये पहाड और ज्वालामुखी से बने हुये गडडे ह । मछली, मेढक, बत्तूर भानू, कहीं रहेंगे ? यह तो मानव की बुद्धि ह कि वह गर्मी और शीत से अपने को बचाकर भू-गम में चला आया । बड-बडे नगरा का निर्माण किया और अपनी शक्ति से उसने जीवन के लिय सभी आवश्यक वस्तुमा का आविष्कार कर लिया । जीवन के लिए उसने पृथ्वी तल निकाल लिया और पानी के लिय इधर को तरल कर लिया । भोजन पानी के बिना साधारण जीव कहीं से हाग !

**मंजुल** तो प्राकृतिक भोजन हीन के कारण यहाँ कोई बीमार तो पडता ही न होगा ?

**शेरसर** बिलकुल नही । बल एक चन्द्रनिवासी स बातें हुइ थी । वह कहता था कि यहाँ कोई वामार ही नहीं पडता ।

**मंजुल** इसी यत्र से आपन बातें की हागी ।

**शेरसर** हाँ, और कोई दूसरा साधन ही क्या था ? वही तो यह यत्र लाया था । धैन उससे यहाँ के जीवन के सम्बन्ध में बहुत सी बातें पूछ डाली । तुम तो दूसरे बस में बड तारों के प्रतिबिम्ब देख रही थी ।

**मंजुल** मैं होती तो मैं भी बहुत सी बातें पूछती ।

**शेरसर** फिर कभी पूछ सना । हाँ, तो वह कह रहा था कि यहाँ कोई बीमार हा नहीं पडता । आकारा क तारों की भाँति सभी स्वास्थ्य से समकत रहते ह ।

**मंजुल** तारा की भाँति समकत रहत हँ पर कभी-कभी तारे टूटते भा तो ह ।

**शेरसर** हाँ टूटते ह ! जब कहीं काई विस्फाट हागा है तो उसकी अग्नि

में चल कर या किसी भूमि की दरार में दब कर ये लोग मर जाते होंगे। सबिन कभी बीमार नहीं पड़ते। सग तन्मून रहत ह ( रुक कर ) डा० तिलोप कहाँ है ?

**मजुल** वे एक चद्रवासी के साथ किसी गुफा में घने गये ह। वे यहाँ भी अपनी दवाइयाँ खोज रह ह। भला यहाँ उन्हें कौन सी दवाइयाँ मिलेंगी ?

**शेखर** वे यहाँ की भूमि की परीक्षा कर देखना चाहते हैं कि चद्र निवासियों की तन्दुरस्ती का क्या रहस्य ह। मरी घारणा कुछ ग़ौर ह। यहाँ के निवासी इसनिय तन्दुरस्त ह कि उन्हें किसी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं ह। यदि मनुष्य चिन्ता के शिकज से छूट जाय तो

( सहसा एक यत्र से विचित्र प्रकार सीटी की आवाज आती है। )

**मजुल** ( चौंकर ) यह क्या श है पिता जी !

**शेखर** ( उठकर ) ठहरो म समझन की चपटा करता हूँ। ( एक क्षण सीटी की आवाज ध्यान से सुनते हैं। सीटी के बन्द होने पर ) यह सोवियत संघ का संदेश ह। मुई जिम अचार पर ह वहाँ साइबेरिया का अणु केन्द्र ह।

**मजुल** सोवियत संघ का क्या संदेश ह ?

**शेखर** देखो म अणु भाष-यत्र सामन रहता हूँ। जो भी भाषा होगी उसका स्थान्तर हिंदी में हो जायगा।

( यत्र रखने की आवाज होती है। सीटी फिर एक बार बजती है और थोड़ी देर बाद रुक जाती है। फिर एक भारी स्वर में संदेश सुनाई पड़ता है )

हलो हलो चन्द्रलोक चद्रलोक हमारा ल्यूनिक ठीक स्थान पर पहुँचा हलो अब हम आदमी भेजने का

प्रयत्न कर रहे हैं ल्यूनिक में हमारा राज्य चिह्न है हलो राज्यचिह्न हसिया और हथोडा ल्यूनिक में एक ट्रासमिटर भी है। वेव लेख्य है ००१०४ उसी से चन्द्रलोक से सदेश भजिये। हलो चन्द्र निवासी सदेश की तरंग भजिये। तरंग भजिये। हलो हलो तरंग भजिये।

( लगातार किसी तार जसा वम्पन होता रहता है। )

**मजुल** यह सोवियत सभ कौन सा सदेश भजने को कहता है ? आप कोई सदेश भजेंगे ?

**शेखर** सदेश भेजू ? लेकिन कैसे भज सकता हूँ ? धनक कठिनाइयाँ हैं। पहली कठिनाई तो यह है कि चन्द्र के घरातल पर सूर्य डूबन और शीत बढ़न से पहले किसी चन्द्रवासी को भेजा जाय जो सोवियत सभ द्वारा भेज गय ल्यूनिक की खोज कर और उसमें स ट्रासमिटर निकाले और दूसरी कठिनाई धनक आप को प्रकट करने की है।

**मजुल** पिता जी ! भावुक तो आप स्वभाव स ही हैं। फिर अपनी इस भावुकता में अपना भारत को ही सदेश भेज दीजिये।

**शेखर** भजन का प्रयत्न कर सकता हूँ पर ट्रासमिटर नहीं है। दुवारा जब आऊँगा तब भजना प्रन्धा हागा।

**मजुल** और यदि इस बाब सोवियत सभ के लोग आ गए तो यहाँ पहली बार आने का श्रेय उन्हीं को मिलगा।

**शेखर** श्रेय किस मिलगा ? हमलोग अपनी राष्ट्र ध्वजा यहाँ छोड़ जायेंगे।

**मजुल** तब तो रूसी बानिक आश्चर्य में पड जायेंगे कि भारत न विज्ञान में चुपचाप जितनी प्रगति कर ला।

**शेखर** अभी तो हमें चन कर सकार को यह सदेश देना है कि चन्द्र-लोक में हम सब अपनी शत्रुता भून कर एक साथ निवास कर

राखती है । पुण्यी और चण्मोक गुण और शांति के दो तिनारे हैं । मह! भी हम घना तिनार के लिए विरगुन ममि पा राखती है ।

**मजुल** ठीक है पिता जी । हमारे देश की बङ्गी हुई जनसंख्या से हमारे प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल जी बहुत चिंतित हैं । उनकी चिन्ताएं कम हो जायगी । भोजन और जनसंख्या का प्रश्न हमारे देश के सामने गंभीर रूप से है । ( रुक कर ) पिता जी ! घापसे भूल तो नहीं लगी है ।

**शेरर** नहीं बटी ! यहाँ तो भूल-प्यास घानस-भी का अनुभव हो नहीं होता ।

( सहसा दूर से विस्फोट की ध्वनि सुनाई देती है । )

**मजुल** यह वैसा विस्फोट हुआ पिता जी ।

**शेरर** इस भू गम में चण्वासियो के अनक प्रयोग बना करते ह । इन्ही प्रयोगों से कोई विस्फोट हुआ होगा ?

**मजुल** इस विस्फोट से हमारा यह बंध भी हिल रहा है ।

**शेरर** चिन्ता की बात नहीं । यह बंध एसी धातु से बना है जो हमारा यहाँ के रबर की भाँति है । यह भंग तो सकता है टूट नहीं सकता । बल मन इसकी परीक्षा की थी ।

**मजुल** यहाँ की सभी बातें विचित्र हैं । जड़ और चतन एक से हैं । धातुएँ टूट नहीं सकती मनुष्य भूल प्यास का अनुभव नहीं करत ।

**शेरर** भू-तत्त्वा को ग्रहण करन से भूल और प्यास की अनुभूति शरीर भूल ही गया है । जीवन बिना धके एस चलता है जैसे अपनी पृथ्वी पर गगा जी का प्रवाह है जो बिना धके शताब्दिया से एक सा बह रहा है । ( रुक कर ) तुम्हें भी शायद भूल न लगी होगी ।

मजुल मं आश्चर्य कर रही हैं पिता जी ! दो दिना से मने कुछ भी नहीं खाया और शक्ति पहले जमी ही ह। न भूख ह, न व्यास ।

( सहसा तार के कपन जसी ध्वनि होती है । उसके साथ ही डा० दिलीप का प्रवेश )

डा० दिलीप ( आते ही उल्लास के स्वर में ) बधाई ह डाक्टर शरर ! बधाई ह । भारत का बधाई दो । भारत को बधाई दो ।

शरर किस बात को बधाई ?

मजुल डा० दिलीप ! आप तो उड़ते हुए से आ रहे ह । ऐसी कौन सी बात हो गई जिससे आप बधाई बिल्ला बिल्ला कर कह रहे हैं ।

दिलीप डा० शरर ! कुमारी मजुल ! हमने अमृत रस प्राप्त कर लिया । भारत न अमृत रस प्राप्त कर लिया । मैं तन्दुष्ती का रहस्य खोज लिया खोज लिया । हमशा के लिए खोज लिया । अमृत रस अमृत रस ?

शरर अमृत रस ? किस प्रकार का अमृत रस

दिलीप मं ओपधियो की पहिचान के लिए यहाँ की भूमि की परीक्षा कर रहा था । उसी समय यह हाथ आ गया । अमृत रस ।

मजुल बस ?

दिलीप तुमने अभी किसी विस्फोट की आवाज सुनी ?

शरर हाँ, अभी अभी सुनी थी ।

मजुल घर उससे तो हमारा धातु निर्मित कमरा भी हिलन लगा था ।

दिलीप मन ही विस्फोट बिया था । एक चंद्रवासी की सहायता से एक अणु चक्र चलाया । भगवान के मुशान-चक्र की तरह । एक विशाल भू-व्यड उसड गया । उसके उतडते ही धा की भाँति एक बिबना सप्त पचाय भूमि की दरार से सटक गया साथ



ही एक हाथ का घरा भी दीख पया ।

शेखर हाथ का घरा ?

दिलीप हाँ हाथ का घरा ! पाँचा ऊगनियाँ घोर कलाई । इग हाथ के साथ बहुत सी बहुमूल्य वस्तुएँ भनक प्रकार के रतन घोर यह विचित्र यत्र निकल पड । वे शताब्दियाँ पूर्व यहाँ की सम्पत्ता के चिह्न मान होते थे घोर वह हाथ बिनकुन हमार घापने हाथ की भाँति है जो एक पूण विवसित मानत्र के हाथ की सूचना देता ह । प्लटिनस के भनक यत्र है । वन चन्दासी भी नही समझ सका कि ये यत्र किस भाविष्कार के है घोर यह हाथ किसका ह ?

मजुल वह हाथ स्त्री का ह या पुष्य का ?

दिलीप यह म नहीं कह सकता ।

मजुल उस हाथ में झगूठी थी ?

शेखर तुम तो पय्यी के श्रृंगार की बात यहाँ भी साचन लगी बटी ।

दिलीप यत्र घोर हाथ चाह जिस सत्य की सूचना दे पर म तो कहूगा कि वह सफ पनाय अभुत रस ही ह ।

शेखर डा० न्दोप ! डाक्टर होकर तुम सहज ही कल्पना बसे करन लग ?

दिलीप यह कल्पना नही ह डाक्टर ! यह वास्तविक सत्य ह । जैसे ही यह सफ पदाय भूमि की दरार से उटका बसे ही भरे साथ के चन्द्रवासी न जिज्ञासा से उसे अपने हाथ में ल लिया घोर उसका स्वाद चखा ।

शेखर स्वाद चखा ?

दिलीप चन्दासी निर्भीक तो होते ही ह । उसन हाथ में लिया घोर एक क्षण में उसका गुण पहिचान कर मुख में डाल लिया ।

मजुल फिर क्या हुआ ?

**दिलीप** पत्थर के मुख में जाते ही उस चन्द्रवासी के मुख से प्रकाश की किरणें निकलन लगी थीं उसमें इतनी शक्ति थी कि वह एक ही छलांग में दो बार उम गुफा के चारों ओर घूम गया ।

**मजुल** तब तो सचमुच ही वह अमृत रस है । शायद इसी बात को समझ कर हमारे प्राचीन ऋषिया ने चन्द्र को सुधाकर या सुधा धर कहा है । डा० दिलीप हमलोग पृथ्वी में शरद पूर्णिमा के दिन खुले आकाश के नाचे दूध रख दते हैं । रात भर चन्द्रमा उस पर अमृत का रस डालता रहता है । सुबह हमलोग वही दूध भी लते हैं । शायद शरद पूर्णिमा के दिन चन्द्र के इसी भाग से किरणें निकलती होंगी ।

**दिलीप** बिलकुल सम्भव है । डाक्टर शेखर आप किसी चिन्तन में डूब गए ?

**शेखर** वह चन्द्रवासी वहाँ है जिसके मुख से प्रकाश की किरणें निकलन लगा थी ?

**दिलीप** वह उस स्थान से उसी समय चला गया । बड़े-बड़े प्राचीन यंत्रों को जो तीन ऊगली से हो उठाकर वह अमृत साधिया को सूचना देन चला गया । वहाँ से चोटते समय वह सफेद पत्थर में अमृत साय ले आया । देखिए हममें से भा कितनी किरणें निकल रही हैं । हमारी यात्रा तो सफल हो गई डाक्टर ! मैं आपको बित्तन धरदाँ दूँ कि आप मुझे अमृत साय से धार । पृथ्वी पर लौट कर जब हमलाग जायेंगे तो हमें यह चाहें जिस रोगी को अन्धा कर सकेंगे ।

**मजुल** जरा मुझे दीजिये मैं चला ।

**शेखर** ( रोस्त हुए ) अभी नहीं । पहले मैं हमकी परीक्षा करूँगा । हमला जो प्रभाव वहाँ के मानव पर पड़ा है वह हम पर भी

पडे यह आवश्यक् नहीं है। सम्भव है प्रभाव कुछ दूररा ही हो। इसकी परीक्षा आवश्यक् ह।

दिलीप डाक्टर आप चाहें जसी परीक्षा करें किन्तु मुझ विश्वास ह कि हम पर भी इस रस का प्रभाव बढा ही पडगा। दगिये यह पत्थर धातु ह इस पात्र में ह किन्तु अपन तेज के कारण भार पार देता जा सकता ह।

( नेपथ्य में कोलाहल। नारा पुरषों की यह कोलाहल ठोक बसा ही है जसा बांसुरी और मदन की ध्वनि का मिला जुला रूप होता है। यह कोलाहल धीरे धीरे पास आता जाता है। )

शेखर यहाँ के निवासियों का कोलाहल। यह क्या हो रहा ह ?

मजुल यह कोलाहल धीरे धीरे पास आता हुआ जान पन्ता ह।

शेखर हाँ पास आता जा रहा ह। इस लोक के इतन निवासी यहाँ किसलिय आ रहे ह ?

दिलीप मरा अनुमान ह कि विस्फोट से मिनो हुई चीजें देख कर ही ये इतन प्रसन्न ह। अपनी पुरानी सम्पत्ता के चिह्न देख कर य फून नहीं समात। देखिय कितनी शीघ्र ये द्वार पर आ गए।

मजुल स्त्रिया का कठ स्वर अधिक उभरा हुआ ह।

शेखर तो उन व्यक्तियों की बातें समझन के लिय अपन सामन यह भणु भाप-यत्र रखू। कोलाहल कुछ शान्त हो रहा ह।

( यत्र रखने की ध्वनि होती है। यत्र से जो भाषा निकलती है वह बहुत सुरीली है। चन्द्रपुरुष की भाषा सरोद के स्वर की है और चन्द्रनारी की भाषा सितार के स्वर की है। शीघ्र ही कोलाहल शान्त हो जाता है। )

चन्द्रपुरुष (आगे बढ़ते हुए) भारत के महापुरुषा का यश हमारे लोक के सूर्योदय की भाँति सुख देने वाला हो ।

शशेर धयवाद ।

चन्द्रनारी भारत की इस स्त्री का यश तारा की ज्योति की भाँति निखरा रहे ।

मजुल धयवाद ।

चन्द्रपुरुष हम समस्त चन्द्र जनता की ओर से बोल रहे हैं । भारत के पुरुषा ने यहाँ आकर अपने प्रेम का परिचय दिया है ।

शशेर हमारे प्रेम को पहिचानने में आपको कृपा है ।

चन्द्रनारी उस प्रेम के कारण मैं आपको अपने लोक का जन गीत सुनाऊँगी ।

( सितार की मीढ़ के स्वर में ध्वनि उठनी है )

शून्य की गति बीच

रह रहे नाचते अणु के आविर्भूत रूप

रह रहे नाचते

शून्य की नीहारिका के क्षेत्र बिन्दु अनूप

रह रहे नाचते

रह रहे नाचते ।

( कुछ देर तक ध्वनि लहराती रहती है )

मजुल (उस्ताद के स्वरों में) बहुत मधुर है । बहुत सुन्दर है । आपका बँठ कितना कामल है । आपके इस प्रेम के लिए अनेक धयवादा ।

दिलीप तारों का संगीत की ध्वनि से आपने अपना बँठ मिला लिया है । बहुत सुन्दर । आप जितनी सुन्दर हैं उतना ही सुन्दर आपका बँठ है ।

चन्द्रनारी आप अच्छी बातें करते हैं ।

**शेखर** चाँसोक के नागरिक। आप लोगों ने जिस प्रेम से हम भारत वासिया का स्वागत किया है वह हमारे भविष्य के त्रिये भी मंगलमय है। हमारी पृथ्वी अपने त्रिखंड हुए भंग चाँ से फिर फिर मिन रही है और दोना चोक मनग मनग रूँ कर भी मानव कल्याण के त्रिये आविष्कार करने में एक ही रहेंगे।

**चंद्रपुरुष** हमारे लोक अलग अलग भी नहीं रहेंगे। हमलोग अपने आविष्कारों से एसा प्रयत्न कर रहे हैं कि धारे धोर हमारा यह लोक जिसे आप चाँ चोक कहते हैं आप के लोक से—जिसे आप पृथ्वी कहते हैं—बिना किसी भङ्क से जुड़ जाय और हम दोना एक ही नक्षत्र के निवासी बन जाय।

**चंद्रनारी** आप भी अपने आविष्कारों से यही करें। आप हमारी ओर बढ़ें हम तो आपको ओर बढ़ेंगे ही। यदि हम दोना के लोकों के चुम्बकीय क्षेत्र विचलित नहीं हुए तो हम अपनी कक्षाएँ समीप ल आवेंगे और आकाश के किसी अणु से टकराने की सम्भावना भान ही नहीं पाएगा। केवल सावधानी की आवश्यकता है।

**शेखर** हम भी इसके लिये प्रयत्न करेंगे। हमारे लोक में अब भी मानव युद्ध में विश्वास रखता है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की उत्पत्ति सहन नहीं करता किन्तु हमारा देश शान्ति और प्रेम में विश्वास रखता है आपके सम्पर्क में आकर मानव भावना के प्रति सदैव के त्रिये अपने प्रेम की निधि खोल देगा और दोना के बीच में आप के लोक की अमृत धारा प्रवाहित होगी।

**चंद्रपुरुष** आज हम बहुत प्रसन्न हैं। आपने दूसरे लोक से आकर हमारे लोक का ही अमृत रस हमें दिया है। हमने भी अपने लोक में अपने विस्फोट किए किन्तु अमृत रस हमें नहीं मिला। इसे आप एक अच्छे सयोग की बात समझ लीजिए कि आप के

लोक के एक आविष्कारक ने ऐसा भूमि स्फोट किया कि उससे हमें केवल अमृत रस ही नहीं मिला, बरन हमारी प्राचीन सम्पत्ता की अनेक वस्तुएँ मिली। आज हमारे हृदय में आत्म गौरव की एक नई व्याप्ति जागी है। इस उपकार के लिए हम आपको कुछ भेंट करना चाहते हैं। आप स्वीकार करेंगे ?

शेखर आपका प्रेम ही हमारे लिये बहुत है। हमें आपकी मित्रता चाहिये इससे अधिक कुछ नहीं।

दिलीप मैं केवल आप के अमृत रस का थोड़ा सा हिस्सा चाहता हूँ जिसे मैं अपने लोक में ले जा सकूँ। आपके लोक में तो किसी प्रकार का रोग नहीं है। हमारे यहाँ अभी तक अन्व रोग है। आप के अमृत रस से मैं अपने लोक के रोगों को सँभलाने के लिये नष्ट कर दूँगा।

चन्द्रपुरुष आप जितना चाहें उतना अमृत रस यहाँ से ले जा सकते हैं लेकिन हम कुछ और भी भेंट करना चाहते हैं। उस भी स्वीकार करें।

शेखर वह क्या ?

चन्द्रपुरुष एक चन्द्रकुमारी हम आपकी पृथ्वी को अर्पित करना चाहते हैं। इससे हमलागा में मिलाप तो होगा ही पृथ्वी और चन्द्र भी आपस में मिलने के लिये जल्दी से जल्दी अपनी कक्षाएँ निकट आवेंगे। तब हमारे स्त्री-सुख एक होंगे। हमारी जनता एक होगी। हम दो लोकों के बीच में प्रेम और मन्त्री के प्रति रिक्त फिर कुछ न रह जावें।

मञ्जु मैं आपकी इस भावना की मराहना करती हूँ।

दिलीप लेकिन यह अणु भाषण यत्र नी हम लोगों के बीच में रहना चाहिए जिससे हम एक दूसरे की भाषा न जानने हुए भी परस्पर शान्ति कर रहे हैं। बिना इस यंत्र के हम इस चन्द्रकुमारी

से बिना प्रचार घातें कर सकेंगे । यह चन्द्रकुमारी भी हमसे कुछ नहीं कह सकेगी ।

**चन्द्रपुरुष** यह यत्र भी हम आपकी भेंट करेंगे ।

**मंजुल** घोर फिर मैं इन चन्द्रकुमारी से इगकी चर्चीय भाषा सीमा नू गो घोर इसे मैं अपना ही ले मिलना दूँगी ।

**चन्द्रपुरुष** यह कुमारी हमार लोक म सबसे अधिक सुखी ह । विधान का आविष्कार करन में हमकी प्रतिभा सराहनीय ह । इसकी सहायता से पृथ्वी और चन्द्र परस्पर शीघ्र ही मिलेंग । इसी न आप के सामन हमारे लोक का जन-गीत गाया ह ।

**शेखर** म इस चन्द्रकुमारी की प्रशंसा करते हुए इसका अभिनन्दन करता हूँ । आपकी भेंट सिर माध स्वीकार ह किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी पृथ्वी का जलवायु इस चन्द्रकुमारी के अनुकूल रहगा भयवा नहीं । इसे हानि हो सकती ह और हम आपकी भेंट की सुरक्षा में असमर्थ ही सकते हैं । हमारी पृथ्वी में अनक प्रकार के रोग ह । इसे कोई भी रोग ही सकता ह । इसका प्राण हानि हो सकती ह । फिर हम आपकी क्या उत्तर देंग ? दीर्घ जीवन पर अभी तक हम अधिकार नहीं कर सके । आपके पास अमृत ह हमार पास डालडा जिसके अत्यधिक पयोग से हृत्तम की गति बन्द हो सकती ह । जब हमारी पृथ्वी आपका भेंट स्वीकार करन योग्य हो जायगी तब हम कृतज्ञता के साथ आपकी यह भेंट स्वीकार करेंगे ।

**चन्द्रपुरुष** यह बात सुन कर हमारे हृत्तम में आपके प्रति समवन्ता ह । हमार लोक में प्रकृति के अनकानक रूप ह इसलिय हमारे शरीर में सब प्रकार की परिस्थितिया को सहन करन की क्षमता ह । किसी भी देश म जावर हमारे शरीर स्वस्थ रह सकेंग । किन्तु हम आपकी इच्छा का आन्तर करेंगे । यह

बुमारी यही रहेगी और आज से इसका नाम 'पृथ्वी' होगा ।

मजुल यह नाम तो बहुत ही अच्छा रहेगा ।

**चंद्रपुरूप** हमारी इच्छा का भादर करन के लिये आपको अनेक धन्यवाद । हम भी अपनी ओर से अपनी राष्ट्रीय ध्वजासहित चिह्न के रूप में भेंट करते हैं । कृपया इसे स्वीकार कीजिये । हम लोग तो यहाँ से शीघ्र चल जायेंगे । यदि किसी अन्य लोक का कोई मानव यहाँ आए तो आप इस ध्वजा को दिखला कर कह सकें । कि हमारा चंद्रलोक में सब प्रथम भारत के जनतंत्र के तीन नागरिक आए थे । यह हमारी राष्ट्र ध्वजा स्वीकार कीजिये । (ध्वजा देता है ।) आप इसका सदब सम्मान करें ।

**चंद्रपुरूप** इस राष्ट्र ध्वजा के लिये अनेक धन्यवाद । हम इस ध्वजा को इसी कक्ष में स्थापित करेंगे और सदब ही इसका सम्मान करेंगे ।

**शेखर** हम सब आपके इस निष्ण से सुखी हुए । हम सब सूर्योदय होते ही आपसे विदा लेंगे । हमें आप हमारे मान सब पहुँचा दन का कष्ट करें । इस बीच में अपना यत्र भी ठोक कर चुगा जो लौन्त समय हमारा राकट यान को अधिक शक्ति गानी बना सके ।

**चंद्रकुमारी** आपको यात्रा मंगल मय हो । मैं पृथ्वी हूँ । आप अपने आविष्कारा में सफल हों कि पृथ्वी पृथ्वी में आ सक ।

मजुल यहिन । मैं सदब अपने पिता जो से पृथ्वी चंद्र मिलन के आविष्कारा के लिए प्रेरित करती रहूँगी ।

**चंद्रपुरूप** अब हम सब प्रस्थान करेंगे । आपकी यात्रा मंगलमय हो । आपका अमृत रस आपके पास अभा पहुँचा दिया जायगा ।  
( 'अमृत' चंद्रवासियों के जाने की ध्वनि । कुछ देर गान्ति रहती है )



शेखर हमारी यह यात्रा सफल रही। अब हमारी पृथ्वी और चंद्र का सम्बन्ध अनन्त-काल तक रहेगा। और मानव युद्ध की बात भूल कर प्रेम और विश्व-व्यपत्य की भावना से रहना सीखेगा।

मजुल पिता जी ! हमलोग फिर यहाँ क्या आवेंगे ?

शेखर शीघ्र ही ! अपने राष्ट्र को सूचना देकर। दूसरी बार हम यहाँ अधिक दिना के लिए आवेंगे।

दिलीप तब तक आप अमृत रस की परोक्षा भी कर लेंगे। हम सब अमृत रस का प्रभाव लेकर फिर इस चन्द्रलोक में आवेंगे।  
( कक्ष में चन्द्रलोक के राष्ट्रीय सगीत की तरंग हसकी ध्वनि में फिर आती है। )

मजुल यह सगीत फिर क्या होन लगा ?

शेखर चन्द्र निवासिया के उल्लास का दिन है। वे नाच गान में आनन्द विभार हैं। चलो हम लोग भी दूसरे कक्ष में चलें।  
( सब दूसरे कक्ष में जात हैं। धातावरण में चन्द्रलोक का सगीत गूँजता रहता है। )



## ऐतिहासिक

घरती का स्वर्ग

समय-चक्र

पानीपत की हार

बादशाह अकबर का दीने इलाही

वापू

वीर जवाहर



# धरती का स्वर्ग

[ रेडियो रूपक ]

पात्र

कवि

मेलम

करयप

नील

इरावती

विनयसेन

सुवीर

महीपत

महाराज यशोवर्द्धन

मन्त्री

जयगुप्त

नेपथ्य में दूर से आता हुआ सगीत । कोई गा रहा है ।  
साथ ही भेलम की कल-कल ध्वनि सुनाई पड़ती है । )

( कुछ लय के अनंतर )

बेसर का सौरभ समट कर

लेकर साँस समीर ।

एक बार फिर से जागो

फिर से जागो काश्मीर ।

फिर से जागो काश्मीर ।

काश्मीर क्या फिर से नहीं जाग सकता ? महर्षि कश्यप  
की भूमि काश्मीर ! इसका अतीत गौरव कितना महान ह !  
पवत के रूप में अपनी भुजाएँ उठाकर इसन विश्व के समस्त  
कितन बार अपने पराक्रम की घोषणा की ह । अपने शस्त्रबल  
से भी इसन रणक्षेत्र को तीर्थक्षेत्र बनाया ह । हमारे देश के  
मस्तक पर रखा हुआ यह मुकुट न जान कितन विजय रत्नों से  
प्रभापूण ह ।

इसके गौरव की क्या कितना प्रेरणादायक होगी  
कौन जानता ह । किन्तु वन क्या कहने वाला कौन ह ?  
( दब-दब कल-कल ध्वनि सुन कर ) यह भेलम नन्ही । कल  
कल करता हुई सिंधु से मिचने जा रही ह । इसके तटों पर  
कितन नगर बस कर उजड़ गये ह । उजड़े हुए नगरों पर  
कितने नवीन नगर बने होंगे । क्यों भूलत ! तुम जानती हा  
उन नगरों की समस्या ? उन नगरों का धन । यदि तुम्हारे  
पास बाकी होती तो मैं विजय-पथ के कितन महाबाव्य  
लिखता । तुम कल-कल करता हुई वहीं जा रही हा । यदि

तुम्हारे पारा बाणों नहीं हूँ तो तुम मेरी कवि-बाणी से लो घोर  
 इस महान भूमि की यशाशापा कर दो। भयम ! तुम्हारी  
 सहर्षे भावनाओं की पवित्रता बच जाये और तुम्हारा बल  
 बल नाश बाणों का रूप धारण करे। महाभाग भयम क्या  
 मरा अभिलाषा की प्रतिध्वनि में तुम मेरी कवि-बाणी का  
 उपहार स्वीकार करोगी ? क्या भयम भयम बाला न। मैं  
 अपनी कवि-बाणी की प्रतिध्वनि तुम्हें सौंपना हूँ।

( एक क्षण तक प्रारंभ बल बल ध्वनि )

मेलम ( नारी कठ ) कवि की प्रणाम करता हूँ।

कवि ( प्रसन्नतातिरेक में ) धन्य हो कवि ! तुम बोल उठो ! मेरी  
 प्रार्थना में कितना आग्रह था ! तुम अपने का नहीं रोक सकी !  
 ओह ! तुम कितनी उत्तम हो ! मेरी श्रद्धा स्वीकार करो  
 देवि ! सृष्टि के प्रारम्भ से ही तुम इस भूभाग पर प्रवाहित  
 हो रही हो। इस भूमि का समस्त इतिहास तुम्हारी सहारा  
 पर प्रतिविम्बित हुआ है। क्या यह प्रतिविम्ब शब्दों का रूप  
 ले सकता है ? संपूर्ण देश की इच्छा है कि तुम्हारी बाणी में  
 इस भूभाग का इतिहास गूँज उठे।

मेलम कवि क्या इस इतिहास को सुनने का साहस देशवासियों  
 में है ?

कवि देवि साहस ही नहीं साहस की अग्नि भी है। सामान्य अग्नि  
 बुझ सकती है किन्तु साहस की अग्नि प्राणवायु से घोर भी  
 अधिक प्रज्वलित होती है। मैं ऐसे ही स्वल्प चुनना चाहता हूँ  
 जिनसे साहस की अग्नि शिक्षाओं का रूप ग्रहण कर सके।

मेलम तब मैं तुम्हें निम्न दृष्टि भी प्रदान करती हूँ कवि ! और सृष्टि  
 के भारभ से ही मैं इस भूमि के इतिहास जो मैं भगवान

शकर क मुख से सुना ह का उदघाटन करती हूँ । देखो—  
इन धार देवा—यह प्रलय वृष्टि हा रही ह । यह बरकापात  
धौर ज्वालामुखिया का विस्फोट दखो ।

( प्रलय वृष्टि धौर ज्वालामुखी क विस्फोट का प्रचंड नाद )  
समस्त पृथ्वी जल स प्राप्तावित हो रही ह । सपों की भाँति  
नहरें भयना फन उठाकर धारा का डस रही हैं धौर प्राकाश  
बाना पड गया ह । दग्गो—यह विजली की कडक ( बिजली  
की कडक ) ।

कवि प्राक ! भयानक ह देवि ।

मैलम बहुत भयानक ह ? किन्तु अधिक भयानक दृश्य नहीं लिख  
सकूगी । ( कुछ क्षण रुक कर ) यह प्रलय जल धव उतरन  
लगा ह । ( जल के धहने की ध्वनि ) यह पवत शृंग निकल  
धारा । ये धनक शृंग निकल । जल बहुत नीचे बह कर चला  
जा रहा ह । किन्तु इन भूमि में अभी तक जन भरत हुआ ह  
क्योंकि धारा धौर पवत की श्रेणियाँ हैं धौर जल क निकलन  
का कोई माग नहीं ह ।

कवि सचमुच देवि । य शृंग बहुत ऊँचे हैं । पवत शृंगा के बीच जल  
इस प्रकार शान्त ह जस माता की गोम में शिशु सो रहा है ।

मैलम ( मुस्कराकर ) तुम कवि हा प्रागन्तुक । तो मुनो धनेक वर्षों  
तक यह जल सोता रहा क्योकि निकलन का कोई माग नहीं  
था । धवानक भूकम्प हुआ । पृथ्वी क गभ से धग्नि की  
ज्वालामुखी प्रगट हा गइ ( भूकम्प की भयानक ध्वनि ) पवत  
सह-सह हो गये—धौर जिसे तुमन साता हुआ शिशु कहा  
बह जल फुटना क बल पत कर माता की गोम से बाहर हो  
गया ।

कवि हाँ देवि । सचमुच किउन स्थान से जन बाहर हो रहा ह ।



( जल निकलने की ध्वनि )

**मैलम** अब यह भूमि जलरहित हो गई । किन्तु अनक स्याना पर दल दल घोर गीनी चट्टानें रह गई । कुछ वर्षों परधान् पुत्रर क्षेत्र से महर्षि करयप यहाँ आए ।

**कवि** यही महर्षि करयप हं देवि ? कितना तजोमय शरीर ह इनका नेत्रा से बसो ज्योति निकल रही ह । जान होता ह व अग्नि के साक्षात अवतार हैं ।

**मैलम** हाँ अग्नि के अवतार । अग्नि के तज से ही तो वह श्यामाग बन गए ह । उल्लोम अग्नि से मस्तीभूत चट्टानें देखी । अग्नि ही छद्र ह अग्नि को शक्ति ही सती ह इस कारण उहान इस भूभाग का नाम सती भूमि रख्वा ।

**कवि** अनक वर्षों का इतिहास आपको स्मरण ह देवि । क्या पहिल प्स भूमि का नाम सतीभूमि था देवि ।

**मैलम** अनक वर्षों तक यह भूमि सतीभूमि ही कहलाती रही फिर उन्होन यहाँ घोर तपस्या की और भगवान शकर को प्रसन्न किया ।

**कवि** भगवान शकर प्रकट हो गए । देवाधिदेव शकर को प्रणाम ।

**मैलम** महर्षि करयप न भगवान शकर से प्रायना की कि इस सतीभूमि को अनकानक पुष्पनतामो से आच्छादित कर दें और यहाँ का शय जल एक नदी के द्वारा बाहर निकाल दें ।

**कवि** फिर क्या हुआ देवि ?

**मैलम** भगवान शकर न अपन त्रिशूल से वितरित पयन्त अर्थात बालिरत भर पथ्वी खोदी और एक जल की धारा निकल पड़ी । वह जल की धारा म ही है ।

**कवि** वह जल की धारा तुम्ही हो देवि ?

**मैलम** हाँ कवि । वितस्ति पयत भूमि से निकलन के कारण मरा

नाम वितस्ता ह । मं भगवान् शङ्कर को पुत्री हूँ । उर्हीं की कृपा से म यह पूव इतिहास जान सका हूँ ।

कवि धन्य हो देखि । धमी तूक में समझता था कि स्वामि कातिकेय घोर गणेश यह दो ही शङ्कर के पुत्र ह—तुम पुत्री हा यह पात नही था ।

मैलम मैं भगवान् शङ्कर के त्रिशूल से खानी हुई वितस्ति पयन्त भूमि से उत्पन्न होन के कारण ही उनकी पुत्री हू । कालान्तर में उस जलकोश को भाल मान कर मुझ मैलम नाम द दिया गया ।

कवि भगवति वितस्ते । आज आपके नाम का रहस्य जात हुआ ।

मैलम कविवर मन भगवान् शङ्कर की आज्ञा से इस सतीभूति के स्वान क जल को समटा फिर चारा धार भ्रमण करत हुए यहाँ क जल समूहा को एकत्र कर, यह स्वान निवाम करने योग्य बना दिया ।

कवि आप धन्य हैं देवि । माय ही भगवान् शङ्कर के वरदान से इस स्वान पर नाना प्रकार क पुत्र घोर प उत्पन्न हो गए । बेसर क पुत्र ता विशय रूप से माहक ह ।

मैलम तुम्हारी कविता भी बगर का भाँति होगा ।

कवि दवा तुम्हारी कृपा । फिर क्या हुआ ?

मैलम हमने अन्यान्य महवि करयप न धनक ग्रामा का निर्माण किया । आप घोर नाग जातिया को बनाया । धनक पन किये, घोर अपन पुत्र नील का यहाँ का सम्राट घोषित किया ।—  
मुना—उनका बाणा—

करयप भूमि क आपते सब भूमि सब निररयति ।

भूमि प्रकिया भूताना भूमि सब यरापखुम ॥

सब कुछ इस भूमि पर ही उत्पन्न हाता ह, घोर भूमि

में ही बिलीन होता है । भूमि ही सब प्राणियों की प्रतिष्ठा और भूमि ही सबका परम माध्यम है । इसलिये बल्य नील ! तुम इस सती भूमि का पोषण करो । मैं आज समस्त जनवासियों के समक्ष तुम्हारा अभिषेक करूंगा । तुम यहाँ के सम्राट होकर अपनी सम्राज्ञी के साथ

नील ( बीच में ही ) सम्राज्ञी के साथ ? मैं सम्मत् नहीं सका पिताजी !

कश्यप हाँ सम्राज्ञी के साथ । भूमि का सेवा में सम्राज्ञी का सहयोग आवश्यक है । और सम्राज्ञी के लिये मन यज्ञशाला में एक अत्यन्त सुन्दरी बान्ना भी निरचित कर दी है । यज्ञ की शक्ति भस्म से मन उसके केश बनाप चिह्नित कर दिए हैं जैसे दुग्ध पान करते हुए सर्पों के मख पर दुग्ध के छोट पड़े हैं । जानते हो उस सुन्दरी बाला को ?

नील नहीं पिताजी !

कश्यप हसी की ध्वनि की भाँति मधुर भाषिणी इरावती !

नील ( चौंकर ) इरावती ?

कश्यप ( हसकर ) तुम चौंक पड़ ! जिसके नगाचल मन्द पवन से हिलते हुए कमल कोष को भी लज्जित करते हैं ।

नील पिताजी इरावती नाग-कन्या है हम भ्रातृ हैं । यह संयोग असम्भव है ।

कश्यप हवन कुंड में अग्नि की भुजाओं न साक्षी दी है नील ! इसे कौन असम्भव कर सकता है । इरावती कौन है यह तुम नहीं जानते । तीना नोको में भूलोक उच्छिन्न है । भूलोक में उत्तर दिशा पवित्र है । उत्तर में हिमालय महान है और उस हिमालय में सती भूमि जो भुक्त कश्यप के कारण काश्मीर के नाम से प्रसिद्ध हो रही है । उसी काश्मीर की नाग जाति की

सबश्रेष्ठ सुन्दरी इरावती ! तुम काश्मीर के सम्राट होगे और इरावती काश्मीर की सम्राज्ञी !

नील तब म धपना अभिषेक नहीं होत दूँगा पिताजी ?

फरयप इरावती के कारण ?

नील हाँ पिताजी ! आप किसी नाग जाति के पुत्र का ही अभिषेक करें और इरावती को सम्राज्ञी बना दें । म सम्राट नहीं बनूँगा ।

फरयप वत्स नील ! यह जनता में प्रचारित हो गया है कि तुम इस भू भाग के सम्राट होगे और इरावती सम्राज्ञी । यदि तुमने इरावती को स्वीकार नहीं किया तो नाग जाति विद्रोह कर उठेगी और अनेक ग्राम नष्ट हो जायेंगे ।

नील और यदि इरावती को स्वीकार करने में अनेक ग्राम नष्ट भ्रष्ट हो गये तब क्या होगा पिताजी ?

फरयप इरावती को स्वीकार करने में ग्रामों के नष्ट भ्रष्ट हो जाने का भय है ?

नील हाँ पिताजी नाग क्याए चल होता है । वे विनासिनी होती है । वे धपना प्रणयोपहार अनेक सौन्दर्य प्रेमिया को सहज ही दे देता है । यदि किसी नाग जाति के भाग्यशाली व्यक्ति पर इरावती की कृपा और हो गई तो ?

फरयप ( सौम्यता से ) सावधान नील ! मन से पवित्र हुई इरावती का धपमान न हो ।

नील पिताजी धपमान नहीं करूँगा बल्कि धन राजनीति के व्यय स्थापक है । गरीबों के हृदय का किसी भी नीति के धपन में बरतना शक्ति है ।

फरयप नील ! कुत्तों नारी के पास धर्म-गम्भा और मर्यादा का जो धपन है वह भगवान शहर के त्रिशूल से भी नहीं काटा

जा सक्ता । बुनीन नारी शक्ति ह उधवे पास अग्नि है उसके पास वस्य ह जिससे बड़े-बड़े नागापिराज भी चूर-चूर हो जाते ह ।

नील बिन्तु पिताजी ! नाग कयाभा के पास आत्मसम्मान और मर्यादा तो होती नहीं । परिणाम यह होगा कि किसी भी सौन्दर्य प्रेमी शत्रु से मुझ युद्ध करना पडगा । एव युद्ध नहीं अनक युद्ध पिताजी और युद्ध की अग्नि से राक्षस की रक्षा नहीं हो सकती । इसलिये यदि मुझ इरावती को ग्रहण करना ह तो मैं राजसिंहासन को अस्वीकार करता हूँ । और यदि आप मुझे राजसिंहासन प्रदान करेंगे तो मैं इरावती को अस्वीकार करूंगा ।

कश्यप तुम मूर्ख हो नील ! मन इरावती का सस्कार किया ह । तुम नवपदक हो इसलिये शास्त्र की मर्यादा और मन्त्रों का प्रभाव नहीं जानत । नागकया होने के कारण यदि इरावती का अन्त करण इन्द्रा से अधिशासित ह तो योग शक्ति से उसकी सुषुम्णा में कडलिनी का जागरण ह । उसके सहस्र दन कमल में जो नाद ह वह ससार के समस्त वायों से मधुर ह उसकी कुडलिनी में जो कलात्मक गति ह वह ससार की समस्त कलाओं से श्रेष्ठ ह ।

नील तो पिताजी योग शक्ति में पारंगत इरावती किसी आश्रम की शोभा हो सकती ह सिंहासन की नहीं ।

कश्यप अपनी हठवादिता से भर क्रोध को उग्र बनान का अवसर न दान नील ! यदि यज्ञ भस्म से अभिषिक्त इरावती का निराकार हुआ तो तुम इस भूमि से सदैव के लिये निर्वासित होगे और यहाँ से छ मोजन दूर वानुकुखव में राक्षसों और पिशाचों के साथ निवास करोगे ।

नील क्रोध न कीजिए पिताजी ! इतना क्रोध है तो मैं आपकी आना शिरोधाय कर लूँगा। किन्तु मरौ भी एक प्रार्थना सुनें। सम्राज्ञी होने में पूब क्या इरावती से कुछ क्षणा के लिए भेंट हो सकती है ?

कर्यप अवश्य ! वह यहीं यज्ञशाला में भगवती स्वाहा के समस्त नत जानु होगी। ( पुकार कर ) जयगुप्त !

जयगुप्त ( नेपथ्य से ) उपस्थित हूँ प्रभू ! ( जयगुप्त का प्रवेश )

कर्यप जयगुप्त ! भगवती इरावती का यहाँ आगमन हो।

जयगुप्त प्रभू की जसी आना ( प्रस्थान )

कर्यप नील ! जिस प्रकार एक बार कँचुन छोड़ने के बाद मय उस कँचुल को धारण नहीं करता उसी भाँति पवित्र यज्ञ बदी पर मात्रा से यदि एक बार अपवित्र सस्वार छान्त्रिय गय, तो वे फिर से धारण नहीं किये जा सकते। मन इरावती के सभी कुसस्वार दूर कर दिये। अब वह मेघ के स्वाती जल की भाँति पवित्र है जिससे तुम्हारे हृत्प में प्रेम की मुक्ता का निर्माण होना चाहिये।

नील मैं प्रयत्न करूँगा पिताजी !

कर्यप तुम नागजाति के आचरणा पर ध्यान मत दो। शुद्ध प्रेम पर ध्यान दो। शुद्ध प्रेम से ही भगवती पावनी ने शिव का अध्याग प्राप्त किया। यह मत समझो कि पावती ने अपनी तपस्या में विलय पत्र खाकर और यामु पीकर ही भगवान् शिव का प्राप्त किया है। विलय पत्र तो शबर का नन्दा नित्य खाता है और जटाजूट में स्थित तप नित्य यामु पीता है। किन्तु वे शकर का अध्याग प्राप्त नहीं कर गये। प्रेम की मन्त्रा सर्वापरि है उसी दृष्टि से तुम्हें इरावती को देगना चाहिये।

( जयगुप्त का प्रवेश )

जयगुप्त प्रभ महादेवी इरावती शर पर ह ।

कश्यप य भीतर प्रवेश करें ।

जयगुप्त जसी भाषा । ( प्रस्थान )

कश्यप नील महादेवी इरावती का स्वागत करो । व धाराश की भाँति गम्भीर वायु की भाँति मनन शील अग्नि की भाँति पवित्र जन के समान तरल व धरती की भाँति सहनशील हैं । व यज्ञ पूजा क्या ह ।

ध्वनि ( नूपुर के शब्द । इरावती का प्रवेश )

इरावती महर्षि का प्रणाम । सम्राट की जय ।

कश्यप स्वस्ति ।

नील तुम्हारी समृद्धि हो ।

कश्यप इरावती सम्राट नील तुमसे कुछ क्षण वार्तालाप करों । मैं यज्ञ की दक्षिणा लेकर कुछ देर में आऊँगा । बाहर मेरी प्रतीक्षा हो रही होगी । मैं चर्तूँगा ।

ध्वनि ( प्रस्थान पादुकाओं का गम्द । कुछ क्षण मौन, नील और इरावती परस्पर अग्निमेघ देखते हैं । )

नील देवि स्वागत । धामन ग्रहण कर ।

इरावती सम्राट आचार्य का कथन ह कि सब कुछ इस भूमि पर ही उत्पन्न होता ह और भूमि में ही विनीत होता ह । भूमि ही सबकी प्रतिष्ठा और भूमि ही सबका परम आश्रय ह । मैं भूमि पर हूँ । मेरी स्थिति यही ठीक ह प्रभु ।

नील तुम यज्ञ बन्नी पर पवित्र होकर राजसिंहासन के योग्य बनो हो देवि ।

इरावती यज्ञ की देवी और राजसिंहासन में कोई अन्नर नहीं ह सम्राट । दोना का शृंगार पवित्र अग्नि से हा होता ह । जिस प्रकार यज्ञ बन्नी आहुतिया से सुमज्जित होती ह उसी प्रकार राजसिंहासन

भा स्वाय और तप्या को भावृत्तिया से सुसज्जित हाता ह ।

नील तुम तो नाग-कन्या हो देवि ।

इरावती प्रभु भाय ह ।

नील सुनता हू कि नाग कन्यामा में बला अधिक होती ह, मान उतना नही ।

इरावती प्रभु सूर्य की किरण बाल वाग्ना को भी उज्वल बनानो ह ।  
और काले बादला में ही सूर्य की किरण बलात्मक अधिक हो जाती ह ।

नील तुम कितनी सुन्दर हो, उतनी ही सुन्दर बातें भी करती हो देवि ।

इरावती यदि मेरी बातें सुन्दर ह तो सुन्दरता को प्रतिबिम्बित करन के निये निमल दपण चाहिये तां भापक हृदय में ह ।

नील इस कथन में भी बला ह इरावती ! महर्षि की ध्यानानुसार तुम सम्प्राप्ती बनोगी और इस प्रकार मरी पत्नी । एसी महर्षि की इच्छा ह ।

इरावती क्या सम्राट की इच्छा नहीं ह ?

नील ( घटबते हृय ) मेरी—मेरी—हाँ मेरी भी कुछ एसी ही इच्छा ह ।

इरावती एसा ही इच्छा का अर्थ समझान का कष्ट करें प्रभु !

नील उतना—उतना बार्द विराप अर्थ नहीं ह । मैं सोचता था—अर्थात् मैं सोचता था कि तुम जसी सुन्दरा नाग कन्या की बला में सम्मान सर्वांग या नहीं !

इरावती गजचम पर ही बठकर भगवान शंकर अपने जटाजूट में द्वितीय के चन्द्र की बला सम्हाले हुए ह । प्रभु तो राजसिंहासन पर आसीन हाने और फिर मुझमें बलाएँ ही कितनी ह ?

नील अब तुम्हारी बाणी में इतनी बला है यदि तब तुम्हारे जावन



म कितनी बला न होगी । तुम नृत्य कर सकती हो देवि ?

इरावती यदि प्रभु की परिक्रमा नृत्य ह तो ध्वरम कर सकती हूँ ।

नील शास्त्रा का कथन ह कि नक्षत्रा का नृत्य ही सर्वोत्तम नृत्य है ।

उस नृत्य की गति देखना चाहता ह देवि ?

इरावती प्रभु सम्राट है । अपनी शक्ति स नक्षत्रा को पृथ्वी पर ही सा सक्त ह ।

नील और यदि म तुम्हें ही एव नक्षत्र मान लूँ ?

इरावती प्रतिशयाक्ति को भी म प्रभु की कृपा मान लूँ ?

नील किंतु म नृत्य देखना चाहता हूँ देवि ।

इरावती सहचरो नाग-कन्याया को बुलाने की आज्ञा ह ?

नील म केवल तुम्हारा नृत्य देखना चाहता हूँ ।

इरावती मरा नृत्य प्रभु की इच्छामा के नृत्य के समान नहीं ह ।

नील फिर भी ।

इरावती प्रभ । मकर राशि म जब सूर्य की सक्रान्ति होती ह तब उस क्षण अंतरिक्ष की शक्तियाँ इस प्रकार आदोवित हो उठती ह । उसे मरे नूपुरो म देखें ।

( कुछ क्षण नृत्य से नूपुरो का नाद )

इरावती महर्षि इसी प्रकार आ रहे हैं ।

नील किंतु म नृत्य से तप्त नहीं हुआ देवि !

इरावती अच्छाए कभी तप्त नही हुआ करती प्रभु । नृत्य साधना है और अच्छा मन का विनास । विनास और साधना के घोरा को मिनान का कष्ट न करें । दोना की गति स्वाभाविक ही रह ।

( क पप का प्रवेश )

कश्यप हाँ तुम दोनों की गति स्वाभाविक रहे । तभी सम्राट और सम्राज्ञी वन तुम लोग राय पर शासन कर सकोगे । नील तुम इरावती से मिल कर प्रसन्न हुए ?

नील महर्षि, ऊख स्वयं ही इतना मोटा होता है कि उसे मिट्टी पल की आवश्यकता नहीं होता।

इरावती जिस प्रकार ज्योति के सम्पर्क में प्रायः दीप भी ज्योतिष हो जाता है उसी प्रकार सम्राट के प्रशासन में मेरे उत्तरा को ज्योतिष कर लिया। मुझे जान की आज्ञा है ?

नील हाँ, यदि तुम्हारी प्रगल्भता पूरा हो।

कश्यप स्वस्तिमय बनो।

( नूपुर नाद से प्रस्थान )

कश्यप इरावती की समता इस समय कोई भी प्राप्त किया नहीं कर सकती। तुम्हारी समस्त शक्ति निम्न हुई। (नील कुछ नहीं बोसता) बोसो वालो !

नील ( सम्भीरता से ) नहीं निम्न हुई पिता जी !

कश्यप नहीं ?

नील इरावती बहुत कलावुराज है अच्छा नृत्य कर सकती है। वार्तालाप मनोविज्ञान की गहराई से करती है किन्तु वह सम्राज्य नहीं हो सकता।

कश्यप मैं कारण जानना चाहता हूँ नील !

नील सम्राज्य नतकी नहीं हो सकता।

कश्यप ( तीव्रता से ) वह नतकी नहीं कृपक किया है। नृत्यकला में परिचित होना नतकी बनना नहीं है। तुमने उसे नृत्य करने के लिए कहा था ?

नील हाँ पिताजी, मने कहा था !

कश्यप और अब यदि वह नृत्य न करता तो, तुम मुझसे कहते कि प्रयत्न करने वाली सम्राज्य नहीं हो सकती प्रयत्न कलाहीन स्त्री सम्राज्य नहीं हो सकती ! तुम अपने विचारों का सत्य साधित करत हो ना ! तुमने मुझे के प्रत्यक्ष करने की

सहजता नहीं है। तुम विश्वासपूर्ण में प्रवीण हो दूसरा के गुणा को दोष रूप में हाँ देखते हो।

नील आप मुझ राजनीतिक बनाना चाहते हैं पिताजी ?

कश्यप एसा राजनीतिक नहीं जो असत्य की सत्य व सत्य को असत्य मान। इरावती ज्योति कल्प है। वह जावन को समस्त विश्वासा में ज्योति जागरण का संदेश देन की शक्ति रखता है। (नेपथ्य में गद्द होता है। हमें अन्न चाहिये, हम भूल हैं प्रभो ! हमें अन्न चाहिये।)

कश्यप यह कसा शर्म हो रहा है ?

नील भूल योग का आत्मनाद गीत होता है।

कश्यप यहाँ की जनता को तो पुष्कल अन्न दान में मिला है। (पुकार कर) जयगुप्त !

जयगुप्त (उपस्थित होकर) आज्ञा प्रभो !

कश्यप यह कसा बोलाहल है ?

जयगुप्त प्रभु कुछ ग्रामवासी है व अनेक दिनों से भूखे हैं। उनके साथ महादेवी इरावती आपकी सेवा में आ रही है।

कश्यप उनका स्वागत है।

जयगुप्त जसी आता। (प्रस्थान)

नील पिताजी ग्रामवासी यदि यहाँ आवेंगे तो यह कच अशुद्ध हो जायगा।

कश्यप नीन तुम अभी पुरान सस्कारा से मक्त नहीं हुए। सम्राट का सिंहासन जनता के विश्वास का ही प्रतीक है। जनता के सुख से राजनीति गंगा-जल की भाँति पवित्र बनी रहती है। जनता के प्रेम के शर्म ही राजसिंहासन में मणियों की भाँति विजडित होते हैं।

(इरावती का प्रवेश)

एकाकी-सम्राट  
डा० रामकुमार वर्मा कृत



नाटय-कृतियाँ

❧ मयूरपल्ल	११००
❧ रिमभिम	६००
❧ कौमुदी मन्त्रोत्पल्ल	१५०
❧ गिवा जी	१०
❧ चार ऐतिहासिक एकाकी	२००

अन्य कृतियाँ

❧ मत कबीर (वृहद्)	१०००
❧ सक्षिप्त मत कबीर	३००
❧ कबीर का रहस्यवाद	४००
❧ भंजलि (काव्य)	१२५



सहजता नहीं है। तुम वि  
 गुणा को दाप रूप में हा  
 नील भाप मुझ राजनीतिक का  
 कश्यप एगा राजनीतिक नहीं -  
 मान। इरावती ज्योति  
 निशामों में ज्योति जाग  
 (नेपथ्य में गाव होता  
 प्रभो ! हमें अन्न चाहिए  
 कश्यप यह क्या शब्द हो र  
 नील भूल योग का घात -  
 कश्यप यहाँ को जनता का  
 कर) जयगुप्त ।  
 जयगुप्त (उपस्थित होकर  
 कश्यप यह कैसा बोलाह  
 जयगुप्त प्रभु कुछ ग्रामवा  
 महादेवी इरावत  
 कश्यप उनका स्वागत  
 जयगुप्त जती भाता ।  
 नील पिताजी ग्राम  
 जावगा ।  
 कश्यप नीन तुम र  
 सिंहासन ज  
 से राजनीति  
 के प्रेम के  
 होत ह ।

इरावती प्रभु विल्ववन के कुछ निवासी यहाँ एकत्र ह । अनेक बद्ध अपन पुत्रा के कर्मा पर चढ कर यहाँ आपसे अपना बप्ट निवेदन करने के लिए आए ह । सवा ने चार दिना से अन नही खाया ह । वृक्ष के पत्ते वे कितने दिन खा सकते ह ?

करयप वास्तव में उन्हें बडा बप्ट हुमा ।

नील उनसे कहो देवि, कि वे थम करें और पारिश्रमिक से अन प्राप्त करें ।

इरावती किंतु व अत्यन्त दुबल ह अनो थम के योग्य नही ह ।

नील ता उन्हें अपन पूर्वकाल के पापा का प्रायश्चित तो करना हा होगा ।

करयप नील तुम्हार सम्राट रहते हुए ।

नील ता मैं क्या कर सकता हू पिताजा ? अनकोप्या में तो इतना अन भा नही होगा । फिर इस नगर की प्रजा के लिए भी तो अन की फठिनाई होगी ।

इरावती म एक निवदन करना चाहती हूँ ।

करयप अवश्य ।

इरावती विल्ववना के समीप कोई वृषि भूमि नही ह । यदि आप मुझे आज्ञा दें तो म इन वनवासिया को प्रास्ताहित कर और स्वयं हल लेकर भूमि को वृषि भूमि बनान में सहायता करूँ ।

करयप साधु साधु इरावती ! तुमन सम्राणी व याम्य ही कथन किया ?

इरावती सम्राट की आज्ञा ह ?

नील जरी इच्छा !

इरावती ता मुझे आज्ञा दोजिय ।

( प्रस्थान )

करयप तुम इस इरावती को नतकी कहोग नीन ? सम्राणी नतकी नतीं हा सकता । अब कहो— सम्राणी वृषि वा वाय नहीं

कर सकती। मानवता की सवन्ना समझो नील ! दूगरे के बच्चा में सहभागी बनना मानव का सहज धर्म है। फिर तुम तो सम्राट घोषित किये गए हो। धनवासिया का बच्चा सुनकर तुम्हारे नश्वर में शत्रु नहीं आए ? इरावती के कहने से पूव ही तुम्हें उन धनवासिया के लिये कृपि काय करन को उद्यत होना चाहिये था।

नील ( धीमे स्वर में ) तो क्या कृपक ही सम्राट है ?

फश्यप सम्राट कृपक की छाया है। तुम सम्राट बनन योग्य नहीं हो नील ! मैं तुम्हें अपत्य करूंगा।

नील एसा न कीजिये पिताजी एसा न कीजिए ? मैं क्षमा चाहता हूँ। भागे से कृपको को ही अपता भाराध्य मानूंगा।

फश्यप और इरावती को ?

नील उन्हें भी स्वाकार करूंगा।

फश्यप इरावती तुमसे सभी गुणा में महान है इसलिए उसके समक्ष अपनी हीनता स्वीकार करन में तुम्हें लज्जा भाती है। तुम्हें सम्भवत उससे ईर्ष्या भी होगी इसीलिए तुम उसे कभी नाग कया कभी नतकी कह कर अपनी हीनता पर भावरण डालना चाहते हो। क्या ?

( नील चुप रहता है )

तुम्हारे पास कोई उत्तर नहीं है। तुम जाओ और कृपि का काय करती हुई उस इरावती के सहायक बनो।

नील अभी घाना !

फश्यप मैं तुम दोनों के सेवा काय का निरीक्षण करूंगा। चलो मेरे साथ।

( प्रस्थान। पादुका की ध्वनि )

मेलम और इस प्रकार महर्षि फश्यप न काश्मीर की बहुत-सी भूमि

कृषि योग्य बनाई ।

कवि देवि ! नील और इरावती का विवाह हुआ ?

मैलम म यत् जानती या कि कवि यह प्रश्न ध्वश्य पूछेगा । हाँ, कवि विवाह हुआ परन्तु नील की अपेक्षा इरावती ने ही सच्चे धर्मों में प्रजा का पालन किया । और उन्होंने अनेक यज्ञों का निर्माँय कराया अनेक भ्रष्टाचार ब्राह्मणों को दान दिये । अनेक वर्षों तक प्रजा का जय-अयकार इरावती के सम्मान में गूँजता रहा ।

कवि उसके पश्चात् क्या हुआ देवि ?

मैलम उनके बाद अनेक राजाओं ने राज किया । शताब्दियों पर शताब्दियाँ बीतती चली गई । एक महान नरेश हुआ, जिसका नाम था यशाप्रदत्त । उसने न्याय और धर्म की ब्याएँ जल-जल के घरा में उल्हाह और प्रशंसा के साथ कहा और सुनी जाती थीं । उसने प्रजापालन और न्याय के अनेक दूरमा में से बचल एक दूरमा चिन्तना चाहती है—

( विजयसेन तिस्रिणी से रहा है । सुधीर नामक ध्वषित भाता है । )

सुधीर पवित्र ! तुम इतन दुसा क्या हो ? तुम्हें किम धान का कष्ट है ?

( विजयसेन कुछ नहीं बोलता । एक गहरी तिस्रिणी लता है । )

सुधीर तुम—तुम प्रवासा शत होत हो । क्योंकि महाराज यशोवपन के राज्य में कोई ध्वषित दुगा नहीं है ।

विजयसेन (सभलकर) हाँ—मे प्रवासी है । हमी—दमी कूर्प में बूँ कर या महत्या—मात्महत्या करु गा ! ( तिस्रिणी )

सुधीर मात्महत्या ! मात्महत्या जपय पाव है प्रवासी ! धय रगा और धपती विपत्ति की याव करो ! सम्भव है मे तुम्हारी कुछ सहायता



कर सब् । मरा नाम सुवार है । इसी ग्राम में रहता हूँ । तुम्हारा रुतन मुझसे नहीं देता गया ।

विजयसेन बड़ो शृपा ह आपकी । पर—पर मरी सहायता कौन कर सकेगा ?

सुधीर ईश्वर पर विश्वास रखिए ! महाराज यशोवधन पर विश्वास रखिए ! अपना परिचय दीजिए ।

विजयसेन मेरा परिचय ही क्या !—मरा नाम विजयसेन ह श्रीमन् ! कडार ग्राम का व्यापारी हूँ । कायबुज देश से धन कमा कर चला था यहाँ खो लिया ।

सुधीर खो दिया ? किस तरह खो लिया ?

विजयसेन अपनी ही मूर्खता से—भौर क्या कहूँ । छ महीन बाद लोटा ह । मरी पत्नी मरी प्रतीक्षा कर रही होगी । सोचता था, व्यापार में कमाई हुई पाच सौ स्वण-मण्ये अपनी पत्नी को दूंगा । वह कितनी प्रसन्न हो जाती । किन्तु स्वण मण्ये—

सुधीर क्या हुआ ? किसी न छीन ली ? किन्तु महाराज यशोवधन के राज में कोई चोर नहीं ह ।

विजयसेन चोर नहीं ह यह म भी जानता हूँ किन्तु मरी मूर्खता—मरी भसावधानी !

सुधीर मूर्खता ? भसावधानी ? म कुछ समझा नहीं प्रवासा !

विजयसेन चलते चलते म थक गया था श्रीमन् । सोचा—इस कुए के शीतल जन स अपनी प्यास बुभाऊ । मद्राघ्रा की गठरी कुए की जगत पर रख दी—मरी बद्धि की बनिहारी—भर वह गठरी किसी दूसरी जगह रख देता—नीचे ही डाल देता—पर—पर अपनी मूर्खता से वह गठरी मन कुए के जगत पर ही रखी ! पानी खींचते समय मर ही शरीर—मर ही शरीर के भटके से वह गठरी कुए में गिर पड़ी । म देखता रहा भौर

मर कठिन परिश्रम से कमाई हुई व स्वल्प-मुनाएँ जैसे मरी मूखता पर झट्टहास करत हुए पानी में विलीन हो गई ?

सुधीर बड़ा बरा हुआ यह ता !  
रिचयसेन भय में क्या मुह लकर घर जाऊगा ? जब मेरी पत्नी मगल

भारती उतार कर प्रणाम करगी आशा मर नत्रों स मरे मुख की धीर देखगी तब म किस मुस से कहूँगा कि तुम्हें राजरानी बनाने के लिए ही तुम्हारी स्वल्प-मुनाएँ हुए मैं फँक भाया हूँ !—( तिसक्की ) धिक्कार ह मुझ !—मैं इस हुए के पास

भाया ही क्या—कुछ देर पानी न मिलता ता मर तो न जाता !—किन्तु अब धपन दुर्भाग्य को इस हुए की गहराई से नापू धीर दुष्ट संसार स कह दूँ—देख ! मरा दुर्भाग्य तर हुए से भी गहरा ह । मरी स्वल्प-मुनाया का धीननवाल । मरे प्राणा को भा धान ल । यह कुम्पा मर प्राणा को लकर धीर भो शीतल हा जायगा !—( तिसक्की )

सुधीर ( धप देत हुए ) शान्त शान्त प्रवासी ! अधार मत बनो ! भावावरा में धपन भाप को दाप मत दा । जान-बूझ कर तो

मुमन मुनाएँ हुए मैं फँका नहीं । तुम्हारा अधराध क्या ह ! तुम्हारी पत्नी तुमस कुछ नहीं कहगी ! इउ तो एक दवा

घटा हा समझना चाहिए । ईश्वर पर विरवान रख कर तुम फिर ब्यापार करो । सहया मुनाएँ भा जायेंगी । तुम्हारे

प्राणों के भाग मुनाया का मूय ही क्या ह ! क्या मूय्य ह ! (महापत नामक व्यक्ति का प्रवेश)

महापत मुनाया के विषय में क्या विचार ?  
सुधीर ( दगाकर ) घर लम हा महीपत ! अथ धाप य बवार

बिन्धयन ह । बहार के नागरिक । ब्यापार स धन कमाकर साए धीर दुर्भाग्य दसा छि इस हुए स पानी शीतल समय

अपना सतूनन सो बटे । स्वण मुग्धा की गठरी बाए में गिर गई !

महीपत इस कुए में गिर गई ?

सुवीर हाँ ये बड़ी देर से घामू बहा रहे ह !

महीपत सचमुच ! दब न इनके साथ बड़ा आयाप किया ।

सुवीर किन्तु अब इन्हें धय रखना चाहिए । इतन गहरे कुए से वे स्वण-मुग्धा निकल नहीं सकती ।

महीपत ( ग से ) निकल सकती हैं ।

विजयसेन ( उद्विग्नता से ) निकल सकती ह ?—निकल सकती ह ?

तो निकाल दोजिए महात्मन—मैं जीवन भर आपका ऋणी रहूँगा—निकाल दोजिए । जैसे भी हों निवाल दोजिए । मैं किसी तरह अपनी पत्नी को मुह टिखला सकूँ । आप कितने उपकारी हँ—प्रोह आप कितन उपकारी ह !

महीपत उपकारी तो मैं नहीं हूँ किन्तु कुए में उतर कर मैं आपको गठरी अवश्य निकाल सकता हूँ । पूरे एक घट तक मैं जल के भीतर रह सकता हूँ ।

सुवीर हाँ यह तो मैं भी कह सकता हूँ जल के भीतर ये बहुत देर तक रह सकते ह । ये हमारे ही ग्राम के निवासी ह । इन पर हमें गव ह । बड़ जीवट के यक्ति ह । ये आपकी गठरी पाताल से भी निकाल सकते ह ।

विजयसेन तब तो क्या कहना ह—अब तो मरी गठरी निकल ही आएगी धय हैं—बड़ भाग्य से इनके दशन हुए ।

महीपत मैं इसे भाग्य नहीं मानता महाराज ! अबसर मान सकता हूँ । मैं यह जानना चाहता हूँ कि उस गठरी में कितनी स्वण मुग्धा थी ?

विजयसेन पाँच सौ स्वण मुग्धा ।

महीपत पाँच सौ ? तब तो वह गठरी अवश्य ही निकाल दूँगा ।

विजयसेन ( विह्वलता से ) मुझ पर बड़ी कृपा होगी—बड़ी कृपा होगी । मैं जो जाऊंगा महात्मन ! मैं आपको साक्ष-लाभ भाशीर्वाँ दूँगा—आपका उपकार—आपका उपकार मैं जन्म भर नहीं भूलूँगा । मुझ पर कृपा कर दीजिए—कृपा कर दीजिए मन्त्राय ! मरी मुन्गएँ निकाल लीजिए ।

महीपत मुन्गएँ तो निकाल दूँगा पर मुन्गएँ निकालने का क्या पारिधमिक होगा मेरा ?

विजयसेन भाशीर्वाँ दूँगा । बहुत बहुत भाशीर्वाँ दूँगा नहीं ता जा आप उचित समझें जितना आप उचित समझें ।

महीपत धार सी मुन्गएँ मरी हागी सी मुन्गएँ आपकी ।

विजयसेन तो मुन्गएँ मरा ?

महीपत तो से भा कम चान्त ह आप ? किन्तु आप सवाच न करें । मैं आपकी मुन्गएँ ही दूँगा । यह अवश्य ह कि मैं सी मुन्गएँ आपकी जिना कष्ट व ही भिन रहा ह मन्त्राय आपका सारा धन तो रूप-तीय की समपित ही हो गया ह ।

सुनीर दुपटना तो ऐसी हो हुई ह किन्तु अपना पारिधमिक कुछ कम से तो महीपत ।

महीपत कम का स मुँ सुधार ! इतन गहरे कुएँ में उतरना क्या सरल काम ह ? यह तो मरा साग्म ह कि सम्भव का भा सम्भव बना दूँ । भय की भी भयमात कर दूँ फिर अपने प्राणा की सबट में जानन का पारिधमिक धार सी मुन्गएँ भा न हागा ?

विजयसेन उगने भा अधिक हो सक्ता ह श्रीमन् ! किन्तु यदि कुएँ से स्वण-मुन्गएँ प्राप्त होता ह ता परिधम से उपाजन करन व कारण मुझे उनका अधिकारा जाना चाहिए । किन्तु आप कृपा पूर्वक मुन्गएँ निकाल रह ह, मुझ पर उपकार कर रह ह तो उपकार करन का जो पारिधमिक आप उचित समझें, वह से

लीजिए ।

महीपत देखिए न उचित अनुचित की बात है न उपकार अकार की बात है । बात है कुए से मुद्राए निकानन की और उसका पारिश्रमिक ह चार सौ स्वण मुद्राए ।

विजयसेन किन्तु पाँच सौ में से मुझ केवल सौ मुद्राए मिलेंगी यह किस 'याय से ?

महीपत देखिए 'याय तो महाराज यशोवद्धन करते हैं । आपको सौ मुद्राए मिल जायें इसके लिए मैं अपने प्राणा का सकट में डालता हूँ ।

विजयसेन आपका विषय यही उचित समझता ह ?

महीपत सम्पूर्ण रूप से । आप पर अकारण ही दया कर रहा हूँ । यदि यह आपको स्वीकार नहीं है तो जान दीजिए भरे पात भी बहुत काम है । मैं चला । ( चलने को उद्यत होता है । )

विजयसेन अच्छा सुनिए ।

महीपत देखिए सुनन की बात नहीं है मर पारिश्रमिक की बात है । सोच लीजिए । मैं यही पास हूँ । आवश्यकता हो तो बला लीजिएगा । मैं जाता हूँ । ( प्रस्थान )

सुवीर क्या सोच रहे हो प्रवासी महीपत जा रहा है । उसकी बात स्वीकार कर लना ही बुद्धिमानी है नहीं तो जो सौ स्वण मुद्राए आपको मिल सकती हैं वे भी आपके हाथ से चनी जावेंगी ।

विजयसेन पर क्या यह अयाय नहीं है कि पारिश्रमिक के नाम से स्वयं चार सौ नकर मुझ केवल सौ मुद्राए दी जाय और बहा जाय कि मुझ पर अकारण दया की गई ।

सुवीर आपकी बात तो ठीक है किन्तु आप यहाँ कितनी देर ठहर सकते हैं ? एक दिन ? दो दिन ? फिर तो आप चने ही

जायेंगे। आपके जाने के अनन्तर महीपत कुएँ में से गठरी निकाल कर सारा धन ले सकता है। आपके हाथ तो कुछ भी नहीं आयगा।

विजयसेन इस धमकाप की अपेक्षा में आत्म-हत्या करना उचित समझता है।

सुवीर आत्म हत्या करना कायरता है। आप सो स्वर्ण मुद्राएँ लेकर फिर व्यापार कर सकते हैं या सो मुद्राएँ अपनी पत्नी को देकर कह सकते हैं कि व्यापार में इतना ही लाभ हुआ। आपकी पत्नी कुछ नहीं कहेंगी।

विजयसेन (सोचकर) हाँ पत्नी बेचारी क्या कहगी। वह क्या जान कि सारा मैं धन लेकर दया की जाती हूँ। ठीक है जसा आप उचित समझें।

सुवीर तो फिर मैं महीपत को बुलाता हूँ। (पुकार कर) महीपत ! महीपत आओ ! (विजयसेन से) देखो प्रवासी, नीति कहती है कि जाते हुए धन से जितना बच सके बचा लेना चाहिए।

विजयसेन परिस्थिति का परित्याग तो यही है।

(महीपत का प्रवेश)

महीपत आपन क्या निष्पत्ति किया ?

विजयसेन किसी का एक हाथ काट लिया जाय और बहा जाय कि मन तमहें हाथ की परिश्रम से बचा लिया। कुछ बची ही बात है।

महीपत दसिए मैं आपसे बन्-पुराण की बातों को नहीं समझता चाहता। मैं तो एक उत्तर चाहता हूँ— हाँ या 'नहीं'।

विजयसेन तो जसा आप उचित समझें बगा ही करें।

महीपत मने तो पहले ही कहा कि चार गो मुन्गाएँ मरी और सो मुन्गाएँ आपकी। स्वीकार है ?

सुधीर खोबार कर लो प्रवासी !

विजयसेन घाप लोग उचित ही कहेंगे उचित ही करेंगे ।

महीपत तब ठोक ह म इस रस्ती के सहारे हुए में उतरता है ।

( रस्ती से सरकने और पानो मे डूबने का शब्द )

सुधीर प्रवासी ! यह म मानता हू कि कुछ भयाव हो रहा ह किन्तु इसे सहन के प्रतिरिक्त और कौन सा भाग ह ?

विजयसेन कोई नहीं । सुनत हं कि महाराज यशोवधन बहुत भ्रष्टाचार करते हं किन्तु उनका चाय मुझ कहीं मिलगा !

सुधीर तुम सच कहते हो प्रवासी ! उनकी बुद्धि इतनी विलक्षण ह कि कठिन से कठिन समस्या का समाधान व एक क्षण भर में कर सकते हं पर इस समय व कहीं जाने यह कौन कह सकता ह । राजधानी में नही है नही तो तुम वहाँ जा सकते थ ।

विजयसेन जब मरे भाग्य में चाय नहीं ह तभी वे राजधानी में नही है ।  
( हुए में से महीपत की आवाज आती है । )

महीपत ( हुए से ) आपकी गठरी पीन कपड की ह ?

विजयसेन ( सुधीर से ) कह दीजिए कि पीने कपडे की ह ।

सुधीर ( जोर से ) हाँ पीन कपडे की ह ।

महीपत ( हुए से ) मन पा ली ह । म उसे लेकर ऊपर आ रहा हूँ ।  
( नेपथ्य से दो घोड़ों के दौड़ने की आवाज आती है । घोड़े तेज दौड़ते हुए आ रहे हैं । )

सुधीर ( बेसहकर ) कुछ झालटक आ रहे है इस धोर । घोड़े बहुत तीव्र गति से दौड रह है—( सहसा ) धर, महाराज यशोवधन है ! साथ में उनके मंत्री ह ।

विजयसेन ( उमंग से ) महाराज यशोवधन ह ? धयभाग्य धय भाग्य ! महाराज यहाँ रुक सकते हैं ? रुक जात तो भरा चाय हो जाता !





सुवीर स्वीकार कर लो प्रवासी !

विजयसेन आप लोग उचित ही कहेंगे उचित ही करेंगे ।

महीपत तब ठीक है म इस रस्सी के सहारे कुए में उतरता है ।

( रस्सी से सरकने और पानी में डूबने का शब्द )

सुवीर प्रवासी ! यह मैं मानता हूँ कि कुछ भयावह हो रहा है किन्तु इसे सदन के प्रतिरिक्त और कौन सा मांग है ?

विजयसेन कोई नहीं । सुनते हैं कि महाराज यशोवधन बहुत भ्रष्टाचार करते हैं किन्तु उनका चारा मुझ कहीं मिला !

सुवीर तुम सब कहते हो प्रवासी ! उनकी वृद्धि इतनी विलक्षण है कि कठिन से कठिन समस्या का समाधान व एक क्षण भर में कर सकते हैं पर इस समय व कहीं हागे यह कौन कह सकता है । राजधानी में नहीं है नहीं तो तुम वहाँ जा सकते थे ।

विजयसेन जब मर भाग्य में चारा नहीं है तभी व राजधानी में नहीं है ।

( कुए में से महीपत की आवाज आती है । )

महीपत ( कुए से ) आपकी गठरी पीन कपडे की है ?

विजयसेन ( सुवीर से ) कह दीजिए कि पील कपडे की है ।

सुवीर ( जोर से ) हाँ पील कपडे की है ।

महीपत ( कुए से ) मन पाती है । मैं उसे लेकर ऊपर आ रहा हूँ ।

( नेपथ्य से दो घोड़ों के दौड़ने की आवाज आती है । घोड़े तेज दौड़ते हुए आ रहे हैं । )

सुवीर ( देखकर ) कुछ घाबराहट आ रही है इस ओर । घोड़े बहुत तीव्र गति से दौड़ रहे हैं—( सहसा ) मर महाराज यशोवधन हैं ! साथ में उनके मंत्री हैं ।

विजयसेन ( उमंग से ) महाराज यशोवधन हैं ? धनभाग्य धन भाग्य ! महाराज यहाँ तक सकते हैं ? एक क्षण तो मरा चारा हो जाता !

सुवीर महाराज की जय बोल कर हाथ उठा दो, प्रवामी !  
 विजयसेन अच्छी बात है । ( जोर से ) महाराज की जय ! महाराज  
 की जय ! मरा-याय कीजिए ! मरा-याय कीजिए !  
 ( घोड़े रुक जाते हैं )

विजयसेन महाराज की जय ! महाराज म-याय चाहता हूँ ।  
 ( महाराज यशोवर्धन और मन्त्री घोड़े से उतरते हैं । )

यशोवर्धन ( मन्त्री से ) मन्त्री ! नगर की सीमा पर अग्र्याम ? पूछो, क्या  
 अभियोग है ?

मन्त्री ( विजयसेन से ) तुम कौन हो नागरिक ? तुम्हारा क्या  
 अभियोग है ? किसन तुम्हारे प्रति अग्र्याम किया है ?

विजयसेन महाराज की जय हो ! आपन दास का प्रायना सुन ली !  
 महाराज ! यह दास कडार नगर का व्यापारी है । कायकुञ्ज  
 प्रदेश में व्यापार कर पाँच सौ स्वर्ण-अनाया के भाय आपन म्यान  
 को लौट रहा था इस कुएँ पर पानी पीन आया । दुर्भाग्य से पानी  
 खींचत समय नास के मुग्धाओं की गठरी इस कुएँ में गिर गई ।

यशोवर्धन तुम अमावधान हो धेच्छि !

विजय महाराज ! अमावधान ही नहीं अभाग भी है ? इस दुःख स  
 आत्महत्या—

यशोवर्धन आत्महत्या ! महान कायरता !

मिनय आपन दुःख के आवग को रोकन म म असमथ था महाराज !  
 य सुवीर हैं इसी ग्राम के निवासी, इन्होंने मुझे धय निया ।

सुवीर महाराज की जय हो !

मन्त्री तुम सुवीर हा ! आपन नाम के अनुप तुमन प्राणी का रक्षा  
 की ! साधु !

सुवीर महाराज ! राज का धम ही प्रजा को साहसी बनाता है ।

विजय महाराज ! जब सुवीर मुझमें धय रखन का कह रहे थे तभी

महीपति नाम के एय सज्जन आए ! उन्होंने कहा कि मैं स्वयं  
मन्नामा की गठरी कुए से निवान दूँ तो मुझ क्या मिलगा ?  
यशोधर्धन उपकार करने में भी पारिश्रमिक ! ( मन्व हसी ) अच्छा तुमन  
कितना पारिश्रमिक कहा ?

विजय मन तो यही कहा कि मैं लाग-लास आशीर्वात् दूँगा ।  
यशोधर्धन आशीर्वात् मात्र ( हसकर ) प्रवासी ! आशीर्वात् का मूल्य  
सज्जन ही समझते हैं । उहान कुछ पारिश्रमिक माँगा ?

विजय हाँ महाराज उन्हान कहा कि पाँच सौ स्वयं मुन्नामा में से वे  
चार सौ मन्नाए लेंग और मुझ केवल सौ मुन्नाए देंग ।  
यशोधर्धन तुम्हें केवन सौ मुन्नाए ? तुमन ठीक तरह से सुना ?

विजय हाँ महाराज ! मर बहुत आग्रह करन पर भी उन्हान अपना  
पारिश्रमिक कम नहीं किया । य सुबीर भी साची है ।  
यशोधर्धन सुबीर ! अठो का कथन सत्य ह ?

सुबीर हाँ महाराज ! परिस्थिति एसी ही थी कि महीपत की घात  
माननी पड़ी नहीं तो श्रद्धि को सौ मन्नाए भी नहीं मिलतीं  
यशोधर्धन यह अयाय ह । पारिश्रमिक मूत्र धन के पचमास से अधिक  
नहीं होना चाहिए नागरिक ।

विजय महाराज धय ह । स्तौतिए मन अयाय की भिधा माँगी ।  
यशोधर्धन महीपत कहाँ ह ?

सुबीर वे कुए से गठरी नकर बाहर घाना ही चाहत है ।  
यशोधर्धन अच्छा व अभी बाहर नहीं आए ?

सुबीर महाराज ! घटना अभी घोड़ी देर पहन ही घटित हुई है ।  
मन्त्री तब तो महीपत को खोजन का श्रम न करना होगा ।

( महीपत का प्रवेश )

महीपत ( जोर से साँस लेता हुआ ) इतना गहरा कुम्हाँ ! घोह  
ऊपर चढ़न में दम फूट गया गठरी यह गठरी ल गया

(सामने देखकर) अरे आप आप महाराज ! महाराज की जय हो ! मंत्री महाराज की जय हो ! महाराज आप यहाँ ।

मंत्री यह महीपत आ गया  
यशोवर्धन तुम्हारा नाम महीपत ह ?

महीपत हाँ महाराज !

यशोवर्धन तुम कुँ से स्वर्ण मुद्राएँ निकालो ?

महीपत हाँ महाराज ! यह गठरी ह ।

यशोवर्धन साधवाद ( मंत्री से ) मनी ! स्वर्ण मुद्राएँ आपन अधिकार में लो ।

मंत्री जो आना । ( गठरी लेत हैं )

महीपत इस नगर सीमा पर वन्र ग्राम का निवासी हू ।

यशोवर्धन तुमने बहुत अच्छा किया जो श्रेष्ठ विजयसेन ने स्वर्ण मुद्राओं की गठरी कुँ से निकाली ! तुमने उसके लिए पारिश्रमिक माँगा ।

महीपत महाराज ! मन कोई अपराध नहीं किया । इतने गहरे कुँ में उतरने के लिए आपार श्रम करना था । उस श्रम के लिए ही मन पारिश्रमिक माँगा ।

यशोवर्धन पारिश्रमिक माँगना अनुचित नहीं था । तुमने कितना पारिश्रमिक माँगा ?

महीपत चार सौ स्वर्ण मुद्राएँ ।

यशोवर्धन गठरी में कितनी मुद्राएँ ह ? /

महीपत पाँच सौ मुद्राएँ महाराज !

यशोवर्धन ( आश्चर्य सहित ) तो पाँच सौ में से चार सौ स्वर्ण मुद्राएँ ! क्या तुम यह उचित समझते हो ? क्या यह पारिश्रमिक का परिहास नहीं ह ?

महीपत घाय कोई नहीं ह महाराज । म हूँ और मरी पत्नी ह ।

यशो० कोई मच ?

महीपत कोई नहीं ह महाराज ।

यशो० फिर बेगल दो व्यक्ति तो थोड परिश्रम स हो सुविधा के साथ रह सकत ह । कोई व्यवसाय करत हो ?

महीपत अवकाश नहीं मिलता महाराज ।

यशो० अवकाश क्या नहीं मिलता ?

महीपत पत्नी की सेवा सुधूपा अधिक करना पडता ह ।

यशो० ( मन्द हास्य के साथ ) तो त्से भी एक व्यवसाय ही समझना चाहिए । फिर फिर उतर पोपणु कसे होता ह ?

महीपत घर के सामन ही थोडी खता कर सता हूँ और फिर कुछ जेण्डि की सहायता करन जस कुछ काम मिल जात ह ।

यशो० इसीलिए तुम्हारा पारिश्रमिक अधिक हुआ करता ह । किन्तु तुम्हारे इतने बलिष्ठ होन पर तो रकता नहीं रहनी चाहिए ।

महीपत महाराज । या तो रक न रहता किन्तु परिस्थितिया से रक बन जाता हू ।

यशो० परिस्थितिया से ? एसा कौन सी परिस्थितियाँ ह ?

महीपत महाराज । घमा करेँ मरा पत्नी बहुत शृंगार प्रिय ह । जो कुछ भी म उपाजित करता हू वह सब उसके शृंगार की सामग्री में खय हा जाता ह ।

यशो० तुम्हारा भी तो कुछ अधिकार हाना चाहिए महीपत । किन्तु संभवत तुम विवश होग । उसी विवशना के कारण तुमन संभवत चार सौ स्वण मुगए धण्डि से प्राप्त करन की बात साचा जिससे तुम अपनी पत्नी का शृंगार प्रसाधन समुचित मात्रा म जटा सको ।

महीपत महाराज । आप मन्तर्यामी भी ह ।

यशो० ( मन्त्री से ) मन्त्री । महीपति की पत्नी के लिए अपने कठ की मुक्तामाला प्रदान करो जिससे महीपति और उसकी पत्नी अपने को रक् अनुभव न करें ।

महीपति ( उल्लास से ) धय ह धय ह महाराज । आप कितन कृपालु और 'यायी ह । अब चार सौ मुन्गएँ—

यशो० मन्त्री । तुमने महीपति की पत्नी के लिए महीपति को मुक्तामाला प्रदान कर दी ?

मन्त्री हाँ महाराज । प्रदान कर दी । ( गले से मुक्तामाला उतारते हैं । )

महीपति आप धय ह प्रभु । मुझे प्राप्त हा गई । यह ह ।

( मुक्तामाला के हाथ में रखने का शब्द )

यशो० तो मन्त्री । तुमने महीपति की पत्नी को रक्ता के कूप से निकाला । महीपति ने कूप से गठरी निकाली तुमने रक्ता के कूप से महीपति की पत्नी निकाली ।

महीपति ( कुछ न समझते हुए ) एँ ? हाँ महाराज ।

यशो० ता अब मन्त्री के भी पारिथमिक का निर्णय होना चाहिए ।

मन्त्री महाराज की कृपा होगी ।

यशो० महीपति गठरी के अधिकाश भाग पर अपना अधिकार समझते ह इसी 'याय से मन्त्री को भी महीपति की पत्नी पर अधिकाश अधिकार होना चाहिए क्याकि मन्त्री ने महीपति की पत्नी का रक्ता के कूप से निकाला ह ।

विजयसेन धय ह महाराज । आपकी विलक्षण बुद्धि को ।

महीपति ( धक्काकर ) महाराज । मरी रक्षा कीजिए । एसा निर्णय न कीजिए न काजिए महाराज ।

यशो० मेरा निर्णय ? यह निर्णय तो तुम्हारा किया हुआ ह महीपति जिस प्रकार तुमने श्रेष्ठि को केवल सौ स्वर्ण-मुन्गएँ का पात्र

समझा उसी प्रकार तुम भी कुछ समय तक अपनी पत्नी से दूरताप कर सतत ही रात समय के लिए वह मंत्री के अधिकार में रहगी। क्या मंत्री ? ठीक है ?

मंत्री महाराज का निष्पक्ष सर्वोपरि है।

विजय नार-सार विवर तो यही है महाराज।

महीपत महाराज ! यह मुक्तामाला मुझ नहीं चाहिए—मरी पत्नी को भी नहीं चाहिए। मैं आपकी सेवा में उसे लौटाना हूँ। (माला लौटाता है।) मरी पत्नी का रक्ता के कूप से न निरालिए। उसे मरे पास ही रहन दीजिए।

यशो० मुझ कोई आपत्ति नहीं किन्तु फिर तुम 'याय' पूवक श्रेष्ठि से इतनी स्वयं मुद्राएँ नहीं ल सकते।

महीपत महाराज जसा निष्पक्ष करें।

यशो० श्रेष्ठि ने कहा था कि जितना आप उचित समझते हैं उतना लें। उचित एक पंचमास है अर्थात् केवल सौ स्वयं मुद्राएँ।

महीपत मुझे स्वाकार है।

विजयसेन (सम्मिलित स्वर से) महाराज यशोवदन के 'याय' की और मंत्री जय ! जय ! जय !

मैलम कवि ! तुम महाराज यशोवदन का 'याय' देना ?

कवि देवि ! मैं तो महाराज की विलक्षण बद्धि पर मुग्ध हो गया। किस प्रकार भ्रष्ट रूप से उन्होंने सारी परिस्थिति को समझ कर एक क्षण में 'याय' कर दिया। धन्य है !

मैलम इस प्रकार इस घरती के स्वर्ग में अनकानक नरेश सत्य और धर्म को दृष्टि से 'याय' करते रहे। शताब्दियाँ बीत गईं।

कवि इसके बाद का इतिहास क्या है देवि !

मैलम कवि ! आज समय अधिक हो गया। अब अधिक नहीं कहूँगी। किन्तु मध्यकाल में जहाँ जहाँगीर और नूरजहाँ ने इस भूमि

को स्वग की सजा दा वहाँ धाधुनि काल में पाकिस्तान ने इसे अपने भत्याचारा और नृशस परो से बुचना । इसकी कथा भी बहुत ममस्पर्शी है । यह कथा कन कहूँगे । तुम इसी म्यान पर कल इसी समय घाने का कष्ट करना ।

कधि म भवश्य उपस्थित होऊगा देवि । म इम घरती के स्वग की कथा मुन कर घय हो गया ।

मैलम पृथ्वी के स्वग की कथा साहस और विजय की कथा है । शताब्दियों के बाद शताब्दियाँ बीत जायेंगी । किन्तु मह स्वग कभी विदेशियों की पराधीनता स्वीकार नहीं करगा । इसके निवासी भारत भूमि को ही अपनी भूमि मानेंगे और काश्मीर सदा विजय रहेगा । इम पर सत्य और धर्म की ध्वजा सदा ही फहराती रहेगा । ( कुछ शक कर ) म भव फिर अपने रूप में लीन होती है ।

ध्वनि ( खोर को कलकल ध्वनि )

कधि घय हो देवि कनम ! तुमने घरती के स्वग का भविष्य भी बतला दिमा । इस घरती के स्वग की जय !

(समाप्ति सगीत)







**समय-चक्र**

पान

विजय

राजद्र

पुरुष

सैनिक

समय चत्र

भटार्क

चारुमित्रा

अशोक

चाणक्य

वृद्ध पुरुष

विजय का अध्ययन कर। एक और आल्मारी में पुस्तकें हैं। उसके समीप टेबिल और दो कुर्सियाँ हैं। कुछ हटकर कोने की ओर एक चारपाई जिस पर बिस्तर लगा हुआ है। दीवाल पर फले-डर।

पर्दा उठने पर विजय टेबिल पर रखी हुई एक पुस्तक पढ़ने में व्यस्त है। राजेन्द्र आल्मारी में कोई पुस्तक खोज रहा है।

विजय ( उठकर अभिनय के स्वरों में पढ़ते हुए ) तो वृषल ! इस कोरी बकवाद से क्या नाम । जो राक्षस चतुर ह तो यह अस्त्र उसी को दे दे । यही तुमन चाणक्य को जीतने का उपाय

राजेन्द्र ( आल्मारी की एक पुस्तक निकालते हुए ) तुम तो विल्कुल ही चाणक्य बन गए विजय ! बाह क्या चन्द्रगुप्त को डाटा ह । चन्द्रगुप्त न हुआ चद्रू कहार हो गया ।

( पास आता है )

विजय अर चद्रू कहार होता तो भो गनीमत थी। चाणक्य को मुँह तोड़ जवाब दे सकता था। कहता—ए अवे-सवे न किहो चानक ही तो आपन घर ब। बहूम बपरब तौ तुम्हार चन कार्ई क चना बना ब चवा जाब हौं। यहाँ तो सम्राट चन्द्र गुप्त चाणक्य के आगे धर धर कापता ह। कहता ह अरे ! क्या भाय को सचमुच क्रोध आ गया !

राजेन्द्र उस समय की नीति ही यही रही होगी।

विजय यह नीति तो मेरी समझ में नहीं आती।

अरे भाई सीधी बात कहो सीधा उत्तर सुनो। सकिन

यहाँ एक बात के दस मय । सिर चुजलाते रहो पता हो नहीं चलता कौन सा गुप्तचर कहीं गया, किसने क्या, खबर दी ? किस खबर से किसकी जान गई किसकी बची । और नाम भी क्या रखा है मुन्तराक्षस ! जैसे सब नामों का दिवाला तिवल गया हो । नाटक में राजनीति लिखी जायगी । अरे राजनीति की कतर ब्यात से हम विद्यार्थिया का क्या सरोकार ! बात सोचन की है या नहीं ? इस नाटक में अम्बल्ल स्त्री पात्रों का एकदम सफाया । सिर्फ एक ही स्त्री—वह भी ठिकाने की नहीं । कही रोमास की कोई गुजायश तो निकाली होती ।

**राजेन्द्र** अरे अगर रोमास की चाशनी लनी हो तो प्रसा का स्वप्न गुप्त न पडो । ग्यारह ग्यारह स्त्री पात्र । चाहे जिमे जिम तरह बरगला ला । चाहे जो पर्दा बवामो एक ही मुर निवन्गा—प्यार किया तो डरना क्या ?

**विजय** भई इम्तहान के तिन करीब भागए नही तो देखना कि हमारे मिलन वाला में से कितन पात्र प्रसा जा के नाटको से उत्तरे ह । परीक्षा की तयारी में सभी करक्टर रोल हुए दिखलाई पडत ह । सुबह यात्र करो शाम तक दिमाग से गायब । सीधी बात भी उल्टी दीख पन्ती ह । मालूम होता ह परीक्षा के दिना में बुद्धि भी शीर्षसन करता ह ।

**राजेन्द्र** हम लोगो का रिजल्ट शीर्षसन करे तब बात है । यड डिवी जन वाला सबसे ऊपर । ( हसता है )

**विजय** तुम्हें हसी सूझती ह । यहाँ भवन धक्कर खा रही ह । इन नाटको में एक भी नाटक तयार नही । चाहेमित्रा एकाकी तो और भी समझ म नही आता । अशोक चाहेमित्रा को दण्ड देना चाहता था खद बात सा गया ।

राजेन्द्र मात क्या खा गया। एक सामान्य सी स्त्री ने उसे ऐसा उल्लू बनाया कि पूछो मत। देखो पृष्ठ ३६ पर स्त्री कहती है—  
‘म भव याय लेकर क्या करूगी भ्रात्रो महाराज म तुम्हें राजतिलक कर दूँ। अपने बच्चे के खून का तिलक लगाकर महाराज अशोक चक्रवर्ती अशोक। रह गए महाराज अशोक चक्रवर्ती अशोक।

विजय भाई राजेन्द्र तुम्हें तो पुस्तक के पृष्ठ तक याद ह। यहाँ पुस्तक ही साफ ह। नाटक में तीन पुस्तकें ह। मुग्ध चम स्कन्दगुप्त और चाहमित्रा। इन तीनों में से एक भी सही ढंग से निमाग में नहीं बठी। अच्छा गेस करो, इन्तहान में क्या-क्या आ सकता ह ?

राजेन्द्र क्या आ सकता ह ? [ सोचता है ] क्या बतलाऊँ ? मन नूतन का ध्यान कर आज जो पुस्तक खोनी तो मुद्राराक्षस का चौथा अंक निकला कौमुदी महोत्सव वाना। वही प्रायग।

विजय वह तो नास्ट इपर आ चुका ह। और भव तो नूतन की शान्ति भी हो गयी ह कोई दूसरा प्रायेग।

राजेन्द्र हाँ। यह भी सही ह। तो समझ तो चाणक्य का चरित्र चित्रण।

विजय चाणक्य का चरित्र चित्रण ? हाँ, आ सकता ह। अच्छा स्कन्द गुप्त में ?

राजेन्द्र अच्छा स्कन्दगुप्त में भाई इसमें तो मधुवाला का नाम लेकर पुस्तक खोली थी तो भटाक। भटाक का चरित्र आ सकता ह। यह हमारे देश की परम्परा के अनुकूल भी है। शत्रु से मिल जाना-देश से विश्वासघात करना वही प्रायग।

विजय हाँ भटाक बहुत दिना से नहीं प्राया। और चाहमित्रा में ?

राजेन्द्र अरे चाहमित्रा तो एकाकी-सग्रह ह। छाने छोने नाटक चाट के

नमस्तीन दही-बटा की तरह । मं समझता हूँ कि चारुमित्रा या  
अशोक के समय पर अवरय प्ररन आएगा ।

विजय तो मतलब यह कि चाणक्य भटाव अशोक और चारुमित्रा  
यहो-तीन चार चरित्र चास तौर पर देखन लायक ह ।

राजेन्द्र मन भी यही तीन करकटस तयार किये ह । मन बल प्रोफसर  
साहब से उनके नोटस मांग थ । उहान घाठ बज बुलाया ह ।  
उनके नोटस से हम योग काफी अच्छी तयारी कर नेंगे ।  
कम्बाइड स्टडी ।

विजय ( घड़ी देखते हुए ) ठीक ह तो पौन घाठ तो बज रह ह ।

राजेन्द्र हाँ चला जाऊगा । घाठ और साठ घाठ में क्या फरक पन्ता  
ह । प्रोफेसरो की नस्ल बनी सीधी-साधी होती ह । बेने के  
पत्ते का तरह फट हुए कपडा में भी भूमते रहते ह । दीन  
दुनिया के चक्कर से बारह क्लाक के पेडलम की तरह यूनिव  
सिटी से घर और घर से यूनिवसिटी । बस बचारे खुद अपन  
को भूल रहते ह—घाठ और साठ घाठ का क्या ख्याल रखेंगे ।

विजय लकिन काम खूब करत ह । चाहते ह गिन में २४ के बदल  
अदृतालीम घट हो । बड़ी-बड़ी किताबें इस तरह निकालते हैं  
जसे सुबह हलवाई जनबी पर जलबी निकालता ह । हाथ  
धुमाया जनबी तयार, कलम धुमायी किताब तयार ।

राजेन्द्र लकिन बचार कितना पढते ह तब उनकी बलम से किताब  
निकलती ह ।

विजय एक बार एक प्रोफसर साहब कह रह थ कि अगर समय-चक्र  
आगे बढ़न की बजाय पीछे घूम जाए तो वे जवान होकर न  
जान क्या-क्या लिख डालें ।

राजेन्द्र समय-चक्र भी कभी पीछे घूम सकता ह—कोरी कल्पना ।  
देखो घड़ी की सुइयाँ तो आगे ही बढ रही ह । पौने घाठ से

भाठ बज रहे ह—तो मैं चलो । प्रोफसर साहब स नोटस लकर थोडो देर में लौटता हूँ । तुमसे मिल कर जाऊंगा । अच्छा भाइ ! टाटा !

विजय टाटा ! तब तक म भा तुम्हारे वनलाये सबाना पर सोचूंगा । नींद तो बड ज़ारा से आ रही ह लेकिन जागन की काशिश बरूंगा । म भी समय-चक्र उल्टा घुमा रहा हूँ । जागने के स्थान पर साना और साने के स्थान पर जागना !

राजेन्द्र समय चक्र घूम गया ता क्या कहना ह । अच्छा अभा नोटस लाता ह । ( प्रस्थान )

विजय देखें कमे नोटस लाता ह राजेन्द्र । ( सावते हुए ) समयचक्र ( कलडर के पास जा कर ) प्राफेसर साहब का बल्पना अगर समय-चक्र आगे बटने की अपेक्षा पीछे घूम जाए तो-तो परीक्षा के लिन भी काफी दूर हट जाएंग—भाच के बजाय यति अग्रस्त सितम्बर हो जाए तो—असम्भव ! ( लौटते हुए ) राजेन्द्र ने कौन स प्रश्न बतलाए थ—( सोचता हुआ ) चाणक्य, अशोक, चाणमित्रा और भटाक ! ( कुर्सी पर बठ जाता हूँ ) चाणक्य अशोक चाणमित्रा और भटाक ( जभाई लेकर ) नींद ज़ोर से आ रही ह और परीक्षा के दिना में कम्बल आठ बजे से सिर पर मटरान नगली ह । रात लिन पढाई एक मिनिट नहीं सो सका । तीन दिना मे बराबर जाग रहा हूँ । पढाई की बात सोची और आँख भपी । और फिर जागन की कोशिश भी वहाँ तक करूँ ! ( अपने को झकझोर कर ठीक तरह से बठता हुआ ) हाँ चाणक्य अशोक चाणमित्रा और भटाक—(फिर जभाई लेकर दुहराता हूँ ) चाणक्य ने क्या किया अशोक वहाँ गया चाणमित्रा न कसा आत्म बनिदान किया और भटाक वैसा दशदाहो ह ? कम्बल



मौन शान्त की तरह सर पर सवार है ( आशाच नोंद से हल्की पड़ जाती है । ) चाणक्य—मशोक—चाह मित्रा और भटाक । चाणक्य मशोक चाह मित्रा और भट

( धौल लग जाती है और उसका सिर कुर्सी पर एक ओर झुक जाता है । एक क्षण की शान्ति । धीरे धीरे एक पुरुष का प्रवेश । आधा वस्त्र काला और आधा सफ़ेद जिससे भूत और भविष्य का संकेत होता है । सिर के बाल खेत सम्बन्धी डाढ़ी । यह गौर से विजय को पूरता हुआ आता है । )

पुरुष ( अटहास करने के बाद ) परीक्षा से डरत हो ? जीवन में न जान कितनी परीक्षाएँ देनी पड़ेंगी । कहते ही समय-चक्र घाम बदन के बजाय पीछे घूम जाए तो परीक्षा के तिन काफ़ी पीछे हट जाएँगे । ( हसता है । ) परीक्षा के तिन घरे परीक्षा क दिन ता पास आएँगे । म समयचक्र हूँ । पीछे कैसे घूम जाऊँ बच ? न जान तर जैसे असरूप बच्चे मन बड़ करके अतीत के अघकार में फँक लिए । राम कृष्ण ध्रुव भरत अभिमनु बुद्ध गांधी तो तर ही देश के बचपन । लेकिन उनका बचपन—उनका बचपन म आज भी याद करता हूँ । ऐसा किसका बचपन हुआ है ? तू उनका बचपन भूत गया ? कहता है समय-चक्र उल्टा हो जाय । ( हसता है ) ह ह ह ह गहरी नींद में ह । मर हसन से भी नहीं जागा । अच्छा ! तेरी इच्छा से कुछ देर के लिए म अपनी गति उल्टी कर दूँ । नीं में ही सही बड़े-बड़े पुरुष देखन को मिलेंगे । थोड़ी देर का परिहाम ही मही । अच्छा ( धौलें बड़ करता है । एक क्षण बाद ) कर दी मने अपनी गति उल्टी । यह ईसा को तीसरी शताब्दी है । स्कन्दगुप्त का सधप । यह कौन धा रहा ह ?

( सैनिक धेन मे एक व्यक्ति प्रवेश करता है )

सैनिक ( तनकर ) किसी ने मुझे यहाँ स्मरण किया ?

समय चक्र तुम सेनापति भटाक हो ।

सैनिक पहिले पूछने वाला अपना परिचय दे ।

समय चक्र ( हँसकर ) सेनापति ! फल पेड से ही उसका परिचय पूछे ?

मिट्टी का कण पृथ्वी से ही पूछे कि तुम कौन हो ? सुगन्धि फूल से ही प्रश्न करे कि अपना परिचय दो ?

सैनिक यह तुम्हारी कविता सुनने का मुझे धक्काश नही । सीधा उत्तर दो तुम कौन हो ?

समय चक्र तुम्हें गति या यति देने वाला समय-चक्र । फल या भाज हूँ और फल भी रहूँगा ।

सैनिक इतना उत्तर पर्याप्त ह । मेरे समक्ष आने का साहस तुम्हें कसे हुआ ?

समय-चक्र अपनी सीमा में रहो सैनिक ! तुम भटाक हो ?

भटाक महाबलाधिकृत के नाम से पुकारो । सम्राज्ञी अनन्त देवि की कृपा से मुझे कोई भटाक नहीं कहता नवीन महाबलाधिकृत का ही विनम्र सम्बोधन करता ह । यदि तुम मुझे केवल भटाक कहोगे तो मैं तुम्हें युद्ध के लिये ललकारता हूँ ! ( तलवार निकालता है । )

समय चक्र तलवार म्यान में ही रखो । भटाक ! स्कन्दगुप्त से विद्रोह कर पुरगुप्त के जय जयकार में जो तलवार उठी ह वह केवल म्यान में ही शोभा पा सकती ह हाथों में नही । और तुम मुझ से युद्ध करोगे ? तिनका तूफान से लडेगा । समुद्र की लहर समुद्र से सघष लेगी धूमकतु सूय से युद्ध करेगा ? समझो कि मैं समय चक्र हूँ । मन ही तुम्हें सिलौन की तरह उछाला और तोड दिया ।

भटार्क तुमने मुझे क्या तोड़ा मैं स्वयं टूट गया । किन्तु तुमने पुरगुप्त का साथ लिया इसलिए तुम्हें क्षमा करता हूँ ।

समय चक्र यह भी मैं तुमसे बचता रहा हूँ । लेकिन इस उत्तर दो जो दूसरी ओर से आ रही है ।

भटार्क यह कौन आ रही है ! मैं भी देख ।

( सावधान होकर देखता है । चारुमित्रा का प्रवेश, उसकी कमर में कृपाण बसी है )

समय चक्र समय के व्यतिक्रम में ईशा पूव २६१ ।

चारु इस स्थान पर मरु किमी न स्मरण किया ?

समय चक्र एक विद्यार्थी हूँ ( सकेत करता है ) जो सो रहा हूँ ।

चारु इस श्रमोघ वाचक न मरा स्मरण किया ? ( भ्रम-सूचक दृष्टि ) ।

भटार्क उसी के स्मरण करने पर मैं भा गया ।

चारु ( भटार्क को देख कर ) कौन ? सनिक ? तुम बलिङ्ग के सनिक तो नहीं हो । पुण्य ?

भटार्क मैं मगध का सनापति हूँ देवि । महाबलाधिपति

चारु यदि बलिङ्ग के छत्रवशा सनिक हात तो मैं तुम्हें युद्ध के लिए लनकारती । अपनी कुशलता समझा कि तुम मगध के सनिक हो ।

भटार्क मरी शक्ति मैं सही मरी कुशलता सुरक्षित है । किन्तु आप कौन ? आपकी कुटिल भाँहा में शक्ति की लकीरें हैं आपके भङ्ग भङ्ग में ज्योति की आकाश गङ्गा है । आप अपना परिचय प्रदान करें देवि !

चारु आप अपना कृपाण निकालें और मरे कृपाण का उत्तर दें ।  
( तलवार खींचती है , यहाँ मरा परिचय है ।

भटार्क ( अभिनय के स्वर में ) आप वास्तव में दुर्गा हैं देवि ! यदि

आप किसी साम्राज्य की सम्राज्ञी हूँ देवि तो मैं आपका सेनापति बनने को प्रस्तुत हूँ। (घुटने टकता है) अपनी सम्राज्ञी अनन्तदेवी से जमा माँग लूँगा। सम्राज्ञी अनन्तदेवी से आप अधिक महान पात होनी हूँ देवि।

चारु (आश्चर्य से) सम्राज्ञी अनन्त देवि ?

भटार्क (उठ कर) हाँ देवि। परम महारक महाराजाधिराज कुमार गुप्त महेंद्रादित्य की राजमहिषि। वे भी बहुत सुन्दर हूँ। बनी कृपालु हूँ। मैं उनका ही महाबलाधिकृत भटाक हूँ।

चारु (सोचत हुए) भटाक ! भटाक मैं किसी से परिचित नहीं। राजमहिषी देवि तिप्परच्छिता के अतिरिक्त मैं किसी को सम्राज्ञी नहीं मानती।

भटार्क आप देवि तिप्परच्छिता को कैसे जानती हूँ ?

चारु कैसे जानती हूँ ? वे मरी स्वामिनी हूँ। मैं सम्राट् प्रियदर्शी अशोक की अङ्गरक्षिका हूँ। (अपनी उठी हुई तलवार की धार देखते हुए) अङ्गरक्षिका। इस तलवार की धार ने सन्ध मरा साथ दिया हूँ।

भटार्क (अत्यधिक चकित होकर) सम्राट् अशोक की अङ्गरक्षिका ! (भुडकर सोचता है) ईस्वी पूर्व २६१, सात सौ से अधिक वर्षों का यतिव्रत ! मैं मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा हूँ ? (आँखें मलता है) नहीं सम्भवतः समय-चक्र ने ऐसा ही कहा था। क्या कौतुक हूँ।

चारुमित्रा (तलवार देखत हुए) क्या सोच रहे हैं आप ?

भटार्क (आगे बढ़कर) देवि बड़े सौभाग्य से आपके दर्शन पा रहा हूँ। आप चारुमित्रा तो नहीं हैं ? चारुमित्रा सम्राट् अशोक की अङ्गरक्षिका ?

चारु यह मेरा सौभाग्य हूँ।

भटार्क ( सोघता हुमा ) चारुमित्रा में घब्र हुमा देवि ! आपसे भेंट कर । मन साहित्य और राजनीति में आपकी प्रशंसा में क्या नहीं पड़ा क्या नहीं सुना ? साधु ! देवि ! साधु ! आप तो रति और दुर्गा की सम्मिलित प्रतिमा ह ।

चारु कवल दुर्गा की रति की नहीं ।

भटार्क सत्य ह देवि ! विन्तु यह मैं कैसे मानूँ ! महाबलाधिकृत के पास कृपाण के साथ नेत्र भी हैं और उन नत्रा के पीछे एक हृदय भी ।

चारु ( तीव्र स्वर में ) सेनापति ! ऐसे नत्रा को भ्रमा कर देना चाहिए ऐसे हृदय को चूर-चूर हो जाना चाहिए । ऐसे नत्रो और हृदय से महाबलाधिकृत के बाण और कृपाण कुण्डित होते हैं ।

भटार्क ( साहस से ) देवि ! मैं भी आपकी भाँति वीर हूँ । अनक युद्धों में मैं शत्रुओं को मस्तक इसी कृपाण से काट कर रख चण्डो को भेंट में दिए ह । रणचण्डो न मरे सवेत से युद्ध भूमि में न जान कितन नृत्य किए हैं । भले ही उनका नृत्य इतना भावपक न हो जितना भावपक आपका नृत्य

चारु मरा नृत्य ?

भटार्क ( विह्वल होकर ) मोह उसका प्रशंसा कौन कर सकता ह देवि ! मैं आपने नृत्य के सम्बन्ध में सुना था कि उसकी ध्वनि में आकाश भी चारो ओर से सिमट कर छोटा हो जाता ह सरिणा का प्रवाह मधुर गति से बहने लगता ह और कलियाँ खिल कर फूल बन जाता हैं ।

चारु महाबलाधिकृत से कविता ( तलवार देखते हुए ) दूर हो रहनी चाहिए ।

भटार्क देवि ! आपने दर्शना से ही कविता जन्म लेती ह आपके नृत्य

से ही कला उत्पन्न होती है। वह सीमाग्यशानी है जो आपने नृत्य की मुद्राएँ देखती है।

चारु अपनी सम्राज्ञी ( सोचते हुए ) क्या नाम बतलाया ?

भटार्क महादेवी अनन्त देवी।

चारु महादेवी अनन्त देवी की अनन्त नृत्य मुद्राओं को देखा है।

भटार्क यह मेरा पक्षिगत प्रश्न है देवि ! इस सम्बन्ध में कुछ न पूछें !

चारु तो यह महाबलाधिकृत नृत्य मुद्राओं को देखने की इच्छा रखता है। क्या इसी कला से आपको महाबलाधिकृत का पद प्राप्त हुआ ? आपका नाम भटार्क आपके शास्त्र से सायक नहीं होता।

भटार्क देवि आपकी सब प्रकार की आलोचनाएँ सहन करूँगा।

चारु क्योंकि सम्राज्ञी अनन्त देवी की आलोचनाएँ सहन करने का अभ्यास है।

भटार्क नारी के मुख से आलोचनाएँ भा अभिनयनीय हैं। ये आलोचनाएँ आपके नृत्य की भूमिकाएँ ही तो हैं।

चारु ( बीच ही में ) चुप रहो सेनापति। तुम केवल आलोचनाएँ ही समझ सकते हो नृत्य की भूमिकाएँ नहीं। नृत्य की भूमिकाएँ सम्राट् प्रियदर्शी अशोक ही समझ सकते हैं। उनके अनुसार युद्धभूमि में केवल भरवी का नृत्य होता है।

भटार्क ठीक है देवि।

चारु और उम भरवी नृत्य में तलवार का संगीत है नूपुरा का नहीं ?

भटार्क ठीक है देवि।

चारु इसलिए मरे नृत्य की महानता रणभूमि में है रणभूमि में नहीं। जो रणभूमि में नृत्य नहीं कर सकता उसे अगारो पर

नृत्य करना पड़ता है ।

**भटार्क** भंगारा पर ? जलते हुए भंगारा पर ? झोट देवि ! यह तो भयानक है ! आपन रण भूमि में नृत्य किया देवि !

**चारु** नहीं कर सकी ! अपनी स्वामिना की सेवा में गान्धारी तट के शिविर में थी !

**भटार्क** ता भंगारों पर नृत्य किया होगा ?

**चारु** यह भी नहीं कर सका ! हाँ अपना समस्त देह की भंगारों पर रतन का भवसर पाया था । किन्तु महादेवी तिष्यरचिता की कृपा से उस सौभाग्य से भी वंचित रही !

**भटार्क** यह सब बहुत भयानक है देवि !

**चारु** यह वाक्य मैं महाबलाधिकृत वं मुख से सुन रहा हूँ ! महाबलाधिकृत भयानकता से डरता नहीं भयानकता को निमंत्रण देता है ।

**भटार्क** इस समय तो आप मर सामन है देवि ! यदि भयानकता को निमंत्रण न देकर आपके नृत्य को निमंत्रण दू तो

**चारु** ( तीव्रता से ) सावधान जिलासी युवक ! आपन पद की मर्यादा रक्खो । साम्राज्य के साथ अधिक खिलवाव न हो । तुम सेनापति हो महाबलाधिकृत हो । तुम्हें तनवार के दण्ड में मुद्द देखना चाहिए तुम नृत्य देखना चाहते हो ? जाओ यह तलवार फेंक कर किसी नगर वधू की रगशाना में विद्रूपक बनो छुप बशी सेनापति !

**भटार्क** ( रुक्षता से ) सीमा से भाग न बढो चारुमित्रा ! मरी भुजामा मैं भी शक्ति की चिंगारियाँ हैं । मर नत्रों में भी अग्नि शयन करती है ।

**चारु** शयन ही करती है जागती नहीं है ! अपनी समानो से कहना कि मैं रग शाला के स्तम्भा की ही तनवार देकर सनिक बना

दें और तुम उन सनिका के समस्त अपनी शक्ति की बिगारियाँ और नशा की अग्नि को लपटें उठाओ ।

( किसी के आने का गद होता है । युवक की ओर देखकर ) यह युवक अभी सो ही रहा ह । सोन वाले युवक और विलास में शयन करने वाले सेनापति समान रूप से मेरी धृष्टा के पात्र ह । मेर पास अधिक समय नहीं । मैं अब जाऊगी ।

भटार्क कुछ क्षण और नहीं रुकेंगी देवि ?

चारु मुझे युद्ध कर सको तो रुक सकती हू । किन्तु तुम युद्ध नहीं कर सकोगे क्योंकि तुम्हारे नश्र विलास के विष पात्र ह । तुम्हारी जननी तुम से लज्जित न हो यही कह कर जाती है ।

( प्रस्थान )

समय-चक्र ( आगे बढ़ कर ) चारुमित्रा को युद्ध के लिये नहीं ललकारा महाबलाधिकृत ? यह तलवार खिलौना ही बन कर रह गई ?

भटार्क नारी पर हाथ उठाना वीरों की शोभा नहीं ।

समय चक्र किन्तु आप तो चारुमित्रा क प्रश्न का भी उत्तर नहीं दे सके, महाबलाधिकृत ?

भटार्क स्त्रिया की बातें सुनन में जो आनन्द ह वह उत्तर देने में नहीं ।

समय चक्र पुरुषा को उत्तर दे सकते हो ?

भटार्क उत्तर ही नहीं प्रश्न करने वाले की जिह्वा भी काट सकता हूँ ।

समय चक्र तो सैभानो एक प्रश्न करने वाला महापुरुष ही तुम्हारे समक्ष आ रहा है ।

( भटार्क नेपथ्य में देखता है । कापाय देश में अशोक का प्रवेश )



अशोक ( सनकर ) इस स्थान पर किसी न मुझ स्मरण किया ह ?  
समय चक्र यह विद्यार्थी ह ! ( सन्त करता है )

अशोक विद्यार्थी ? तच्छिना का ह ?  
समय-चक्र नहीं ! प्रयाग विश्वविद्यालय का ।

अशोक ( देखकर ) यह यह तो सो रहा ह । तुम परिहास तो नहीं करते ?

समय चक्र सम्राट परिस्थितियाँ भल ही परिहास करें । सम्राट स परिहास करने वाला व्यक्ति आज तक मन ससार में उत्पन्न नहीं किया ।

अशोक तुमन उत्पन्न नहीं किया ।  
समय-चक्र मं समय चक्र हू सम्राट ! अपनी गति में स्थिर ।  
अशोक साधु ! यह विद्यार्थी प्रयाग विश्व विद्यालय का । इसके मुख पर यकावट के चिह्न ह ।

समय चक्र स्वप्न में ही यह आपको निमंत्रण दे रहा ह । दिन भर आपका स्मरण करता रहा ।

अशोक इस अवोध बालक न मरा स्मरण किया ?  
भटार्क इसी क स्मरण करने पर म भी यहाँ आया ।  
अशोक ( भटार्क से ) जब तक आना न हू बोलने का साहस न हो । मरी राज मर्यादा में स्थिर रहो । तुक सनिक जात होत हो ।  
भटार्क म महाबलविकृता भटार्क हू किन्तु म जानना चाहता हूँ—  
कौन राजा और किसका राज मर्यादा ?

अशोक यहाँ राजक नहीं ह नहीं तो वह तुम्हें समझाना कि कनिङ्ग की वायु जिसके नाम से कापती ह, वह कौन ह ?

भटार्क सम्राट अशोक ।  
अशोक तुम्हें वापन की आवश्यकता नहीं । म अब क्रूर और निर्यो अशोक नहीं हूँ कनिङ्ग युद्ध के उपरान्त प्रियन्शी अशोक हूँ ।

बौद्ध धर्म का चक्र परिवर्तन भन्ने किया ह ।

भटार्क म आपके इतिहास से परिचित ह ।

अशोक अतिरिक्त की ध्वनि तरङ्गा से म भी तुम्हारे कार्यों स परिचित ह ।

भटार्क तब ता हमलोग अपने अपने युग के अन्तिम सनिक थे ।

अशोक सावधान ! एक सामान्य सा महाबलाधिकृत अपनी तुलना सम्राट से करना ? यद्यपि मैं बौद्ध हूँ किन्तु सम्राट हूँ । भटार्क तुम्हें यह साहस कैसे हुआ कि अपना नाम मेरे नाम के साथ जाड़ सके ?

भटार्क सम्राट ! बड़े से बड़े सम्राट की शक्ति महाबलाधिकृत के ऊपर आश्रित ह । सम्राट-सम्राट नहीं ह यदि महाबलाधिकृत उसके साथ नहीं ह । महाबलाधिकृत की शक्ति ही सम्राट की शोभा ह ।

अशोक मूल भटार्क ! सम्राट बहो हो सकता ह जो स्वयं सनिक हो । तब स्वामी स्कन्दगुप्त सम्राट बना क्योंकि वह सनिक था । भन्ने ही तू उससे साथ विश्वासघात किया हो ।

भटार्क क्या सम्राट भी स्कन्दगुप्त के पडयत्र में सम्मिलित ह ?

अशोक ( तीक्ष्णता से ) राजमर्यादा पर बलङ्क लगाने वाल देशद्रोहा ! साम्राज्य की शिष्टता सीख । तू अपना तरह सभी को पडयत्र में सम्मिलित समझता ह ? अनन्तदेवी ने अपने विनासोत्सव में मूषक को यात्रा बना दिया । मुझे दुःख ह कि स्कन्दगुप्त की उदारता ने पुन व्याघ्र को भूषण नहीं बनाया ।

भटार्क सम्राट ! मैं बलाधिकृत ह । मेरा हृदय शूला लौह फलक सहने के तैयार ह सत्र विष वाक्य बाण के लिए नहीं । अपना नाम का उत्तर देना जानता हूँ ।

अशोक मैं भी जानता हूँ कि तू किस प्रकार उत्तर दे सकता ह । पुण्य

मित्रा के युद्ध में मुझ सेनापति की पत्नी नहीं मिली इसलिए तू धनन्तदेवी द्वारा उठाए गए तण्ड प्रथम में सम्मिलित हुआ ! गुप्त साम्राज्य के हीरो के से उज्ज्वल हृदय वीर युवक का शब्द रक्त क्या तेरा प्रतिहिंसा राक्षसी का धल नहीं हुआ ।

**भटार्क** सम्राट ! वीर के प्रति उचित वार्तालाप होना चाहिए ।

**अशोक** तू वीर ह ? साम्राज्य के कुचत्रियो का विपकीट ! तू अपनी माता कमला का छोटी सी इच्छा भी पूरी न कर सका कि तू देश का सेवक होता म्लच्छा से पन्दलित भूमि का उद्धार कर सकता ? क्या तू साम्राज्य-लक्ष्मी महादेवी का हत्या के कुचक्र में सम्मिलित नहीं हुआ ?

**भटार्क** मन केवल राजमाता धनन्तदेवी की आज्ञा का पालन किया था ।

**अशोक** और जब हूणो को एक बार ही भारत की सीमा से दूर करन के लिए स्वर्गुप्त न समस्त सामन्तो को भ्रामत्रण दिया तब मगध की रक्षक सेना के परिचालक होते हुए तू न कुम्भा का बांध नहीं साडा ?

**भटार्क** सम्राट ! अपमान सहन करन की एक सीमा होती ह । सम्राट के विरुद्ध मन कोई अपराध नहीं किया । केवल पुरगुप्त को सिंहासन पर बठान का प्रतिज्ञा से प्ररित होकर मन यह किया । स्कन्दगुप्त न सही पुरगुप्त सम्राट हो ।

**अशोक** मूल ! तू सम्राट निर्माता हो गया ! तू न अपनी बुद्धि पर अहंकार का पानी चढाकर भ्रमन को सम्राट से भी ऊंचा मान लिया । तेरी वीरता का दम पालण्ड की सीमा तक पहुँच गया ।

**भटार्क** सम्राट मुझ प्रपचबद्धि की उपतारा की साधना में विश्वास हो गया । उसी ने मुझ सिखलाया था कि शत्रु के उपकारा का

स्मरण न कर उससे बदला लेने का उपाय करना चाहिए ।  
 अशोक तो चंद्र कापालिका की आग में चलने वाला व्यक्ति अपने को  
 महाबलाधिकृत किस मुख से कहता है ।

भटार्क सम्राट् ! आप मुझे द्वन्द्व युद्ध के लिए उत्तजित करते हैं ।

अशोक उठा अपना कृपाण ! और मुझ पर प्रहार कर । किन्तु तू  
 प्रहार नहीं कर सकता । मेरी सत्वशक्ति के समक्ष तू निबल  
 है । बौद्ध है शपथ ने चुका है कि कृपाण नहीं उठाऊंगा ।

भटार्क तो मैं नि शस्त्र सम्राट् पर कृपाण नहीं उठा सकता ।

अशोक मान गया मेरी शक्ति । जीवन भर जिसनें ढाग किया वह मेरे  
 समक्ष कैसे खड़ा होगा ? जा चला जा अनन्तदेवी विलास कक्ष  
 में तूरी प्रतीक्षा कर रही होगी । बिनासा बौद्ध ! नहीं जानता  
 कि राजनीति जब स्वाय लकर चलती है तो वह देश द्रोहिया  
 की भाषा बन जाती है । मर सामने स चला जा ।

( भटार्क का प्रस्थान )

वृत्तघ्न विलासी देशद्रोही ( टहलता है )

( दूसरी ओर से बद्ध और कुरूप पुरुष का प्रवेश )

वृद्ध पुरुष ( आते ही ) विलासी तुम हो । देशद्रोही तुम हो ! !

अशोक ( घूमकर ) मैं विलासी मैं देशद्रोही ।

वृद्ध पुरुष हाँ अशोक ! तुम विलासी तुम देशद्रोही ।

अशोक यह कसी भ्रमर्यादा ( पुकार कर ) राजकु !

वृद्ध पुरुष राजकु का पुकारन की आवश्यकता नहीं है । चाणक्य से बातें  
 करो ! मैं हूँ विष्णु शर्मा चाणक्य ! !

अशोक समय चक्र उलट गया है । आघाय चाणक्य ! ( सोचता है )

चाणक्य ! महामंत्री ! मेरे पितामह चन्द्रगुप्त के महामंत्री ।

चाणक्य हाँ चाणक्य, तूने सुना नहीं ?

बोलसपिणी नन्दकुल क्रोध धूम सी जौन ।  
 धजहूँ बाँधन देत नहिं धहो शिखा मम बौन ॥  
 दहन नन्दकुल बन समय, धति प्रव्रनित प्रताय ।  
 धो मम क्रोधानल पतग भयो चहत धम पाप ॥

**अशोक** धावाय धाणक्य को अशोक का प्रणाम ।

**धाणक्य** स्वस्ति अशोक । किन्तु इतना अहंकार ठीक नहीं । अटक को विनासी और देशगोही कहने वाला अपनी ओर देख कर विनासी और देशगोही कह ।

**अशोक** धावाय । धाप मर पितामह के महामंत्री हूँ नहीं तो मरा क्रोध किस सीमा तक पहुँचता यह जानने के लिए धाप जीवित नहीं रहत ।

**धाणक्य** अशोक । तू न कलिङ्ग पर विजय प्राप्त कर यह समझ कि तुम्हें जसा चन्द्रवर्ती नरेश काई नहीं किन्तु इतिहास से यह पद्य है कि तू राजनीति की परिभाषा भी नहीं जानता । यदि राजनीति से किञ्चित भी परिचित होता तो तारी मृत्यु के पश्चात् तारा राय खण्ड-खण्ड न हो जाता । चरमसीमा की क्रूरता और चरमसीमा की कृपा राजनीति नहीं है ।

**अशोक** तो राजनीति यह है कि नन्दवंश का अकारण विनाश कर दिया जाय ? दक्षिणत मान और अपमान को लेकर एक क्रोधी ब्राह्मण समस्त राजवंश का नाश कर दे ? इसे तुम राजनीति कहते हो महामाय ।

**धाणक्य** मूल हो तुम सम्राट । देवानाप्रिय इति मत्त । चन्द्रगुप्त न भी कौमुदी मन्त्रोत्सव की घोषणा कर मूलता की थी । उसका निषेध कर मन पाटलीपत्र की रक्षा की । तुम्हारे समय में यदि मैं होता तो कनिङ्ग यद्ध नहीं हो सकता था । तीन लाख भारतीय वीरा की मृत्यु न होती और देश दुबल न होता ।

कलिङ्ग युद्ध तुम्हारे इतिहास का कलङ्ग ह।

अशोक तुम नहीं जानत, महामात्य ! कलिङ्ग अपने को सम्राट मानता था। पाटलिपुत्र जैसे उमके समस्त एक जनपद मात्र था। सुमात्रा और जावा में उसने अपने उपनिवेश स्थापित कर रखे थे। जलयानों में विहार करता था और समझता था कि वह प्रायावत का सम्राट ह। मेरे शासन को स्तूप बनाकर रोकना चाहता था। समझता था कि वह इंद्र का वंशज ह। मने अपनी सेना के हाथ उसके अहंकार के पीछे को उखाड़ कर फेंक दिया।

चाणक्य किन्तु वह राजनीति नहीं थी।

अशोक राजनीति और अहंकार में अंतर ह महामात्य। राजनीति पाटलिपुत्र का अधिकार था और अहंकार कलिङ्ग की वृत्ति। उसे अपना सेना का अहंकार था। अहंकार का विनाश करना राजनीति का पहिला पाठ ह। तुम अर्थशास्त्र की रचना मने ही कर चुके हो परन्तु—

चाणक्य सावधान ! बौद्ध ! मेरे अर्थशास्त्र का एक अक्षर भी तू नहीं समझता ! सेना का अहंकार किस सम्राट को नही होता ? सिक्खर को अपनी सेना का अहंकार कितना था ? वह विश्व विजय का स्वप्न देख रहा था किन्तु तू जानता ह कि सिक्खर सत नज के आगे नहीं बढ़ सका। यह मेरी ही राजनीति थी कि विना युद्ध किए सिक्खर को उठे परा भागना पडा। चन्द्रगुप्त के पास कितनी सेना थी ? सिक्खर फूक मार कर चन्द्रगुप्त की सेना को उगा सकता था किन्तु मेरी राजनीति न उसी की फूक से उमकी सेना उडा दी। सिक्खर के भारत अभियान में देश के धीरे का कितना रक्तपात होता ! मने विना रक्तपात किए ही सिक्खर को पराजित किया। इसी तरह

तू भी बिना रक्तपात किए कलिङ्ग विजय कर सकता था ।

**अशोक** किन्तु महामान्य ! तुम भूल जाते हो कि गिब्रार विदेशी था वह यूर को परिस्थितिया से अपरिचित था—कलिङ्ग नरेश हमारे ही देश का था—वह हमारे गुण भवगुण सब समझता था ।

**चाणक्य** महामन्त्री राक्षस भां हमारे गुण भवगुण जानता था । वह भी हमारे दश का था किन्तु उस जसे न ने भक्त को चण्डगुप्त का भक्त बनना पड़ा ।

**अशोक** तो तुम कलिङ्ग विजय कस करते ? म यह भी मुनू !

**चाणक्य** मुनो घोर उसे कभी मत भूओ । कनिंग नरेश यदि विलासी होता तो विपक्या भ्रता यन् वीर होता तो चार बधिका से उसका बध करा देता घोर देश क तीन लाख वीरा को मृत्यु से बचा सता ।

**अशोक** यह कूटनीति ह राजनीति न ।

**चाणक्य** राजनीति बुद्धि पर घात्रित ह बुद्धि रहस्य का भवपण करती ह घोर रहस्य प्रकट नही ह । इस तरह रहस्य पर विजय पाने को लिए जब राजनीति घप्रसर होती ह तो उसे कूटनीति की सजा दी जाती ह । बतारो सम्राट ! तुमन चारमित्रा को घगारों पर नाचन की घाना दी ?

**अशोक** भवरप दी । घोर इसलिए दी कयाकि वह मरे युद्ध के उत्साह में कोमरता भरन वाली थी । वह कलिंग बालिका थी—वह मुझ युद्ध से रोकना चाहती ह । कलिंग का शरीर कलिंग का ही साथ देता ह ।

**चाणक्य** तुम मूल ये अशोक ! तुम्हें चारमित्रा को दण्ड नहीं देना चाहिए था ।

**अशोक** ( प्रन्त की मद्रा मे ) दण्ड नहीं देना चाहिए था ?

**चाणक्य** नहीं उससे प्रेम करना चाहिए था ।

**अशोक प्रेम ?**

**चाणक्य** हाँ प्रेम ! चन्द्रगुप्त ने भी कारनेलिया से प्रेम किया था । और ग्रीस सनिको का आक्रमण सदैव के लिए रोक दिया था ।

**अशोक** किन्तु मेरे समक्ष तिप्परक्षिता थी ।

**चाणक्य** और बिदिशा की महादेवी नहीं थी—महद्र और सधमिशा की माता ! फिर महादेवी के रहत हुए तिप्परक्षिता क्या और कस आई ? तुम विलासी थे अशोक ! स्वीकार करो और साथ साथ भयानक भी थे ।

**अशोक** भयानक ? बलिग विजय के परचात् मन हिंसा का परित्याग किया था महामात्य ! मने आचाय उपगुप्त के समक्ष तलवार फेंककर प्रण किया था—महाभिक्षु ! आज से म हिंसा किसी रूप में नहीं करूंगा ! और देखूंगा कि मनुष्य का रक्त इस पृथ्वी पर न पड़े । प्रत्येक स्थान पर सिंहासन पर अत पुर में विहार म म जनता की सेवा करूंगा । आज से मेरा महान कर्तव्य होगा कि म सब जीवा की रक्षा का अधिक से अधिक प्रवच करू । मने अपने आदेशो को शिलालेखों में लिखवाकर समस्त आर्यावत्त में प्रचार किया कि अशोक आज से उनकी रक्षा करने वाला उनका प्रभु ह ।

**चाणक्य** फिर जनता की सेवा और जीवा की रक्षा के लिए तुमन राज पन क्या नहीं छोडा ? बौद्ध भिक्षु और सन्यासी बन कर शासन क्यों करते रहे ?

**अशोक** इसलिए कि राज्य सरक्षण भी मरा धम था ।

**चाणक्य** भयन उत्तराधिकारी को राज्य सौंप कर तुम तथागत की भाति विहारों में उपदेश करते ! चत्था में बौद्ध भिक्षुओं को संगठित करते सन्यासी बनकर भी शासन ! ( भट्टहास करता है ) सन्यासी और शासक ! विश्व में एकमात्र उदाहरण ! ( फिर



घट्टहास करता है ) सायासिया के उपदेश और राजनीति का कसब्य ! छपबशी भशाक ! स्वीकार करा कि तुम राजनीति क्या साधारण समाजनीति का एक अक्षर भी नहीं जानते थे ! सम्राट् भशोक देवानाम प्रिय प्रियन्शी सम्राट् भशोक ! जाओ ! कुणाल व प्रम में निराश होकर तुम्हारे दण्ड की भाग में जल कर भी तिप्परचित्ता तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है ।

( भशोक का नीघ्रता से प्रस्थान )

चाणक्य ( आप ही आप ) युग क तिलौन ! यदि किसी सूत्र से इनका एक हाथ ऊपर उठ गया तो य समभ्रत ह कि हम समस्त भू मण्डल को अभय दान दे सकते ह । युग के अहंकार से पूछ घूमकेतु जो ध्रुव नक्षत्र को भा भपन प्रकारा से तुच्छ समभ्रत ह ।

( समय चक्र का प्रवण )

समय चक्र महामन्त्री आय चाणक्य ! तुम्हें प्रणाम करता हूँ ।

चाणक्य स्वस्ति ! जब भशोक मरे समक्ष आया तो मैं समझ गया कि यह तुम्हारा ही परिहास ह । समय चक्र ! तुमन मुझ लगभग ६०० वर्ष पर्व लौटा दिया । भशोक को लगभग ७०० वर्ष बाण क भटाक से मिला दिया । तुम महान हो समयचक्र ! मैं यहाँ नहीं आना चाहता था किन्तु किसी न भुक्त स्मरण किया था । समय चक्र स्मरण करने वाला यह विद्यार्थी ह महामन्त्री ! इसके परीक्षा के दिन समीप ह । किन्तु अध्ययन की तयारी नहीं ह । यह चाहता था कि यदि समय चक्र की गति उल्टी हो जाय तो इसे परीक्षा के दिन और भी मिल जायेंग । उसे भटाक भशोक और आपके चरित्र का अध्ययन करना था । मन धोनी देर के लिए इसके अनुभव में अपनी गति उल्टी कर दी । उसी के

मनोविज्ञान से आप सब खिचकर चन घाए ।

चाणक्य यह विद्यार्थी ह ? विश्वास नहीं होता समय चक्र कि यह शरीर । यह स्वास्थ्य ! जान होता ह कि इसे बपों से योजन नहीं मिला । निरुसाह, निरुष्ट । यदि विनोह करना चाहे तो विद्रोह भी नहीं कर सकता । यह भटाक से भो गया बीता ह । समय चक्र किन्तु यह आपक वाक्या का बड़ा सुंदर पाठ करता ह । कौमुदी महोत्सव के अवसर पर चन्द्रगुप्त के प्रति आपके छल ब्राध का अभिनय अच्छे ढंग से करता ह ।

चाणक्य अभिनय ही करता ह । सत्य की बात नहीं करता । मेरे आर्या वत्त के विद्यार्थियों का ध्येय अभिनय मात्र ही रह गया ह । समय-चक्र ! मुझे स्मरण आता ह जब म तच्छशिला का विद्यार्थी था । एकमात्र विद्याध्ययन करना ही मेरा ध्येय था । एक एक क्षण में शास्त्र और शास्त्र का आराधना । यह विद्यार्थी शक्ति और शास्त्र की आराधना करेगा ? एक ही शिक्षा केन्द्र तच्छशिला देश विदेश के पन्द्रह सहस्र विद्यार्थी ।

समय चक्र वह युग ही दूसरा था महामात्य ।

चाणक्य तुम्हें स्मरण होगा समय चक्र ! एक बार चीन से एक जमाध राजकुमार आया था मने चिकित्सा शास्त्र का भी अध्ययन किया था । एक मास की चिकित्सा में ही मने उसे दष्टि प्रदान की थी । मेरा कितनी इच्छा ह कि म आर्यावत्त के आधुनिक विद्यार्थियों का भी सच्ची दष्टि प्रदान करू ।

समय-चक्र आप इन्हें दष्टि प्रदान भी कर दें तो कोई लाभ नहीं होगा । महामंत्री इनकी दष्टि निबल ह और बार बार चित्रपटा की देखने स इनकी दष्टि पुन चीख हो जाएगी ।

चाणक्य चित्रपट ! चित्रपट क्या ? अपने गुप्तचर निपुणक को मन योगी का वेश धारण कराया था और वह लोग के मन का

भेद सेने के लिये मम पर भवान् यम का चित्र लिये घूमता हुआ गाता था । कहता था—

घोर देव का काम नहि जन का करा प्रनाम ।

जो दूजन व भवन का प्रात हस्त परिताम ।

समय-चक्र यह बीसवीं शताब्दी की उपलब्धि है । जीवन के चित्रा को क्या के रूप में सुसज्जित कर मत्र से उन्हें गति दी जाती है । अघकार से भर कष्ट में प्रवास से एक पट पर चित्र खिंचाए जाते हैं । इसमें हृदय को स्पष्ट करने वाला सगीत भी रहता है ।

प्याणक्य सगीत का प्रयोग तो राक्षस न भी किया था जब वह मर और चन्द्रगुप्त के बीच में भदभाव उत्पन्न करना चाहता था ।

अर केवल ब्रह्म गहना पहिरि

राजा हाय न कीय ।

अहा जाकी नहि भाजा टर

सो नृप तुम सम होय ॥

समय चक्र ऐसा सगीत चित्रपट में बहुत कम है । अधिक प्रेम का सगीत होता है जिससे छोटे छोटे बच्चे भी प्रेम करना सीख जाए ।

प्याणक्य छोटे छोटे बच्चे प्रेम करें ? क्या कहत हो समय चक्र ? यदि जीवन का आरम्भ ही प्रेम की वासना से हुआ तो फिर जीवन का लक्ष्य क्या है जीवन की साधना क्या है ?

समय चक्र विलास और सम्बन्ध विच्छेद ।

प्याणक्य राष्ट्र का भविष्य विलास में नहीं है समयचक्र । तुम फिर मुझ एक बार अवसर देत तो मैं इस पयभ्रष्ट समाज को सीधे रास्ते पर लाता । पृथ्वी से उठत हुए अन्तरिक्ष में मैं एक पक्षि बार-बार सुनी है ।

प्यार किया तो डरना क्या ?

मैं पहिले समझा, भारतवर्ष कह रहा हूँ—

बार किया तो डरना क्या ?

म प्रसन्न हुआ कि भारत के बीर कितने निर्भीक हैं,  
किन्तु जब प्यार का नाम बार-बार सुना तो समझा कि भारत  
भयना रास्ता भूल गया है।

( नेपथ्य में स्वर )

विजय ! विजय !

चाणक्य यह किसका स्वर है ? विजय ! विजय ! यह किसकी जय-जय  
कार कर रहा है ?

समय चक्र अब जय जयकार बबल नामा में रह गया है कामा में नहीं।  
विजय इस विद्यार्थी का नाम है।

चाणक्य इस शरीर और निष्ठा से यह विद्यार्थी अपने विजय नाम को  
सायक करेगा ?

( नेपथ्य में फिर स्वर )

विजय ! विजय !

समय चक्र अब हमें चरना चाहिए। इसकी निद्रा में मन अपनी गति  
उल्टी कर ली थी। मेरा विनोद समाप्त हुआ। अब हम चलें।

चाणक्य चलन से पहिले मैं अपने देश के लिए क्या करूँ केवल मंगल  
की कामना ही कर सकता हूँ।

समय चक्र तथास्तु ! चलिये महामन्त्रा !

( दोनों का प्रस्थान )

( नेपथ्य में फिर गद्गद ) विजय ! विजय !

( राजेन्द्र का प्रवेश )

राजेन्द्र ( बोलते हुए प्रवेश ) विजय ! विजय ! घर पार जब तक मैं  
प्रोफेसर साहय के नोटस लेन गया तब तक तुम सो गए ?

( विजय को शकशोरता है। विजय झाले मलता हुआ )

उठता है )

विजय बोन ? राजद्र ? भरे चाणक्य ( दृढ़ दृढ़ कर ) भरोक  
भौर भटाक वहाँ गए ? भभी तो यहीं थे !

राजेन्द्र ( घटहास कर ) परीक्षा में जाने वाल चरित्र चित्रण को  
तुमन इतना रटा कि उसका सपना ही देखन लगे ?

विजय वह मरा सपना था ? भरे सब यही थे ! भटाक को चाणमित्रा  
भौर भराक न पटकारा भौर भरोक को चाणक्य न !

राजेन्द्र भरे यह भलग भनग काला के यकिन थे सब एक साथ कैसे ?  
विजय मन कहा था न कि यदि समय चक्र लौट जाए तो परीक्षा दूर  
हो जाएगी । वही हुआ—समय-चक्र उलटन लगा । पहिल  
भटाक सिखा फिर चाणमित्रा तथा भरोक फिर चाणक्य—  
भौर फिर सब चल गए ।

राजेन्द्र तुमन भ छा खाता मजदार सपना देखा ! कुछ समझा उन  
लोगा को ?

विजय सच कहता हूँ राजद्र ! एक एक पात्र, उसको राजनीति सब  
समझ में आ गई !

राजेन्द्र अच्छा यह बात ह । तो एक काम करो सब पुस्तको के सपन  
देख डानो भौर सपन म ही परीक्षा भी दे डानो !

विजय तुम मजाक मत करो राजद्र ! यह स्वप्न क्या प्रत्यक्ष था ।  
एक एक बात !

राजेन्द्र बहुत मजाक हो गया विजय ! समय की जाति भाग ही ब  
गई लौटन क बजाय ! दला भनी म नो बज रहे ह । परीक्षा  
के समय में एन घटा भौर कम हो गया ।

विजय मरी समझ में कुछ नहीं आता !

राजेन्द्र समझ में क्या आया ? भाग्यो प्रोफेसर साध के नोटस देखें ।  
बड़ी मशकल स उलान लिए । पहिन ता कह रह थे न जाने

मन कहीं रख लिए हूँ। जब दस बार नाक रगड़ी तब बड़ी मुश्किल से खोज कर लिया।

विजय तो क्या म काफी देर सोया ?

राजेन्द्र लगभग घ्राघ घटा। चलो, परीक्षा के दिना में नौद को ऐसे छोड़ देना चाहिए—जैसे मुगलेघ्राजम का मटिनी शा।

विजय (सोचते हुए) प्यार—किया—तो—डरना क्या ? (धीरे धीरे) इसे होना चाहिए बार किया तो डरना क्या ?

राजेन्द्र अर्च्छा। यः घ्रापका सशोपन हूँ। फिल्म कम्पनी को निल कर भेज दो। लकिन अघर बार करना हूँ तो पहिले प्रोफसर साहन के नोटस पर करो।

विजय (स्वप्नवत देखते हुए) अर्च्छा भाई यही सही।

राजेन्द्र लकिन भाई बार करने में प्राफेसर साहन के नोटस सही सला मत रहें। अघर हमने अ्राज रात कस के पढ़ाई कर ली तो कल किसी भी पिववर का मटिनी शो मरे जिम्मे रहा।

विजय अघर कोई शा नही देखेगा राजेन्द्र।

राजेन्द्र अघरे पागन। शा नही देखेगा ता जिःगा का अ्राट सीपन का इःसपिरेशन कर्ना स मिलगा ?

यः गीत तो मरे कःजे में बस गया हूँ—

प्यार किया तो डरना क्या ?

(गीत के स्वर गूजत हैं, और धीरे धीरे पर्दा गिरता है)



पानीपत की हार



पात्र

यालाजी  
जनकोजी  
भास्कर  
खी  
द्वारपाल  
कासिद  
राजगुरु  
नाना

ताप्ती नदी के पास घुरहापुर

संध्याकाल—२० जनवरी, मन् १७६१

घुरहापुर में बालाजी बाजीराव का शिविर । पानीपत के भीषण युद्ध की आगका म वे फूना से चल कर ताप्ती के किनारे घुरहापुर तक आ गये हैं । एक ऊँचा और विस्तृत तम्बू है जिसमें रेशम और सोने के तारों की झालरें लगी हैं । रंग विरले परदे । फश पर रेशमी विछावन, जिन पर सोने का काम किया गया है ।

मध्य में एक ऊँचा सिंहासन है । उससे हटकर छोटे छोटे आसन हैं किन्तु इस समय जनकीजी भोंसले और भास्करराव अपने आसनों के समीप खड़े हुए हैं । बालाजी बाजीराव अशांत होकर टहल रहे हैं ।

धारों और एक निस्तब्धता छाई है । पश्चिम के सूर्य की हल्की सुनहली किरणें बाइ और से शिविर में प्रवेश कर रही हैं । बालाजी बाजीराव एक क्षण ठहरकर जनकीजी भोंसले को सम्बोधित करते हैं ।

बालाजी ( अशांति से टहलते हुए एक क्षण रुककर ) राज्यश्री का अपमान ! क्या यह सत्य नहीं है कि सदाशिव राव भाऊ ने दिल्ली में राज्यश्री का अपमान किया ?

जनकीजी समाचार तो यही है, श्रीमंत !

बालाजी जैसे कोई पागल दपण में अपना मुख देख कर उस दपण को ही घूर-घूर कर दे ! कोई मतवाला हाथी अपने ही महादंत को परो से कुचल दे ! कोई मूख सुगंध फैलाने के लिए फूना की माला हाथों में मसल दे ! यह किस बुद्धि का बरब है ? कल के समाचार का एक-एक शब्द एक भटकी हुई विनगारी है जिससे महाराष्ट्र के वैभव में आग लग सकती है ।

भास्कर शांत हों श्रीमंत ! आपकी राजनीति का सागर किसी भी

धनि को गुभा सकता है ।

वाल्लाजी भास्कर ! वास्तविकता समझो—यह बलि-पशु का सतोप है जिसके भविष्य में एक नगी तलवार है । सत्पति राव भाऊ निल्ली पर विजय प्राप्त की । राजधानी में प्रवेश करते ही उनकी धन की तुलना इतनी बढ़ गयी कि उन्होंने राजसिंहासन के स्वर्ण शृंगार को गलवा डाला ! चाँदी को छत उखाड़कर उसके सिक्के ढलवा डाले ! मरे राजकोष से वे दो करोड़ सिक्के लगे गये ! व सब क्या हुए ?

जनकीजी यह भी समाचार है श्रीमन्त ! कि उन्होंने राजस्थान के नरेशों से तीन करोड़ सिक्के और भी प्राप्त कर लिये ।

वाल्लाजी इतनी धन राशि के होते हुए फिर राजसिंहासन की मर्यादा नष्ट करने की क्या आवश्यकता थी ? जनकीजी ! क्या तुम नहीं देखते कि निल्ली की राजलक्ष्मी नग्रा में घाँसू भरकर हमारे सामने रखी है ? वह सिसकत हुए शब्दों से कह रही है कि मैं महाराष्ट्र के हाथों में नहीं, उन लुटरो के हाथों में पड़ गयी हूँ जो राजसिंहासन नहीं जानते । जिस सिंहासन पर महाराष्ट्र का साहसी सैनिक हमारा बड़ा विश्वासराव बठता उसका सोना उखाड़ लिया जाय ! राजभवन की रूपहली छत तोड़ दी जाय ! यह कौन सी राज-मर्यादा है ! राजधानी की राजलक्ष्मी की यह बाणी क्या सत्य नहीं है ?

जनकीजी सत्य है श्रीमन्त !

वाल्लाजी तो फिर महाराष्ट्र को इसका क्या प्रायश्चित्त भोगना होगा ? भगवान् गजानन से पूछो । उन्गर के युद्ध में सत्पति राव भाऊ ने निजाम अली को पराजित कर दौलताबाद असीरगढ़ और बीजापुर के दुर्ग लिये और ६२ लाख की वार्षिक आय प्राप्त की । इसी विजय का यह अहंकार है जिससे भाऊ

उत्तर भारत की रातनीति को खिलौन की भाँति तो रहा ह  
और महाराष्ट्र की मयाग कलकित हो रही ह ।

जनकोजी श्रीमंत ! मुझे आना दें म अपनी सेना लेकर उत्तर भारत  
की ओर वटू । श्रीमंत भाऊ के अमर्यादित वाय से भरतपुर के  
महाराज सूरजमल अपनी तीस हजार सेना लेकर भरतपुर लौट  
गये और इन्दौर के होल्कर तटस्थ हो गये ।

बालाजी और भाऊ न उन्हें रोकन का प्रयत्न नहीं किया ?

भास्कर श्रीमंत ! भाऊ ने ही तो दोनों का अपमान किया । जब हमारी  
सेना राजसी वभव क साथ—बड़े-बड़े तोपखानो खेमा और  
सनिको की स्त्रिया और बच्चा के साथ—धीरे धीरे आगे बढ़  
रही थी तो महाराज सूरजमल और महाराज होल्कर ने श्रीमंत  
भाऊ को सलाह दी थी कि सनिका के परिवारा और भारी  
खेमा को ग्वानियर या भासो में छोड़ दिया जाय और हल्के  
सामान के साथ सेना पुर्ती से आगे बने तब श्रीमंत भाऊ ने  
दोना नरशो का अपमान कर दिया ।

बालाजी अपमान कर दिया ? किस भाँति ?

भास्कर श्रीमंत भाऊ न होल्कर नरश से कहा कि तुम्हारे पूवज बकरी  
भेड चरात रह ह ता यह मना गडरिया की नहीं ह जो बनजारा  
की भाति चले । भरतपुर-नरश से कहा कि तुम जाट हो । जाटो  
म इतनी बढ़ि कहाँ कि व राजनीति और वभव की बात समझ  
सकें । यह बात सुनकर दोना ही रुष्ट हो गय । भारतपुर नरेश  
तो रणक्षेत्र से अपनी सेनाएँ भी हटा न गय ।

बालाजी धार अधूरदर्शिता ! यह सब एसे अवसर पर हुआ जब हम  
पानीपत की युद्धभूमि पर अहमदशाह अगली की शक्ति की  
सदव के लिए कुचलने का आगे बढ़ रहे ह । सदाशिव राव भाऊ  
से मुझे पहिले से ही आशका थी किन्तु उनका अहकार इस

सीमा तक बढ़ जा-गा, इगरी बरगाया नहीं थी। नाना पवन  
बीग को भी गाय म ग्य है। कती उग बपारे बाल्या-भूत पर  
भी संकट न घा जाव।

भास्कर एक बाग पर घौर भी विचार करें थीमन्त ! निम्ना जीतने पर  
धीमन्त भाऊ न निम्नी के शाह घालमगीर को हटाकर महाराष्ट्र  
के विरंजीव विरवागराय का निम्नी का सम्राट घोषित कर  
िया। विरंजीव ता सम्राट हाते ही किन्तु इतनी शीघ्र घोषणा  
करता ठीक नहीं हुआ। एग घोषणा से भवष के नवाव राजा  
उहीला घौर दूमर भुगलमा गरदार जो हमारे सहायक रह हैं  
ये सब मन ही मन घर्तनुष्ट हा गय ह। इस समय तो हमें  
मुगलमाना को सहानुभूति भा चाहिए।

जनकोजी किन्तु भास्करराय ! अधिक चिन्ता का बात नहीं ह। श्रीमन्त  
भाऊ के साथ भीस हजार सवार दस हजार पन्न घौर इब्राहीम  
गारदी का तोपखाना भी ह। सिधिया की फौजें भी ह।

घालाजी किन्तु साथ में ग्रहकार घौर भद्रदशिता भी तो ह। यह  
महाराष्ट्र का स्वभाव नहीं ह जनकोजी ! घत्रपति शिवाजा न  
भी भानमगीर घौरगजेब से लोहा लिया। बड़ी स बड़ी फौजो  
के मकाबले में उहात जती दूरदशिता दिखलायी बसी इतिहास  
में कही ह ? भगवल छाँ जसे घालाक घौर कूटनीतिज्ञ सरदार  
को एक घण में समाप्त कर देना घत्रपति का ही काम था।  
घौरगजेब के चक्रव्यूह से निकल भाना इतिहास की अन्तिय  
पटना ह। लकिन भाऊ सगशिव राव घात्रपति शिवाजी का  
उगहरण नहीं समझ सके।

जनकोजी अधिक चिन्ता न करें थीमन्त ! पानीपत के यद्ध में हमारी ही  
विजय होगी। त्र्यम्बक सदाशिव पुरदरे हमारी सेना के ब्रह  
कुशल सेनापति ह। साथ ही विठठल शिविदव नरुशकर,

शमशर बहादुर बलवन्त गजानन मेहदले एक से एक चुने हुए वीर सेना के साथ ह। महाराष्ट्र की शक्ति बड़े से बड़े ग्रहकार से नष्ट नहीं हो सकती। फिर साथ में श्रीमन्त के चिरजीव विश्वासराव भी तो ह। मद्यपि वे केवल उन्तीस वष के ह किन्तु उनके सामने बड़े से बड़े वीर के भी पर उखड जाते ह।

भास्कर वे तो मरे बचपन के साथी रहे ह श्रीमन्त। उनकी वीरता तो ऐसी ह कि वे एक साथ दस सैनिको से लड सकते ह।

बालाजी ( गहरो सांस लेकर ) विश्वासराव—महाराष्ट्र के आदर्शों की रक्षा करने में समय। इसी विश्वास स उसका नाम राज भुव न विश्वासराव रक्खा। भाऊ सदाशिव राव चाहते थ कि पानोपत के युद्ध में उसे न भेजा जाय। वह बालक ह। किन्तु मने ही उसे जाण वा आदेश दिया। मीने कहा कि महाराष्ट्र के बालक युद्धभूमि में ही बडे होते ह। उनकी तलवार रण क्षेत्र में ही भवानी के कृपाण से शक्ति प्राप्त करती ह। उनका रक्त तभी सायक होता ह जब वह अपने रक्त से रणभूमि का अभिषेक करे।

जनकीजी वे तो श्रीमन्त। शत्रुओं के रक्त से रणभूमि का अभिषेक करेंगे। फिर आपके आदेश स राजस्थान के सभी नरेश श्रीमन्त भाऊ की सहायता कर रहे ह। जैसे ही श्रीमन्त भाऊ चम्बल पार कर आगे बढ कि जनकीजी सिंघिया, दामाजी गायकवाड, जसवन्तराव पोवार, अण्णाजी आठावले अन्ताजी मनकेश्वर और गोविन्दराव बुन्देन अपनी अपनी सेना लेकर उनसे मिल ह। हमारी साथ शक्ति अपार ह श्रीमन्त।

बालाजी यह पानोपत का युद्ध ह, जनकीजी। इसी में महाराष्ट्र के भाग्य का निणय ह। अफगानिस्तान वा अहमदशाह अठ्ठाली महाराष्ट्र का उत्पन्न सहन नहीं कर सकता। इसीलिए वह

भवसर दलबंद घाना है। और मं कहता है कि शत्रु को भवसर देना ही राजनीति का सबसे बड़ा भूत है। तुम जानते हो जनकोजी ! शत्रु ये घान का भवसर क्या है ? भवसर है हमारी परस्पर की फूट ! जब हम छाटी-छोटी बातों पर राष्ट्र की इफाई भूल जाते हैं तब हम जगली जानबरा की तरह अपनी-अपनी माँदें घनाते हैं और व्याघ्र हमें एक-एक कर समाप्त कर देता है।

जनकोजी सत्य है थोमन्त !

घालानी सदाशिव राव भाऊ मही भूल करत है। उन्होंने अपनी ही पक्ति में फूट कर दी और महमदशाह घालानी याघ्र की तरह महाराष्ट्र पर टूटना चाहता है।

भास्कर मुझ विश्वास है वह घेर कर मारा जायगा थोमन्त !

घालाजी युद्ध और वर्षों के बादलों पर विश्वास क्या ? भाग और पानी क्या किस और बरस जाय कौन जानता है भास्कर ! यद्यपि हमारी साथ शक्ति महान है किन्तु हृदय में अनेक प्रकार की शकाएँ सप की भाँति चल रही हैं। पानीपत का नाम एक फूत्कार की भाँति हृदय में गूँज रहा है। आज भगवान गजानन की भारती दो बार बुझी ! वही महाराष्ट्र की भारती के दो दीप न बुझ गये हैं।

जनकोजी शत्रुओं के दो वीर मार गये हाँगा थोमन्त ! भाप घाना दें तो दस हजार सैनिक लेकर मैं भी पानीपत की घोर प्रस्थान कर दूँ।

घालानी तुम नहीं मैं जाऊँगा जनकोजी ! समाचार जानने की उत्सुकता में पूना से यहाँ बुरहानपुर तक भा ही गया हूँ। नभन्त पार कर शीघ्र ही दिल्ली पहुँचना चाहता हूँ। नाना फडनवीस में भी मरा मन लगा हुआ है। उसका न जाने क्या हाल होगा !

उसके प्राणा का दायित्व भी हम पर है ।

भास्कर आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं है श्रीमत् ! जनवाजी को ही जान की अनुमति प्रदान करें । व वहाँ से शीघ्र ही विजय का समाचार लावेंगे ।

बालाजी ( सोचते हुए ) विजय विजय राज्यश्री के अपमान पर विजय ! पवित्र में पट होन पर भी विजय !

( बाहर किसी के प्रदलन की ध्वनि । सिसकियाँ घमसा अधिक जोर से सुनाई पड़ती हैं । )

बालाजी ( चौंकर ) यह क्या क्रन्दन ? ( भास्करराव से ) भास्करराव ! बाहर जाकर देखो ।

भास्कर ( सिर झुकाकर ) जसी आना श्रीमत् ! ( नीघ्रता से प्रस्थान )

बालाजी आज प्रातःकाल जब भगवान् गजानन की आरती हवा के तीव्र झोके से बुझ गई तभी शका का विष मरे हृदय में फतने लगा था कि पानीपत से आता हुआ समाचार भी वहीं मरो आशा की आरती न बुझा दे ! ( सिसकियाँ तीव्रता से सुनाई देती हैं ) यह कौन स्त्री है ?

( गिविर के बाहरी दरवाजे से एक स्त्री शीघ्रता से भास्करराव के साथ आती है । यह विह्वलता में बालाजी बाजीराव के चरण पकड़ लेती है । )

स्त्री ( सिसकियाँ लते हुए ) पाडुरग पाडुरग चला गया । श्रीमत् ! युद्ध में युद्ध में मारा गया मेरा पाडुरग ( सिसकियाँ लेकर ) मेरा अकेला ताल पाडुरग मुझे छोड़कर चला गया । ( सिसकियाँ जोर-जोर से लेती है । )

बालाजी ( सतोष के स्वरों में ) पाडुरग चला गया ? मानुभूमि पर रक्त की वूदें भी चढ़ती हैं देवि ! आंसू की वूदें नहीं ! उठो ! ( भास्कर से ) भास्कर ! यह कौन स्त्री है ?



भास्कर सेनापति पांडुरंग सागरिण का भी मैं हूँ। श्रीमन्त ! यह सभी पानीपत का गौरव से भायी है।

मालाजी सा पांडुरंग की मृत्यु हुई ! काई बात नहीं देवि ! महाराष्ट्र में हजारों मीमांसा का भाग पुत्रा की प्रति दाह है। यदि उनसे नत्रा से अशु धारा अन्ता सा महाराष्ट्र में प्रलय का बाढ़ आ जाता। नहीं नहीं उक्त अशु पानी बाहर नहीं बहे उनके अशु प्रतिशोध का स्फूर्तिग बन गये। तभी तो महाराष्ट्र में इतना प्रवास है। इतनी उष्णता है। तुम भी अपने मामुमा की प्रतिन रखो। दुर्गिन म महाराष्ट्र के काम भावेंगे। (श्री मालाजी राय के पर छोड़कर उठती है। उसकी सिसकियाँ बंद होती हैं।) आज महाराष्ट्र धय की कसौटी पर कसा जा रहा है। सही सूचना जान बूझकर छिपाया जा रही है और महाराष्ट्र की तीखी तलवार म्यान से निकली है ! बोलो देवि ! पानीपत के युद्ध में हमारे सैनिका को विजय कब तक निश्चित हो जायगी ? तुम तो पानीपत से ही भा रही हो ?

श्री (सम्हलकर) समाचार अन्धे नहीं हूँ श्रीमन्त ! हमारी सेना का कार्यक्रम निश्चित ढंग से नहीं चलता।

मालाजी (आश्चय से) क्या ?

श्री जब आक्रमण का भवसर नहीं था तभी श्रीमन्त भाऊ ने आक्रमण करने की आज्ञा दी और उसी में हमारी सेना के चार हजार यकिल बट गये।

मालाजी (आश्चय) चार हजार !

श्री (सिसकियाँ लकर) चार हजार उन्ही में आपका पांडुरंग भी था। सेना में सबसे भागे। उसकी तलवार की गति जैसे भवानी की तलवार की गति थी। हर हर महादेव कहकर शत्रु पर बाज का तरह टूटा। जब शत्रु उसकी तलवार के सामने भाते

ये तो गाजर मूत्री की तरह कट जाने थे। कितनों का उमने रक्त बहाया। लेकिन उमका भी रक्त बहा।

बालाजी ( दुःख से ) बहुत शोक ह मुझे देवि।

स्त्री वीर सनिक शत्रुघ्ना का रक्त बहाकर जीवित भी तो लौटत हैं। मेरा पादुरग जीवित नहीं लौट सका। मन्त्रमे कहता था श्रामन्त। कि मैं तुम्हें लेकर तुम्हें नकर श्रीमन्त को विजय की सूचना दूंगा। आज मैं ही उसकी मयु की सूचना लेकर आई हूँ। ( सिसकियाँ ) मैं उसके बिना जीवित नहीं रहूँगी श्रामन्त।

बालाजी धैर्य रखो देवि। तुम मेरे दुःख का अनुमान क्या नहीं करती? तुम्हारा तो केवल एक ही पुत्र रणभूमि की धलि हुआ ह मेरे चार हजार पुत्र मार गये। विश्वासराव कहाँ ह? वह भी तो सेना के सामने युद्ध करता ह।

स्त्री श्रीमन्त। विश्वासरावजो के सम्बन्ध में म कुछ नहीं जानती। म तो पहले ही युद्ध में अपने पुत्र को खोकर चली आई हूँ। ( हल्की सिसकी )।

बालाजी विश्वासराव भी रणकुशल ह। उसने हजारों शत्रुओं को मारा होगा। वह हाथी पर सवार होकर युद्ध करना अच्छी तरह जानता ह। उसने तो हाथी पर से ही युद्ध किया होगा।

स्त्री म नहीं जानती श्रीमन्त।

बालाजी तुम नहीं जानती किन्तु सेना का प्रत्येक वीर उसे जानता ह। जब दोना हाथा स वह तलवार चलाता ह तो नात हाता ह जैसे एक ही तलवार दस तलवारों बन गई ह। अच्छा होता यदि पादुरग उसके साथ ही रहता। वह कवच की भाँति पादुरग का रक्षा करता।

स्त्री मर पादुरग का ऐसा भाग्य कहा था, श्रीमन्त। वह वीरता

से सदा और रणभूमि में गो गया ।

बालाजी वह रणभूमि में तों मुझ का शय्या पर राया है । पुत्र को कीर्ति ही माता के हृदय का मंत्र दे सकती है । विपत्ति से विद्या नहीं किया जा सकता देवि ! यदि शत्रु को उत्तर देना है तो सास का बरच धारण करा । सूरान और वाली घटाया में इ धनुष बना । तुम्हारे पुत्र का वनिगन तो एमा है कि मृत्यु की भी भाँसा में धामू भा जाय ! किन्तु तुम हमो इसलिए कि तुम माता हो ! तुमन ऐसे पुत्र को जन्म देकर अपना मातृत्व धमर कर दिया है ।

स्त्री श्रीमन्त के धचना से मुझ जीवन गन मिना है नहीं तो पुत्र के बिना मैं जीवित नहीं रह सकती थी ।

बालाजी तुम्हारा पुत्र तो जीवित है देवि ! महाराष्ट्र के कण-कण में जीवित है । पहल वह सीमित था धब प्रसीम हो गया । प्रभु न सबसे सुन्दर देह फूल की बनायो । किन्तु उन देहो में वह प्राण की प्रतिष्ठा करना भून गया ! तुम्हारे पुत्र न उन देहो में प्राण की प्रतिष्ठा की है । और धाज प्रत्यक फूल रक्त को मुस्कान में बल कर धाशा और उल्लास का सदेश दे रहा है ।

स्त्री मैं धय हुई श्रीमन्त !

बालाजी कोई भी विपत्ति लम्बी नहीं है देवि ! यदि तुम उसे देश प्रम और राष्ट्रीयता से नापो । सूर्य की भाति परिस्थितियों के उज्वल पक्ष को ही देखो । ( भास्करराव से ) भास्करराव ! वीर जननी के विश्राम की व्यवस्था राजकीय शिविर में हो ।

भास्कर जो धाना श्रीमन्त !

बालाजी ( स्त्री से ) जाओ देवि ! विश्राम करो ।

स्त्री श्रीमन्त ! इसी प्रकार दीन दुखिया को चिन्ता करें । ( प्रणाम करती है । )

( भास्कर के साथ स्त्री का प्रस्थान )

बालाजी जाकोजी ! जननी का हृदय देखा ! सृष्टि की किसी भी वस्तु से महान् ! पादुरग ने मातृभूमि पर जावन निछावर किया और माता उसे पुत्र पर ही जीवन निछावर करना चाहती है ।

जनकोजी श्रीमत् ! मुझ ता कुछ बालने का साहस ही नहीं हुआ । जितना उसके कष्ट-त्राण से हृदय द्रवित हो रहा था, उतना ही आपके उसाहमय वाक्यों के प्रवाह से उमग और उन्माह को किरणें फूट रही थीं । श्रीमत् ही उसे धर दे सकते थे अथवा वह अपना जीवन तो समाप्त ही करने जा रही थी । मैं धवाक होकर निराशा और आशा के द्वन्द्व को देखता रहा । अत में आपकी आशा का सदेरा ही विजयी हुआ ।

बालाजी जनकोजी ! माता अपने पादुरग की ममता में इतनी अधिक्ती हो गई कि वह यत्न नहीं सोच सकी कि महाराष्ट्र के जो चार हजार वीर बट गये हैं उनकी माताएँ भी तो उसी की भाँति दुखी होंगी । फिर हमारा विश्वासराव भी तो युद्ध में गया और पादुरग की भाँति वह भी सेना के आगे युद्ध करता है । वह महाराष्ट्र की नींव में शत्रुओं का रक्त भर रहा है जिसमें नीव और भा सुदृढ़ हो जाय ।

जनकोजी सचमुच श्रीमत् ! महाराष्ट्र की नीव की सुदृढ़ता धीमल विश्वासराव की बोरता की तलवार के सहारे है । फिर यह तो भवानी की इच्छा है कि व किसे रणभूमि में अमरत्व का वर दान देती है । राय तो बनते विगन्ते रहते हैं ।

( द्वारपाल का प्रवेश )

द्वारपाल श्रीमत् की जय !

बालाजी आना है ।

द्वारपाल श्रीमत् ! पानीपत के साठवार न जो वासिद भजा है, वह

द्वार पर उपस्थित है ।

बालाजी शोभ ही उसे भेजो । बहुत शिवा से उसकी प्रतीक्षा थी ।

द्वारपाल जो भागा । ( प्रस्थान )

बालाजी पानीपत के साहूकार से सचची सूचनाएँ मिल सकेंगी । हम आज भी पानीपत के युद्ध का परिणाम नहीं जान सके हैं ।

जनकोजी श्रीमन्त ! पानीपत का साहूकार आपका सेवक है । उसने प्रत्येक महत्वपूर्ण घटना के समाचार भजने का वचन लिया था । अवरय महाराष्ट्र की विजय की सूचना हागी ।

( कासिब का प्रवेश )

कासिब ( हाथ जोड़कर ) श्रीमन्त की जय !

बालाजी स्वस्ति । तुम पानीपत से भाये हो, कासिब ?

कासिब हाँ श्रीमन्त !

बालाजी साहूकार जो सानन्द ह ?

कासिब सानन्द नहीं हं, श्रीमन्त ! बहुत विन्तित हं ।

बालाजी हम भी बहुत विन्तित हं ! पानीपत के युद्ध में महाराष्ट्र के भाग्य का क्या निष्पत्ति हुआ ? भाऊ विरवासराव और नाना पडनवीस तो कुशल से हं ?

कासिब यह पत्र भजा ह उन्होंने श्रीमन्त ( पत्र आगे बढ़ाता है )

बालाजी जनकोजी ! पत्र पढ़ो ।

जनकोजी जा भागा । ( कासिब के हाथ से पत्र लेकर पढ़ते हुए )  
राजमान राज श्रीमन्त प्रधान पेशवा बालाजी बाजीराव की सेवा में साहूकार केशव का दण्ड प्रणाम स्वीकार हो । आगे समाचार यह ह कि पानीपत के युद्ध की ज्वाला में हमारे दो मोती धुल गय ।

बालाजी ( घोंसकर धीव हो में ) जनकोजी !

जनकोजी श्रीमन्त ! सबवत पत्र के अन्त में कोई सतोषप्रद समाचार ही ।

पूरा सुनने की कृपा करें। ( पुन पढ़ते हुए ) हमारे दो मोती पुल गये सत्ताइस मोहरें खो गयी और चाँदी और चाँवे के खोपे हुए सिक्कों की गणना भी नहीं की जा सकती। सामन्तो द्वारा साथ न देने के कारण पानीपत की लड़ाई में हार !

बालाजी ( बीच ही में ) पानीपत की लड़ाई में हार ! ( कष्टपूर्ण स्वर ) पानीपत की लड़ाई में हार !

जनकोजी श्रामन्त ! अपने को समझाँ !

बालाजी जनकोजी ! यह क्या हो गया ? पानीपत के युद्ध में इतनी अधिक सेना के होते हुए हार ? यह असम्भव है, यह समाचार झूठ है !

कासिद श्रामन्त ! चमा करें। पानीपत की हार मन इन्हीं आँखों से देखी है। भगवान् की कृपा होती अगर मेरी आँखा की ज्योति उसी समय नष्ट हो जाती ! हजारों महाराष्ट्र वीर अफगानियों और पठानों की तलवारों से काट गये ! उनके रक्त की धारा से सारा पानीपत लाल हो गया !

बालाजी पानीपत लाल हो गया ! कासिद ! क्या अहमदशाह अफगानों की तलवार इतनी तेज थी ? ओह ! ( सिर पकड़कर ) यह क्या हो गया !

कासिद श्रीमन्त ! अहमदशाह अफगानों के पर तो उखड़ चुके थे। उनकी सेना भाग रही थी। उसी समय श्रीमन्त होल्कर की फौज ने मदान छोड़ दिया। उनके सिपाही जान-बूझकर पीछे हटते हुए रणक्षेत्र से भाग उठे। तभी अहमदशाह अफगानों की फौज आगे बढ़ी और उसकी हार जीत में बदल गयी।

बालाजी ( विद्वलता में ) तो तो होल्कर ही इस हार का उत्तर दायी है ? भाऊ ने उसकी बात नहीं मानी इसीलिए उसने मौके पर धोखा दिया ? भाऊ और विश्वासराव ने कुछ नहीं किया ?

द्वार पर उपस्थित है।

धालाजी शीघ्र ही उसे भेजो। बहुत दिनों से उम्मीद प्रतीक्षा थी।

द्वारपाल जा आता। (प्रस्थान)

धालाजी पानीपत के साहूकार से सच्चा सूचनाएँ मिल सकेंगी। हम धात्र भी पानीपत के युद्ध का परिणाम नहीं जान सके हैं।

जनकोजी श्रीमन्त ! पानीपत का साहूकार आपका सेवक है। उसने प्रत्यक्ष महत्वपूर्ण घटना के समाचार भेजने का वचन दिया था। अवश्य महाराष्ट्र की विजय की सूचना होगी।

(क्रासिद का प्रवेश)

क्रासिद (हाथ जोड़कर) श्रीमन्त को जय !

धालाजी स्वस्ति। तुम पानीपत से आये हो, क्रासिद ?

क्रासिद हाँ श्रीमन्त !

धालाजी साहूकार का सानन्द है ?

क्रासिद सानन्द नहीं है, श्रीमन्त ! बहुत चिन्तित है।

धालाजी हम भी बहुत चिन्तित हैं ! पानीपत के युद्ध में महाराष्ट्र के भाग्य का क्या निष्पत्ति हुआ ? भाऊ विश्वातराव धीर नाना फडनवीस तो कुशल से हैं ?

क्रासिद यह पत्र भजा है उन्होंने, श्रीमन्त (पत्र आगे बढ़ाता है)

धालाजी जनकोजी ! पत्र पढ़ो।

जनकोजी जा आता। (क्रासिद के हाथ से पत्र लेकर पढ़ते हुए)  
राजमान राजे श्री मन्त प्रधान पेशवा बालाजी बाजीराव की सेवा में साहूकार बेशक का दण्ड प्रणाम स्वीकार हो। आगे समाचार यह है कि पानीपत के युद्ध की ज्वाला में हमारे दा मोती घुल गये !

धालाजी (घोसकर बीच ही में) जनकोजी !

जनकोजी श्रीमन्त ! संभवतः पत्र के अन्त में कोई सतोषप्रद समाचार हो।

पूरा सुनने की वृथा करें। ( पुन पढ़ते हुए ) हमारे दो मोतों पुल गये सत्ताईस मोहरों खो गयी और चाँदी और ताँबे के खोये हुए सिक्कों की गणना भी नहीं की जा सकती। सामन्तों द्वारा साथ न देने के कारण पानीपत की लड़ाई में हार ।

बालाजी ( बीच ही में ) पानीपत की लड़ाई में हार ! ( कदम स्वर )  
पानीपत की लड़ाई में हार ।

जनकोजी श्रीमन्त ! अपने को सम्हालें ।

बालाजी जनकोजी ! यह क्या हो गया ? पानीपत के युद्ध में इतनी अधिक सेना के होते हुए हार ? यह असम्भव है, यह समाचार झूठ है ।

कासिद श्रीमन्त ! चमा करें । पानीपत की हार मने इन्हीं आँखों से देखी है । भगवान् की वृथा होती अगर मेरा आँखों की ज्योति उसी समय नष्ट हो जाती ! हजारों महाराष्ट्र वीर भ्रफगानियों और पठानों की तलवारों से कट गये ! उनके रक्त की धारा से सारा पानीपत लाल हो गया !

बालाजी पानीपत लाल हो गया ! कासिद ! क्या अहमदशाह अन्धाली की तलवार इतनी तेज थी ? ओह ! ( सिर पकड़कर ) यह क्या हो गया ।

कासिद श्रीमन्त ! अहमदशाह अन्धाली के पर तो उखड़ चुके थे । उनकी सेना भाग रही थी । उसी समय श्रीमन्त होल्कर की फौज ने मदान छोड़ दिया । उनके सिपाही जान-बूझकर पीछे हटते हुए रणक्षेत्र से भाग उठे । तभी अहमदशाह अन्धाली की फौज भागे बढी और उसकी हार जीत में बदल गयी ।

बालाजी ( विह्वलता में ) तो तो होल्कर ही इस हार का उत्तर दायी है ? भाऊ ने उसकी बात नहीं मानी इसीलिए उमन मौके पर घोसा दिया ? भाऊ और विश्वासराव ने कुछ नहीं किया ?



फ्रासिद श्रीमन्त ! जैसे ही श्रीमन्त होल्कर की सेना भागी कि श्रीमन्त विश्वासराव ने अपना हाथी शत्रुभा की मारवाट के बीच में बड़ा किया। सबड़ा शत्रुभा को हाथी के परा क नीचे दबाने हुए उहान भयन घायों हाथ के भाले से पुहसवारों की घानी धे दी और दाहिने हाथ की तनवार से शत्रुभा के तिर उडा न्ये ।

वालानी विश्वासराव ! मैं जानता था कि तुम शत्रुभा से महाराष्ट्र के भर हुए वीरा का बन्ता लगे । हाँ, फिर क्या हुआ ?

फ्रासिद जब श्रीमन्त विश्वासराव इस तरह शत्रुभा के तिर उडा रहे थे उसी समय श्रीमन्त ! उसी समय उनके पेट में गोली लगी ।

वालानी ( कृष्णा से ) गोली ! क्या क्या वे घायल हो गय ?

फ्रासिद व हाथी पर ही निबान हाकर बठ गये श्रीमन्त ! मह खबर फलत ही श्रीमन्त भाऊ घोडा दौडा कर उनके पास पहुँच । श्रीमन्त विश्वासराव को माहत देखकर उनकी भाँसा से भाँसू गिरन लग । तभी श्रीमन्त विश्वासराव न कहा—( उत्साही स्वर मे ) बाका ! भाँसू बहान का समय नहीं ह । हारते हुए युद्ध को जीत में बदलिय । एक-एक घण रक्त को बूद बनकर बह रहा ह । शत्रु को मारिए

वालानी ( गहरी साँस लकर ) घय हो । विश्वास ! तुम महाराष्ट्र के सच सपूत हो ! ( उत्सुकता से ) फिर ?

फ्रासिद श्रीमन्त विश्वासराव की ललवार सुनकर भाऊ शत्रुभा के बीच में घुस गय । और फिर उनका पता नही चला कि व कहाँ गये ! दोना ही वीर पानीपत की भेंट हो गय ।

वालानी ( कृष्णा से ) भेंट हो गय ! माह ! ( तिर पकड लेते हैं )

दो मोती घुल गये तभी साहूवार ने एसा लिखा । भगवान् गजानन । यह तुमन क्या किया ? य दोना रत्न अपनी नृद्धि सिद्धि का कोप इन्ही से भरना था तुम्हें ? हाय भाऊ ! हाय विश्वास !

जनकोजी श्रीमन्त । चलिए ! शयन कच्चा म चलिए ! आपका स्वास्थ्य पहल से ही खराब ह ।

बालाजी ( तीव्रता से ) भर सम्बन्ध म क्या बात कर रह हा ! भाऊ और विश्वास के विषय में बातें करा । दोनो वीर मेर सिंहासन को अपन रक्त से अभिषिक्त कर चल गय और म अस्वस्थ होकर उसी सिंहासन पर बठा हूँ । क्या म धिक्कार के योग्य नही हू ?

जनकोजी श्रीमन्त ! आप तो युद्ध म जाने के लिए प्रस्तुत ही थे । आपकी दुबलता देखकर हा श्रीमन्त भाऊ न आपसे एक जान की प्रार्थना की थी ।

बालाजी और म एक गया । जनकोजी ! म समरभूमि में जान से एक गया और व दोना चल गय । युद्ध-यात्रा पर जान से पहिले भाऊ और विश्वासराय मेर पास आय थ । दानो वीर वप में सज हुए थ । दोना न मर चरण स्पश किय और जान की आना मांगी । मन भगवान गजानन के चरणा के फूल उन दोना के मस्तक पर रक्ल । उम वीर-वेष में मेरा विश्वासराय कितना सुन्दर लग रहा था जैसे स्वामी कार्तिकेय युद्ध क लिए सजे हा । बड़ी-बड़ी आँखो म युद्ध का अनुराग ! हसकर उसने मुझ पिता नही कहा—पत प्रधान 'श्रीमन्त पेशवा कहा और एक सनिक की भाँति सिर उठाया । मने देखा उसके माथे पर टीका नही त्रिपुड ह । मन भी हसी में पूछा—सनिक ! तुम्हारे मस्तक पर त्रिपुड ! उसन कहा—सेवक वो रणक्षेत्र

मैं रीत्य धारण करना ह इंगीलिण मस्तक पर निपट  
 अंकित त्रिया ह । मन कहा—भगवान् शकर तुम्हारी रक्षा  
 करें.. ( गिधिल स्वर से ) किंतु रक्षा नहीं हा सकी ।

जनकीनी यह एकमात्र सयोग ह थीमंत । कि उन्हें गोनी नग गयी ।  
 बालानी यह गोनी मुझ लगना चाहिए थी । यदि म वहाँ होना तो  
 विरवात को पीछे कर म अपन वक्षस्थन पर गोना खाना ।  
 लकिन म वहाँ नहीं पहुँच सका । लकिन इम गोली का पूरा  
 बटला दिया जायगा । ( कासिद से ) कासिद । चना पानीपत  
 मर साय । मैं अहमशाह स युद्ध कर गा तुमन मर वच्च के  
 साय युद्ध कर क्या धोरता लिखलायी । मुझ्मे युद्ध करो । मुझ्से  
 युद्ध ( गद गले मे उलझ जाते हैं )

कासिद धय रखें थीमन्त । आपका प्रताप तो देश में चारा धोर  
 फना ह । अहमशाह पानीपत का युद्ध जीतकर भी पानीपत  
 में नहीं ह । वह अफगानिस्तान को तरफ चना गया । जीतकर  
 भी जस वह हार गया ह थीमन्त । उसकी इतनी हार हुई ह  
 कि वह उसे जीत कर भी पूरा नहीं कर सकता ।

बालानी लकिन मेरी कितनी हानि हुई ह कासिद । यह कौन जान  
 सकेगा ! म दुखी हूँ । तुमसे फिर बात करूँगा । तुम जाओ ।

कासिद जो आज्ञा । ( प्रस्थान )

बालाजी पादुरग नन की माँ स कहना जनकीजी । कि मन भी अपना  
 प्यारा पुत्र खो लिया ह । और मरी अति म अस्मि नहीं ह ।  
 कहना कि पादुरग अकेला नहीं गया ह । उसके साथ मरा  
 विश्वासराव भी ह और साय में लक्षाधिक मराराष्ट्र के सत्कि ।  
 मरा सूर्य प्रकाश की अनन्त किरणा के साथ डूबा ह । अब  
 अंधरी रात ह और म हूँ ।

( अपना सिर हथेली से टक सते हैं । निस्तथता ।

एक क्षण बाद घट की ध्वनि सुनायी पड़ती है )

जनकजी श्रीमन्त ! राजगुरु का आगमन हो रहा है ।

बालाजी नगी की बात न जम किनारा को तो दिया तब शरद ऋतु की निमलता आ रही है ! जब नशा की ज्याति समाप्त हो गयी तब अजन की रत्ना का क्या उपयोग होगा ?

( राजगुरु का प्रवेश )

राजगुरु ( आत ही ) धर्मोसाठा मरावें । मरोनि अबध्यासा मारावें  
मारिता मारिता ध्यावें । राज्य आपलें ।

बालाजी राजगुरु क चरणा में बाजाराम का प्रणाम । ( सिर झुकते हैं )

जनकजी चरणा में जनकजी का प्रणाम । ( सिर झुकता है । )

राजगुरु स्वास्ति ! पत प्रधान ! शोक से अपने जीवन को बुरूप मत बनाओ । पानीपत की हार केवल परिस्थितिया को हार ही की हार नहीं और जब बीरा की हार नहीं तब तुम्हारा निरुत्साह और शोक अनुचित है । यदि तुम्हारे हृदय में निरुत्साह और शोक आ गये तो मैं समझूंगा कि ये दोनों महामुशाह अंगली के गुप्तचर हैं जो तुम्हारे हृदय से आरम्भ कर सारे महाराष्ट्र को बदल करन आय हैं । इन गुप्तचरों को दूर करो नहीं तो मैं तुम्हारे हृदय को ही दूसरा पानीपत बना दूँगे जिससे जीत का कोई अकुर नहीं उग सकता ।

बालाजी राजगुरु ! मरे हूँ मैं जिनासा है कि महाराष्ट्र न ऐसा कौन सा पाप किया जिसका परिणाम इतना भयावह हुआ ? पानीपत ने हमारा पानी उतार लिया, हमारी पत नष्ट कर दी । भाऊ और विश्वामराव भी चले गये यह किस महापाप का फल है ?

राजगुरु पत प्रधान ! न यह पाप है न महान्त । राज्य में महापाप तो तब होता है जब राजा निरकुश और अत्याचारी हो जनता की सुख-सुविधा ध्यान ली जाय, उस पर अनकानब कर लगाये जाय,

जब दीन प्रजा को तान-पीते और रहन को सुविधान हो ।  
 एसा तो मुम्हार राज्य में नहीं ह । तुम तो प्रजा को अपनी  
 सत्ता समझते हो । पानीपत की हार महाएण्ड भी नहीं ह ।  
 महाएण्ड ता तब होता जब राय आततायिया क हाथ में चना  
 जाता । जनता की सभ्यता और सभ्यता समाप्त हो जाती ।  
 जानता का नतिक बल और धम नष्ट कर दिया जाता । यह  
 तो बुद्ध भी नहीं हुआ । केवल सुदूर रणक्षेत्र में हमारा योनी  
 सी सेना वीरगति का प्राप्त हुई । म दयता हूँ कि इस पाडी-मी  
 पराजय की प्रतिक्रिया होगी । समस्त महाराष्ट्र फिर से एक  
 के सूत्र में बधगा और पानीपत का बदना शत्रुभा क एश्वय और  
 बभ्रव से लिया जायगा । समय स्वामी रामदास न कहा ह —

माहे तितुके जतन करावें । पुट आणिक मलबावें ।

महाराष्ट्र रायचि करावें । जिक्ड तिकड ।

बालाजी आप के कथन से शान्ति मिली राजगुरु ।

राजगुरु आज रात में भगवान गजानन की भारती होगी । उसमें पत  
 प्रधान भान का कष्ट करें ।

बालाजी भवश्य उपस्थित हुआ । एक बात और बतनायें राजगुरु ।  
 पानीपत से कोई सूचना मिली कि नाना फडनवीस कहाँ ह ?  
 वह यद्द म ता नहीं मारा गया ? दुबला पतला बीमार नडका  
 विश्वासवास की भांति प्रिय ! वह कैसे बचा होगा !

राजगुरु नाना फडनवीस सुरक्षित ह ।

बालाजी ( उल्लास से ) सुरक्षित ह ? धय गजानन ! धय राजगुरु !  
 वह कहाँ ह ?

राजगुरु वह पानीपत से दस घट पूव लौटा । मर ही साथ यहाँ आया ह ।  
 द्वार पर ह ।

बालाजी ( विह्वलता से ) द्वार पर ह ? जनकोजी ! तुम जाकर देखो

## पानीपत की हार

और उसे शीघ्र ही मेरे पास लाओ ।

जनकजी जो भ्रान्त श्रोमन्त ! ( प्रस्थान )

बालाजी राजगुरु ! नाना फडनवीस बच गया ! भगवान गजानन ! तुमने मेरे नाना को बचा लिया । मुझ तो ऐसा उगता हूँ राजगुरु !

जैसे मेरा विश्वामराव ही आ गया ! भाऊ क साय गया था । काशी और वृन्दावन की तीर्थ-यात्रा करने । रण-यात्रा भी कर ली उसने ।

राजगुरु अच्छा ! अब आप नाना फडनवीस से मिलें । वित्तु किसी कारण से आप दुःखित न हों । मैं चला आऊँ मन्त्रे पूजा के लिए देर हो रही है ।

बालाजी प्रणाम करता हूँ । भगवान गजानन से प्रार्थना करें कि महाराष्ट्र के भविष्य पर आंच न आने पाव ।

राजगुरु ( हाथ उठाकर ) स्वस्ति !

( प्रस्थान । उनके प्रस्थान पर फिर घटा बजता है । )  
बालाजी ( सोचत हुए ) ओह नाना ! तुम बच गये । नहीं तो मेरे दुर्भाग्य न मर सभी रत्न मुझमें छीन गिये थे । तुम्हारा बचकर आ जाना तो बसा ही है जैसे किसी को उसकी खोपी हुई दृष्टि फिर से प्राप्त ही जाय !

( जनकजी के साथ नाना फडनवीस का प्रवेश )  
बालाजी ओह ! नाना तुम आ गये । ( उठकर ) दखूँ, वहाँ तुम्हें तो कोई घाव नहीं लग ? तुम स्वस्थ और सकुशल हो !

नाना श्रोमन्त की जय !

बालाजी नाना ! मेरी जय मानते हो । जय—जय—( ध्वज की हसी हसतें हैं ) मेरा परिहास न करो, नाना ! महमूदशाह मन्गली का जय बोलो । पानीपत में उसने मेरी दोना भुजाएँ काट लीं । भाऊ और विश्वास ! उनका रक्त देखा था तुमने । कितना

साल था ? ( जनकोजी से ) जनकोजी ! तुम घन मुझे धरने-ना  
रत्न दो नाना के साथ । इस समय मुझ किमा सनापति की  
आवरणकता नहीं है । तुम जाओ ।

जनकोजी जो आओ ! श्रीमन्त ! ( प्रस्थान )

बालाजी अभी राजगुरु आये थे नाना । उन्होंने समय गुरु रामनाम की  
पाछी सुनायी । मन उनमें बड़ी शक्ति पायी । बड़े बगिनाई  
से मन अपने आँगू तो रोक लिए किन्तु भाऊ और विश्वामराव  
के रक्त की वृद्धे मरा आँपा के भीतर ही भीतर बह रही है  
नाना । जो किसी के हाथ से नहीं पायी जा सकती ।

नाना श्रीमन्त ! दाना बीरा का रक्त इतिहास भी नहीं पाछ सकता ।  
बन्धन दाजिए उसे । महाराष्ट्र को फूट की संधियाँ शायद उमो  
रक्त से भरेंगे । मैं लजित हूँ कि अपना रक्त बहान का धव  
सर न पा सका । श्रीमन्त भाऊ न शपथ देकर मुझ रणभूमि से  
लौटा दिया ।

बालाजी व तीस-यात्री को रण-यात्रा बसे बना सकते थे ? भाऊ न ठीक  
किया कि भरे सहार के लिए उन्होंने तुम्हें वापस लौटा दिया ।  
अकिन्तु तुम बतलाओ नाना । जो तुम्हें भाई के समान प्रिय था  
उस विश्वासराव को खोकर मन क्या नहीं खो लिया ।

नाना श्रीमन्त न एम बीर पुत्र के पिता होने का गौरव प्राप्त किया  
है । इस पानीपत के युद्ध में हारकर भी महाराष्ट्र न युद्ध-वीरो  
को उत्पन्न करने का गौरव घोषित कर दिया है । वह पराजय  
पान पर भी विजय है ।

बालाजी तुम सत्य कहते हो नाना ! हमारे महाराष्ट्र के बीर यदि  
विजयी नहीं हो सके तो शत्रु को मारकर मरने का साहस तो  
दिखला सके !

नाना यदि यही साहस भविष्य में परस्पर की फूट की जड़ उखाड़

## पानीपत की हार

सका तो सत्य ही हिंदू पद-पादशाही की राजनीति प्रखण्ड  
राजनीति होगी, श्रीमंत ।

बालाजी किन्तु पानीपत की हार

नाना ( बीच ही में ) श्रीमंत । चमा करें । मैं बीच ही में बोल  
रहा हूँ । पानीपत की हार की बात जल्दी से जल्दी भूलन की

बात है । हम विपत्तियों के पक्षियों को सिर पर उड़ने से नहीं  
रोक सकते किन्तु उन्हें हृत्पथ में घोंसले बनाने से रोक सकते हैं ।

बालाजी 'नकिन यह कैसे भूना जा सकता है कि आज महाराष्ट्र के दो  
परम वीर सदाशिवराव भाऊ और विश्वासराव नहीं हैं ।

नाना श्रीमंत । यदि हमारी पूव दिशा की खिडकियाँ बंद कर दी  
जाय तो क्या सूर्योदय का प्रकाश हम नहीं मिलगा ? प्रकाश तो

सब तरफ से आने का रास्ता खोजता है । श्रीमंत । हम कपड़ा  
को उलट कर नहीं पहिनते 'नकिन यदि हम बाला को उलट

कर देखें तो हमें प्रकाश ही प्रकाश दिखनायी देगा । इस समय  
ता धम और साहस ही हमारा सहारा है । हमारा दुःख हमारी

वीरता की ही छाया है क्योंकि हम प्रकाश में खड हैं । छाया  
का महत्व नही है श्रीमंत । प्रकाश का महत्व है ।

बालाजी तुम्हारी बाणी से प्रकाश मिलता है नाना । यद्यपि तुम मेरे  
बच्चे के समान हो किन्तु समस्त जीवन की गति विधि में

तुम्हारी दृष्टि है । भगवान गजानन तुम्हें शक्ति दें कि भविष्य  
में भी तुम प्रकाश दे सको ।

नाना श्रीमंत । आपका आशीर्वाद समर रहे । जिस प्रकार प्रकाश  
की अपनी नोलिमा पर और धरती को अपनी हृदीतिमा पर  
विश्वास है उसी प्रकार मानव को अपने साहस पर विश्वास  
होना चाहिए । हमारे श्रीमंत विश्वासराव ने इसी सत्य की  
घोषणा की है । जब मुझे अपने इस भाई पर इतना गव है तो



घायबो घना पुत्र पर कितना गव न हागा !

बालाजी घाज मन तुम्हें घपन पुत्र का मन्त्र निमा ।

नाना मैं कृताय हुआ श्रीमन्त । घापन पुत्र को बहुत कड़ी परीक्षाए देनी पडती ह । महाराष्ट्र में म घपना वटो परीक्षा दूंगा । महाराष्ट्र में उसका भगवा भन्ना फिर स तहरायगा । भगवान गजानन को कृपा हो । घाप महाराष्ट्र क बिपार बीरा को फिर से एकत्र करें । लोग कहत ह कि गुनाव चाह जहाँ उगे घपने साथ काँट भी उत्पन्न करता ह । म कहता ह ठीक ह किन्तु जहाँ काँटा ह वहाँ कुछ समय बाद गुलाब भी होगा ।

बालाजी मुझ भी विश्वास ह नाना । कि हमारी हार ही विजय की ददुभी बनगी ।

नाना मैं धय हूँ श्रीमन्त । कि घापके शोक न सात्स का रूप ले लिया । साहस तो घाप म ह ही कुछ क्षणा के लिए शोक समाचार से दब गया था । यह निश्चय मानें श्रीमन्त ! उत्साह की गति पृथ्वी की सबसे सुन्दर लकीर ह और प्रसन्नता की ध्वनि पृथ्वी की सबसे मधुर ध्वनि ह ।

बालाजी तुम महाराष्ट्र में ही नहीं सार भारतवय में अमर रहोगे नाना । चलो मर साथ विश्राम-वृक्ष में चलो ।

नाना खनिए श्रीमन्त । घाप स्वस्थ ह । म प्रण करता हू कि पानी पत की हार को जीत में बदल दूंगा । महाराष्ट्र का मगला घरण विजय से आरम्भ हुआ था उसका भरतवाक्य भी मरे जीते जी विजय स समाप्त होगा ।

बालाजी तथास्तु । अब से महाराष्ट्र का समस्त उत्तरदायित्व मरे दूसरे पुत्र चिरजीव माधवराव और तुम पर होगा । चलो मरे साथ ।

( प्रस्थान )



# बादशाह अकबर का दीने-इलाही

[ स्वीकृत रूपक ]

यह इबाततगाना ! आतिर क्या बना ! शम घन्डुला नियाजी की भोगडी इस जगह क्या बुरी थी । लकिन जिग तरः मिट्टी से रतन निकलता ह उसी तरह शम घन्डुला नियाजी का भापना स यः इबाततगाना उठ रादा हुआ । हमन इग क्या बनवाया ? फजा न मशवरा शिया कि हर जुम्म को हम आप सबसे मिलकर इबातत का राज समझें । बगाल का मुनमान करारानी भी यही करता था—हमन उसे शिवस्त दो—पना करे उस दायमुल थजू हासिल हो । उमका तरह हम भी इबातत का राज समझें ।

अबुलफजल का कहना ह कि हिन्दुस्तान में पना भी इस तरह की जमायतें हुई हं—मशोक बनिष्क और हप क जमान में । चीन में तान्तिग न एक जमान में मजहबी तसफिए किए ह । हजरत कुबना खान न भी पेकिन में सभी मजहबा के लोगो को इकट्ठा किया था और चीन के अघर को दूर किया । सिक्तर लोगे और मुलमान करारानी की जमायतें तो ताजो मिसात्रें ह जिनम दीनी मसल हल किए गए । तब यह जरूरी ह कि हमारे इतन बड मुक में जहाँ बहुत-सी मजहबो गलतफामियां फनी हुई हैं एमी कोई जमाअत हो । उसी के त्रिए यह इबाततखाना आपके सामन ह । इस इबाततखान के मबाःमे में पहन सिफ मुनी शरीफ होत थे कुछ अमें बाः शियाआ को भी शिरकत मिली और अब मुन्नी और शिया के साथ हिंदू पारसी जन सिल बौध यहूती और ईसाई भी यहाँ अपन अपन मजहब और धम का राज हमें समभात ह । कुछ मुत्रिया को यह पसः नही आया । क्या बनायूनी ! तुम्हें भी शायः शिकायत होगी ? लकिन इसे हम गलत समझत हं । अब हिन्दुस्तान हमारा ह इसकी हर एक आछाई और बुराई हमारी ह । अब इस मल्क म अम्नो अमान ह । जूद और करम हमारी आंयें ह । बाहर स आन वाल कितन अवन मद नोगा न इमे अपना बतन बनाया ह । इसकी हर एक फिजा हमार अन ओ मुकून के लिए ह । यह खःन का नूर ह । और बनायूनी ! हिन्दुस्तान ही क्यों आप

दुनिया पर नज़र डाल । समन्दर पार के इमान भी बेगार हो उठे ह ।  
इस्लाम में मेहदी फिरका भल ही गलत हो लकिन अपन पूरे जोर पर ह  
चीन में पिंग की तरफ आप अपनी नज़र उठाएँ । ईरान के सूफिया की  
जमात दुनिया भर म फल गई ह । तुर्किस्तान म सुलेमान के तूर का जल्वा  
ह । पारस म शाह इस्माइल का क्या असर ह और चीन म युग लो ने  
नई दुनिया कायम कर दी ह तो हिन्दुस्तान म हजरत तमूर का सानदान  
गफलत की नौद में क्यों कर सो सकता ह । हिन्दुस्तान की तबारीख भी  
सूरज की किरन से लिखी जानी चाहिए तारीकी की स्याही से नही ।  
अबुल फजल हमारी आइन लिखना चाहत ह । वे भी इस बात को  
जानते ह ।

इस बग़ारो के आलम में हम सानदान तमूरिया की हस्ती दुनिया को  
खिलाना चाहत ह ।

मज पये हर गिरिया आखिर खदा ईस्त ।

मद आखिरबी मुबारक बदा ईस्त ।

अपनी जिदगी की आखिरी मजिन पर जा नज़र रख सकता ह वही  
बग़ार भवारिक ह । इस जिदगी का आखिरी मजिल क्या ह ? हम कहते  
ह जिदगी की आखिरी मजिल ह खुदा के करीब पहुचना जा दुनिया के  
हर ज़रें में मौजूद ह ।

सरा पदय चख गर दन्दा बी

दरू शमहाए फरो जिन्ग बी

इस घूमते हुए आसमान के पर्दे के नीचे इस शमश्र को देख जो रौशन  
ह । अगर हम मुल्क के कामा से फुरसत मिन और खदा हम एक दूसरी  
जिदगी बग़श तो हमारी स्वाहिश ह कि हम इन पर पूरे तौर म कह  
सकें । तो यह शमश्र सब जगह रौशन ह । इसी रौशनी की किरन बांधन  
की कोशिश हर एक मजहब न की ह । मजिल एक ह रास्ते जुदे जुदे ह ।  
कोई सीधा ह कोई टेढा कोई दाहिन कोई बाए । मजिले मकसूद एक ह ।

तो यह रास्ते का भंगडा है, मञ्जिन का नहीं। हमन देगा ह कि चोड़ यही है बि रा जुनी-जुनी है। और इगो यन्त्रि न इगाऊ क सन्ना टाड कर लिए ह। गुरानू का काण कर रग लिया ह, निरन के हिस्से कर लिए ह और फनन के शमन में घड्य सगा लिए ह। हम कहेंगे कि नफम व दापर में रूह को मिटा लिया ह। हमारी इम वान न शय फ़री के भाग पर मुम्नराण्ट है। शापर ह न। दुनिया व अजीवा गरीब शापर।

ता हम कह रहे थे कि दुनिया का व सयते बना मजहब समझा जाता चाहिए जो इन रास्तों को नही देखता मञ्जिन मज्मूँ को दखता ह।

गर विसान दोस्त मी दारी हवस।

नफ़स रा वा रूह गरदा हम नफम ॥

अगर तू अपन दास्त से विसान को हविस रखता ह तो तू रूह पर नफम का तुटा दे। यही वजह ह कि इस इवादतखान में आप सय अपन दास्त से विसान को हविस रखते ह और नफस को रूह पर लुप्तान के लिए आए ह। जब रूह ही मुस्तकिन ह तो नफम को कोई हस्ती नहीं। जो नफम को तरजीह देते ह वो रूह को पहिचानत नहीं। इसीलिए हम दूमरे का शक की निगाह से देखते ह। हमन वस शक का मिटान को दवा ईजाण वी ह। हमन अपन दीन को इलाही के जत्व से रोशन किया ह जिसम रूह की कोई हस्ती नहीं ह और रूह की कोई किस्म नही ह और रूह वी हस्ती के सामन नफस की कोई हस्ती नहीं ह। यह दीन इलाही ह। इलाही को पहिचानन का सबसे आसान रास्ता ह।

वदायूनी। तुम समझन होग हमन इस्लाम के वसूला के तिलाफ कुछ कहा। हरगिज नहीं। हम खुना के ब दे ह नकिन हम खना के नूर को रवायता म मट्टू नहीं करते। हम समझन ह कि खना के नूर न इस दुनिया में कितन खूबसूरत तरीका स अपन को रोशन किया ह।

बजिलन रूह अउ शीव व हबफोवमूल व हउरत वरीम। शस्त और साफ नशर ही इस दीन की सबसे बणे सिफत ह। अगर हम मरकज पर

अपनी पाकीजा नजर कायम रखें तो हम कभी इधर उधर नहीं भटक सकते । हमारा रास्ता सीधा और साफ है । जो सूझी है वह अपन सफ पर कायम है, वह चाहे सुफ पहिन या न पहिन ।

हम कोई नई बात नहीं करना या कहना चाहते । जिस तरह बीरबल न कहा—दिवरे हुए मनका को जोड़कर एक खूबसूरत माला तयार करना हा हमारा मकसद है । इसीलिए अपने इस दीन इलाही के लिए न हम किसी खास किस्म की मस्जिद तैयार करना चाहते हैं न कोई खास मुल्ला व मुजाहिद को जरूरत ही समझते हैं । कुरान हमारे लिए भा उतनी ही पाक है जितनी इस्लाम के सभी बच्चे के लिए । और यह भी हम कह देना चाहते हैं कि दीन इलाही क्या किसी भी दीन में शामिल होने के लिए किसी भी शर्त के लिए जोरो जवदस्ती की शर्त नहीं है । इन सिलसिले में हम एक बार फिर वही बात दोहराना चाहते हैं जो हमन सलीम से कही थी कि कुरान की आयत है कि अगर खुश चाहता तो सारी दुनिया इस्लाम को अपना दीन मानता लेकिन जब खुश ने ऐसा नहीं चाहा तो बंदे को क्या हक है कि वह लोगो को इस्लाम में आने के लिए जबरदस्ती करे ? अबल और अब से जो इस्लाम में आना चाहता है जरूर आए । आप इसे समझें कि इस दुनिया में १० में ८० आदमो काफिर या हिंदू हैं । अगर मैं तनवार लेकर इन ८० आत्मिया को कत्ल कर दू तो यह खुदा का बड़ा अवुलफतह जलानुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह गाजी क्या सिर्फ दुनिया के पाँचवें हिस्से को ही खुश का नूर समझे और सारी खिलजत को जिसे खुश न इतना खूबसूरती से रूह अता फरमाई है, हमेशा के लिए मारत कर दे ?

इसीलिए दीन इलाही की जरूरत है जिसमें किसी तरह की जार ओ जवदस्ती नहीं है । हमारे सोन में इस दीन इलाही की रोशनी इसी इबादन खान के मुवाहसा से आई है । जनाब मुबारक, फजी और ताजुद्दीन ने इस रोशन को तेज किया है और म्ल से अधरा दूर किया है । अब हम वार

बल की शक्ति से भी गन्ना देत सकते हैं तातेन की गुरु में भी बापनाम के जोहर का निवारण पा सकते हैं। विश्वनाथ की तसवीर से भी जिनगी का राख समझ सकते हैं और शत फ्रेंचों के योगवाशिष्ठ के तरजुम से भागिनवन की सूची देत सकते हैं। इनमें गिवाय भाप जे भवस्ता के जानकार दस्तूर महार जा राना के खरिय भापनाम और भातिश में एक की परस्तिश कर सकते हैं। जन जगद्गुरु हीर विजय और बोध 'समन' की प्रतिमा में हम खुश की रहमत देत सकते हैं। सित्त गुरु उमरदाम के जप में हम जिक्र का जल्वा महसूस करते हैं। दोन इनाही में खुश की रहमत हमन तिल के बीन वान में पूजती-कनता देखी है। हर तिल उसके लिए भोजी है हर श उसका लिए तसवार है।

हमें एक बात याद आ गई। बदायूनी ने एक बार हमसे पूछा कि तसवीर से हम नफरत क्या नहीं करते? हमने फौरन ही जवाब दिया कि मुस्लिम न छदा को पहचानने का एक नया तरीका ईजाद किया है। जब वह किसी की तसवीर खींचता है तो खूबसूरती का जाल बिछा देता है—भाव नाक मुह बनते चमक जाते हैं लेकिन खूबसूरत तसवीर बना कर भी वह उसमें जान नहीं डाल सकता। और खुश छोटी से छोटी और बनी से बड़ी खूबसूरत शकल में जान डाल सकता है। तो मुस्लिम समझता है कि खुदा का जल्वा क्या है। बदायूनी चुप हो गये। हम बदायूनी की लियकत की इज्जत करते हैं लेकिन हमें अफसोस है कि बदायूनी हंस नहीं सकते। छदा के करीब पहुंच कर उनके लबों पर मुस्कु राहट के फूल क्या नहीं खिलते?

हम कहीं से कहीं पहुंच गए। हमें डेर हो रही है। शायद भाप सांग भी जाना चाहते हैं। लेकिन आज हम मसरत महसूस करते हैं कि हमन अपन तिल में उठने वान जज्बात का इजहार किया। दोन इनाही दुनिया का दीन है वशतें कि दुनिया छदा के जात और सिफत समझे। भाप पूछ सकते हैं कि दीन इलाही का रास्ता क्या है? रास्ता भाप अपन तिल से पूछिए

और मुझे कामिन यकीन ह कि हर एक इन्सान उस रास्ते को जानता ह लेकिन उस पर अमल नहीं करता । हर एक दीन और धर्म के मुवाहिदा से हमन सिफ दस बातें चुनी ह । सुनिए —

पहली ह जूद और करम । दरियादिली और मेहरबानी कुरान की हदीस ह कि जब तक तुम अपनी सबसे प्यारी चीज कुर्बान नहीं कर सकते तब तक तुम हकीकत से वाकिफ नहीं हो सकत । इसीलिए हर एक को दरियादिली और मेहरबान होना जरूरी ह ।

दूसरी बात ह बुर काम करने वाले को माफ कर देना और उसके गुस्से का जवाब शीरी जवान से देना । अगर तुम्हें कोई जहर दे तो उसे शकक दे ।

कम म वाश अज दरबल साया फगन ।

हर कि सगत जनद समर ब बरशश ।

तू साया दनवाने दरख्त से कम न सावित हो । जो तुम्हें पत्थर मारे, उसे तू फल दे ।

तीसरी बात ह, दुनियावी द्वाहशात से परहज कर । समझ ले कि दुनियावी जिंदगी एक खेल और बाजी ह ।

अलहजर अज हुन्वे दुनिया अलहजर

बहरे नानो जर मसुर खून जिगर ।

मुहज्बत दुनिया से तू परहज कर । रोनी और दौलत के खातिर तू अपने जिगर का खून मत पी ।

चौथी बात ह वायमुल बजुद के लिए तू इन दुनियावी जिंदगी की बंद से नजात हासिल कर ।

पाँचवी बात ह कामा को तू धबल और भन्व से अजाम दे । इसका हम पहले जिक्र कर चुके ह ।

मन् आखिर वी मुवारक यदा ईस्त ।

छठी बात ह दुनिया में खुश का ऐजाज तू तभी देख सकता ह जब तू



होशियारी से काम ल । हमन पहन भी कहा है कि—

सरापरदए चग गर दटा बीं ।

दर समहाए फरी जिंटा बीं ।

सातवीं बात ह सबसे लिए नम जबान और पुराक्लाम रखना जरूरी ह ।

आठवीं बात ह दूसरे की बात हमरा अपनी बात से मुकुद्म समझी ।

इवान्त बजुज जिन्मते खन्क नस्त ।

तसबीही सज्जान्ह ब दल्क नस्त ।

खत्व की खिदमत से बदवर कोई इवादत नहीं है ।

नवी बात ह दीन के लिए तू दुनिया को तक कर दे और अपन को खुटा पर छोड़ दे ॥

दसवीं और आठिरी बात यह ह कि ए बिरादर अगर तू अपने दोस्त से बस्त चाहता ह तो तू रुह और नफस को एक में मिला दे ।

बस इन्ही दस बाता में दीन इलाही ह ।

रहदा न हमें यह मुल्क दिया । इसे हम शीरों जबान दें मुहब्बत दें इवादत दें ।

मल्लाहो भक्वर



बापू

[ रूपक ]

## पात्र

निर्देशक  
उमेश  
सतोष  
इन्सपेक्टर  
शकूर  
दयाराम  
सकटा प्रसाद  
शान्वा  
नरेश  
हिन्दू  
मुसलमान  
सिरख

निर्देशक बापू ! तुम युग पुरुष हो ! इस युग का इतिहास तुम्हारे पद चिह्न की रखाभा से लिखा जायगा । भय और फट्टा को कुचलते हुए जब तुम्हारे चरण बढ तो कोई शक्ति उनकी गति नहीं रोक सकी । और वे चरण वहाँ जाकर रुके, जहाँ स्वाधीनता का सिंह-द्वार था ।

बापू ! तुमने हमें स्वाधीनता दी । दासता की कालिमा से हमारा जीवन धुंधला हो गया था । तुम सत्य के ऐसे सूय थे जिसके उदय से हमारे जीवन में प्रकाश छा गया ।

तुमने जीवन में क्रांति उपस्थित कर दी । पश्चिमी सभ्यता न वस्तुवाद के प्रभाव से स्वार्थी का जो सघप हमारे मन में उत्पन्न किया था वह तुमने वस्तुवाद व यथाथ मूल्यांकन से सहज ही दूर कर दिया था । इस यत्र युग में तुमने चरख का मन्त्र समझाया । चरख के पीछे स्वावलम्बन और धर्म के रहस्य में तुमने ससार के अंध शास्त्र को गिजित कर लिया । भौतिकवाद के फटोर सघप में तुमने अन्त्यात्मवाद से प्रेरित आत्म-परिष्कार और हृदय परिवर्तन के सत्य को स्पष्ट कर दिया । पशु बल के सामने तुमने सत्याग्रह का विजय दिखला कर ससार को चकित कर लिया और शताब्दियों से पराधीन देश को स्वतंत्रता का प्रकाश दिखला दिया । विज्ञान के समक्ष तुमने विश्वास को अधिक शक्तिशाली प्रमाणित किया ।

( उमेश और सतीश में बातें हो रही हैं )

उमेश भाई सतीश, आज बान क्या है । विस्तार पर लटे हुए हो । सतीश ( गिरे हुए स्वर में ) घामो उमेश ! बढो ।

उमेश बैठता जाऊंगा ही । लेकिन और जितना तो तुम ममसुन की

तरह उमग और उलगाह से भरे नजर आते थ लकिन धाज तो

सतोप क्या पिक्वर देखवर सौट रहे हो ?

उमेश पिक्वर तो रोज ही दसता हूँ । तुम्हारी सूरत का ही एक पिक्वर देख रहा हूँ । लकिन य सिर पर थाल बिछर है और सूरत ये बनी गम की

सतोप तुम ता अपनी खबान ही मुझ पर मांजन लग । जरा बीमार क्या पड गया

उमेश बीमार ! घन्घा बीमार पड गए ? कैसे ?

सतोप या ही जरा सर्ने लग गई ? हल्का सा बुखार हो आया और कुछ खांसी भी उठ सडी हुई !

उमेश यह बठ नहीं सकती ?

सतोप इसीलिए तो लट गया हूँ कि खांसी बठ जाय !

उमेश देखो यह उठना बठना ठीक नहीं । यह इन्फ्लूएन्जा ह । बिगड जाय तो महीना तुम्हें बिस्तर पर रख ! इसकी घभी से फिक्र करनी चाहिए । पेनिसिलीन का इनजेक्शन लना चाहिए ।

सतोप पेनिसिलीन का इनजेक्शन ?

उमेश हाँ किसी डाक्टर का दिखलाओ ! उससे इनजेक्शन लो ।

सतोप मैं डाक्टरा के चक्कर में नहीं पडता । एक बार उनके चगुल में फमा कि बीमारी न रहन पर भी महीना बिस्तर पर रहना पडगा ।

उमेश एसी बात नहीं । आँघे डाक्टरा का इलाज थोडो ही देर में बीमारी को एसा गायब कर देता ह जैसे कभी-कभी तुम्हारे निमाग से भवल गायब हो जाता ह । ( हसी )

सतोप आँघा ! तुम तो डाक्टरा के एजेंट मालूम होते हो । मैं तो समझता हू कि बीमारी में विधाम करना बहुत जरूरी ह ।

ओर एक बात ओर

उमेश वह क्या ?

सतोष वह यह कि मन की शक्ति से बीमारी को दूर किया जाय ।

उमेश ( हस कर ) ओफ ओह ! मन की शक्ति से ? एसी मन की शक्ति होती ता आज दुनिया के बादशाह होते ।

सतोष हा सक्त हो । राम बादशाह ही तो थे स्वामी रामतीथ ।

उमेश अच्छा तो । रामतीथ ही राम बादशाह बन । यह किसकी शक्ति थी ?

सतोष राम की ।

उमेश राम की शक्ति से बीमारी भी दूर हो सकती ह ?

सतोष अवश्य यदि राम की शक्ति में विश्वास हो । देखो ! महात्मा गांधी क्या कहते ह —

( 'राम नाम का रिवाज बजता है । )

निर्देशक म तो मानता हू प्रायना कुछ नहीं करेगी, पुरुषाय कुछ नहीं करेगा । तो इम मामूली सो खासी हटान में राम नाम को भूल जाऊ ? कते भूल सकता हू ।

महात्मा गांधी ने जिस विश्वास के साथ 'राम क नाम को महत्व दिया ह वह इस युग म आश्चर्यजनक ह । बापू ! तुमन राजनीति के साथ हृदय की पवित्रता का जो संयोग किया ह वह इतिहास के लिए चिर-स्मरणीय रहेगा ।

इस पवित्रता में 'याप का रूप भी वितना पचपात रहित था । आज सत्ता हमारे हाथ में ह किन्तु इसका यह तात्पर्य तो नहीं ह कि हम स्वाय के बशोभूत होकर 'याप को अपने पक्ष में करने के लिए अनुचित प्रभाव डालें ? यदि हम ऊँच पर ह तो हमें उसकी मर्यादा रखनी चाहिए ।

(दूर से गोर होता है। ये वाक्य गुन पड़ते हैं—'कम्युलत घालों में धूल झोंक कर भागना चाहता था।' छूनी तो यही है। हाँ हाँ इसीन तो खून किया है। इसके कपड़ों पर खून के छोटें देत सीजिए।)

इन्स्पेक्टर हाँ तो यही ह, वह बदमारा ! क्या बे ! समझता ह कि कानून तरे बाप की मिलकियत ह। चाहा धौर खून कर लिया। (शकूर से) क्यों शकूर ! इसे कहीं पाया ?

शकूर हुजूर ! गली से हट कर उस भाड़ी में छिपा हुआ था।

इन्स्पेक्टर जहनुम में भी छुपना चाहते तो वहाँ भी पकड़ लिया जायगा। कानून की भाँखा में धूल नहीं झाँक सकता। क्यों बे खून करना आसान समझ लिया ? खून न हुआ लाल पानी हो गया जब चाहे बहा दिया।

शकूर हुजूर ! लाल पानी समझा तभी तो इसे काला पानी मिलगा। इन्स्पेक्टर काला पानी नहीं इसे फाँसी पर चढ़ाऊँगा फाँसी पर। क्यों बे क्या नाम ह तरा ?

कैदी दयाराम सरकार !

इन्स्पेक्टर (हसकर) दयाराम ! नाम तो दयाराम और काम ? खून करना। क्या कहना ह ! नाम के नामक ही तरा काम क्या ब ! उस बूढ़ चचा पर तुझ दया नहीं आई ?

दयाराम सरकार ! पहल तो मन उसे बहुत समझाया पर वह गाली पर गाली शकता गया। म कहीं तक गम खाता सरकार ! मझ भी गुस्ता भा गया ? म अघा हो गया। म नहीं जानता सरकार ! कब मर हाथो में लाठी धा गई।

इन्स्पेक्टर और तुझ यह मानूँ ह कि नहीं कि लाठी के साथ तर हाथा में हथकड़ी धा गई। शकूर ! ल चलो इसे घान में।

शकूर हुजूर ! इसके गाँव के एक साटव कौंसिल के मम्बर भी हैं।

दखिए साहब वे आ भी गए ।

( कौंसिल के मेम्बर का प्रवेश )

कौ० मे० आत्वाह ।—इस्पेक्टर साहब आप ह ? जयराम जी की ।  
आखिर यह कौन सी बात कि आप इस गाव म तशरीफ लाएँ  
और आप खबर तक न दें । कुछ चाय और नाश्ता तो करत ?  
आखिर म जो एस गाँव में पडा हुआ है वह आप सब लोग  
की खातिर ही तो पडा हुआ ह । आप आयेँ तो ढग से कुछ  
खाना पीना हो । नही तो इस गाँव म तो आप लोग के लायक  
दूध पानी मिलना भी मुश्किल ह । ( पुकारकर ) अरे राम  
हरख ! दौड कर एक कुरसी तो न आ । इस्पेक्टर साहब इतनी  
देर से खड ह ।

इस्पेक्टर कोई बात नही । ट्यूटी पर सब कुछ करना पडता ह । यह  
तो एक मामूला बात ह । लेकिन माफ कीजिए । म आपको  
पहिचान नही सका ।

कौ० मे० ( हँसत हुए ) हय हय हय । अरे आप मुझ नही पहिचानते  
म तो आपको पन्चानता ह । डिप्टी साहब को भी पहिचानता  
ह और कोतवाल साहब तो मुझ पर खास महरबानी रसत ह ।  
जब कभी एस गाव में तशरीफ लात ह तो सबम पहले व मर  
भी गरीबखाने पर तशरीफ लाते ह ।

इस्पेक्टर अच्छा ?

कौ० मे० जी हाँ ! मेरा नाम सकटा प्रसाद ह । म कौंसिल का  
मेम्बर ह ।

इस्पेक्टर अच्छा आप ही सकटा प्रसाद साहब ह !

सकटा गा । जी । आपका मन कई बार शहर में देखा ह । और  
आपके बारे म कोतवाल साहब से भी बात हुई ह । बाह !  
क्या कहना ह आपकी मुस्तन्नी और हाशियारी से तो शहर



की रीत है ! आप जैसा प्रस्ताव पाना तो हमारे शहर के लिए विस्मय की बात है शायद ! प्रस्ताव तो धरिए । कुछ नारता पानी कर लीजिए ।

इस्पेक्टर जो नहीं ! मैं नारता कर चुका हूँ । मुझ शहर भी जलने लगे जाना है ।

सकटा भव तो आपका काम पूरा हो ही चुका है ! आप चाहें तो दो रोज़ ठहर कर शहर जा सकते हैं । आप थक भा गए होंगे । कुछ प्राराम तो कर लीजिए !

इस्पेक्टर बहुत-बहुत धन्यवाद ! मुझ जान ही दीजिए ।

सकटा मर एक चिट्ठी कोतवान साहब के पास भी पत्रैचानी है । कुछ दर तो एक जाइए ।

इस्पेक्टर प्रस्ताव ग़ौर ! तुम मुलजिम को लेकर धान चला । मैं अभी जाता हूँ ।

शकूर जा हुकूम ! ( दयाराम के साथ जाता है । )

सकटा आप बहुत महरबान हैं इस्पेक्टर साहब ! हाँ तो बात सिर्फ यही है कि जो यह रून का मामला है न ! यह बहुत बढ़ा कर बताया गया है । दयाराम के चाचा कमजोर तो थे ही । उन्हें गुस्ता आया और वे दयाराम को मारने के लिए उठे तो लड़ खड़ाकर गिर पड़े । उनका सिर फूट गया । दुश्मना न कह दिया दयाराम न खून किया है ।

इस्पेक्टर जो कुछ भी हो ! भव तो यह तट्कीकात से मालूम हो ही जायगा ।

सकटा हाँ वह तो मालूम हो ही जायगा । लेकिन आजकल दोस्ता से चाने दुश्मना की लागत है । वे तो उल्टी सीधी बातें ही कहेंगे ।

इस्पेक्टर मर चनाम बेस मैं उल्टी सीधी बातें नहीं चनतीं ।

सकटा वह तो म जानता हू इस्पेक्टर साहब ! लेकिन म चाहता हूँ कि यह मामला ऐसा हू जिसम आपको ज्याना तकलीफ उठाने की जरूरत नही ह । जब खून ही नही हुआ तो खूनी कसा ! इसे तो आपको छोटना ही चाहिए ।

इस्पेक्टर जी ?

सकटा जी हा ! म खुन कोतवाल साहब के पास जा रहा हू । आपकी तारीफ और सिफारिश भा ता करनी ह ।

इस्पेक्टर आप यह तकलीफ न उठाए । म यह केस छोड़ूंगा नही ।

सकटा छोडन म कोई हज तो नही ह । आग आपकी मरजी ! अब आप इतनी तकलीफ उठाकर आए ह तो आपको भेंट दिए बिना म आपको अपने गाँव से कने जान दे सकता हूँ । यह रही आपकी भेंट ।

इस्पेक्टर यह क्या ह ? मैं ऐसा आत्मी नही हू मिस्टर सकटा प्रसाद ! आप इन बातों से मुझ मोन नही ले सकते । म यहाँ एक मिनिट नही ठहर सकता ।

सकटा अरे क्या नाराज हो गए ? यह तो हमारे गाँव का दस्तूर ह साहब । खर कोई बात नही । कोतवाल साहब को चिट्ठी निख दता ह ।

इस्पेक्टर जी नही या तो आप ढाक से चिट्ठी भर्जे या उनसे खुद मित्रें । म पोस्टमन नही हू । दयाराम ने खून किया ह उमका सजा उसे मिलनी चाहिए ।

सकटा अब म आपको कसे समभाऊ इस्पेक्टर साहब ।

इस्पेक्टर समभान की जरूरत नही ह । आप काउंसिल के मेम्बर ह तो मम्बर की शान के मुताबिक काम कीजिए । महात्मा गांधी के देश में रह कर अब य बातें नहीं हो सकेंगी ।

( 'याय का रिकार्ड बजता है । )

की रीत है ! आप जैगा  
 लिए विस्मय की बात है  
 नारता पानी कर लीजिए  
 इस्पेक्टर जो रही ! म नारता कर  
 जाना ह ।

सकटा भव ता आपना काम पु  
 राज ठर कर शर -  
 बुध भाराम तो कर ल  
 इस्पेक्टर बहुत-बहुत धयवान् ।  
 सकटा मभ एक चिट्ठी कोत-  
 दर ता रक जाइए ।

इस्पेक्टर मन्धा शकूर ! तुम  
 भाता है ।

शकूर जो हुवन ! ( दयार

सकटा आप बहुत महरबा  
 यही ह कि जो यह  
 बताया गया ह ।  
 गुस्ता भाया और  
 खडाकर गिर फ  
 दिया दयाराम न

इस्पेक्टर जो बुध भी हा  
 जायगा ।

सकटा ही वह तो मा  
 से ज्यादा दुरमन  
 कहेंगे ।

इस्पेक्टर मर पलाय केस

रूप से भाग ने सके। विदेशिया के शासन ने हममें भेद भाव के बीज बो दिए थे।

( अनेक स्थानों पर सभाएँ हो रही हैं। एक बख्ता हिन्दू सभा में बोल रहे हैं )

हिन्दू भाइयो और बहिनो ! इस देश में हमारी सत्या सबसे अधिक है। इसलिए राय का अधिकार हम लोगों को ही मिलना चाहिए। हिन्दू मस्लिम दंगा में मुसलमानों का ही पक्ष लिया जाता है। बेचारे हिन्दू यथ में मारे जाते हैं। हिन्दू धर्म सबसे पुराना धर्म है। सबसे बड़ा धर्म है। इसमें वणश्रम धर्म की व्यवस्था है। यह धर्मार्थ है हमारा है। इसे कोई हमसे छीन नहीं सकता। हमारा अखण्ड हिन्दुस्तान है। हमारा सनातन धर्म है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक सभ हमारा है। हिन्दू महासभा हमारी है। हम मुसलमानों को यहाँ नहीं रहने देंगे। बोलो हिन्दू महासभा की जय !

निर्देशक और दूसरी ओर

मुसलमान मेर प्यार दोस्ता ! कभी जमाने से हमारी सत्तनत इस मुल्क में रही है। यह लालकिला यह ताजमहल यह फतेहपुर सीकरी यह कुतुब मीनार हमारी इमारतें हैं। आज इस्लाम खतर में है। हम अपनी सारी कुवत लगा देंगे लेकिन अपने हकूक अपने हाथ से नहीं जान देंगे। अगर हमारे इस्लाम पर कोई हमला होगा तो हम खून की दरिया बहा देंगे, काफ़िरो को जहन्नम रसीद करेंगे और देखेंगे कि इस मुल्क पर हमारी ही हुकूमत रहती है। कायदे आजिम जिन्ना, जिंदाबाद !

निर्देशक और तीसरी ओर

सिख सत श्री गुरुवाल ! भाइयो दे विष आज एलान करदा है क ज हिन्दुस्तान को जीतने में अगर कोई फौज लड़ी है वो सिखो

सोग गांधी टोपी पहारते ह पर भाप न जाने क्या टोपी नहीं पहिनते ।

नरेश बात तो उतन ठीक पूछी । फिर ?

शाता बापू हेंते और यान कि बीस टापिया के बराबर का कपडा तो भाप अपनी पगली में ही पहिन हुए ह । याकी उन्नीस व्यक्तिमा को नग सिर रहना ही पढगा । शायद मैं उही उन्नीस लोगा में स एक हूँ ।

( हसा )

नरेश बापू न बला मुदर उत्तर दिया ।

शाता हाँ बापू इसना और हसाना दोना ही जानते थ । उनका हृदय पवित्र था इसालिए उनके मन में हिंसा नही थी । इसी चरख को व शर्तिता का मूल मंत्र मानते थ । बिना देशा पर आक्रमण किए चरख के द्वारा वस्त्र तयार कर व अन्य देशा का वस्त्र व्यापार खत्म कर देना चाहत थ ।

नरेश यह बात तो सच ह । मन कभी इतना सोचा ही नहीं । आज कल शात होता ह तुम प्रायना-सभा म रोज जाती हो । बढ पते की बातें कहन लगी हो ।

शाता हाँ प्रायना सभा में ता रोज जाती हूँ । अभी १३ दिसबर को ही बापू न प्रायना सभा में कहा था

( 'चरखा' सबधी रिकाड बजता ह । )

निदेशक घोर बापू ने जातीय एकता का शख-ना किया उसी का यह फल ह कि इतन बढ देश का संगठन हो सका और इस देश में हिंदू मुसलमान ईसाई और सिख भाई भाई बन कर रह सके । हमारे देश में सब धर्मों के मानन वाल पूण अधिकार और स्वतंत्रता स एक साथ रह कर देश की उन्नति में समान

रूप से भाग ले सके। विदेशिया के शासन ने हममें भेद भाव के बीज बो दिए थे।

(अनेक स्थानों पर सभाएँ हो रही हैं। एक घबराता हिन्दू सभा में बोल रहे हैं)

हिन्दू भाइयाँ और बहिनो! इस देश में हमारी सभ्या सबसे अधिक है। इसलिए राज्य का अधिकार हम लोगों को ही मिलना चाहिए। हिन्दू मुस्लिम दगा में मुसलमानों का ही पक्ष लिया जाता है। बच्चा हिन्दू यथ में मार जात है। हिन्दू धर्म सब से पुराना धर्म है। सबसे बड़ा धर्म है। इसमें बर्णाश्रम धर्म का व्यवस्था है। यह धर्मार्थ हमारा है। इसे कोई हमसे छीन नहीं सकता। हमारा अखंड हिन्दुस्तान है। हमारा सनातन धर्म है। राष्ट्रीय श्वयंसेवक संघ हमारा है। हिन्दू महासभा हमारी है। हम मुसलमानों को यहाँ नहीं रहने देंगे। बोलो हिन्दू महासभा की जय!

निर्देशक और दूसरी ओर

मुसलमान मेरे प्यारे दोस्त! कदीम जमान से हमारी सल्तनत इस मुल्क में रही है। यह लालकिला यह ताजमहल यह फतहपुर सीकरी यह कुतुब मीनार हमारी इमारतें हैं। आज इस्लाम खतरे में है। हम अपनी सारी बुद्धि लगा देंगे लेकिन अपने हकूक अपने हाथों से नहीं जाने देंगे। अगर हमारे इस्लाम पर कोई हमला होगा तो हम खून की दरिया बहा देंगे काफिरों को जहन्नम रसीद करेंगे और देखेंगे कि इस मुल्क पर हमारी ही हुकूमत रहती है। कायदे अजिम् जिन्ना, जिन्दाबाद!

निर्देशक और तीसरी ओर

सिरा सत श्री प्रकाल! भाइयाँ दे विच आज एलान करदा हैं क ज हिन्दुस्तान को जीतने में अगर कोई फौज लड़ी है वो सिखा

पात्र

उद्घोषक  
सम्राट् अशोक  
विक्रमादित्य  
स्कन्दगुप्त  
हपवधन  
अकनर  
नाना फड़न वीस  
महात्मा गांधी  
जवाहर लाल नेहरू  
जनरल डायर  
धतसिया  
चन्चा

उद्घोषक सम्राट अशोक सम्राट विक्रमादित्य स्कन्दगुप्त हृषवर्धन  
 अकबर महान नाना फडनवीस और महात्मा गांधी जैसे  
 महापुरुषों की परम्परा में विचक्षण बुद्धि और महान प्रतिभा  
 के प्रतीक पंडित जवाहर लाल नेहरू हमारे देश के नव निर्माण  
 के विधायक थे । सम्राट अशोक न राजनीति को घोषणा करते  
 हुए कहा —

सम्राट अशोक कुमार सुमीम ! राज्यश्री एक महान पर्व मनाती है  
 उसमें महत्वाकांक्षा की भरी नदी में स्नान होना है गुप्त  
 अभिसंधिया का मात्र पाठ होना है । प्रशस्तियों के स्तोत्र पढ़े  
 जाते हैं और ऐश्वर्य के पुष्प बिखर जाते हैं । पाटलिपुत्र की  
 राज्यश्री में यह कुछ नहीं होगा । उसमें प्राचीन राजपुरुषों की  
 अचना में केवल प्रेम की पुष्पाजलि अर्पित होगी और प्राणों के  
 दीप जलेंगे । यही राजनीति है यही राज्यश्री है ।

उद्घोषक सम्राट विक्रमादित्य न मधुगजन की भांति कहा —

विक्रमादित्य तुम मेरा ध्याय देखना चाहती हो विभावरी ?

तो सुनो ! आर्यावत्त को अपना सम्मान स्वयं ही सुर-  
 क्षित रखना चाहिए । मालवा गुजरात और सोराष्ट्र की सीमा  
 अपनी पूरुता के लिए क्यों किसी से प्रायना करे ? नदी पहाड़  
 से कहे कि तुम मर लिए किनारा बना दो बिजली बाल से  
 कह कि तुम मुझे तपना सिखला दो ? जन-शक्ति स्वयं अपना  
 अधिकार प्राप्त कर उगमें हीनता कसी ?

उद्घोषक स्कन्दगुप्त ने विद्युत रेखा की भांति तडपकर कहा —

स्कन्दगुप्त नीच हूँ ! तू धन लूटने के लिए नागरिकाओं को गम लौहखंडों  
 से जलाता है खौनते तल में कपड़े डूबा कर शरीरों पर उड़ाता



ह ? उन्हें बोटे मारता है ? स्मरण रग इन नागरिका के पाम एसी शक्ति है कि उनकी रफ्त सदरों का प्रवाह तुम्हे दश की सीमा के बाहर फेंक देगा ।

सद्रूपक सम्राट हर्षवधन न कहा —

हर्षवधन मैं शत्रुओं का नाश करने की प्रतिभा की है धावाय निवा कर । धार्यावित में वद्वन-वश का प्रताप स्थिर रह यही मरा प्रण ह । यह पुण्य भूमि ह सगचार का भूमि ह और कम भूमि ह । इसकी सुरक्षा यही कर सकता ह जिनन धार्यावित की अन्वडता हिमालय के विस्तार में देखी ह ।

सद्रूपक भवबर महान् न दोन इनाही की घोषणा करत हुए कहा —

श्रकबर सरा पद-ए-असत गर दन्ता बी ।

दरु शम्महाएँ करो जित्त बी ॥

इस घूमते हुए आममान के पदों के नीचे इस शम्मभ को देख जो रौशान ह । यह हिन्दोस्तान ह—तो यह शम्मभ हर जगह रौशान ह । इसी रौशानी की किरन बाँधन की कोशिश हमन को ह । हमन देखा कि धोज वही ह बलिशें जुनी-जुदी ह और इहीं बलिशा न इन्सान के सक्डो टुकड कर दिए हैं । सशत्रु को काट कर रख लिया किरन के हिस्से कर न्यि । खुना न हमें यह मुत्क न्या ह इसे हम गोरो जबान दें मुह्वत दें इवान्त दें । अल्ला हो भवबर ।

सद्रूपक नाना फडनवीस न धावश पूण स्वर म कहा —

नाना फडनवीस मैं आपकी अपमानित नही कर रहा, राधोवा काका ।

आपके काय ही आपको अपमानित कर रह हैं किन्तु अब आप से मरी प्रायना है कि अपनी जननी जन्मभूमि के प्रति विश्वास धाती न बनें । य अंप्रज यहाँ व्यापार की सुविधा माँगन के लिए आए थ पर अब य हमारे देश पर अधिकार करना

चाहते ह । ये चाहते ह कि हम लोग आपस में हमेशा लड़त ही रहें जिससे ये कभी आपके साथ कभी हमारे साथ सधि करके अपन राज्य की जंजे जमाते जाए । यह कभी नहीं हागा । इनको ऐसा नहीं करन दिया जायेगा ।

**उद्घोषक** आग चलकर अपनी शक्ति और साधना के विषय में राष्ट्र पिता महात्मा गांधी न कहा —

**महात्मा गांधी** और इसलिए म हिन्दुस्तान स अहिंसा का रास्ता अस्वकार करन के लिए नहीं कहता कि वह कमजोर ह । म चाहता हूँ कि वह अपनी ताकत और अपन बल को जानते हुए अहिंसा पर अमन कर—म चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान यह पहिचान ले कि उमके एक आत्मा ह जिसका नाश नहीं हो सकता और जो तमाम शारीरिक कमजोरिया पर फतह पा सकती ह और तमाम दुनिया क शारीरिक बला का मुकाबिला कर सकता ह ।

**उद्घोषक** और अत में राष्ट्र विधायक प० जवाहरलाल नेहरू ने कहा —  
**जवाहर लाल** हम भारतीय प्रजाजन भी अय राष्ट्रा की भांति यह अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानते ह कि हम स्वतंत्र होकर रहें अपनी महनत का फल हम खुद भोगें और हमें जावन निर्वाह के लिए आवश्यक सुविधाए मिलें जिससे हमें भी विकास का पूरा-पूरा मौका मिले । हम यह भी मानते ह कि अगर कोई सरकार ये अधिकार छीन लेती ह और प्रजा को सताती ह ता प्रजा को उस सरकार के बलन या मिटा देन का भी हक ह । हिन्दुस्तान को अगरजो सरकार न हिन्दुस्तानियों की स्वतंत्रता का ही अपहरण नहीं किया बल्कि उसका आधार भी गरीबी के रक्त शोषण पर ह और उसन आर्थिक, राज नीतिक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दष्टि से भी हिन्दुस्तान का नाश कर दिया ह । इसीलिए हमारा विश्वास ह कि हिन्दु

स्ता को धंघड़ो से सम्बन्ध विच्छेद करके पूण स्वराय मा मुक्त्तिस आशादी प्राप्त कर सेनी चाहिए ।

**सूक्ष्मोपक** इस प्रकार ५० नहरून महात्मा गांधी के विचारा को कायरूप में परिणत करने के लिए सारे देश को जनता को अपना व्यक्तिगत सम्बन्ध से फौजाना की दीवार बना लिया ।

( राजनीति में उनका प्रथम उत्थान )

सन् १९१६ में जनिमावाला गोली-बाड ।

( गोलियों की चलने की आवाजें । प्रत्येक गोली से आहत व्यक्ति का कराह व साप कहना— महात्मा गांधी की जय !' भगदड़ और चील । )

**सूक्ष्मोपक** जनिमावाला बाण । चारा और ऊंचे-ऊंचे मराना से घिरा और बन्द । एक भार करीब सौ फीट तक कोई मकान नहीं सिफ पाँच फीट उंची दीवार है । गोलियाँ तडातड चल रही हैं और लोग दाए बाए गिरकर मर रहे हैं । इन्हें कोई रास्ता नहीं सूझ पड़ता । व दीवार की भार बढ़कर ध्वन का प्रयत्न कर रहे हैं । तभी गोलियाँ दीवारों की ओर लय कर चलाई जाती हैं । शवा और आहता के डर दीवार के दोना ओर पड़ हैं । ( फिर कराह और चील ) इन भारत माँ के बटा का हत्यारा जनरल डायर हटर कमीटी में अपना बयान देकर लौट रहा है ।

( साहोर से देहली जाने वाली रेलगाडी की आवाज ।

जनरल डायर के गव । )

ज० डायर सि सिटी घब्रमृतसर डिपेंडस भान माई मरसी ।

दूसरा स्वर मे आइ नो जनरल डायर ! हाउ इज दिस ?

डायर भाइ यॉट भाइ शड रिडयस दिस टिटर सिटी टु एशस बट दन  
भाइ फल्ट पिटी एड भाइ हड टु रस्ट्रेन माइसेल्फ । मोह भाइ

मरसी से ड नि पीपुल ।

उद्घोषक जनरल डायर अपनी दयाशीलता की डींग हाँककर अमृतसर की कुशलता की बात कह रहा है नहीं तो उसने उस विद्रोही शहर को खाक में मिला दिया होता । पंडित जवाहरलाल नेहरू संयोग से उसी रेल के डिब्बे के ऊपर के बथ पर लटे हुए हैं और व मन ही मन सोचते हैं ।

जवाहर लाल ( धीमे स्वर में फुसफुसाहट के साथ ) शरीर जनता का कातिन यही हत्यारा डायर है । सक्डा आदमिया को भून कर रख दिया और अब अपनी महरवानी की डींगे हाँकता है । भारतीय जनता का यह कष्ट ! मैं उस कष्ट को दूर करूँगा— आज से यही मेरा प्रण है ।

उद्घोषक और उसी समय से जवाहरलाल नेहरू भारतीय जनता के प्राण बन गये । भारतीय जनता की आह और कराह उनके दिल की घड़कनें बन गई ।

( राजनीति में नेहरू जी का द्वितीय उत्थान )

नपथ्य में—सम्मिलित स्वर से—

भारत माता की जय ! जवाहरलाल नेहरू की जय !

महात्मा गांधी की जय ! जवाहरलाल नेहरू अ अ जिन्दाबाद !

उद्घोषक ८ अक्टूबर १९२६ । लाहौर कांग्रेस के अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू । यह लगभग निश्चित था कि कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन के सभापति महात्मा गांधी होंगे । उनके दूसरी बार कांग्रेस के अध्यक्ष होने पर स्वतंत्रता-संग्राम की बागडोर उनके हाथ में मजबूती से रहती तबिन गांधी जी भविष्य-दृष्टा थे । लखनऊ की अखिल भारतीय कांग्रेस समिति में महात्मा गांधी ने अपना नाम वापस लेकर जवाहरलाल नेहरू का नाम प्रस्तावित कर दिया जिसे सबन स्वीकार कर लिया और

परिणत नहरू साहौर अधिवेशन व अध्यास बन । इनके पूव साँठ इरदिन न काँग्रेस और सरकार के बीच सम्झौत के लिये गाँधी जी और सरकार पत्र को निमंत्रित किया किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला । तभी साहौर काँग्रेस के मध्य स परिणत जवाहर लाल नहरू न भारत व लिए पूण स्वाधीन होन की घोषणा की ।

**जवाहर लाल** हम भारतीय प्रजाजन भी अय राष्ट्रा की भाँति अपना यह जन्म सिद्ध अधिकार मानते हैं कि हम स्वतंत्र होकर रहें अपनी महत्त का फल खुद भागें और हमें जीवन निर्वाह के लिए आवश्यक सुविधाएँ मिलें जिसमें हमें भी विकास का पूरा-पूरा मौका मिल । हम यह भी मानते ह कि अगर कोई सरकार य अधिकार छीनती ह और प्रजा को सताती ह तो प्रजा को उस सरकार को बदल देन या मिटा देन का भी हक ह । हम शपथपूर्वक संकल्प करते ह कि पूण स्वराज की स्थापना के लिए काँग्रेस समय-समय पर जो आनाए देगी उनका पालन करत रहेंगे । हिन्दुस्तान की अंग्रेजो सरकार न हिन्दुस्तानिया की स्वतंत्रता का ही अपहरण नहीं किया ह बकि उसका आघार ही गरीबा के रक्त शोषण पर ह और उसन आर्थिक राजनीतिक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से हिन्दुस्तान का नाश कर दिया ह । इसलिये हमारा विश्वास ह कि हिन्दुस्तान को अंग्रेजो से सम्बन्ध विच्छेद करने पूण स्वराज या मकम्मिल आजादी प्राप्त करनी चाहिए ।

( नेपथ्य मे सम्मिलित स्वर से—प० जवाहरलाल नेहरू सिदाबाद ! भारत माता की जय ! )

**सूचोपक** राजनीति में प० नहरू का ततीय उत्थान ।

सन १९४७ की पंद्रह अगस्त को भारत स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू निर्वाचित हुए तिनके सम्बन्ध में महात्मा गांधी ने कहा था—मैं कहूंगा कि जवाहर तो किसी सभा घोषा करनेवाला नहीं है जसा उसका नाम है वसा ही उसका गुण है। उनकी सरकार में सरदार या जादूमरे भादमी हैं, उनका भी मैं पहिचानता हूँ। (प्रवचन २ नवम्बर, १९४७) महात्मा गांधी से आशावादी पाकर जवाहरलाल नेहरू न दश का निमाण किया। उन्होंने सार देश में भ्रमण करने हुए जनता से निकटतम सम्पर्क स्थापित किया। वे गरीब जनता के सुख दुःख में भाग लाने वा उनको हा वंधु थे। एक बार वे भाषण देने के लिये फूडपुर गए।

ध्वनि ( ग्रामीणों का गोर-गुन )

एक क हो बतसिया ! आज त काहे बरे सहर माँ बठि के मुखिया त बतरावत रही ?

बतसिया तूँ हमका का समझत हो ! चच्चा ! अर हम आज लिचकर गुने गए रह ।

चच्चा लिचकर ?

बतसिया हाँ हाँ लिचकर ।

चच्चा के कर लिचकर रहा ?

बतसिया अर तुम सुनेन नाही ? जवाहरलाल जो धाय रहे लिचकर देय के बरे ।

चच्चा ( अट्टहास ) अरे हम हँ तो उहा रहे । विल्कुल उनके समनब ठाड रहे । उनकी धाँतिन त आज जोडक । बाह ! कसन देवतन के अस उनकर रूप भनवत रह ।

बतसिया तो तुम हमते ठट्टा करत रह ? समनब ठाँ होइ क लिचकर

गुनत रहे और धाँसिया फाटकर पुरत है बेकर लिचकर !  
( बुरा मानकर ) जा चचा ! भय हम ताहसे बोनबै न  
करय—है !

धच्छा भरे बतसिया ! देवतन की बातन में बुरा मान का परत ह ?  
भरे हमार गोठ टूट होत तब हम ताह से कहत क भरे  
बतसिया ! भयन चाचा क भूँ पे चढ़ाय क जवाहर महाठमा  
के लिचकर गुनाब के दर ल खनी । श्री जून तै वहाँ रही ।

बतसिया हमती उह भटवे रामधन गावत रह—

रघुपति राघव राजाराम ।

पतित पावन सीताराम ॥

धच्छा भाहा ! हम ती भयन धाँसिन का मुस उठावा । बाह का  
बसन रूप रहा । निचाट सफद खहर के पजामा सेरवानी और  
बाँकी टोपी और भाहि प गुनाब क पून तो हाय हाय सेर  
वानी प भस खिला रहा जसन हमार किसानिन का भाग  
खिला बाट । एसन हस-हस क लिचकर देत रहे जैसे फूल  
भरत हाय ! हे बतसिया जसन फूल ! एक गुलाब तो सेरवानी  
प रहा मुग सचन गुनाबन के फूल मुट त भरत रह !

बतसिया उती भयन गरे त उतार के हमका फूल की माला दिहे रह ।

धच्छा भरे तुम लोगन के चाचा हाय बतसिया ! हमहूँ तुम्हार चाचा  
भहूँ मुग वहाँ राजा भाज श्री वही गगू तलो । ऊती हमार  
देश के राजा भहूँ । किसानन श्री मजदूरन के दुख दूर करे के  
बर ऊ जैसे धीतार लिहें होय ।

( नेपथ्य में तीन बार प० नेहरू की जय । )

सद्व्योपक जन जन के प्राणा में निवान कर उन्होंने सच्चे राष्ट्रीय धय  
में भारत का निर्माण किया । इन सबके दिनों में वे इतने  
बड़े देश के एक महान कणधार थे । भारत में तीन पचवर्षीय

योजनाएँ बला कर उन्होंने देश को ससार की प्रतिद्वन्द्विता में प्रगति के पथ पर अग्रसर करा दिया। भारत का औद्योगीकरण और भारत की बानानिक उन्नति के लिए उन्होंने क्या नहीं किया ? राजनीति के क्षेत्र में उन्होंने पंचशील का विस्तार कर तटस्थता की नीति अपनायी और इस प्रकार उन्होंने ससार में एक तीसरी शक्ति को जन्म दिया जो सघपशील देशों में समझौता करा सके।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू भारतीय सभृति के प्राण थे। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत को बहुत बड़ा सम्मान का अधिकारी बनाया। उन्होंने अशोक चक्र का प्रवर्तन करके सम्राट अशोक के प्रारम्भ में कहे गये वे शब्द चरिताय किये —

अशोक भारत की राष्ट्रीय परम्पराओं में केवल प्रेम की पुष्पाजलि अर्पित होगी और उसमें प्राणों के दीप जलेंगे—यही राजनीति है—यही रायत्री है।

आज सम्पूर्ण देश अपने अशुभ नशा से अपने हृदय सम्राट और राष्ट्र निर्माता जनमोल जवाहर की स्मृति में यद्वाजनि समर्पित करता है।







## सामाजिक

जीवन का प्रश्न  
शहनाई की शत  
शक्ति सजीवनो  
चक्कर का चक्कर  
घर का मकान



# जीवन का प्रश्न

[ समस्या-मूलक एकाकी ]

पात्र

सुप्रदेव  
मनबोध  
रामजतन  
चम्पादे  
सोनिया  
सरसी  
अभय  
रतन

( सध्या का समय है। दिन में काफी गरमी पड़ चुकी है। आकाश में बादल आ गए हैं और हवा जोर से बहने लगी है। धीरे धीरे वह आधी का रूप धारण कर चुकी है। रह रह कर हवा का क्षाण पेड़ों और मकान की दीवारों से टकराते हैं। कुछ दूर से समीप आती हुई आवाज—सुखदेव ! सुखदेव भैया ! )

( सुखदेव का प्रवेश )

सुखदेव ( प्रवेश करते हुए ) कौन हूँ भाई ! इन आधी में भी चन् नहीं देता !

मनमोघ सुखदेव भैया ! मैं हूँ मनमोघ !

सुखदेव मनमोघ ? गाण चरा के न आए ?

मनमोघ भैया ! बड़े जोर का आधी आ गयी !

सुखदेव हाँ आधी तो बड़ जोर की आई। रोज़ इसी बजत आती है जिस उसकी आन्त पड़ गयी है। ( अधिक जोर का आद ) ओफ़ ओफ़ ज़रा देखो तो ! अर बड़ जोर हूँ भैया ! तुम्हार ! ( रोक्ने के स्वर में ) अरे बस बस

मनमोघ अरे सुखदेव भैया ! मरी पगड़ा पगनी भी गई। ( पकड़ने के लिए दूर जाते हुए ) अर रानी-सहा इज्जत भी न रक्की। एसी फर से उठा दा। ( लौटते हुए ) धन्न मातमरा ! अरे ज़रा तो खबर करती !

सुखदेव अरे क्या खबर करणा ! आधे घट से तो भक्भोर रही है। खती जमीन में नाट गई होगी ! अब क्या जिन्गी मिट्टी में मिन्न से बचगी ! जिन्गी भा जायगी, मनमोघ ! यह आधी मिटा के रहगी ! ( आधी बहुत धीमी पड़ जाती है। दूर से

उसकी हलकी भाषान सुनाई देती है।) धरे घामो पड गयी। सुन्दारी मातसरी बदन से मान गई। धरे बाह रो मातसरी !

**मनबोध** जब सिर की पगडी उडा दी तब क्या मानगरी रहा !

**मुखदेव** तुम अपनी पगडा का ही बहुत समझत हा मनबाध ! किसन क सिर का पगडा भा उड रही ह। उसके घर में भी झाँधी झाँई ह। उसकी लडकी सरसो का जानत हो ? सार गाँव में सरसो का नकर धर जरा पगडो बसक बाँधा ढीली बाँधत हा तभी तो जरा से झाँके में चिड़िया की तरह पुर से उड गानी ह।

**मनबोध** चाहे जितनी बसक बाँधू पगडी सिर पर रहन की नही।  
( झाँधी धम जाती है। दूर धीमा शब्द होता है। )

**मुखदेव** शाम् इसीलिए लोग न पगडी बाँधना बन्द कर लिया।  
( हसता है—रक्कर सहसा ) धरे झाँधी धम गयी। पहन कितनी ताकत से चली थी। इसम यह ताकत कहां से आतो ह ? मनबोध !

**मनबोध** ( कुछ तेज स्वर से ) ताकत ! धर यह हमारी बदकिस्मती की ताकत ह। एक तो हमारी किस्मत ही बकड-पत्थर की ह उही को उडाकर हमें मारती ह। अभी हमें मार ल। तकिन जब हम भी झाँधी की तरह बन्द ग तो धरी रह जायगा यह सारी सेखी !

**मुखदेव** तुम तो बडी बातें मार रह हो मनबाध ! घाट सरकार के सामन तो मुह खोनन की हिम्मत नहीं पडती। एस बक्स हो जात हो जैसे पीपल के पेड पर लटक हुए चमगाण्ड हो।

**मनबोध** तो म छोट सरकार की थोड ही ललकारता हूँ क तो अपना राजा ह। क्या आलीसान सुभाव पाया ह बाह ! राजा आदमी ! धर जमीनदारी अपनी जान से सुभाव थोडे ही बन्द

जाता ह । अब तो बाहर से आ गए हागे छोटे सरकार ।

**सुखदेव** अभी तक तो नहीं आए । सुबह से शिकार खेलने गए ह अभी तक नहीं लौटे । उस पर यह आधी आ गयी । छोटे सरकार कही भटक न गए हो ।

**मनबोध** अरे जगल में छोटे सरकार की एक गाय भी भटक गई भया । वह कहने क लिए आया था । छोटे सरकार कही मुझ पर नाराज न हो जाँय । सब गए ता मन थान पर बाध दी । एक थान खाली ह । छोटे सरकार कही नाराज न हो जाँय ।

**सुखदेव** छोटे सरकार तो बड ऊचे ख्याल के ह जी । हा काका साहब जरूर नाराज हो जायेंगे ।

**मनबोध** तो भया । तुम मुझे बचाना । मेरा कोई कसूर नहीं ह । सब गए एक साथ चर क लौट रही थी । तभी जोर की आधी आ गई । म समझता था कि सब गए लौट आइ लकिन जब उन्हें बाधने लगा तो एक गाय का थान खाली ।

**सुखदेव** तब तो काका साहब तुम्हारा सिर भी खाली करग । तुम काका साहब का गुस्ता नहीं जानत ।

**मनबोध** जानता हू भया । इतन तिन मालिक की नौकरी करके भी न जानू गा । पर भया सुखदेव । तुम मालिक के पुरान नौकर हो । उनक घर के आत्मी जैसे हो । तुम्हारे कहने से मुझे माफी मिल जायगी ।

**सुखदेव** मिल तो जायगी पर अब तो आधी थम गई ह । अब जाकर गाय खोज लाओ । भगवान चाहेगा तो रास्त में ही मिल जायगी ।

**मनबोध** ठीक ह जाता हू भया । पर पहले छोटे सरकार का पता तो लगाऊ । व कहीं रह गए ह ।

( नेपथ्य मे गीत सुनाई देता है । )



ए ए ए ए ए ए

घारे बहू नन्दिया तें घारे बहू मोरा पिया उतरइ दे पार रे  
**मनबोध** राम जतन घा रहा ह ।  
**मुखदेव** हाँ रोज उमरा खनार उमना ह इमी रास्ते से । बनी मीठी  
 आवाज ह इसकी ।

**मनबोध** बातेँ भा बड डग की करता ह । भ्रष्टा भया ! चलेँ घब ।  
 नहीं तो उमकी बाता में उलझ जाऊगा । फिर देर हो  
 जायगी । घाँ सरकार जान कहाँ होंग । भ्रष्टा जयराम  
 जा की ।

**मुखदेव** जयराम जी की ।

( मनबोध का प्रस्थान । रामजतन के गीत की आनाज घीरे  
 घीरे पास आती है । )

—बाहे की तोर नया र काह की पतवार ! रे ए ए ए ए

**मुखदेव** बाह कितनी मीठी आवाज ह !

( गीत खतता जाता है । )

वे तोर नया खवया र के घन उतरव पारि र  
 धीरे बहू नन्दिया त धीरे बहू मोरा पिया उतरइ दे पारि रे  
 धरम क मोर नया रे सत की ह पतवारि र  
 सया मोरा नया खवया र हम घन उतरव पारि रे ॥  
 ( आवाज अब बिलपुल पास आ जाती है । धीरे बहू  
 नन्दिया त धीरे बहू मोरा पिया )

**रामजतन** जयराम भया मुखदेव !

**मुखदेव** जयराम रामजतन ! अरे अभी लडके ही हो पर भाई ! एसा  
 गीत छेडत हो कि सारी दुनियाँ का गठरी म बाँध के सूटी  
 पर टाँग देते हो जैसे । धीरे आवाज भी एसी मीठी कि जैसे  
 भगवान न गन की धीन कर तुम्हारा गना बनाया ह । भाई !

ऐसा अग्निब्रान मन गाया करो। ऐसी ठडी आग लग जाती ह कि जैसे बरफ के टुकडा से गरम धुआ निकलने लगता ह। वाह वा! ( बन कर गाता है। ) धीरे बहु नदिया तू धीरे बहु

**रामजतन** अरे रहने दो सुखदेव भया। तुम तो बिलकुल सियार का सेर बना देत हो। ऐसी तारीफ करत हो कि बबूल के पेड में आम निकल जाय। यह तो भ यूँ हो जी वहनाता ह। और फिर छोटे सरकार का हुकुम ह कि जब महाँ से गुजरो तो एक तान छे लिया करो। मालिक ह न भीतर।

**सुग्देव** नही रामजतन। वे अभी शिकार से नही लौटे। कह गए थे शाम को लौट आएंग सो अभी तक लौटे नही। माँ जी दो घट से उनकी राह देख रहा ह। जान कब तक लौटें।

**रामजतन** लौट रह हाग पर आज बड जार की आँधी आ गयी थी। भाई! बडा नुकसान किया इस आधी ने। जाने कितने पेड गिर गए। हवा ऐसी भपटी जस ताका हो।

**सुग्देव** मुझे तो अपनी घरवाली को याद आ गयी, भाई। जब गुस्से में आता ह तो घर तहस नहम कर डालती ह। ऐसी भपटी ह कि कप-लत्ते तार तार हो जात ह। और आँधी तो बर सात के मीके पर उठती ह। उसकी आँधी तो हर दूसर तीसरे रोज उठ जानी ह। हर हफ्त में दो-तीन बार बरसात हा जाती ह।

**रामजतन** अरे यह तो घर घर का हाल ह भाई। ( दोनो हँसते ह। ) ठाकुर किशन सिंह की तो तुम जानते हो हाग। बनी हपया का लेन देन करत ह। इस लेन देन में उनकी बुद्धि भी विक गई जैसे। रोज उनम और उनकी स्त्री में खटपट होती रहती ह सरस्वती को लेकर। ठाकुर साहब उसकी शान्ति एक जगह

ए ए ए ए ए ए

घारे बहु नन्दिया तें धीरे बहु मोरा पिया उतरइ दे पार रे

मनबोध राम जतन धा रहा है।

मुखदेव ही राठ उतवा पनार सगना ह इगो रास्ते स। बडी मीठी  
आवाज है इगवी।

मनबोध धानें भी बड डग की करता ह। धाया भया ! बलें धब।  
नहीं तो उपकी याता में उलभ जाऊगा। फिर देर हा  
जायगी। धाए सरकार जान बही ह्य। धाया जयराम  
जी की।

मुखदेव जयराम जी की।

( मनबोध का प्रस्थान। रामजतन के गीत की आवाज धीरे  
धीरे पास आती है। )

—बाहे की तार नया रे बाह की पतवार। रे ए ए ए ए

मुखदेव बाह कितनी मीठी आवाज ह।

( गीत चलता जाता है। )

के तोर नया खबया र के धन उतरव पारि र

धीरे बहु नन्दिया त धीरे बहु मोरा पिया उतरइ दे पारि रे

घरम क मोर नया र सत का है पतवारि रे

सया मोरा नया खबया र हम धन उतरव पारि रे ॥

( आवाज अब बिलकुल पास आ जाती है। धीरे बहु  
नन्दिया त धीरे बहु मोरा पिया )

रामजतन जयराम भया मुखदेव।

मुखदेव जयराम रामजतन। धरे अभी लन्के ही हो पर भाई। एसा  
गात धडत हो कि सारी दुनिया का गठरी में बांध के खूटी  
पर टांग देते हो जैसे। और आवाज भी एसी मीठी कि जस  
भगवान न पत्त को धील कर तुम्हारा गला बनाया ह। भाई।

एसा अगिनवान मत गाया करो । ऐसी ठडी आग लग जाती ह कि जैसे बरफ के टुकडा से गरम धुआ निकलने लगता ह । बाह वा ! ( बन कर गाता है । ) धार बहु नशिया तू घीरे बहु

रामजतन अरे रहन दा सुखदेव भया ! तुम तो बिलकुल सियार का सेर बना दते हो । ऐसी तारीफ करत हो कि बबूल के पड में आम निकल जाय । यह ता म यू ही जो बहलाता ह । और फिर धीरे सरकार का हुकुम ह कि जब यहाँ से गुजरो तो एक तान छड निया करो । मानिक ह न भीतर !

सुखदेव नही रामजतन ! व अभी शिकार स नही लौटे । कह गए ये शाम का नौट आएग सो अभी तक लौटे नही । माँ जा दो घन् से उनका राह देख रहा ह । जाने कब तक नौटें ।

रामजतन लौट रह हागे पर आज बड जोर की आधी आ गयी थी । भाई ! बडा नुकसान किया इस आधी ने । जान कितन पेड गिर गए । हवा एमी भपटी जैसे ताटका हा !

सुखदेव मभ तो अपनी घरवालों की भाग आ गयी, भाई ! जब गुस्स में आता ह तो घर तहम नहम कर डालती ह । ऐसी भपटती ह कि कपट-लतत तार-तार हो जात ह । और आधी तो बरसान के मौके पर उठती ह । उसकी आधी तो हर दूमरे तीसरे राज उठ जाती ह । हर हफने में दा-तीन बार बरसात हो जाती ह ।

रामजतन अर यह तो घर घर का हाल ह भाई ! ( दोनो हँसते ह । ) ठाकुर विशन सिंह को तो तुम जानते ही हागे । बहा रुपया का लन-देन करत ह । इस लेन-देन में उनका बुद्धि भी विक गई अत । रोज उनमें और उनकी स्त्री में खटपट होती रहती ह सरस्वता की लकर । ठाकुर साहब उसकी शादी एक जगह

तय करत ह उनका स्त्री दूगरी जग ।

सुखदेव य सरस्वती कौन ?

रामजतन मर कौ सरसी ! प्यार में उसे लोग मरगी कते ह ।

सुखदेव भ्रष्टा ! यती सरसी जा इग काटी में घाती ह ? ही, मन भी उग देगा ह । भ्रष्टो ह ।

रामजतन भ्रष्टा ह ? भया सुखदेव ! भव मया कहै कि कभी ह । चलती ह ता जस चान्नी के उजाल में भरी नगी में तरें उमना ह । हसती ह तो जस काई पानी भरन क लिए गगा जा में कलसा डवा रहा ह ।

सुखदेव बड गहर डव हो रामजतन !

रामजतन वह तो बाढ़ की नगी ह सुखदेव ! बस कुछ पछो मत । मं तो जब कोई बिरहा गाता हूँ तो उसी का ध्यान हो घाता ह । उस जो देखता ह देखता ही रह जाता ह ।

सुखदेव हमारे काका साहब क सामन भी तो एक रोज घाई थी । काका साहब उसे देखत ही रह गए ।

रामजतन जो दुनियाँ देख चुके ह व भी उस देखते रह गए ?

सुखदेव बात ही कुछ एमी ह रामजतन ! मालूम होता ह काका साहब कुछ और ही बात सोच रह ह ।

रामजतन क्या ? कौन-सी बात सोच रह ह ?

सुखदेव हमारे छोटे सरकार न अभी तक शान्ति नहीं की । काका साहब उनसे सक्डा बार कह चके । माताजी भी बहुत कहत थक ग । बहिन भनग परशान ह, पर छोटे सरकार के कान पर जू तक नहीं रेंगी । काका साहब गमाना देख हुए ह । उन्होन एक काम किया । जमाष्टमी के दिन एक उत्सव किया । उसम सरसी का गाना छोटे सरकार को सुनवा दिया । छोटे सरकार ने सरसी को देखा और सरसी न छोटे सरकार को ।

रामजतन ता देखने से क्या हो गया ?

सुखदेव यह हा गया कि मरमो न फून तो कृष्ण जी के चरणा में डाने और आखें छाटे सरकार के चरणा में ।

रामजतन अच्छा एसी बात ह ?

सुखदेव हाँ एसी बात ह । किसी से कहने की नहीं ह ।  
( चम्पादे का प्रवेश )

चम्पादे सुखदेव अभी तर छोटे सरकार नहीं आए ?

सुखदेव नहीं मा जी ! प्रणाम !

रामजतन म भी प्रणाम करता हूँ मा जी !

चम्पादे किसी का प्रणाम लन की फुरमत नहीं ह मुझे । छोटे सरकार नहीं आए और यहाँ प्रणामो की बौधार हो रही ह । सब खिखावटी ! जब स जमीनारा गई ह घर के नौकर भी सिर चन् गए । हम तो जमीदार नहीं रहे य लोग हो गए ह । वहाँ छाटे सरकार जगला-जगला भटक रह हागे यहाँ चम्पादे नौकरा का भा नती भज सकती ।

सुखदेव नहीं माँ जी ! मनबोन उन्हें देखने गया ह मा जी !

चम्पादे तुम क्या नहीं गए ? तुम्हार पर में मेंहदी लगी ह ? उन्हें खोजन जा नहीं सकते ? पुरान नौकर होकर तुम हमारा नमक इमो तरह अन्न करोगे ? मालिक की तकलीफ में तुम्हें दद नहीं होता ? अभय प्रताप जगनी सुभरा का शिकार करत ह । उन्हें पहने तुम्हारा शिकार करना चाहिए । तुम लोग किम जगनी सुभर स कम हो ।

रामजतन माँ जी ! म उन्हें खोजने जाता हूँ ।

चम्पादे तुम जाओन ? गीत गा-गा के उन्हें खोजोगे । और यह सुखदेव सुख की नौद सौयगा । तुम लोग बठो म उन्हें खोजने जाऊगी । सुखदेव ! मेरा घोडा तयार कराओ ।

सुरदेव ( हाथ जोड़ कर ) माँ जा ! मुझ माफी दा जाय । घाइला कभी एसी भूल नहीं होगी । थाका माहय का हुकुम था कि मैं शाम को बोठी के दरवाज पर ही पहरा दूँ । इसलिए दरवाजे पर ही बठा रहा । बसे मरो पाई सता नहा ह ।

रामजतन हाँ माँ जी ! गतती की माफी हा । हम दाना छोटा सरकार को राजन जाएय ।

चम्पादे धन्वी बात ह । दीना जाओ और जन्नी स जन्नी मुझ सरर दा कि अभय प्रताप कहाँ ह ।

सुरदेव जो हुकुम ! चलो रामजतन ! प्रणाम माँ जी ।  
रामजतन प्रणाम माँ जी ।

( दानों का प्रस्थान )

चम्पादे ( सोचते हुए ) जमींदारी गई—इज्जत भी गई । और हमार निए इज्जत का प्रश्न जीवन का प्रश्न ह । सब बशम हाकर जिदगी बिता रह ह । ( पुकार कर ) सानिया ! सोनिया !

सोनिया ( नेपथ्य से ) आ गई माँ जा ।

चम्पादे सब दिन गीत और नाच । जसे इसी में जिदगी बीत जायगी । जमींदारी जान पर कोई विवाह क लिए भो नही पूछगा । सोनह बरस की हो गई अभी बचपन नही गया ।

( सोनिया का प्रवेश )

सोनिया कहिए माँ जी ।

चम्पादे अभी तक अभय प्रताप नही आया । मझ चिंता ह शिकार में कहीं घायल न हो गया हो ! इतनी देर तो उसे कभी हुई नही और तू निरिबन्त बठी ह ?

सोनिया माँ जी ! म तो बहुत चिंतित हू । देखिए आज मन कोई उपयास नही पटा । शाम के वक्त म नाचती थी तो मैं आज परो में घुषरू भी नही बांध । सरसी को साथ गान के लिए

बुलाया पर उससे बात तक नहीं हुई। और रामायण से सगनौती भी निकानी तो निकला सुनि सिय सत्य प्रसास हमारी ।'

चम्पादे पूजाहि मन कामना तुम्हारी ।' यह सगनौती तूने अपने लिए निकाली है या अभय प्रताप के आने के लिए ?

सोनिया भया के आने के लिए। अब दूसरी बात क्या हो सकती है ? माँ जी ! भया के 'याह की ? ता उ'हान तो जगन को चिड़िया स 'याह किया है। तिन भर उ'हां का गाना सुनत रहते हैं। शिकार खनना ही उनको मनाकामना है। कहीं बठ गए हागे नदी के किनार। ककड़ी फेंककर देख रहे हागे कि लहरें किस तरह बड़ कर उनक परा को खूमती हैं।

चम्पादे तू जितना भाला है उतना भोग अभय प्रताप नहीं है।

सोनिया भया तो मुझसे भा अविक भाते हैं माँ जी ! जान-पाल कुछ मानत है नहीं। उस तिन एक अग्नेज से वाली हवशिन को शादी करा दो।

चम्पादे अग्नेज से हवशिन की शादी ?

सोनिया हाँ अग्नेज से हवशिन की शादी। भर बचपन का एक अग्नेज गुड्डा था न ? तो उसकी हवशिन गडिया से शादी करा दो ? और सरसी से क्या तू 'याह के गीत गा।

चम्पादे अपनी तो तू शादी करता नहीं, गुड्डा गुड्डा की शादी करता फिरता है।

सोनिया हाँ माँ जी ! उस दिन मने कहा कि भया ! किससे शादी कराग ? ता हस कर कहन लग कहन लग कि कहा नहीं जाता माँ जी ! ( लजोती मुख मटा )

चम्पादे क्या नहीं कह सकती ? किससे शादी कराग ?

सोनिया कहूँ ? ( गरमा कर ) हस कर कहन लग कि जब तरा शादी हो



जायगी ता ता तरी गाग मे शांता बर गा ।

चम्पादे ( हसकर ) तरी गाग त ? पागल कौ का । गरगी स बना  
तनी कर सता बर भी ता टागुर की सगरी ८ । बाका गाव  
भी तरा हाग ।

सोनिया ( पुरार कर ) गरगा घा गरगी ।

सरसी ( नेपथ्य से ) घाई सानिया ।

चम्पादे घाया ? गरगी घाई ह ? कितनी माटी घाराज ह इमकी ।

सोनिया बावनी ह ता जग गितार बजना ह माँ जा । मन उत्तम बहा  
कि ईश्वर न कर तू बभा राय । नकिन घरर कभी रोई तो  
बाँसुरी बजगी ।

( सरसी का प्रवेश )

सरसी माँ जी ! प्रणाम करती हूँ ।

चम्पादे जीती रह बनी । बब घाई ।

सरसी साँभ की बना बहन सानिया न बुला भजा था मझे ।

चम्पादे घा जाया कर बटो । सानिया हमशा तरो बानें करती रहती  
ह । भ्रमय तो बला जाना ह शिकार खचन । बचारी रह जानो  
ह सानिया भङ्गो । किससे बानें कर । अभी तक भ्रमय नही  
घाया । म काका साय को खबर दू । वे घाँसी भेजें । तुम  
लोग बान करो ।

( प्रस्थान )

सोनिया एक बात कहू ।

सरसी हूँ ।

सोनिया माँ जी को तू बहुत पसंद ह सरसी ।

सरसी उनकी दया ह सानिया । तुम्हें पसंद भाऊ तब कुछ बात ह ।  
एक गीत ह—

मोरी अखियाँ तां तुम प रोभीं,  
वस जइया कऱरवा को धाट ।

सोनिया आह—अपने कजरवा का धाट वसाभा तव जानू ।

सरसी अछ्छा ले वसा लिया तुम्हे ।

सोनिया कहा भागगी तो नगी ?

सरसी नाग क जाऊगा कहाँ ! सात सुरो की रागिनी में हिर फिर के फिर वही स्वर आ जात हं । व रागिनी से निबन्ध नहीं सकते, उसी तरह तुम्हें छोडकर कहाँ जा सकती हूँ ! धूम फिर कर फिर तुम्हार सामन आ जाऊगी ।

सोनिया अछ्छा यह बता मरसी ! तुम्ह अपन पिता का घर अछ्छा लगता ह या यह घर ?

सरसी कभी-कभी तो पिताजी रात भर बाहर रहते ह । उनके बिना घर सूना-सूना सा लगता ह । पर मुम्हे ता सभा घर अछ्छे लगत ह जहाँ कोई प्रम से बोलनवाला हो । तुम मुम्हसे प्रम स बालती हो तो यह घर अछ्छा लगता ह । पिताजी बड दुवार से बालते ह तो अपना घर अछ्छा लगता ह । प्रेम से घर बनते ह, घर से प्रेम नहीं बनता ।

सोनिया यह प्रम हाता क्या ह सरसा ? तू प्रम का नाम बहुत दुहरानी ह ।

सरसी प्रेम तो म भी नहीं जानती । लोग कहत ह कि प्रेम से दो मन मिल जात ह लेकिन कसे मिन जाते ह यह म नहीं जानती । मन सा खिलाई नहीं देता, फिर मन का मिलना लोग कसे जान तत ह ? हया हवा स मिल जाय तो उसको भी लोग प्रेम कह देते हाने ?

सोनिया अछ्छा बता तरा मन किसी से मिला ह ?

सरसी मिला ह ।

सरसी मरी माता जा बभा-बभी गिता जा स म गव बहती ह । एक शरीर घा-मा जिगा घणा स्त्रा का पाहता ह पून की तरह गिर साथ पर रगता ह उनना बग घा-मा नी । बग घा-मी ता घपनी स्त्री को पर में चुभा हुआ काटा ममभता ह त्रिम वह दूगरी स्त्रा का काटा बनाकर निवानता ह ।

सोनिया तू बड पने को बातें करती ह सरमी ! गर पररा नही । मरे भया—

सरसी धरे तुम्हार भया तो शिंकार स घा गए हाग । मव क्या होगा !

सोनिया (मुनकर) हाँ घा गए । तू यही रह !

सरसी ( कहरण स्वर मे ) नही नही । व फिर मऊ देस लेंग ।

सोनिया दलें धोर दलत ही रह जायें ! क्या बुराई ह ?

सरसा हाय ! तुम ता मरी लाज चुटकी में लकर एस फूँक दती हो कि किसी की भी झाँखा में भर जाय ! म जानो हूँ ।

सोनिया तकिन ब तो इपर ही भा रह ह । हम नोग भया क कमर में हो छिप जाय ।

सरसी हाँ यही छिप जाय । इस घानमारो के पीछ ।

( दोनों छिप जाती हैं । अभय प्रताप का प्रवेश । वह त-दुरुस्त है और चुस्ती से बातें करता है । कंधे पर बटूक है । आवाज मे इतनी गहराई है जैसे प्रतिध्वनि गूज कर लौटती है ।

अभय मुखदेव !

मुखदेव भाया सरकार ! (मुखदेव का प्रवेश)

अभय मुखदेव ! साथ के लोग से कह दो कि बाहर की रविशा पर बठ । ओफ ! कितनी गद कपडो में भर गयी ! इतनी तज झाँधी—(मुखदेव का प्रस्थान ।) कितन पेडा की डारें टूट-टूट कर गिरी हैं जैसे किसी की जमीनारी

के टुकड़ हुए हा ।—सुखदेव !

सुखदेव ( नपथ्य से ) जो सरकार ! ( प्रवेश ) ।

अभय देखा, कोई इस वक्त्र मर पास न आए । म माँ से मित्रूगा ।  
( रुककर ) कोई पीछ ह ? ( घूर कर देखता है ) कोई नहा ।  
दत्ता मर नहान का इतजाम करा और हाँ मातादीन स कहना  
कि आत्र मर धाए का अच्छा यान्दिश हो । मेरा माती आज  
इतना दोहा ह कि आधा भा मात ला गई ।

सुखदेव जो आना सरकार !

अभय हाँ और मुता ! किशन भा मर साथ आया ह । उसके परा में  
गहरा चाट आ गया ह । काकाजा स कहना कि उसने परा में  
दवा लगा दें । माँ स कहना कि भ आ गया है । समझे ।

सुखदेव जसी आना सरकार ! ( प्रस्थान )

अभय ( पुकार कर ) रतन ! ( नपथ्य से ) सरकार ! ( रतन का  
प्रवेश )

अभय जूत खाला । आह—म कितना थक गया हू ।

( काउच पर लेट जाता है । रतनताल जूते खोलता है । )

अभय ( अपने आप ) जगल की झाड़ियाँ—जसे जगह जगह जगना  
सूमर सिमिट के बठ गए ह । टह तिरछे काट जसे साँप और  
बिच्छू जगली पीध बन गय ह—धुमल ह ता जमे जहर का  
डक मार दत ह ।

रतन सरकार ! अपन गाँव का जगत ता बहुत घना ह ।

अभय हर साल माफ कराता हूे तकिन बू जाता ह । जम किमो  
गरीब किसान का कज हा ।—जगली सूमर उत्तम छिप रहते  
ह—खना की फसल ऐसी बरवाद करत ह जमे इन्ही के खान  
के लिए खन थोए गए ह ।

रतन सरकार ! पर मल दूँ ? जूते में कसे-कसे धकड़ गए हाग ।

अभय मन दो । कोई घाया तो नहीं !

रतन कोई नहीं सरवार । राम जगन घाया था ।

अभय वह पंडित ? बहुत अच्छा गाता ह । बेचारा गरीब ह अगर किंगी राजस्वरवार का गवया हाता ता महना में रता । लकिन किस्मा—उमकी किस्मन ता गनिया में बिखरी ह । यहाँ स वनी जमे घनन गोन का ही रास्ता बना कर चनता ह । मैं उमे घनन यनी रखा । शिकार में भा घनन गाय न जाऊगा । मुनन ह गगात स जानवर भा गिचकर चन घान ह ।

रतन ठीक ह सरकार । ( देख कर ) माता जा घा गइ ।

( चम्पादे का प्रवेश )

चम्पादे अभय ! घाज तू वहाँ इतनी देर तक रह गया था ? हम लोग तो तरा रास्ता देखत देखत थक गए ।

अभय ( उठकर ) माँ जी ! घाज कुछ न पूछा । पहल तो बनी घापी घायी फिर एक जगनी मुघर के शिकार न चवा डाला । या तो जगनी मुघर खनी ही बरवान करता ह घाज वह एक गाय से उलभ गया । वह उस गाय का मारन ही वाला था कि मन गोली दाग दी । वह गोनी की मार खाकर भागा । मन घपना घोण तज किया और उसका पीछा किया । वह घपन की बचाना हुमा इतना तज भागा कि मन मौना उसका पीछा किया ।

चम्पादे जगनी मुघर सचमच बडा परशान करता ह ।

अभय वह जसे ही बडूक की मार के भानर घाया बसे ही मन एक गानी में उसका काम तमाम कर दिया ।

चम्पादे तुम भी बहुत थक गए हाग अभय ।

अभय घावा बहुत थक गया और मुक भालिया के काँट लग । कपन भी फन लकिन शिकार में इसकी कुछ यान भी नहीं रहती

शोर मीं जा ! जब म लौटा तो देखा कि वह कानो गाय तुम्हारी ही गाय थी जो जंगल में भटक गयी थी ।

चम्पादे किन्तु गाय वहाँ ह ?

अभय मनवाघ रास्त में मिल गया । उसी को सौंप दी । वह लेकर भाता होगा ।

चम्पादे अभय ! भगवान की बड़ी कृपा समझा कि तुम जंगल म मौजू से पहुँच गए नहीं तो जंगली मुझर न मरो गाय भार ढाली होती !

अभय जिसकी जिन्गी ह, उसे काई नही मार सकता मीं जी !

रतन ( नेपथ्य से ) सरकार म जाऊ ?

अभय क्या ह रतन ?

रतन सरकार काका साहब न विशनसिंह ठाकुर क परा में दवा लगा दी ।

अभय ठीक ह । अभी किशनसिंह ठाकुर घर नही जायेंगे । म उनकी चोटें देखूगा ।

चम्पादे विशन सिंह वही न जो रुपया का लन-दन करते ह ? उन्हें चोट वसे लगी ?

अभय मीं जी ! आज बहुत बडे भेन की बात मालूम हुई ।

चम्पादे भेन की ? वसे भेद की बात ?

अभय किशन सिंह डाकू ह । वह डाकुमा के गिरोह में ह ।

चम्पादे डाकुओं के गिरोह में ?

अभय हाँ डाकुमा के गिरोह में । रात में वह डाका छानता ह दिन में रुपया क लन-दन का व्यवहार करता ह ।

चम्पादे तुम्हे वसे मालूम हुआ ?

अभय जब म अपने सामिया व साथ जंगल से लौट रहा था तो एक झाने में कुछ लोग छिप कर बाँट कर रहे थे । रुपयो का

बटवारा करते समय उनमें भगडा हान लगा अभी हमारे  
घातमी पहुँच गए। मारपीट शुरू हो गयी। निशानगिह को  
भी चोट घायी।

चम्पादे घातमी तो बड़ा सीधा मानुम देना था।

अभय हाँ मैं भी उसे सीधा घातमी समझता था सक्किन वह डारू  
निकला ! जय डाकू भाग गए तब मट पड़ा हुमा कराह रहा  
था। मैंने पास पहुँच कर उसे पहिचाना। घरे यह तो निशान  
है। खल नहीं सकता था घुटना पर उसे गहरी चोट लगी  
थी। मन दो घातमिया को चारपाई सन भज दिया। और  
उससे बातें की।

चम्पादे बड़ा बहुरूपिया बना था !

अभय हाँ जब मन उससे कहा कि मैं तुम्हें पुलिस के हवाले कर दूंगा  
तो वह हाथ जोड कर गिडगिगन लगा और माफी माँगन  
लगा। मन उससे जब सच्चा-सच्चा हाल बतलान को कहा तो  
उसने अपना सारा भू खोल लिया और कसम खायी कि  
घाइन्दा कभी डाका नहीं डानूंगा।

चम्पादे उसको कसम का क्या भरोसा ?

अभय एक बात और मानुम हुई !

चम्पादे वह क्या ?

अभय सरसा उसकी बटी नहीं ह।

चम्पादे ( आश्चय से ) सरसी उसकी बटी नहीं ह ? तब किसकी बटी  
ह ? यह तू क्या कह रहा ह ?

अभय निशान न सरसी को पाल-पोस कर बड़ा किया ह। वह महीर  
की लडकी ह।

चम्पादे महीर की ?

अभय एक बार डाकुमा ने महीर के घर डाका डाला। गाय भस छोड

कर ल गए। उहान ग्रहीर धौर उसरी स्त्री को कतल कर  
गिया। उसकी छागो वच्को विस्तर पर पही रो रही थी।  
किशार्सिंह उमे उठाकर घर ले आया। तभी से सरसा उसक  
पास ह।

चम्पादे यह बात गाँव में किसो का नहीं मालूम ?

अभय यह बात सरसी भी नहीं जानती। जब कभी उसके बाप की  
बात चलता ह तो किशन और उसकी स्त्री में लड़ाई हो जाती  
ह। म इस गुत्थी को सुलझाना चाहता हूँ।

चम्पादे तू कसे सुलभाएगा ?

अभय सरसी का विवाह

चम्पादे किसके साथ करेगा ? पहल तो म समझती थी कि सरसी ठाकुर  
की लक्ष्मी ह। इसी घर में चली आएगी।

अभय तो अब भी धा सकता ह।

चम्पादे ( धालें फाड़ कर ) क्या ? अब भी धा सकते ह ?

अभय हो, धा सकते ह। देखो मी ! पहल म विवाह नहीं करना  
चाहता था। माचा था, कि जमादारी रहा नहीं मन का सब  
उमने मन में ही फुट कर रह गयी, तो विवाह का कोई भय  
नही ह। शिकार चलता हूँ, वहा जिदगा में एक शौक ह।  
जिदगी भर खलता रहूगा। तकिन—अब कुछ और बात  
साचता हूँ।

चम्पादे जा बात सोचता ह, वह हो नहीं सकता। यह गुट्टा की शानी  
नहीं ह कि अग्रज गुट्टा हबशिन गुट्टी से शादी कर ल। जाति  
पानि तोड़ कर शादी नहीं हो सकती।

अभय हा सकते ह और हाकर रहेगी।

चम्पादे ( तेज स्वर म ) हम साग राजपूत ह, अभय !

अभय राजपूता न ही आपस म लड कर दर की स्वनयता साया ह।



माँ ! यदि हमारे राजाभा ने छोटी-छोटी धाना में अपनी शक्ति न राखी होती तो उनका घोर कोई दस भी नहीं सकता था । जब कोई पहाड़ पवानामुनी बन जाता है तो वह अपनी ही भाग से अपने चारों ओर की हरियाली नष्ट कर देता है और भाग की नदी में सारी भूमि नष्ट हो जाती है ।

**चम्पादे** मैं तेरा बचवाता नहीं सुनना चाहती । जब किसी को कोई स्वायत्तता साधना होता है तो वह 'हृषि-मनिषा' की बातें अपने चारों तरफ नष्ट करता है और खुद साधू-महात्मा बन जाता है । सक्ति होता है वह पक्का स्वार्थी ।

**अभय** इसमें मरा कोई स्वायत्त नहीं है माँ जी ! सरसी की बातें अब लोगो को मालूम हो गयी है । अब इस गाँव में उमकी जितनी दूधर हो जायगी । उस भोनी भाली लडकी को अपमान से बचाने के लिए मैं उससे विवाह करूँगा ।

**चम्पादे** लेकिन तू राजपूत है और वह भहीर की लडकी !

**अभय** तो इससे क्या हुआ ! जब समाज छोटा था तो सुविधा के लिए हमने अपने भाइयाँ में समाज के काम बाँट लिए थे । इसीमें जाति-पाँति की सीमाएँ बन गयी थी । लेकिन अब तो हमारा समाज बहुत बड़ा हो गया । अब तो सभी व्यक्ति देश और समाज का काम कर सकते हैं । सब एक देश-वासी हैं ।

**चम्पादे** तू समझता है कि तारी बाता में आकर मैं अपने कुन धम को भूल जाऊँ ? मैं इस घर में नहीं रहूँगी अभय ! चम्पादे यह सहन नहीं करेगी । वह घर छोड़ कर चली जावगी ।

**अभय** कभी माँ भी अपने घर-बार को छोड़ सकती है ? अपने बेट को छोड़ सकती है ? अब तो तुम सारे समाज की माँ हो । जब तुम ऐसा समझोगी, माँ ! तभी तो हम कुछ कर सकेंगे । उनभे हुए जीवन का प्रश्न हल होगा । आज का जीवन तो एक

काला भौरा हू जो प्रश्न बिहा के परो से ही चलता हू । जब तक तुम उसे उगारता घोर सहानुभूति क पक्ष नहीं दोगी तब तक वह सुख के फूला के पाम तक उड़ कर जा ही नहीं सकता और आनन्द का रस नहीं पा सकता ।

( फिर आँधी को आवाज सुनायी पड़ती है । )

चम्पादे आँधा ! ये आँधी फिर उठी ! आग बुझा आऊ नहीं तो इस आँधी में सारा घर जल जायगा ।

( जाती है । )

अभय जाओ माँ ! घर की रक्षा करो क्योंकि तुम माँ हो !

( शीघ्रता से सोनिया का प्रवेश )

सोनिया भया ! भया ! भीतर चला । न जान क्या सरसो बेहोश हाकर गिर पची !

अभय सोनिया ! सरसा बेहोश हा गयो ? आज जावन क चारा भार आँधा बह रही हू । सब उसमें उट रहे हू । हम एक दूसरे को साथ लकर चलें ता सभा बच सकेंग । जिदगा का नती में गल आ गयो हू । साथ रहेंग तो बचेंग नहीं तो डूब जायेंगे ।

( आँधी की आवाज तेज होती है । दूर से रामजतन का गीत सुन पड़ता है । )

'घोर बहु नदिमा त घोर बहु

मारा पिमा उतरइ दे पार !

( आँधी की आवाज तेज होती है और उसमें वह गीत लो जाता है । )



शहनाई की शर्त

पात्र

राजन  
राजन की माँ  
आगतुक

फानपुर का एक मुहल्ला ।

रात के तीन बज ।

शीतकाल का प्रारम्भ । १ अक्टूबर, १९६० ।

( एक सामान्य कमरा । राजन इसी में सोता है । बायें ओर का दरवाजा राजन की माँ के कमरे की ओर जाता है । दाहिनी ओर का दरवाजा बाहर सड़क की ओर खुलता है । कमरे के बाचाबीच एक लिडकी है जो पीछे की गली की ओर खुलती है ।

कमरे में कोई सजावट नहीं है । बाएँ कोने में एक सामान्य सी चारपाई है जिस पर दरी और चादर बिछी हुई है । सिरहाने एक तकिया और पताने एक ऊनी चादर । सामने की दीवार पर चारपाई के समीप तीन छूटियाँ लगी हुई हैं जिन पर अलग-अलग कुरता, कमीज और कोट टंगे हुए हैं । लिडकी के दाहिने ओर एक कलेंडर है जिसमें अक्टूबर महाने का पृष्ठ है । चारपाई के समीप ही एक छोटी टेबिल है जिस पर टाइमप्रोस घड़ी रखी है । आस पास दो कुर्सियाँ रेलवे टाइम टेबिल और कुछ पुस्तकें, अखबार और पत्रादि रखे हैं । दावाल पर महात्मा गांधी जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचन्द्र बोस के चित्र लगे हैं जो पुराने कलेंडरों से काट कर काडबोर्ड पर चिपकाए गए हैं । उस फरा पर एक दरी बिछी हुई है ।

एक ५२ वर्षीया स्त्री फरा पर बठी हुई स्वेटर घुन रही है । उसके पास ही मोड़ पर एक लम्प रखा हुआ है । उसकी रोगनी अधिक तो नहीं है किन्तु उस स्त्री को घुनने में कोई कठिनाई नहीं हो रही है । बाच बीच में स्त्री दब कर गूँथ में देखने लगती है फिर घुनने में लीन हो जाती है ।

वातावरण में सन्नाटा और गति है । कभी कभी पत्नी के पल

फड़फड़ाने की धायाठ घोर शौगुर की झनझर गुनायो पर जाती है। रात के तीन बजे का घटा दूर से गुनायी देता है। घण्टा गुनने पर वह स्त्री बनना छोड़ कर दरवाज़ की घोर देखती है फिर उठ कर बाहर गुलने पास दरवाज़ तर जाकर बाहर देखती है। दो क्षण रुककर त्रिविध परों से फिर अपनी जगह सोट आता है। घट कर अचपमन हरता से फिर बनने लगती है।

कुछ क्षणों बाद दरवाज़ पर किसी के आने की आवाज़, दरवाज़ा खटखटाया जाता है लेकिन खुल होने के कारण स्त्री नहीं उठती वह दरवाज़ की घोर देखने लगती है। कहती है—सुना है।

राजन का प्रवेश। स्वस्म घोर देखन में आकषक। आयु २८ वय। सामान्य कुर्ता जवाहर वास्केट, धोती और चप्पलें पहन हुए ह। वह आत ही ठिठक जाता ह। )

राजन (आग्रह के स्वर में प्रश्न की मुद्रा) माँ तुम अब तक सोई नहीं ?

( माँ कुछ नहीं बोलती । )

राजन रिक्शवान न बना तग किया। (वास्केट उतार कर छूटी पर टाँगते हुए) तीन मील का रास्ता ! महाशय रिक्शा ऐसे चला रह था मानो बारात के साथ चल रहे ह। ( घट्टी कौन से उतार कर माँके पास आते हुए ) मन कहा—भाई ! कुछ पसे पयाना से लना तडा से चल चला—लेकिन बेचारा कैसे चले ! खान को भिन्ता नहीं ताकत कहाँ से आण ? घोर अब ठड भी पडन लगी है। (सहसा) माँ ! तुम कुर्सी पर बठ जाओ। दरो ठडी हो गयी होगी। म तो समझता था कि तुम सो गयी होगी। यहाँ तुम स्वप्न हो बन रहा ह। रात के तीन बज गए ह। जानती हो ?

माँ (भरे कंठ से) शीला चली गयी राजन !

राजन (दहलते हुए) माँ को तो बच्चों के जाने का दुरा होता ही है।

माँ चलते समय उसकी आँखों से कितना आँसू गिरा। वहाँ भरी आँखा में समा गए हैं। (शब्द कठम रुक जाते हैं।)

राजन दीदी स बड़ी ममता है।

माँ चलते समय बसे लिपट कर रोई थी मेर गल से? (आँखा से आँसू झलक उठते हैं। अपन आँख से पोंछती है।)

राजन अब तुम भा रात लगी माँ! रास्ते में भी दीदी की आँखा में आँसू था। मन समझाया—बहुत रो चुकी, दीदी! हर एक काम की हद होती है अब चुप हो जाओ। दिवाली में फिर तुम्हें लाना आऊँगा। तुम्हारे ही हाथों से इम छोटे-से घर में शिष्ट रख जायेंगे। तुम्हीं लक्ष्मी जी का पूजन करोगी। जीजा तुम्हें जल्दा भजत नहीं इसलिए जीजा जी को बस में करने का मन जगाऊँगा। रात भर एक पर से खट होकर माँ! दीदी आँसुआ म भी मुस्करा उठी।

माँ (मुस्कराकर) बाँटें करन में तो तू एक ही है। अच्छा किपा लून जात वक्त अपनी दीदा का हसा दिया। गाड़ी म उसे जगह मिल गयी था? (फिर बनने लगती है।)

राजन ब्या भाड थी माँ! गाड़ी में। एक बज की गाड़ी दो बजे आयी, तीन नम्बर के प्लेटफार्म पर। चार थे हम लोग। दीदी म नौकर और साभान। पाँच वार गाड़ी की सूचना हुई, तब छठी वार गाड़ी आई।

माँ लून तो सारी गिनता हा दिन डाली।

राजन मन दीदी को खूब हँसाया। अपन मित्र टिकट इन्स्पेक्टर से बत रखा था। अच्छी जगह मिल गयी। मैं बय पर दीदी का बिस्तर खोल लिया और बहा—दाँगी! शकुनला व पत्र लेखन की मुठ में लेट जाओ। व लेट गयी। उसे आरती



के घाट देवी शयन कर रहा है।

माँ यदा भक्त हूँ अपनी बहिन का !

राजन भक्ति में यदा रस हाता हूँ मैं। तुम तो जानती हो हमशा  
कीतन करती हो। घाटना हूँ कि रात भर दीनी व गुणा का  
कीतन करूँ लकिन (घड़ी की ओर देखते हुए) सवा तीन  
बज चुके। मैं अब तुम भा सो जाया।

माँ मुझ नीच नहीं घाएगी यदा ! आज शोला क बिना कुछ घाघा  
नहीं लगता। घन्घो भन्घो बातें कर तो भरा मन कुछ बहल  
जाय।

राजन इतनी रात गय ? (हाथ भुलाकर) ठीक हूँ। मन ही बहलाना  
हूँ सा मैं इस तरह की बातें कर सकता हूँ। जिन्हें तुम अपने  
स्वटर के साथ बनना। लकिन माँ ! कुर्मी पर बठ जाओ।  
नहा तो फश की टड तुम्हें तकनीक दंगी।

माँ घाघा यदा ! बठ जाऊगी कुर्मी पर। टड से क्या जीना ही  
कीतन लिन हूँ। (उठकर कुर्मी पर बठन हुए) तू तो एसी  
बातें करता हूँ कि हजार मन उल्लास हो हसी घा हो जाती  
हूँ। मनी तो शोला के बिना यह सूनापन मझे चैन न लन  
देता ! ( फिर बुनना आरम्भ करती है। )

राजन तो यह बनना तो बंद करो।

माँ तर लिए ही तो बन रही हूँ बेटा। बोट उतार लूँ तो एक  
काम खतम हो जाय। शोला भी तर लिए बुन रही हूँ।  
देखूंगी म जल्दी खतम करती हूँ कि शोला। यहा रहती तो  
जल्दी खतम कर लती। वहाँ इनाहाबाद में हजार भूभट्टें।  
( बनती है। )

राजन तो दीदी हमेशा तो यहाँ रह नहीं सकतीं। उम्हान पद्रह दिन  
रह लिया यही बहुत किया। सारी गृहस्थी दीदी ही की तो

देवनी पडती ह । जोजा जी को तो आफिम के काम से ही फुरमत नहीं । थ बब तक रहती यहाँ, आफिर किमी न किमी दिन ता उन्हें यहाँ से जाना ही पडता ।

माँ टाक ह, बग ! लडका पराय घर के लिए तो होती ही ह । मधुमबखी अपन छत्ते म शहद सजाता ह, चाह जो लाड कर ल जाय । जिसकी न कभी दवा न समझा, उसीके हाथ बिक जाया । चार की लुशाम करक उस चाबी सौप दो और हाथ जोड कर कहो कि हमारी तिजोड़ी का धन तुम्हार लिए ही ह ल जाओ ।

राजन (हसते हुए) लेकिन जोजा जी चोर नहीं ह माँ ! बहुत बड अफसर ह । मोटर रगला नौकर सभी कुछ ता ह उनके पास । फिर जाजा जी भी दीदी को बहुत मानत ह माँ ! ज्यादा दिना उनक बिना नहीं रह सकते । इधर पद्रह निना में ही बुलाया भज निया दीदी बहुत सुखी ह, माँ !

माँ उसका भाग ह, बेटा ! लेकिन तर पिता जी न कितनी दौड धूप की तब ऐसा घर पाया !

राजन आज पिता जी होते ।

माँ (विह्वल होकर) राजन !—(बुनना छूट जाता ह ।)

राजन (अपनी घलती महसूस कर) भोह माफ करो माँ ! कसी बात कह दा ! (भात पलटने के विचार से) अच्छा, माँ ! दीदी न जात समय फिर तुमसे प्रणाम कहा । (सहसा स्मरण कर) हाँ, माँ ! दीदी अपना हाथी नीत की मू टबाला चाबू तो यहाँ नही भूल गयी ?

माँ हाँ भूल गयी ह, बेटा ! आज उसन इस स्वटर का ऊन बाटने के लिए चाबू निकाला था—फिर यहीं छोड़ गयी । न उस पा रहा न मुझ । सहज कर अपने पास रख ले । वह वहाँ

धीरे धीरे व पान दरी पर है।

राजना (दरी पर ऊन व नीचे से घाड़ उठता है।) यह रत्ना।  
 मध्या घाड़ है ! ( देखता है। ) क्या रत्ना ? अभी ता  
 तबिए व नीचे रत्न सता है। रात में नीचे व बहुत मध्या मध्या  
 सपन हा देगु गा। गुबह टियान से रत्न दूंगा। ( तबिए के  
 नीचे रत्न के लिये विस्तर के समीप जाता है, रत्न वर  
 लौटते हुए ) जब कोई घर से जाता है माँ ! तो सब के मन  
 पर जान की बात ही घा जाती है। और सब बातें भूल जाती  
 हैं। दीनी अपना घाड़ ही भूल गयीं !

माँ शीला का जाना भी क्या हुआ बटा ! शाम तक कोई वान  
 नहीं थी। तुम्हारे जीजा जी का तार भाया और शीला की  
 तयारी हो गयी। इसी रात की गाडी से।

राजना हाँ घाड़िरी गाडी तो रात ही की थी। रत्नवाला न भी  
 कानपुर जैसे शहर के लिए क्या भायी रात का वक्त चुना  
 है। भायी रात—पहल यहाँ खूब व्यापार होता था। भव  
 चोरबाजार होता है। ठीक है कानपुर में चोरबाजारी भायी  
 रात के वक्त ही ठीक होती है। इसीलिए गाडी का टाइम भी  
 यही रत्ना।

माँ हम लोगों को चोरबाजारी से क्या करना है बटा ! यह तो  
 चोर लोग ही सोचें और फिर जो चोर होता है उसे क्या  
 प्तिन ! क्या रात !

राजना हाँ चोर होते भी कई तरह के हैं माँ ! एक चोर तो वे होते  
 हैं जो—

माँ ( सोच ही से ) बटा ! रात में चोरो का नाम लना ठीक नहीं।  
 कहते हैं चोर-चोर कहन से रात में चोर आ जाते हैं।

राजना भाए भी तो क्या ल जाएंगे ! अपना पास घरा ही क्या है !

( चारपाई की ओर सवेत करते हुए ) यह टूटी चारपाई !  
जिस पर गद्दा भी नहीं है, सिफ़ तूरी चान्द और तकिया !  
यह टूटी-सी टबल पुरानी घड़ी एकाध कुर्सी—यह फनी दरी  
जिम पर बठ कर तुम स्वदर बून रही हो—

माँ भर चारा की कुछ न पूछा ! व तो ग़राबा का घर भा लूट  
तत ह !

राजन तो मेरा ही घर लूट के देखें । माँ ! म ता बडा प्रसन्न होऊ  
अगर चार यहाँ आए । म कहूँगा—शाबाश भर दोस्त ! तुमन  
तो मुझ बडा आदमी समझा । दुनिया के सब लोग तो मुझ  
ग़राब कनक समझत हँ एक तुम हो जिमन मुझ बडा आदमी  
समझा ! आमी मुझ लूटो । लकिन अगर तुम्ह कुछ न मिल  
तो नाराज़ मत हाना । भर दोस्त बन के जाना ।

माँ चारा को दख कर ता लाग घबरा जात ह राजन !

राजन व लाग घबरा जात हँ माँ ! जिनके पास लावा का माल होता  
ह । माल लेन की जबदस्ती म चोर हथियार भी चलात ह—  
पिस्तौल खोच लत ह । यहाँ, ह क्या ? जब पसे ही नहीं हँ  
ता डर किस बात का ! और चार इतन मूख नहीं हाते माँ !  
कि हम लोग के साथ अपना बात बरवान करें । वही वक्त  
व सेठो की तिजोरियाँ लूटन म लगा सकत ह । मरी तनएवाह  
में ता उन तिजारियाँ का ताला भी न आयगा !

माँ तेरी तनएवाह तो मिल गई होगी । आज पहली तारीख ह ।

राजन हाँ, माँ ! मिल गई । दोन्ने की बिग में तुम्हें दना ही भून  
गया । लकिन ह ही कितना ! महगाईं मिला कर सिफ़ द्दर  
रुपये । एक छ़ाट से लिपाफे में तनएवाह एस समा जाती ह  
जसे मुह म लमनड़ाप । अपनी यह तिजोडी ह न ! तकिया ।  
उसके नीचे रख लेता ह । निमाग के मोच निमाग की कीमत !

माँ तरे निमाश का कीमत तो बहुत है राजन ! कभी तू भा ऊची तास्वाह पायगा ।

राजन भाग की देता पायगी माँ ! कभी तो गिर ८२ रुपय मिलता ह । फिर दस महीन में तुम्हारी साठो के विघ्नल हिसाब के २० रुपय भी दत ह ।

माँ तू तो जबरनस्तो गागा ल धाया । बड़ाप में क्या महीन, क्या मोटी ! तर २० रुपय कित्ता और काम धाते ।

राजन किस काम धाने ! आजवन २० रुपय क्या होते हैं माँ ! रुपया ता भोस की बू बन गया ह । जरा खच की गर्मी धाई कि साफ । देसन भर में धाधा नगता ह । हाय में उगयो तो पानी । फिर ८२ की कित्तात क्या माँ ! तनस्वाह तो एमी लगती ह जैसे सेमल की रुई । फूक मार दो तो कहीं भी उड जाय ।

माँ काई इस सम्भानन वाला नही ह बट ! तू याह कर ल तो तरा रुपया भी बचन लगगा । और तरक्की भी हो जायगी । कहते ह कि घर की लक्ष्मी भाकर तनस्वाह बढवा देती ह । राजन ( हसकर ) घर की लक्ष्मी ! घर की लक्ष्मी क्या कोइ भफसर ह जो तरक्की दे देती ह ? छोणे माँ ! य बातें । मुझे ब्याह करना ही नही ह । ८२ रुपय म हम दोना का खच तो चलता नही । तीसरा धानमी धाकर तुम्हारी दो रोदियो में भी हिस्ता बटा लगा ।

माँ यह तो धाधा ह बटा ! अगर मर मुह का धन किसी दूसरे के पेट में जाय तो इससे बल कर मरु क्या पशी होगी ।

राजन तुम ता माँ हो । बडी मीठी बातें कर लती हो । कोई कडवी बात कहन वाली मिनी तब ।

माँ मन ऐसे कौन पाप किए ह जो कडवी बात कहन वाली

मिलगा । फिर पत्नी लिखा लडकी बडकी बात को भी मीठी बना लती ह ।

राजन ( उठकर ) पत्नी लिखी लडकी ! ना माँ ! पत्नी लिखी लडकी से भगवान बचाए ! आजकल की पत्नी लिखी लडकिया तो एसी ह जैसे दरबोर-स पानिसी । हर महीने एक भारी प्रामियम भरते जायो । फिर आज यह चाहिए—कल वह चाहिए—जब बाहर निकरेंगे तो मासूम होगा कि चन्नी फिरती नमाइश जा रही ह । कहा तरगिस की नकल कही शोला की शकल । उसे मँहगे मौदे को इस टूटी चारपाई पर सजाऊगा ? तुम्ही वालो माँ ! इस इन्द्र भनुप का अपने जैसे गध की पूँछ से बाँधू गा ?

माँ ( हसकर ) तू तो उठकर देने लगा । अर किसी सीधी माँगी लडकी को घर की लक्ष्मी बना ल । जो हँसे तो फून गिरें और रोये ता माती बरसें । पूरा घर का देवी हो ।

राजन अर माँ ! य परिषा का कहानियाँ ह । मुझ जैसे निराश घाद मिया न ही य कहानियाँ लिखी हागी ।

माँ य कहानियाँ नहीं बर । य बातें सार ह । हमार घरा में आज भी एसी देविमाँ ह । मर एक लडकी की माँ स बातें की ह । और अच्छी बातें की ह ।

राजन क्या बातें की होगी, माँ ! यह तो तुम्हारी ममता ह । अच्छा छोडो इन बातों को ! न कोई सीधी लडकी मिलगा, न म शाग कर गा ।

माँ बस एसा कहन में आजकल क लडक अपनी शान समझते ह । म शागी-वाणी कुछ नहीं करू गा । कहते ता एसा ह लेकिन लडकियो के पस-वे बपडे पहनते ह । ऐसे वुशट दिवाते फिरते हैं । बित्तने टाठ-बाठ से रहने हैं ।

राजन दूसरा की बात धारा माँ ! म क्या कर पन्नता है ! (सूटी की ओर सक्त कर) कुरता जस्ट कमाउ । १ फशा—न टाट-याट ! एर मामूनी कतव कटी स टाट-याट करगा ?

माँ तो क्या जा टाट-याट नहीं करते उनरी शानी नहीं होती ? उनकी शानी में जा मुग ह यह टाट-याट करन बाबा की शानी में नहीं ह ।

राजन अब मैं शानी की बात क्या जानू !

माँ भाग जान लगा । देर-साबर तो तुम्हे शानी करनी ही पन्गो एक पहिए से गानी कब चली ह ?

राजन म तो माँ ! एक पहिए पर ही सर कर रहा हूँ ।

माँ जगह-जगह की ठाकर सा रहा ह कि सर कर रहा ह । अच्छी बात ह अब म उठती हूँ । तरी बाता में बग काम हो गया । ( उठने का उपक्रम करती ह ) एस छोटी-सी तिपार्द पर मन दूध रख लिया ह । इसे पी लता ।

राजन इतनी रात गए ? अब दूध नहीं पियूगा माँ !

माँ अगर कोई कहन वाली होती तो पी सता । खुद न पीता तो उसे पिला देता । अच्छी बात ह जब इच्छा हो तब पी लता । सर सिरहाने रख देती हूँ । ( सिरहाने की टवल पर रखने के लिए चलती ह । )

राजन ( रोकर ) म रख नूगा माँ ! मन हुआ तो सोते कबत पी लूगा । अब तुम जाकर सोओ ।

माँ म सोऊ ? अब क्या सो सकूंगी ! म सोचती हू बटा ! कि अब सुनह होन ही वानो ह । नीर तो भाएंगी नहीं । मैं गगा स्नान के लिए चली जाऊ । बासी की माँ भी जाग उठी होगी और गगा-स्नान की तयारी कर रही होगी ।

राजन नहीं माँ ! सुनह होन में अभी देर ह । एक घण्ट की नीद भी

बहुत ह ।

माँ तकिन धाँखा में नोट बहा ह बटा । गगा स्नान में मरा मन  
भा बहुत जायगा, शोला क नाम की भा डुबकी लगा लूँगा ।  
राजन धाँधी बात ह । तुम्हार आशावाँ स ही ता हूम योग जी  
रह ह । जाओ गगा-स्नान क लिए । तकिन अधरा ह । म  
चलू तुम्हें पहुँचान क लिए ?

माँ इसकी क्या जखरत ह, बटा । काशा की माँ का घर बगल में  
ही तो ह । दस बार म आई-आई ह । म चली जाऊगी । तुम  
आराम स सो जाओ । म भीतर से अपनी धोती ल भाऊ ।

( बाए दरवाजे स भीतर प्रस्थान )

राजन ( सोचता हुआ ) माँ का हृदय—बच्चा की यात्रा में धाँखा से  
नोट गायब—मुँह अधर गगा-स्नान—( टहलते हुए ) लोने  
के नाम की डुबकी लगाएँगी, ठाक ह—जाओ गगा स्नान के  
लिए ( अपना बिस्तर ठीक करन लगता ह । बीच बीच में  
गुनगुनाता जाता ह )—गगा तेरो लहर हमार मन भाई—  
गगा तरा धारा हमारे—

( धोती-सौलिया लकर माँ का प्रवृत्त )

माँ अच्छा बटा । भव जा रहो हूँ ।

राजन माँ ! जाओ—भर नाम की डुबकी भी लगा लता । दीनी  
तुम्हारी बटी ह ता म भा ता तुम्हारा वेग हूँ ।

माँ बटा हा नहीं प्यारा बटा ह—मै तर नाम की भा डुबकियाँ  
लगाऊंगा ।

राजन माँ ! गिन कर लगाना ।

माँ हाँ, हाँ, गिन कर—भून जाऊंगी तो फिर से गिनना शुरू  
करूँगी ।

राजन धाँधी बात ह तो जाओ—यह टाव लेनी जाभा, रास्ते में



काम देगा । ( लकिये के नीचे से टाच निकाल कर देता ह । )  
 माँ गंगा की गली तो एगा है कि भाँस मूँ कर चला जाऊगी ।  
 और भय कुछ सिना बाँ तो इमो गली से जाना है । भाँस मूँ  
 कर लकिन—गर दे ह । स जाऊगी—( टाच लेती ह । )  
 तुझे और कुछ तो नहीं चाहिए ?

राजन और कुछ नहीं चाहिए माँ !

माँ मन हा तो दूध पी सना । भ्रष्टा भय तू भी सो । कन तरा  
 झाकिस ह । सायगा नहीं तो काम कसे करगा ! भ्रष्टा भव  
 में चलती हूँ । राधे गोविं—राधे गोविं—

( प्रस्थान )

राजन ( माँ को द्वार तक पहुँचा कर लौटता हुआ ) मरी भ्रष्टा  
 माँ—मरी कितनी धिता—यह दूध—सु नहीं पिया—  
 कहती ह—कहन वाली होती ती पी सता—और कहती ह  
 व्याह कर तू—म क्या व्याह करूँगा । व्याह करन बानो के  
 रग-ढग ही दूसर होत ह । सर देखा जायगा । भव में भी  
 सोऊ—(चारो ओर देखता ह ।) लिडकी खोल दू—ठडी हवा  
 भाए—(लिडकी खोलता ह) दरवाजा बंद कर दूँ । (दरवाजा  
 बंद करना है । लौट कर चारपाई के समीप आता है । दूध  
 पीने के लिए उठाता हूँ । एक क्षण रुककर) भव नहीं पियूँगा ।  
 सुबह धाय के काम भायगा । भव सोऊ । ईरवर किसी की  
 गरीब न बनाये । ( लप की बत्ती कम करता ह । कमरे में  
 घड़त हल्का उजेला रह जाता ह । राजन चारपाई पर बठता  
 ह फिर चहूर फला कर सोड़ता ह और जय धी राम कह  
 कर लेट जाता ह । )

( दो क्षण की शान्ति । खुली हुई लिडकी से टाच की  
 रोशनी आती ह । फिर वह रोशनी भिन्न भिन्न स्थानों पर

पडती ह । धीरे धीरे एक व्यक्ति अपने को काल ओवरकोट में छिपाए खिडकी से उतर कर कमरे में प्रवेश करता है । कोट का कालर उठा हुआ है और उसकी झाला पर काला जालीदार फपडा है । यह टाच से घारो और देखता है । उसके हाथ में रिवाल्वर है । यह रिवाल्वर सतकता से हाथ में साधे हुए आगे बढ़ता है । लटका होता है । )

राजन ( चौक कर तिर उठाते हुए ) कौन ? कौन ह ?

( आगतुक रिवाल्वर आगे बढ़ाता है और भारी आवाज में बोलता है । )

आगतुक चुप ! रिवाल्वर चला दूगा । रुपया निकालो ।

राजन रुपया ! ( ऊच स्वर में ) चोर ! ( उठता है । )

आगतुक बहा रहा । आवाज निकाली तो गोली मार दूगा । रुपया निकालो । ( रिवाल्वर उठाता है । )

राजन ( चारपाई पर बठ जाता है ) रुपया ? रुपया नहीं ह । म गरीब हूँ—म गरीब कलक हूँ—

आगतुक ( भारी आवाज में ) चुप ! रुपया निकालो ( रिवाल्वर सामने करता है । ) तुम्हारे तकिए के नीचे लिफाफा ह । कल तुम्हें तनत्राह मिली ह ।

राजन तनत्राह का रुपया ! लकिन—लकिन तकिए के नीचे—

आगतुक मन दीवाल के पाछे स गव बानें मुनी ह ।

( रिवाल्वर तान कर ) निकालो लिफाफा ।

राजन ( गिरे हुए स्वर में ) मेरे महीन भर का खब—२० रुपये माँ का घाता के—

आगन्तुक शोर नही—मेरे पास रुपया वजन नहीं ह ।

राजन रुपया ले लाजिए । काई बान नहीं—महीन भर भूया रहुगा—घायन मुझे बडा आत्मी समरु निया । जो घाडा-सा रुपया मेरे

गाग है स साजिए ।

आगन्तुक जल्दी करो ।

राजन मानूम होगा ह घाय गलती स मरे घर म धा गए ह । किगो बड शठ के घर जान तो ८२ रुपय के मन् ८२ हजार मिलत ! मरा मकान मुनगान में ह जा पाट पला घाए ।

आगन्तुक बानें मत करो । लिफाफा मर पाम फेंक दो ।

राजन भ्रष्टा, निमातता हूँ । ( उठ कर तक्रिए के नीचे हाथ डालता ओर तक्रिए क नीचे ही चाकू खोल कर लडा हो जाता है । ) यह चाकू देता ? भाक दूँगा ।

आगन्तुक ( दबी हसी हसकर ) देवकूफ ! रिवाल्वर क सामन चाकू ? एक कन्म भाग ब तो गाली तुम्हारी धानी के भारपार होगी । निहालो लिफाफा ।

राजन ( सिधिल होकर ) भ्रष्टा लिफाफा ही ने त्रीजिए—(तक्रिये के नीचे से लिफाफा निहाल कर आगन्तुक के आगे फेंकता ह । ) एक कन्क डाट खाते-खाते चापर बन जाता ह । चाहे आफिसर हो चाहे चोर हो । उसके लिए दोनो एक ह । साजिए यह चाकू भी स त्रीजिए गोनी मार कर गला भी काट दीजिए ! ( चाकू भी फेंक देता ह ) मैं नसी लायक हूँ । कापर कन्क ।

आगन्तुक ( लिफाफा उठाते हुए ) मं वातिल नही हूँ और चोर भी नही हूँ ।

राजन चार नही ह ? किगो गरीब स रात में जबदस्ती रिवाल्वर के जार से रुपय छीनत ह और कहते ह म चोर नही हू ।

आगन्तुक ( जोर देकर ) नही । मझ रुपय की जरूरत ह । कही और रुपय ह ?

राजन माँ के पास ह । व गगा नहान चनी गयी ह ।

आगतुक म जानता हू । कितना रुपया ह उनके पास ?

राजन ( साधत हुए ) तान रुपया पच्चास नए पस—

आगतुक ( ध्यम्य से ) तीन रुपया पच्चास नय पस ! बहुत बडा जमा ह ! ( सहसा चीख कर ) आह—किसन मर कधे म जोर से काटा ? ( कधे पर हाथ रख कर कराहता हुआ ) ओह, किसन काटा—( वह कराहता ह, उसक हाथ से रिवाल्वर छूट कर गिरता ह । राजन शीघ्रता से रिवाल्वर और चाकू उठा सता ह और लम्प की बत्ती तेज कर देता ह । )

राजन ( रिवाल्वर सामन साध कर ) अब रिवाल्वर मरे हाथ में ह । निकाला मरा लिफाफा ! ( जोर से ) पलीस पलीस—

आगतुक ( अनुनय के स्वरा मे ) देखिए पुलीस को आवाज न दोजिए । किसी न मर कध में बड जोर से काट लिया ! ( कराहते हुए ) आह—

राजन किसन काट लिया—घाप कौन ह ?

आगतुक म—म—उफ फिर किसी न जोर से काटा ! आह—

राजन बहुत आघा काटा । अच्छे मौके पर काटा ! घापको मानूस डाना चाहिए कि गरीब का पहरेदार भगवान ह जो जहरीला कीडा बनकर चोरा को काट भा सकता ह ।

आगतुक ( कराहते हुए ) जहरीला कौन ?

राजन हाँ घाप कोट उतार कर देखिए ।

आगन्तुक मैं—म—कोट उतारूँ ? नहीं नही म कोट नहीं उतारूँ गा— ( फिर चीख कर ) उफ फिर काटा—आह—!

राजन शाबाश ! मर प्यारे कीड ! तुम इसी तरह काटत रहना ! जब तक कि ये चोर महाशय अपना कोट न उतारें ।

आगतुक आघा आघा । उतारता हूँ । उतारता हूँ—

राजन पर कोट उतारन के पहन मरा ८२ रुपया का लिफाफा हाकिम

काजिए । फिर बिम्बिताइए नहीं तो भरे हाथ में रिवाब्वर है ।

आगन्तुक यह नक्ली रिवाब्वर ह पाँच रुपय याना । अगली रिवाब्वर एरोन के लिए पसा कहां ?

राजन ( सीर से देखता हुआ ) अच्छा यह नक्ली रिवाब्वर ह । सचमुच अच्छों का गिलीना ! ( घुमा फिर कर देखता ह । ) भौंधरे में इसी के धन पर आप हजार रुपय नुत्ते है ? यह पाँच रुपये याना रिवाब्वर ! ( फेंक देता है । ) आप बहुत होशियार मानूम देत ह ।

आगन्तुक ( कराहते हुए ) भाह माफ कीजिएगा । मैं कोट उतारता हूँ—आप बहुत सज्जन ह । मझ पुलीस के हवान न करेँ—परिस्थितिपा से नाचार होकर यहाँ आया । मैं चोर नहीं हू । ( आह भर कर ) मोह न जान कौन-सा कौन मूक बाट रहा ह । ( आगन्तुक जैसे ही अपना ओवरकोट उतारता हे वैसे ही उसकी साडी दृष्टिगत होती है । राजन चौंक कर पीछे हटता है । )

राजन ( कौतुक से ) आप स्त्री ह ?

आगन्तुक दुर्भाग्य से ! स्त्री हू । ( कोट को उलट कर देखती है ) यह काली चीटी ह । मोह बहुत जोर से काटा ह ।

राजन लकिन आपन घोखा खूब लिया । आवाज भी खूब बदली ।

आगन्तुक मन मनक बार पुरुषों का अभिनय किया ह । आवाज बदलन का अभ्यास महोना किया ह लकिन आज इस क्रूर चीटी न मरा भ्रम खोल लिया ! किस बुरी तरह से काटता ह यह बन महो चीटी ।

राजन उस समय ता वह चीटी किसी हाथी से कम नहीं ह जिसन मौके पर आपका बकावू कर लिया । नहीं तो म तो नुट ही गया था । लकिन स्त्री हाकर आपका इतना साहस ! आप

मानसिंह डाकू की बहन ह ?

आगन्तुक ( सिर नीचा कर ) नहीं एक अनाथ लडकी ! भूल की ज्वाला से तड़पता हुई एक अनाथ लडकी !

राजन अनाथ लडकी ? एसा अनाथ लडकी जा दूसरा को अनाथ बना द ! लकिन महाशया जा ! भूख की ज्वाला न आज तक किमी लडका को पुरुष नगी बनाया यानी मरे कहन का मतलब यह ह कि पुरुष का बश धारण नहा कराया ।

आगन्तुक यह मेर भाव्य वा नोप ह !

राजन चाह जिम्का दोप हो अब तो भेज सुल गया । यह झाँखा की पट्टी भी उतार दाजिए ।

आगन्तुक देखिए अब ता म आपका कुछ भा नहीं बिगाड सकता । आप स प्रायना करती हू कि आप पुलिस में रिपोर्ट न करें । फिर जो आप भाना देंगे उमका पानन करूंगी । यह झाँखा स पट्टी भी उतार देती हू । ( यह आँखो से पट्टी उतारती हैं । देखन मे वह अत्यन्त सुदरा हैं । उसे बम्बत ही राजन भौंचख हारर उसका ओर बलता है । ) मर स्वगवासी पिता का यह ओवर काट जो मभ पूरी तीर स छिपा लता ह । ( टबिल पर रखती है । )

राजन आप कतनी सुन्दर ह ! कतना सुन्दर लडकी को भी चोरी करने का आवश्यकता पढा ? आप मुझ नूटन भाई थी—लेकिन शिष्टता के नात बनना चाहता हूँ कि आप इस कुर्मी पर बठ जायें ।

आगन्तुक जी नहीं, लकिन म बनना चाहती हूँ कि म चोर नहीं हू ।

राजन ता फिर आप कौन ह ? रात क तीसरे पहर आप इस तरह अपन स्वगवासा पिता क वस्त्र धारण कर घूमती हैं और नकली पिस्तौल स लॉगा का डरा कर राए नूटता हूँ । क्या आपके पिताजी भी चारी करत थे ?

आगन्तुक जी मरी—य घोरा का सडा देत थे । य र्मानार थे इगलिए उाक मरा थे या म और मरी माता पने-यम को मुहताज हो गया । जाया में काइ सहायता नहीं घर पर वृद्धा माँ दो-गने का तरग रही ह ।

राजन आप किगो भा न्ति मर पाग धा सकते थीं । मैं आपकी थोडी बहुत सहायता अवश्य कर दता ।

आगन्तुक आप क्या सहायता करते ? समार में जा व्यक्ति सहायता करता ह य पटन—यह पहल सहायता की कामन चाहता ह—

राजन आप सब कन्ती ह । जमाना बहुत सराव ह लकिन मैं व्यापारी नहीं हूँ । बनक हूँ लकिन ईमानार इसान हूँ ।

आगन्तुक मैं नहीं जानती थी कि भाज के जमान में एक बनक भी ईमान दार और सज्जन होता ह ।

राजन मौके पर तो सभी सज्जन हो जाते ह । म भी सज्जन सही लकिन अगर आप मुझ सज्जन समझता ह तो इस कुर्सी पर बठ जाइए और अपना परिचय दीजिए ।

आगन्तुक दलिए आप पुलीस को लवर तो नहीं देंग ?

राजन आप इतनी धवराई हुई क्या ह ? आपको मुझ पर विश्वास क्या नहो होता ? आप ८२ दरये का लिकाफा अपन ही पास रखिए । म पुत्रिम को लवर नहीं दूगा ।

आगन्तुक ( कुर्सी पर बठ कर ) धयवात् । मरा नाम कहणा ह । मैं एक अनाव लडका ह पर भिच्चा नना मनुष्यता का अपमान समझती हूँ आप अपना रुपया वापस ल लीजिए ।

( कोट से लिकाफा निकाल कर डबल पर रखती है । )

राजन ( दूसरी कुर्सी पर बठ कर ) वातचीत से मानूम होता ह कि आप पढ़ा लिखी भी ह ।

करुणा अपने हाँ परिश्रम से मने बा० ए० तक शिखा पाई ह ।

राजन ( चौक कर ) बी० ए० तक ? इसीलिए इतना साहसी ह ?

करुणा साहसी ताँ पत्यक लडका को हाना चाहिए लकिन बी० ए० तक पटन के बाद भा यह अभागिन अपनी बूटा मा का पट इज्जत से नही भर सकी ।

राजन इ-इत से नही भर सकी ? चोगी करना कौन सी इज्जत की वान ह ?

करुणा ( निधिल स्वर म ) माँ को भूखी नही रख भवती । हिन्ने को किसी फिर्म में चोरी का यह ढग देखा था । स्वर्गीय पिता जा का वह आवर कोट जो भर पूर शरीर का ढक लता ह मरे बचपन क कपटा का यह जाला, यह दिखान का रिवात्वर— सभी का उपयोग म कर सकी ।

राजन अच्छा उपयोग हुआ ! आजकल की बहुत सी हिन्ने फिल्में चोरी की कला ही सिखाती ह । लेकिन आपको चोगी करने को जरूरत ही क्या थी ! आप बी० ए० पास ह, कहीं भी आपको नौकरी मिल सकती थी !

करुणा नौकरी का नाम आप मेरे सामन न लें ।

राजन क्या ? अपना देश तो अब स्वतंत्र ह ! ( चित्रो की ओर संकत कर ) बापू जवाहर, मुभाप का देश ह ।—अपनी सरकार की नौकरी ।

करुणा अपना सरकार का नौकरी ! उसकी याद आते ही मेरा हृदय धण्डा और शोक से भर जाता ह ।

राजन क्यों म भा तो नौकरी करता ह । पूणा और शोक की तो कोई बात नही ।

करुणा लकिन आप पुरुष ह स्त्री नही । स्त्रिया म लिए नौकरी अनिशाप ह । यहाँ रुपये का मूल्य ह इसान का मूल्य नहीं ।



जहाँ अधिभार के सामने इमान का इखत पूज में लोट गवती है ।

राजन मञ्जा क्या घातन क्यों नौकरी की ?

करुणा की ! एक बार नहीं गान बार !

राजन योग्यता नहीं गिला सया ?

करुणा यही योग्यता कौन देखता ह । यही ता दूसरा ही बाने देखी जाती है ।

राजन गत्य है मुझ भी थोडा बहुत अनुभव ह । लकिन आपकी नौकरी क्यों न । घन सवी ?

करुणा यही भयंकर अधिशाप ह ।

राजन मझे सुना सकता ह ?

करुणा बस कहूँ ! मन एक नहीं—मान-सान स्कून और कानिजा में नौकरी की—लकिन कही भो पन्ह तिन स अधिक नौकरो नहीं कर सका ।

राजन कारण ?

करुणा जिस स्कून या बालिज में मझ काम मिला उसरु अधिकारी और मनजर मुझ एसी दष्टि से देखत थ कि म सम्मान के साथ बनी नहीं रह सकती थी । नौकरो पान के कुछ तिन बान ही मझ नौकरी छाड देनी पन्ती थी । थ पन् लिख लोग इतन पतित होत ह यह म नहीं जानती थी ।

राजन ( सिर नीघ कर ) वास्तव म बन् दु ख की बात ह ।

करुणा म कनकित जावन यतीत करना नहीं चाहती थी । तितनियो की तरह घूमना बापू के देश का आचरण नहा ह । ( गाधी जी के चित्र की ओर देखती है । )

राजन आप वास्तव म देवी ह ।

करुणा ( अपने ही प्रवाह मे ) मरे पिता जी नहीं ह । मैं निधन हू ।

इसलिए मरा विवाह नहीं हो सकता था। मेरे परिवार में कोई नहीं है भाई नहीं बहिन नहीं बस एक बूढ़ी माँ है जिहान मुझे इरजत के साथ रहने की सिखा दी। आज के जमाने में सुखी बहू है जो अपनी इरजत बच देता है बड़ा वह है जो दूसरों का खुशामद में सब कुछ खा देन के लिए तयार रहता है। और जिसन इरजत की बात सोची उसकी किम्मत में दर-दर की ठोकरें खाना अपमान तिरस्कार भूख और सब तरह की यत्रण। आज वही इरजत लेकर मैं अपनी बूढ़ी माँ को धन के दो दान नहीं दे सकी। कातन करना के लिए हम दाना राम मन्दिर में चली जाती है। जो प्रसाद मिल जाता है वही हम दोनों के दिन भर का भोजन हो जाता है। मेरी माँ आज भरे साथ तीन दिन से भूखा है। पुजारी जी ने प्रसाद देना बन्द कर दिया। इन्होंने मन आज यह माहम का काय किया। माँ की भूख नहीं देख सकी! ( गला भर जाता है, हलकी सिसकी )

राजन आप दुखी न हैं। मुझे बहुत दुःख है कि आप तीन दिन से भूखी हैं। इसलिए मेरी माँ गंगा-स्नान को जात समय भर लिए दूध रस गयो थी। मन इस नहीं पिमा। भगवान ने शायद आपका लिए ही इसे बचा रखा है। लीजिए। ( दूध का गिलास उठा कर लाता है ) आप यह दूध पी लीजिए।

करुणा मैं दूध पियू ? मेरी माँ घर पर तीन दिनों से भूखी है। यहाँ मैं अपनी भूख बुझाने के लिए दूध पी लूँ। आपन मुझ क्या समझा है ?

राजन आप वास्तव में ऊँच चरित्र की लड़की हैं। आपसे क्या कहूँ। एक काम करें। आप यह दूध अपने साथ लेती जाय और अपना माँ को दे दें। सुबह होने को है दूध वाला आयागा।

म मारा दूध भारी लिए आपन पर पढ़ा दूंगा । आप अपन मरान का पना बतना दालिए ।

करुणा मरान का पना ? एगा समगित लरना क मरान का पना पना । लकिन अगर आप वास्तव में मज्जत ह ता मं परिश्रम का पना सु गा । अय घाठवी बार नौकरी करू गो । आपका पनी नौकरी करू गो और आपरो मा का घम-अय मुनाऊगी । दा ब्यक्तिया क उर-नापणु क लिए जा उचित समभिए मुझ दे दीत्रिएगा ।

राजन अवरय दूंगा । यि मा की इच्छा होगा तो एमा प्रबन्ध हो जायगा लकिन नौकरी से पहल आपका विवाह अवरय ही जाना चाहिए । म एकाकी भाभी हूँ । अपन घर में किमी अविवाहिता लडवी को काम नहीं करन दूंगा । योग दस तरह की बातें कह सकत ह । फिर आप इतनी शिचिता है, यह नाम रूप स्वभाव । करुणा देवी ! आपका विवाह अवरय हो जाना चाहिए ।

करुणा यह मर भाग्य का विधान नहीं ह ।

राजन तो फिर भाग्य का विधान क्या ह ? आप भूला रहें ? अपनी मा का भूली रहें ? और सिनमा के ढग स चोरी करें ?

करुणा अय चोरी नहीं करू गो । यदि ढग की नौकरी नहीं मिली— तो (रक जाती ह ।)

राजन (प्रश्न की मुद्रा में) तो ?

करुणा तो ता आत्म-हत्या करू गो ।

राजन आत्म हत्या ?—इतनी शिचा पान के वा आत्म-हत्या ? (विनो क स्वर में) आजकल आत्म हत्या तो शायद फसान म दाखिन हो गया ह । बात-बात में आत्म-हत्या । हर गनी, कूच मुहल्ल में आत्म-हत्या होती ह । छुटटी की भर्जी देना

धीर आत्म-हत्या करना—बराबर । हम इतने कमजोर हो गए हैं कि जीवन से सघप नहीं ले सकते ।

करुणा लेकिन मृत्यु में सघप ले सकते हैं ।

राजन इसी सघप का नाम आत्म-हत्या है । आजकल आत्म-हत्याएँ पांच तरह से की जाती हैं—(उमला पर गिनता हुआ) पहली ट्रेन से कट कर—अप्रेजा न बहुत पहले हमारी मनावृत्ति समझ ली थी—इसलिए ट्रेन चला ली—यात्रा तो एक बहाना है । दूसरा डग है कुएँ में कूट कर—हमारे बुजुर्ग भी कुछ-कुछ कुएँ की ऐसी उपयोगिता समझते थे । तीसरा डग है जट्टर खाकर । चौथा है रस्ती से लटक कर धीरे पाँचवाँ है मिट्टी का तल कपड़ा पर छिड़क कर । ता आपको कौन सा तरीका पसन्द है ? मिट्टी के तल के लिए तो आपके पास पैसे ही नहीं ।

करुणा (खड़े हाकर) आप मरी बात का मजाक उठाते हैं ?

राजन जा नहीं आत्म-हत्या बहुत गम्भीर होती है । उतनी ही गम्भीर जितना विवाह । विवाह भी एक तरह का आत्म-हत्या है । पहले उसे कर देंगे ।

करुणा यह असम्भव है ।

राजन पूरा तरह सम्भव है । मैं उसका प्रबंध कर सकता हूँ । मैं गरीब हूँ लेकिन मंगल कामनाएँ मर पाय भरपूर हैं । अपनी हसियत से मैं आपको शादी के लिए यह तकिया भेंट कर सकता हूँ ।

( विस्तर से तकिया उठा लता है । )

करुणा ( तीसरा से ) तकिया ? क्या मतलब ?

राजन कोई छाम मतलब नहीं । यह तकिया ही मेरी सारी सम्पत्ति है । अपना मदभावना में मैं धीरे क्या भेंट कर सकता हूँ ?

करुणा आपसे भेंट चाहता ही कौन है ? आप अपना तकिया अपना

म गारा दूध घागरा निण घापन पर पट्टेता दूंगा । घाप घपन मरान का पता बाना गाणि ।

करुणा मरान का पता ? एमा घभाविन लखा क मरान का क्या पता । सकिन अगर घाप मास्तर में मज्जन हूँ ता मं परिश्रम का पमा लु गा । घय घाठवी बार नौररी करुगी । घापक यनी नौररी करुगी और घापको मा का घम-अय मुनाऊगी । दा अयविनया क उर-पापण क लिए जा उवित समभिए मुक्त दे दीजिएगा ।

राजन अवरय दूंगा । यदि माँ का इच्छा होगा तो एमा प्रबध हो पापगा लकिन नौररी स पहन आपना विवाह अवरय हो जाना चाहिए । म एराकी घाम्मी हूँ । अवन घर में किसी अविवाहिता लखी को काम नही करन दूंगा । योग दस तरह की बातें कह सकत ह । फिर आप इतना शिद्धिता ह यह नाम रुप स्वभाव । करुणा दवी । आपका विवाह अवरय हो जाना चाहिए ।

करुणा यह मर भाग्य का विधान नहीं ह ।

राजन ता फिर भाग्य का विधान क्या ह ? आप भूखा रहें ? अपनी माँ का भूखी रखें ? और सिनमा के ढग स चोरी करें ?

करुणा अय चोरी नही करुगी । यदि ढग की नौररी नही मिली— तो रुक जाती ह ।

राजन (अन का मुद्रा मे) ता ?

करुणा तो तो आत्म-हत्या करुगी ।

राजन आत्म हत्या ?—तनी शिछा पान के बा आत्म-हत्या ? (विनो क स्वर में) आजकन आत्म हत्या तो शायद फशन में दालिन हो गया ह । बात-बात में आत्म-हत्या । हर गली कूच मुहल्ल में आत्म हत्या होती ह । छुट्टी की अर्जी देना

धीर आत्म-हत्या करना—बराबर । हम इतन कमजोर हो गए हैं कि जीवन में सघप नहीं ले सकते ।

करुणा लेकिन भूत्यों से सघप ले सकते हैं ।

राजन इसी सघप का नाम आत्म-हत्या है । आजकल आत्म-हत्याएँ पाँच तरह से की जाती हैं—(उगली पर गिनता हुआ) पहला टैन से कट कर—अप्रेजा न बहून पहल हमारी मनावृत्ति समझ ली थी—इसलिए टैन चला दा—यात्रा तो एक बहाना है । दूसरा ढग है कुएँ में कूट कर—हमारे बुजुर्ग भी कुछ-कुछ कुएँ का ऐसी उपधागिता समझते थे । तीसरा ढग है जहर खाकर । चौथा है रस्ता से चटक कर और पाचवाँ है मिट्टी का तल कपडों पर छिड़क कर । ता आपको कौन सा तरीका पसंद है ? मिट्टी के तल के लिए तो आपको पास पास हाथ नहीं ।

करुणा ( खड़े होकर ) आप मरी जात का मजाक उड़ाते हैं ?

राजन जा नहीं आत्म-हत्या बहुत गम्भीर होती है । उतनी ही गम्भीर जितना विवाह । विवाह भी एक तरह की आत्म-हत्या है । पहले उसे कर देंगे ।

करुणा यह असम्भव है ।

राजन पूरी तरह सम्भव है । मैं उसका प्रबंध कर सकता हूँ । मैं गराब हूँ लेकिन भगल कामनाएँ मेरे पास भरपूर हैं । अपनी हमियत से मैं आपकी शान्ति के लिए यह तकिया भट कर सकता हूँ ।

( बिस्तर से तकिया उठा लेता है । )

करुणा ( ती एता से ) तकिया ? क्या मतलब ?

राजन कोई खास मतलब नहीं । यह तकिया ही मरी सारी सम्पत्ति है । अपनी सद्भावना में मैं और क्या भट कर सकता हूँ ?

करुणा आपसे भट चाहता ही कौन है ? आप अपना तकिया अपने

पाग रक्कों घोर चारों तरफ स्वयं घपना बिगाड़ करे । घापने कमर में घापन स पाल मा घापनी माँ से सब कुछ गुन लिया था । घापको बिगाड़ करना चाहिए ।

राजन मुझ बाई घपनी सडकी ही नहीं मिल रही है बिगाड़ बिमसे करूँगा ?

घरुणा तो मन कीजिए ।

राजन लेकिन घापका करना चाहिए और मरी और ने यह भेंट स्वीकार कीजिए ।

( तन्विये की ओर सकेत )

घरुणा दगिए मं मजाक पसन्द नहीं करती । यदि घापन मुझ पुलिम से बचान का विश्वास न लाया होता तो मं घापको इस मजाक का मजा चखा सकती थी ।

राजन मजा तो आप भय भी चखा सकती ह । तन्विये में स्वयं एक अपरिचित सडका से मजाक नहीं कर सकता । आपके चरित्र की पवित्रता से, घापकी शिष्टता से आपके स्वभाव से म बहुत प्रभावित हूँ । इसलिए मन अपनी भेंट प्रस्तुत की थी । देखिए तन्विये की भेंट यह ह ।

( राजन चाकू से तन्विया काइता हैं और सौ-सौ रुपये के दस नोट निकालता है । )

लोजिए यह मरी भेंट । सौ सौ के दस नोट—एक हजार । चोरो के डर से घट रुपया किसी सडक में रख नहीं सकता था—आप ही रिवावर लिखला कर यह रुपया धीन सकती थीं । यह एक हजार रुपया ह जो तन्विये के भीतर मन सहज कर रक्खा था । वही म भेंट करना चाहता था । इतने में तो आपका बिगाड़ हो सकता ह ।

( घरुणा कुछ नहीं बोलती । )

मेरे पिछले दस वर्षों की कमाई है। माना जी लठल-बठले  
आग्रह करती है कि मैं कोई अच्छी लडकी देख कर विवाह  
कर लूँ। कोई अच्छी लडकी मिलती नहीं। विवाह किससे  
करूँ? अच्छी लडकी मिलन की भाशा में मैंने अपना गान्धी  
कमाई से एक हजार रुपये इकट्ठे किए थे।

करुणा ता जमे भी हो। आप इन रुपया से अपनी माता जी का ही  
आग्रह पूरा करें। (सहसा) अच्छा अब मैं जाऊंगी। आप  
की कृपा के लिए धन्यवाद। (जाने को उछल)

राजन अच्छी बात है आप जाय। यदि कष्ट न हो तो अपना यह  
कोट और आँखा को यहाँ जानो लेती जाय। माय ही यह  
रिवाज भी। अपने पिता जी और अपने शशब जी की ये  
स्मृतियाँ! शायद फिर कभी काम आयें।

करुणा अब ये कभी काम नहीं आएगी। (कोट उठाती है।)

राजन तभी तब आप एसी ही नौकरा करें। हाँ आप मरी माँ को  
धन प्रथ सुनान की बात कह रही थी, यदि आप यह कृपा  
करें तो इन रुपयों में से कितना स्वीकार करेंगी?

करुणा यह कुछ नहीं कह सकती। मैं अपनी माँ से पूछ कर बताऊंगी।  
राजन ठीक है मैं भी अपनी माँ से पूछ लूँगा। (स्मरण कर)  
हाँ—आपको अपनी माता जी के लिए यह दूध भी तो ल  
जाना है—

(बाहर किसी के आवाज)

करुणा (संगीत स्वर में) कोई आ रहा है!

राजन आप घबराए नहीं—दूध वाला हागा। रुक जाइए अपनी माता  
जी के लिए यह ताजा दूध भी लेनी जाय। आपका अपने  
मकान का पता देना का उछरत नहा पडी। चाहें तो दूध  
वाले को बतला दें। मुझ न बतलाए। (नेपथ्य से स्वर)—



राजन धरे माँ ! तुम तो इन्हें दाना जाती हो कि उनका शायद मुझ भी न जानती हो !

माँ नहीं बटा ! गंगा जी न शायद तुम दानों को मर्यादा तट से जानने के लिए ही लौटा लिया है । पमा भूलन का ता पत्र बहाना बना लिया उहान ।

राजन यह सब इन निघन देवो क कीतन का फन है !

माँ होगा । कीतन का बडा फन होता है बटा । और कोई घनी है कोई निघन ! यह तो सब बान चक्र का फेरा है ।

राजन माँ ! आज ब्राह्म मुन में ये घपनी निघनता दूर करन यहाँ भाइ ।

( कठणा घपन घोठों पर उगली रखकर चुप रहने का संकेत करती है । )

शायद य भी गंगा-स्नान करन के लिए जा रही थी । व्हान मभमे कहा कि ये आपको घम ग्रय सुनान की नौकरी चाहती है । मन कहा कि मैं गरीब बनक हू । तुम्हें कोई पारिथमिक तो दे नहीं सकता फिर तकिय के रूपयो की याद भाई । मेन देखन के लिय तकिय के रूपय निकान—

माँ ( प्रसन्न होकर ) तकिय के रूपये ? तून अच्छी याद लाई । ( हस कर ) वें ! अब तो मैं जिन्गी भर इसी लडकी से घम ग्रय सुनूंगी । इसे महनत के पसे न देकर य सारे रूपय दे दूंगी । मैं इसकी माँ से सब बातें कर चुकी हू । तकिन रूपय देन के पहले एक शत होगी ।

राजन वह क्या माँ ?

माँ कहू ?

राजन हाँ माँ ? कही न ? क्या शत होगी ?

माँ दरवाजे पर शहनाई बजगो । शहनाई की शत होगी !  
 राजन भरे बाह माँ ! तुम हो अतयामी हो ! सबके मन की बात  
 जान गई ! मरी अच्छी माँ ॥

( राजन माँ से लिपट जाता है । कदरणा मुस्कराकर,  
 सिर का कपडा सभाल कर प्रणाम की मुद्रा में सिर झुका  
 लेती है । )





# शक्ति-संजीवनी

[ पारिवारिक हास्य एकाकी ]

## पान

महारा	बह न
अतून	मरुतर
योगातद	मरुतर
मेवातद	तिन
रता	नेवर
आरता	मरुतर वा मरुतर
दिसोरा	मरुतर वा मरुतर

( प्रयाग क टगोर टाउन का एक कोना—शाम क पाँच बजे )

( परत उठने पर—महारा क मकान का एक कमरा जो सामान्य ढंग से सजा हुआ है । बाएँ जाएँ दो दरवाज़े— एक भीतर की ओर और दूसरा बाहर की ओर । दोवार क मध्य में एक खिड़की जिससे बाहर की सड़क नज़र आई देती है । कमरे के मध्य में दीवाल से लगा हुआ एक ताल जिस पर कालीन बिछा हुआ है । सामन कुछ हद पर एक चौकोर टेबल जिसके चारों ओर कुर्सियाँ रक्खी हुई हैं । भीतर वाला दरवाज़ा क समीप एक आल्मारी जिसमें पुस्तकें सजी हैं । एक कोने में स्टैंड जिस पर फूलों का एक गुलबस्ता सजा हुआ है । कमरे में कुछ प्राकृतिक दृश्यों की तस्वीरें हैं ।

भीतर जाने वाला द्वार क समाप एक 'इतिहास तिरर' जिसके समीप आशा ( २१ वय ) अपना मख़ डबकर लिपस्टिक लगा रही है । रेशमी साड़ी के साथ चाद तारे का चाउज़, पर न मसमला चप्पल, कभी-कभी टढ़ा तिरछा तिर पर अपने बाल हाथा से ठीक कर रही है । रतन ( १६ वय ) कपड़ की आडन लेकर कुरसी और आल्मारा साफ कर रहा है । साधारण कुरता और लिपटदार पजामा पहने है । कुछ क्षण बाद आशा रतन की ओर कड़ी नज़र से देखकर आदेश के स्वरों में बोलती है । )

आशा रतन ।

( रतन कुछ बेर क लिए पोंछना बन्द कर आशा



में साँप और पिच्छू की तरह चिपक रहत ह । मौवा मिला कि चुट से काट लिया ।

रतन नही जो मेम साब ! हम लाग तो अक्षवार के रही वागद ह जी ! जब चाहे फाड व फेंक दीजिए जी !

आशा तू भाँ इस घर में एक बकील बन गया ह ! बातें ढेर सी और काम रती भर नही ! लोग चाय पीन के लिए आ रहे ह और अभी न बमरा साफ दृशा और न स्नोव गला ! कुछ बहूगी ना कहेंगे कि थक गया है—काट के कामा सँ थक गया हू । शायद इनकी तरह स्टोव भी थक गया होगा । काम सामन आया कि हाथ-पर डोने । इस तरह काम होता ह ?

रतन नहीं जो काम ठीक तरह होना चाहिए जा ।

( तबी से फुसा मेज साफ करता है । )

आशा म जय बी० ए म पत्नी थी ता काम इस तरह करती थी कि म आग बढ जाती थी और काम पाछे रह जाता था ।

रतन मम साब ! काम का क्या मजाल कि वा आपक साथ रह जी !

आशा लकिन इस घर व मारे काम धीरे धीरे होत ह । स्टोव जलाया जायगा ता इस तरह जैसे किसी बच्च का पालना भुलाया जा रहा ह । पर ऐसे किया जायगा जम होनी म रग की पिव पारी भरा जाती ह । ( उठ कर कपडा पर सेंट का स्प्रे करता हुई ) कुछ नहीं सब बातें थड क्लास !

रतन गिलास तो ठडा ही होता ह जी ! मम साब ! यह घर बिल्कुल ठडा गिलास ह जी ।

आशा लकिन म इसे ठग नहीं रहन दूगी । इसे स्टोव की तरह गरम करूगी । बकील साहब क्या करेंगे ? स्नोव की अपना मुवकिलन समझ कर बहस कर रह हाग ! (अपन आप) मुझमे भी पहन बहुत बकातन छिटले थ ! चुटकिया म कर दिया





आशा तो खत्म हो गई । तू जा सकता ह ।

रतन म जाऊ जी ? अच्छी बात ह । शाम के ममय चाय के बाद जाऊ कि अभी जाऊ ?

आशा अभी जाओ ! चा का काम चल जायगा ।

रतन अच्छी बात ह जा ! लेकिन मरी तनख्वाह मेम साब !

आशा तरी तनख्वाह भागी जाती ह ? पहनी तारीख का मिलगी ।

रतन मेम साब ! ह्ये की जफरत थो जी !

आशा रुपय की जफरत किमे जफरत नहीं होती ? मुझे भी रुपया की बहुत जफरत ह । एक बार का कहना बस नहीं ह ?

रतन मम साहब जी ! आपका एक बार का कहना मी बार के बराबर ह जी और हम घर में आपका ही तो राज ह जी ! आपका किसी से थोड पूछना ह जी ! मरी थोडी सी तनखाह

आशा अच्छा आज शाम को आओ । छ और साठे छ के बाच में ।

रतन बहुत अच्छा जा मम साब !

आशा ( गीरो मे मुह देखते हुए ) सलाम करके जाना !

रतन ( सलाम करते हुए ) सलाम ! मम साब जी !

आशा ( अपने आप बहबडाते हुए कोट पर अश करते करत ) क्या नौकर हो गए ह आजकन क ! कहा कि तेरो नौकरी खत्म हो गई—ता ही गई । एक बार भी नहीं कहेगा कि नहीं मेम साहब ! मुझे नौकरी से मत हटाइए कहा और गए जसे हिट मारा और वाजनी ! कम्बख्न कही के ! पहने जमान के नौकर पुरत-पुरत काम करत थ । ( फिर अश करते हुए ) और अभी उधर स्टोव जन हा रटा ह । देखती हू म अभी । ( पुकार कर ) सुनत हा मिस्टर ? स्टोव जला या नही ? इननी देर में तो म सारी दुनिया जला देती तनका स्टोव

सोपा उन्हें । सब मुख ग बात नहीं निरखती । भोले की तरह सत्य रहा है भरे हाथ में ।

रतन ( भय से आंगा की ओर देखता है । ) जा मम साब !

आशा कुछ नहीं । तू क्या नहीं जानता कि इस घर में मरा हा राज है ? ( सींग में अपना मुंह देखती है । )

रतन जानता हूँ जी !

( आंगा पाउडर का एक गालों पर लगाने है । )

रतन हड़म हो ता एक बात कहूँ जा मम साब ! कहन से डर लगता ह पर मन की बात आपने कम छिपाऊ । बात य ह जी । नि सरकारी अस्पताल में पाउडर ठीक तरह से नहीं छिपा जाता । दलिये जी ! आप कितना अच्छा लगाने ह । आप अस्पताल में नौकरी करें जी ता रागिया की बग्य भाराम हो जाय जा ! मन्ता कहूँ तो भाक काजिए जी । ( हाथ जोड़ता है । )

आशा बहुत बढ़ कर बक बक मत कर । ओर तू यहाँ काम करन आया ह कि नुमायश देवन । इतन साफ कपड पहन कर आया ह ! सफाई हम लोगो के लिए ह कि तर निए ? इतन साफ कपड पहिन कर घर का काम होगा ?

रतन मम साब ! साफ कपड पहनना कोई कुमूर नहीं ह जी ।

आशा कुसूर हो या न हो । नौकरा से घर का काम ठीक नहीं चल सकता—म बहुत तिनो से सोच रही हू ।

रतन आा ठीक सोचती ह जी !

आशा घर के आंगमिया से ही घर का काम होता ह । आज सुबह मन तुभम क्या कहा था ?

रतन जी ! आपन कहा था कि आज से भरी नौकरी सत्म हो जायगी ।

आशा तो खम हो गई। तू जा सकता है।

रतन म जाऊ जी ? अच्छी बात है। शाम के समय चाय के बाद जाऊ कि अभी जाऊ ?

आशा अभी जाओ ! चाय का काम चल जायगा।

रतन अच्छी बात है जा ! लेकिन मरी तनस्वाह मेम साव !

आशा तरी तनस्वाह भागी जानी है ? पहनी तारीख को मिलगी।

रतन मम साव ! रुपये की जरूरत थी जी !

आशा रुपये की जरूरत किम जरूरत नहीं होती ? मुझे भी रुपये का बहुत जरूरत है। एक बार का कहना बस नहीं है ?

रतन मम साहब जी ! आपका एक बार का कहना सौ बार क बराबर है जी और इस घर में आपका ही तो राज है जा ! आपका किताब स था पूछना है जी ! मरी थोड़ी सी तन चाह

आशा अच्छा आज शाम को आओ। छ और सा छ के बीच म।

रतन बहुत अच्छा जी मम साव !

आशा ( नीचे में मह देखते हुए ) सलाम करके जाना !

रतन ( सलाम करते हुए ) सलाम ! मम साव जा !

आशा ( अपने आप बड़बड़ाते हुए कोट पर बस करते करते ) क्या नौकर हो गए है, आजकल के ! कहा कि तरी नौकरी उत्तम हो गई—ता हो गई ! एक धार भी नहीं कहूंगा कि नहीं मेम साहब ! मुझे नौकरी से मत हटाइए कहा और गए जैसे हिट मारा और बाउडी ! कम्बगत कहा व ! पहले जमान के नौकर पुस्तक पुरत काम करत थ । ( फिर बग करते हुए ) और अभी उधर स्टोव जल हो रहा है ! देखती हैं म अभी ! ( पुकार कर ) सुनत है, मिस्टर ? स्टोव जला या नहीं ? इतनी देर में तो म मारा दुनिया जला देती उनका स्टोव

तब ग / जला ! ( द्वार ब पात गारर जोर स पुहार कर )  
 घर मिग्नर ! गुता जरा द्धर धारर  
 ( गपप्य स ) धाया धारा जा !

आशा ( चिङ्गारर ) धाया धारा जा ! धाराज एगी जमे गाला  
 लररी में स धु धा निरल र । है । य भर पति ह जिहें बान  
 मुनन का भा राताता नरी ह । जय मं यो० ए० में पढ़ता धी  
 1 सा एम धानमिया का डका बहना था डका । भर फारर का  
 भा मया सेलवशन ह । ( एक हाथ म ध्याला और दूसरे मे  
 सतररी लिए हुए मटेगचन्द्र का प्रयोग । सादा कुरता और  
 पाजामा पहिन हुए हैं । बाल बिलरे हुए । गिर हुए स्वर में  
 बालें करत हैं । )

महेश कहिए धारा जा ।

आशा सुना नही ? कितनी देर स पुहार रही है ।

महेश स्टोव को धाराज में धारकी धाराज नही मुन सवा  
 धारा जी ।

आशा तो धारके काना के लिए वहाँ से तज कोयन की धाराज  
 लाऊ ! कतनी देर से तो चारर रही हैं ।

महेश धारका चाखना भी मरे लिए कोयल का धाराज ह ।

आशा सुशाम रहन दोजिए । चाय में कितनी देर ह ?

महेश यम तयार हा ह । य तरतररी-ध्याल धो रहा था । धाज रतन  
 न इन्हें साफ भी नही किया । जान वहाँ चला गया ।

आशा धपन धर गया । धाज से उसकी नौकरी खत्म । शाम को  
 उसकी तनटवाह का हिसाब करना है ।

महेश तो तो हो जायगा । फिर उसकी नौकरी खत्म

आशा बिल्कुल खत्म । महमान धान धाले ह और कमरा इस तरह  
 साफ करता था जैसे बल धपनी पूछ से मक्खियाँ उडाता ह !

आपके साथ रहते रहते बहस करना साथ गया ।

महेश ता तो म तो बाहर बहस करता हू । यहाँ तो बस आपका बस मुनन में धानन्द आता ह आशा जा ।

आशा म क्या बहस करती हू । काम म सुन्ती देखता हू ता बालना पढता ह । शतनी दर में मन अपना मक् आप कर लिया लकिन उसस कमरा माफ नही हुआ । बस गाढ की टूटा भडा का तरह भ्रान्त जिला दी हा गया कमरा साफ । स्पिड बहो का । निदान लिया मने उसे आज ।

महेश आपने आशा दिया वह इसी लायक था लकिन घर का काम

आशा घर का काम ? घरे हम जागा न अब काम करन का भ्रान्त डाल हा ली ह । आतिर भगवान न तुमे हाथ किमलिए लिए हू । काम न करना हमार हाथा का अपमान ह । काट का काम करन क बाट घर का काम करन में क्या हउ ह ?

महेश कोई हउ नही मम साहब !

आशा मम साहब ! आपम मेम साहब कहन का तो मन नहा कहा ?

महेश अब नीबर नही ह जा मम साहब कहता । म ही कहन लगू तो क्या हउ ह ?

आशा अग्य न कोजिए वकील माहय ! म खूब जानता हू—कमा कमा आप अपना बकालत की मुई मुझे भी चुभा दत है । लकिन मर पास भी निमाग ह । म कहती हू कोट के काम के बाट घर का काम करन में क्या हउ ह ? यह घर आपका है । बाट सा धीर लागा बा मो ह । लकिन यह घर ? यह घर धीर सोगा का नही, आपका है—सिक्र आपका । तो कोट के बनिस्वत यह घर आपक कामों का अधिक अधिकारी ह । बोलिए, यह घर आपने कामा का अधिकारा नही ह ?

महेश यह घर मर ही कामा का अतिव्यथितारी है ।

आशा ता घात से हम मागा का ही घटना काम करना है । मं अपने  
/घाट में ब्रश करना है—घात चाय बनाये । क्या हानि है ?  
दोना घर व काम है ।

महेश हाँ दाना हा घर के काम है । मैं ब्रश कर राखता हूँ और  
घात चाय बना सकता हूँ ।

आशा तबिन घात बनना भी नहीं सोचन कि चाय बनान में मरा  
मर घात खराब हा जायगा ? और फिर चाय घात—घात  
बना सकते हैं । मागा काम पुरुष करें महीन काम स्त्री को  
शाभा दना है ।

महेश ठीक है । मम साहब । पर हरेक मोटा काम महीन हो  
सकता है ।

आशा यह घात कोट में साबित कर सकते हैं यहाँ नहीं । घर को  
स्त्रा के फल से घर के काम होते हैं । फिर चाय कोई एमा  
मोटा काम नहीं है । और फिर घातकी बनाई हुई चाय स्वादिष्ट  
होता है । मन बभा चाय बनाई नहीं । जब मं बी० ए० में  
पन्नी थी तब शाप एव बार बनाई होगी वह भी किसी  
खास फकशन पर । और घात इपर चाय बहुत घातकी बनान  
सग है । मुझे पसन्द है ।

महेश मैं इसे घपना लशकिस्मती समझता हूँ मम साहब । मरो बहस  
जज को पसन्द है और चाय घातकी । जब चाय बना सकता  
हूँ तो प्याज भी घो सकता हूँ । म महीन हूँ मुझे थकावट तो  
हो नहीं सकती । मरा सिर एक राकेट है उसमें तो दू हो  
जहीं सकता ।

आशा फिर वहा हमशा का रोना ! थकावट सिरदन् । घात घपन  
को पुरुष कहते हैं । पुरुष तो फौलाट के जिस्म का होता है

अगर जरा जरा से कामों में वह यत्न लगे तो वह बदल चुका इस दुनिया का। सप्ताह में वे मनुष्य बट हुए हैं जिन्होंने रात-दिन परिश्रम से काम लिया है। एक आप है कि बोट के काम से ही थक जाते हैं। चाय बनाने में थकते हैं प्याल-नशतरियाँ धोने में थकते हैं। शायद किसी दिन आप यह भी कह दें कि साँस लेने में थक गया हूँ। आप अपने का पुष्ट कहते हैं ? छि ! पुष्ट काम करने में थके ? और यदि वह कमजोर है तो अपनी दवा करे।

**महेश** न मैं कमजोर हूँ और न अपनी दवा कराना है मुझे।

**आशा** तो फिर मुझे तुम्हारी दवा कराना होगी। थकावट की बातें सुनते सुनते अब उठते हैं ! 'थक गया हूँ सिर में दर्द हो गया' यह सब क्या है ? काम न करने के बहाने !

**महेश** मन कभी कोई बहाना नहीं किया आशाजी ! आखिर इन्सान है थक जाना या मिर में टूट हो जाना स्वाभाविक है।

**आशा** जी नहीं स्वाभाविक नहीं है। एभी किसी को थकावट नहीं आती कि जरा-सा घर का काम भाँन कर सकें। इधर बड़े दिना से मैं इसका धार में साच रही हूँ।

**महेश** क्या सोच रही है ?

**आशा** यही कि आपकी थकावट का इलाज कराया जाय जिससे आप घर का काम कर सकें। आपका तो अपने-आपके कामों से फुरमत्त मित्रों नहीं मन है सोचा कि इसका कुछ प्रबंध करूँ।

**महेश** क्या प्रबंध ?

**आशा** मन आपसे नहीं कहा लेकिन आपका इलाज अब शीघ्र ही होना चाहिए। और मन उसका प्रबंध कर लिया है।

**महेश** आप ही मरे इलाज से लिए क्या काम है आशाजी !



आशा इगल पीछे म एक बार आपका ध्येय भी मुन सकती हूँ  
लकिन मन जा निरचय किया है वह होगा और प्रवरय हागा ।  
भाग चल कर राग बद्ध सकता है । उगका इलाज होना चाहिए  
और शास्त्र ही हाना चाहिए । और प्रत्येक स्था का यह फल  
ह कि वह पनि या इलाज कराए ।

महेश म जान सकता हूँ आशाजी ! मरा दत्ताज कीन करेंगे ?

आशा आप दारागज में रहन वान योगिराज का जानते हागे ।

महेश मैं किसी योगिराज का नहीं जानता ।

आशा आप सिद्ध पुर्या का क्या जानेंगे ! आप तो चार और डाकुआ  
का जानत ह जिनक मन्त्रमें बरत है । योगिराज का तो आप  
मजाक उठावेंगे लकिन मजाज उठान में उनकी हानि नही  
आपकी हानि ह । योगिराज आपवेंद क आचाय ह । उनकी  
जडो-बूटिया में समूत ह हाथ में यश ह ।

महेश लकिन यह सब किसलिए ? म बीमार तो नहीं हूँ ।

आशा थकावट और सिरदद ही भाग बन कर बीमारी का रूप  
रखता ह । और अगर समय पर इलाज नही हुआ तो फिर  
बीमारी सम्हाल नही सम्हलती । म आज ही योगिराज को  
बुना आई ह वही इलाज करेंगे ।

महेश योगिराज क्या इलाज करेंगे ! लकिन अगर एसी बात ह तो  
म किसी डाक्टर स पूछ कर कोई टानिक लूंगा । टानिक  
से

आशा ( घात काटकर ) टानिक लूंगा ! जानत ह आजकल  
टानिको क क्या दाम ह ? दस रुपया में प्तनी-सी शीशो । वह  
भी असली नही । दवा की जगह पानी ! कहन भर के लिए  
टानिक' कह लीजिए । बड-बड नबिल चिपका दिए और  
विटामिन के नाम लिख दिए । हो गया टानिक ! सब बकार !

आज के जमान में अगर असली फायदा उठाना है तो जडा वूटियो का सेवन किया जाय । दाम भी कम लगे और दवा भी अच्छी हो । फिर जिन महात्मा जी को म वुला आई है व ऐसे बस नहीं है हिमालय से भाए हुए हैं । लाखा तरह की जन्मे वूटियो के प्रयोग करके देख चुके हैं । मुझे को जिंदा कर चुके हैं ।

महेश मुझे को जिंदा कर चुके होंगे जिंदा को क्या जिंदा करेंगे । आशा ( भुझलाकर ) भाप बहस ही करेंगे या जरूरत को बात

समझेंगे ? डाक्टरों इलाज में हजारा का सवाल है और फायदा हो या न हा । लेकिन आयुर्वेद में ? आयुर्वेद में फायदा ही फायदा है खच हो तो थोडा-सा हो ल । इतन बडे अन्तर को भाप नहीं समझते !

महेश मैं अवश्य समझता हूँ आशाजी ! ठीक है भाप मेरा जो इलाज कराए मुझ मजूर है । मैं यह भी समझता हूँ कि यह मरी यकावट का उतना इलाज नहीं है जितना घर के कामा को महन्त से बरन का इलाज है । करूंगा !

आशा ईश्वर न करे किसी स्त्री का पति बकील हो । असली बान समझेंगे नहीं बाल को खाल निकालेंगे ।

महेश अच्छी बात है ता भाप क्या चाहती है ? मैं अपनी थकावट और सिर-दर्द का इलाज कराऊ ? बरा लूंगा लेकिन मुझ न भाजल के सन्ता और महन्ता पर विश्वास है न उनकी जडो वूटियो पर !

आशा भापको न हो मुझ तो है । देखिए मैं आज ही बाजार से आयुर्वेद को एक किताब लाई हूँ । ( आल्मारी से एक पुस्तक निकालकर लाते हुए ) यह देखिए शारंगधर संहिता । इसके प्रथम खण्ड में ही लिखा हुआ है कि ( पढ़ते हुए ) जस देव

तामों के घनक भे<sup>०</sup> और श्रष्ट गुण प्रकाशित हं वसे उत्तम औषधिया में भी घनक भ<sup>०</sup> और अनुस शक्ति ( जोर बेकर ) अनुस शक्ति प्रकाशित ह । एगा जान कर और मदेह का दूर कर और गभीर बुद्धिमान जन औषधिया व घनक प्रभावा को जानें । ( मरि<sup>०</sup> स जोरवार गन्दा म ) कुछ समझ में आया ?

महेश आप इतन जोर स पढ़ गी फिर भी समझ में न आयागा ?

आशा तो आप विश्वास कीजिए कि औषधिया में बड़ा बल ह । और आज के जमान में असली फायदा जड़ो-बूटिया में ह । अब हम लोग स्वतंत्र हो गए ह । हमें आयुर्वे<sup>०</sup> को फिर स समाज में लाना ह । यहाँ की वनस्पति यहाँ के शरीर पर काम करगी ।

महेश हर बात में तो आप परिचम की दुहाई देती हं । मरी दवा के लिए आयुर्वे<sup>०</sup> को ही आजमाना चाहती हं ?

आशा आजमान की बात नहीं ह । आयुर्वेद सही ह और उसमें खूब कम ह । अगर आपकी डाक्टरी दवाइया में ही सारा रुपया खर्च कर लिया जाय तो घर के जरूरी कामा के लिए रुपया कहाँ से आयागा ? तीन सौ रुपयो में एक मामूली साडी मिलती ह । अभी प्रभा पाँच साडियाँ लायी हूँ । पिछल महीन तो तुमन आठ सौ रुपय ही न कमाय थ । साडियो की कीमत से आप भी नहीं । फिर डाक्टरी दवा कैसे हो ? सुनिए और हमारा के लिए सुनिए कि आपकी दवा होगी और वह आयुर्वे<sup>०</sup> की होगी और आज से होगी ।

महेश जसो आपकी इच्छा ।

आशा मरी इच्छा को बात नहीं । आपकी कमजोरी और थकावट की बात ह । मुनत मुनत ऊब उठी हूँ । ( चिढ़ात हुए ) अब थक गया 'तब थक गया । जब थक गया ! सुनिए व

योगिराज आज ही किसी समय आयेंगे और उनका जनी-बूटिया की दवा आपको लेना पड़ेगा। नहीं लेंगे तो भरा अपमान होगा।  
 और मैं आशा करती हूँ कि दूसरों के सामने आप मुझे आप मन्तित नहा करेंगे।

महेश कोशिश तो मैं ऐसी ही करता हूँ। इसीलिए मैं चाय भा बना रहा हूँ जिम्मे आपको महमान किशोरी जा के सामने आपको अपमानित न होना पड़े।

आशा इसके लिए मैं आपको धन्यवाद दे सकती हूँ।

महेश कब तक आ रही हूँ आपकी महमान ?

आशा ( हाथ की घड़ी देखकर ) बस, साढ़ पाँच बज रहे हैं। अब उन्हें आना ही चाहिए। उनके हज़बड भी आ रहे हूँ प्राफसर अनूपचन्द। उनका तो आप जानत हाने।

महेश हाँ जानता हूँ। मुबट्ट हलत बक्त राज ही उनसे मुलाकात होता ह।

आशा तो आप भी कपड बदल लीजिए। भन लो मेक अप कर लिधा। बड़ी मुश्किल से लिपस्टिक का ठीक शड आ सवा ह। पाउडर पर रुज का टिट भी मुश्किल से मिला। जब मैं बी० ए० में पढ़नी थी तब देखने मेरा मेक अप। चकिन खर अब भी किसी तरह पाउडर और रुज लगा ही लेती हूँ।

महेश नहा अब भा आपना मेक अप किसी अप-टु डेन लेडी में कम ननी होता। आपको दखता हूँ तो अपन को सौभाग्यशाली समझता हूँ कि आप जसी सुन्दर पत्नी का मैं पनि हूँ।

आशा ( मस्तुराकर ) ठीक हूँ मिस्टर ! आपके इस वाक्य पर मैं इस महीने में आपको एक नई टाई खरीदन की मजूरी दे दूंगी।

महेश धन्यवाद !

आशा तो इस समय तो कुछ झट बपट पटा सीगिए ।

महेश नहीं मने बपट टीक ह । वार्द बाहरी ममान ता ह नहीं !  
आशा ही बारी महमा ता नहीं ह । मरी सटपाग्नी विशारो ह  
और उनर हउबड । अभा गिछम यप उनका रागी हूँ । आज  
' मुयह ाव म मागिराज स मिन वर लौट रनी धो तभी यह  
अपन हउबेड क साय मिलीं । माना ही वाता में उन दाना  
वा आज चाय वा निमत्रण दे निया ।

महेश टोक ही तो जिया आपन । भात ही आपन मुममे कह निया  
या इमीलिए में भी सीध कोट स अन्नपूर्णा भण्डार बना गया  
और वहाँ से अच्छी अच्छा मिठाइयाँ ल आया ।

आशा वाह वाह ! बन डन ! कोई आपसे हउबड की ट्यूटी सोख ।  
अब तो आप घर क कामा में बिल्कुल एकपट हा गए । यह  
सब प्रवम करन के लिए इस महोन में टार्द के साय एक रशमी  
रूमाल भी

( नेपथ्य में किसी रमणी-कठ की बधी ह सी तथा आने की आवाज )  
महेश देखिए आपको विशारो जी आ गई । आप उन्हें रिसीव  
कीजिए म अभी चाय लाया । ( खिडकी से बाहर देखता ह । )

आशा घर प्याना और तरतरी तो लत जाइए ।

महेश ( जीभ काटकर कान पकडते हुए ) ओह ! इहे तो भूला  
जा रहा था । अभी ट्रे सजाकर लाया मम साव ।

आशा ( तीक्ष्णता से ) ए जरा सुनिए !

महेश ( लौटकर ) कहिए ।

आशा आप मुझ विशोरी और उनके पति के सामन सिफ आशा कह  
सकत ह । आशाजी कहन की जरूरत नही और मम साव  
तो कभी कहिय भी नही । समझ गए न ?

महेश बहुत अच्छा कोशिश करूंगा । ( प्रस्थान )

आशा ( महेश के जान की दिग्ग म दलते हुए ) काम तो अच्छा करत ह । थक जाउ ह बचार । तकिन योगिराज की दवा से ठीक हा जाएग । ( किशोरी २० वय ) और उनके पति अनूपचन्द्र ( २५ वय ) का प्रवश । किशोरी मिल्क की मफेद रग की साडी और पीले रग के चाउज म बडी भाकपक लगती ह । भावे पर तिलक की बि दी और हीरे के ईपररिंस, परा म कपूर चप्पल । अनूपचन्द्र मज क सूट म ह । आशा द्वार के समाप बन्दकर उनका स्वागत करता ह । सभी हाथ जोड कर परस्पर नमस्कार करते ह । )

किशोरी आशा ! नमस्कार ! कैसे हा ?

आशा नमस्कार किशोरी ! तुम ?

किशोरी अच्छी हूँ । मरे पतिदेव ( परिचय के स्वर म हाथ का सक्त )

अनूप नमस्कार आशा बहिन ! आपसे तो मिल चुका हूँ ।

आशा नमस्कार, अनूपचन्द्र जी ! आपको कौन नही जानता ! प्रोफमर और कवि । बठिए न ! ( किशोरी से ) किशोरी ! अनूपचन्द्रजा इधर मर साथ बठेंग । ( पास की कुसी पर बिठालती है । )

किशोरी जहाँ चाहे बिठलाइए अब ता भापक घर म ह । अच्छा महेश जी कहाँ ह ? काट से लौट आए ?

आशा हाँ कुछ देर पहल लीन । आपवे लिए चाय ला रहे ह ।

अनूप घरे उन्हें कष्ट करन की क्या आवश्यकता ?

( किशोरी से ) किशोरी ! तुम जाओ सहायता करो ।

आशा नही, किशोरी ! तुम बठो ( रोडती है । ) तुम जाओगी तो उन्हें बरा लगेगा । वे आज भपन हाथा से चाय बना रहे ह । मुना, अनूपचन्द्र जी ! जब उन्हान मुना कि भाप लोग भा रहे ह तो मुझमे कहन लग कि तुमन तो किशोरा को भनव बार चाय पिलायी होगी आज म उन्हें और उनक पतिदेव को भपने हाथ

को बना चाय गिलाऊगा ।

अनूप बड़ सज्जन ह । एगो भो क्या यान ह ? उनरे साय चाय पीन में ही धानन घाता है ।

किशोरी और फिर व बाट के काम। स थक भी ला गए हागे । उन्होंने हम सोणा व लिए इनना तकलीफ उगई । नौकर ही चाय ला देता ।

आशा नौकर द्वारा लाई चाय में व विश्वास नहीं करते । या तो मैं बनाऊ या व बनायें । व ता कहत ह कि नौकर क हाथ की चाय एसी हा ह जमे सिविल मरिज हो ( अटटहास) सिविल मरिज कहीं नशोली गरम चाय और कहीं नौकर के कनू हाथ । ब्राह्मण नडका की शागे ईमाई के साथ ।

अनूप ( हसत हुए ) बड़ पत की यान कहत ह सविन कभी-कभी सिविल मरिज भी तो मज्जार होती ह । उसका भी एक मलग रामास ह ।

आशा ( आँखें तिरछी कर ) किशोरी बहिन ! सुन रही हो इनकी बातें ?

किशोरी य बस बातें ही करत ह । कवि ह । अपनी कविता म ऐसे ऐसे चित्र खींचत ह कि इनके सामन स्वग की धूसराए नाचती ह और य ह कि उनकी तरक देखत भी नहीं ।

आशा तुम क्या जानो भोरी भाली किशोरी !

( नेपथ्य की ओर देखकर ) देखो व आ गए टे लकर

( महेश का मिठाई का टुकड़ा लेकर प्रवेश )

किशोरी ( उठकर ) अर भाई साहब ! आप इतनी तकलीफ कर रहे ह ? नमस्कार !

महेश नमस्कार ! इसमें तकलाफ कसी ?

आशा ( परिचय कराते हुए ) ये मेरी बहिन किशोरी और ये उनके पतिदेव प्रोफसर अनूपचन्द्र जी ।

महेश (नमस्कार कर) जानता हूँ सुबह टहलते समय प्राक्सर साहब तो रोज ही मिल जाते हैं ।

आशा अच्छा तब तो गहरी पहिचान ह ।

महेश मैं चाय भी ल आऊँ ।

किशोरी आशा बहिन से आएगी । आप बैठें ।

आशा मैं मुझ लाने भी नहीं दूँगी । मैं तो पहले ही लाना चाहती थी ।

महेश नहीं मुझ लाने का सौभाग्य प्राप्त करने दीजिए । ( प्रस्थान )

अनूप आपका नौकर नहीं गया ?

आशा घर, कुछ नहीं पछिए । जब मैं काट से आए तो नौकर बड़े मैले कुबल कपड़े पहिन था । इन्हें बहुत बुरा लगा । कहने लगे— आज हमारे घर चाय पीने के लिए महमान आ रहे हैं और तू भगी बन कर खड़ा हुआ है ? निकल जा यहाँ से । बस उस उसी दम निकाल दिया और खुद चाय बनाने लगे । मैं भाग बढी तो मुझ बतन तक नहीं धूँन दिए ।

अनूप बड़ा हवाल रखता हम लोग का ! बड़ा शिष्ट और सज्जन व्यक्ति ह । टहलते समय ऐसी बातें करते हैं कि मुझ भी नहीं बतें सूझ जाती ह । बहिन आशा ! इस पति पान पर मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ ।

किशोरी हमारी बहिन आशा के भाग्य की तो सभी सराहना करते हैं ।

अनूप करना ही चाहिए । बड़ी भाग्यशालिनी ह ।

आशा भाई साहब ! जब मैं बी० ए० में पढती थी तभी हमने और किशोरी ने अपने अपने भाग्य का विखण्ड कर लिया था ।

अनूप किशोरी का भाग्य अच्छा नहीं रहा ।

आशा याह, लाखों में एक । नाम ही अनूप ह ।



किशोरी य गी तरह मुझे सज्जन करते रात ह ।

( चाप का टुकड़ा महेग का प्रयोग )

अनूप ( उठकर ) आपने प्रेम की मरणा कर्णी तब की जाय भाई  
गाय ! आपन हम लोग के लिए बहुत कुछ उठाया । आशा  
बहिन का बतना तक नहीं छूटा । मैं आप बलि ।

( महेग बंठ जाता है । ) (किशोरी से) किशोरी ! तुम चाप  
बनाया ।

आशा म बनाती है । ( हाथ बढ़ाती है । )

किशोरी म घानो बानना हूँ । ( महेग से ) महेश भाई ! चीनी एक  
चम्मच या दो ?

महेश शानी के पहल दो चम्मच लता या अब एक लता हूँ ।

अनूप ( मुस्कराकर ) अच्छा ! बाकी एक चम्मच चीनी को मिठाम  
आशा बहिन से मिल जाती होगी ।

आशा ( अनूप से ) और आप तो बिना चीनी की चाय पीत हाग ।  
सारी मिठास किशोरी बहिन के हाथ स

किशोरी मिठाम को बात नही ह लेकिन ( सब को चाय देत हुए )  
आपके प्रोफेसर साहब न मर जीवन म परिवर्तन कर लिया  
ह । कर्णी म काम स इतना जी चुरातो थी अब इनकी सेवा  
करते-करते मन में न जान कितनी उमग आ गयी ह ।

अनूप भाय कारणा से भी तो उमग आ सकते ह !

आशा नगी जी आपके गुण ही एस ह जो इस टुकड़े में रखी हुई मिठा  
इया की भाँति स्वादिष्ट ह । नीजिए य मिठाइयाँ ।

( सब की ओर टुकड़ा धुमाती है । सब एक एक टुकड़ा  
उठाते हैं । )

किशोरी ( चलकर ) मिठाइयाँ बहुत स्वादिष्ट ह । जिनकी अच्छी  
चाय उतनी ही अच्छी मिठाइयाँ । बहुत अच्छा सामान है !

महेश यह सब मम सा ( भूल सुधारते हुए ) आशा का ही प्रबंध है ।

( आशा महेश का धीरे तीक्ष्ण दृष्टि से देखती है । )

किशोरी ( मुस्कुराकर ) आशा ! तुम मेम साहब हा ?

आशा मम ? ( हसकर बात बहलाने हुए ) इन्हें पुरानी बात याद हो आयी । शाप से पहले इनके पास एक ममना था । बड़ा सुंदर—बड़ा सलोना ! मर भान पर इतना मुझ ही मेमना कहना शुरू कर दिया । मने बहुत मना किया मैं इतनी सुंदर ही कहाँ हूँ ? लेकिन उसी पुरानी याप से कभी कभी मेम उनके मख से निकल आता है । लीजिए । मिठाइयाँ धीरे लीजिए ।  
( बात बहलाने की दृष्टि से फिर से टूट घुमाती है । )

अनूप नहीं हम लाग बहुत ल चुके । अब बम कीजिए ।

आशा किशोरी तुम कुछ ला ।

किशोरी बहुत लिया । काफी खा लिया फिर आज पिकनिक में भा हम लोग काफी खा चुके ।

आशा किन पिकनिक म गई थी ?

किशोरी यही घर की पिकनिक । आज इहोन छुड़ी ल रखी थी । कहा—चलो आज पिकनिक हो जाए । अपनी धार पहन से ही टीक करा ला था । आज सुबह जब तुम मिला था तब हम लाग पिकनिक का हा सामान खरीद रहे थ ।

महेश पिकनिक ता बड़ी दिलचस्प रही होगी ।

किशोरी बहुत ! मे यूनिवर्सिटी की मजदार वालें सुनाते रहे मन स्टोव जला दिया ।

महेश स्टोव की धवाउ में उनकी बाता की गुंजाइश थी ?

आशा ( कुछ तीव्रता से ) बीच म ऐसे प्रश्न पूछ कर मजा क्या खराब करते ह ? अच्छा फिर क्या हुआ ?

किशोरी स्नोव पर भने घन्धे घन्धे नारने बनाए य नई पविता  
निताने रह ।

आशा आपसे 'मगपिरशन जा मिन रहा था । मुताइए य' कविता  
मनूज जी ।

किशोरी उद्धान इतन मन्धे स्तर से कविताए सुनाया कि मं धपन को  
राक नहीं सकी । नूय करन थ' निए उठ सटा ईई और एक  
घटे तक बराबर नृत्य करती रही ।

आशा एब घट तक ? यकी नहीं ?

किशोरी बिनुल नहीं । पहल ता बहुत जन्नी थक जाती था लकिन  
इद्धान एक यागिराज स मरो परोक्षा करवाई । बहुत मन्धो  
दवा दी उद्धान ।

आशा ( कुतूहल म ) मन्ध्या । कौन ह य यागिराज ?

अनूप योगिराज योगान' । पिछल शनिवार को जब आप मिली थीं  
तब मन इनके सम्बध में कहा था । बहुत गहरी दष्टि रखते  
हं आयुर्वे' में ।

आशा हां आपन उनकी बडी तारीफ की थी ।

अनूप वही ह । बहुत मनभवो । न जान कसी कसी जडो-बूटियाँ है  
उनके पास । तत्काल प्रभाव करतो ह । किशोरी पहल बहुत  
कमजोर थी हर काम म थक जाती थी ।

आशा ( महेश की ओर सबैत करते हुए ) ये भी बहुत थक  
जात ह ।

महेश त्ति भर कोट का काम करन पर तो थकावट आ ही  
जाती ह ।

अनूप थव या तो म भी थक जाता ह लकिन अगर शरीर में कमजोरी  
ही तो उन्हें ज़रूर लिखलाओ । किशोरी भी पहले बडी कम  
जोर थी । हमेशा सिर म द' और शरीर में थकावट । योगि

राज की एक खुराक में सब शायब ।

आशा ( भाद्रपद से ) इतना प्रभाव ह उनका एक खुराक म ? म पहल ही जानती थी कि आयुर्वेद का जडो-बूटिया में बडा प्रभाव होता ह । ( महेश स ) देखा, मन बहा था न कि प्राजकल क टानिको में कुछ नही रखा ह । जडा-बूटिया ही भाराम दे सकती ह ।

महेश हा कहा जरूर था लेकिन

आशा ( बीच ही मे अनूप से ) म प्राज उन्हें बुलाने ही गई थी । जब आपसे मिलती थी । आज व किसी समय भी आ सकते ह । अनूप प्रच्छा किया आपन उन्हें बुला लिया । तो महेश जी को दिखला लीजिए ।

महेश लेकिन मुझ कोई बनावट या कमजोरी नहीं ह ।

अनूप हा देखन में तो नही मालूम हाती । रोज सबेरे टहलते ह, मुझसे मिलते ह । ओर फिर जिस फुर्ती से ये शाय और मिठा इयां लाए वसी फुर्ती तो हम लोगों में स किसी में नहीं ह । मुझे तो इनकी शकल में और उस गुलदस्ते में ( गुलदस्ते की ओर सकत करते हुए ) कुछ अन्तर ही नहीं मालूम होता ।

आशा तो इहे अपन कमरे म लकर भजा लाजिए । लेकिन अनूप भाई ! इनकी शकल चाह जसी हो, बनावट और कमजोरी इनमें बहुत ह । अन्तर की कमजोरी लिखलायी नही देती ।

किशोरी सर जांच करान में क्या हानि ह ? ह भी तो बहुत पहुँच हुए योगिराज । व नाडी की परीक्षा बहुत अच्छी तरह स करते हैं । वे रोगी से कुछ पूछते ही नहीं, नाडी देख कर फौरन दवा दे देते ह ।

आशा बडे अनुभवो मालूम पढते हैं ।

किशोरी लेकिन बहिन ! एक बात ह । यदि उनकी इच्छा के खिलाफ

कुछ ना किया था व । ना क्या घनिष्ठ हो सकता है । वे बड़े गिद्ध पुत्र हैं । जैसा व काल में यगा हो करता पड़ता है ।

आशा : घर ता उनका मा थ गिनाक काल या करन की क्या जगह ? मैं बाई एगो यात कर गो ही नहीं जा उनकी मर्तों में गिनाक हो । म तो परिस्थिति दगाकर काम करन वाली है ।

महेश : य तो मैं भी कह सकता हूँ मरिन

आशा ( धोच ही म ) घाप चुप रहिए । इतना अच्छे योगी हमारे नगर में ह और हम उनसे लाभ नहीं उठाते । ( किशोरी से ) हाँ ता किशोरी ! उहान मुम्हारा इनाज कसे किमा ?

किशोरी : इनाज क्या ? उन्हान मझ देखा—एक मिनट तक देखत हा रह जसे उन्हान मर शरीर और शरीर के भीतर मन तक की पत्त लिया । फिर उन्होंन मरी नाडी पर हाप रखा और कुछ देर तक धीरे मूदकर सोचते रहे । एकाएक जय धीमप्रा रायण कहा और अपनी भोली में से एक जड़ी निकाली और कहा—सा जाओ । ( अनूप की ओर संकेत करते हुए ) य चुपचाप देखत रहे । म वह जड़ी सा गई । जड़ी मरे मुह में पहुँची ही थी कि मानूम हुमा जसे हजारो विजयियाँ मरे शरीर में समा गयी । मैं उठ खड़ी हुई । उन्हें प्रणाम किया और घर के भीतर चली गयी । जो काम मैं दस दिन से टालती आ रही थी उसा छल मन कर लिया ।

आशा ( धीरे फाइकर ) आश्चर्य ! कतना प्रभाव है उनकी जड़ी की एक खराक में ? अच्छा तुमन उन्हें कुछ दिया ?

किशोरी ( अनूप की ओर संकेत ) य जानें ।

अनूप : मन उन्हें सौ रुपये का नोट देना चाहा । व उठ खड़े हुए और उन्हींन कहा कि यदि एक पसा भी तूने दिया पुरुष ! तो जड़ी

इतना घोर चाहती हूँ कि प्राणमा मरुमाना म ठंग की दान  
की जाय ।

महेश मं ता ठंग की ही चारों परता हूँ ।

आशा पार कित्तवें पढ़न स डग नहीं घाना । डग घाना ह शरीफ  
घानमिया क साथ उठन-बठन स । बघारी निशारी क्या  
सोचती होगी कि मरा साथ एस घानमा स

( दरवाजा खटखटाने की आवाज )

आशा देखिए कौन ह जरा बाहर जाकर । म भी देखू ।

( खिडकी क पास जाकर देखती है । )

महेश मैं देखता हूँ बाहर । ( प्याल तन्तरिया छोड़कर बाहर  
जाता है । )

नेपथ्य से आशादेवी का यही मकान ह ?

आशा ( खिडकी के पास से सौटकर ) हाँ यही मकान ह । ( अपने  
आप ) योगिराज जो आ गए ।

महेश ( द्वार से सौट कर ) कोई साथू ह ।

आशा ( चिढ़ाकर ) साथू ! य योगिराज को साथू कहत ह !  
घय ह ! ( हाथ जोडन का अभिनय करती है । )

( एक सयासी का प्रवेश )

सयासी ( आशा को हाथ जोडे देखकर हाथ उठाकर ) स्वस्ति  
देवि । स्वस्ति !! आप आशा देवी ह ?

आशा म ही मेविका आशा हू ।

सयासी जय श्री मन्नारायण ! बडी कठिनाई से आपका निवास-स्थान  
मिना इसीनिय कुछ विनम्व हो गया ।

आशा कोई बात नहीं स्वामी जी ! आप स्वामी यागानद जी ह ?

सयासी त्रिकालज्ञ स्वामी योगान जी द्वार पर ह । म उनका शिष्य हू  
सेवानद ।

आशा स्वामी योगानन्द जी द्वार पर ह ? ( महेश से तीव्र स्वर में )  
 आप द्वार पर क्या दखन गए थे ? जाइए, स्वामी जा को भीतर  
 लिवा लाइए । अच्छा ठहरिए आपस कुछ न बनगा । मैं  
 ही जाती हू । ( गीघ्रता से प्रस्थान ) ।

सेवानन्द ( धवाक होकर मुह फाड़ते हुए ) देवी जी मायात दुर्गा  
 स्वरूपा ह ! ( महेश से ) आप उनका पति ह ?

महेश पति का अर्थ यदि जानवर ह ता मैं पति हूँ ।

सेवानन्द श्रीमन्नारायण ! सुना था ये देवी जी आश्रम में पहुँची थीं म  
 उस समय आश्रम में नहीं था । य स्वामी जा स श्रीपति चाहती  
 थीं । स्वामी जी ने कहा—म दखकर श्रीपति देता हूँ । किसे  
 श्रीपति चाहिए ?

महेश मुक्त !

सेवानन्द आप तो बिलकुल अच्छ ह श्रीमन्नारायण !

महेश मैं खुद समझता हूँ कि म बिलकुल अच्छा हूँ लेकिन श्रामता  
 जी का कहना ह कि म कमजोर हूँ । ठाक डग से काम नहीं  
 कर सकता । थक जाता हूँ । व मुझसे घर का काम अधिक म  
 अधिक जमा चाहती ह ।

सेवानन्द स्वयं कितना काम करता ह ?

महेश अपने विचार स व भी बहुत काम करता ह । अपने कोट पर  
 बुरा करता ह, अपने भीहें रगता ह । भीहा के बाल चुनती  
 ह । मुह पर पाठडर लगाता ह भाँठाँ पर रग करती ह । इसी  
 तरह बहुत बड़-बड़ काम करती ह । माघी खरोदन का काम  
 बड़ा मन लगा कर करती ह । तान-नीन सौ रुपया का श्रमा  
 पाँच साठियाँ खराद कर लाइ ह ।

सेवानन्द और श्रीमन्नारायण ! आपके लिए क्या लाइ ?

महेश लाइ तो कुछ नहीं, भगत महीन एक टाई और एक रशमी

रंगाल तरीन की मजूरी दे गी ह ।

सेवानन्द आप पर बहुत कृपानु गात हार्ती ह श्रीमन्नारायण ! कोई बिता का बात नहो । स्वामी जो आपनो दगन हा समझ जायेंगे कि आपको किम भोपधि की आवश्यकता है ।

महेश या तो मुझ कोई भोपधि नहीं चाहिए ।

सेवानन्द आपरा अपन जावन की भोपधि चाहिए ।

( महात्मा योगानन्द के साथ आंगा का प्रवेश । महात्मा योगानन्द का चेह भङ्ग है । प्रगास्त ललाट, उस पर भस्म की लीर । विंगाल नेत्र । उनके आते ही जैसे एक आध्यात्मिक वातावरण छा जाता है । उनके हाथ में एक लम्बी लकड़ी । आंगा उह आदर से लाकर तट पर बिठलाती है । )

आशा स्वामी जी धय ह सेवानन्द जी ! भ्रात वर कर खर हुए ही किसी ध्यान में मग्न थे । मझे साहस नही हुआ कि उनका ध्यान भग बरू । जब व अपनो समाधि स जाग तो उन्हें यहाँ ला सकी । म धय हुई उनके शन पाकर !

सेवानन्द मर गुरुदेव एस ही ह दयी जी !

आशा इतन बढ महात्मा होकर मर घर में स्वय आ गए ! ( महेश स ) इहें प्रणाम कीजिए मिस्टर !

महेश स्वामी जी को प्रणाम करता हू । ( प्रणाम करता है । )

योगानन्द ( हाथ उठाकर ) स्वस्ति !

आशा मन आपको बडा कष्ट दिया स्वामी जी ! आप कितन कृपालु ह कि यहाँ पदल ही चल आण ! कहिए आपको सेवा म कुछ जल पान भेंट करू ? ( महेश स ) सुते क्या ह स्वामी जी के लिए जल ही जन-पान लाइए ।

महेश म लाता हू । ( चलने के लिए उद्यत होता है । )



योगानन्द ( हाथ से निपथ कर ) नहीं पुर्य । तुम दुबल हो । तुम जल पान नहीं ला सकोगे ।

आशा ( आश्चय से ) स्वामी जा । आपन कसे जान लिया कि य दुबल ह ? आफ । आप कितन पढ़ूच हुए सत ह । सेवानन्द जी । आपन सत्य कहा था कि स्वामी जो त्रिकालन ह । आप बठ तो जाइए ।

सेवानन्द धयवाद । म भूमि पर ही बठू गा । ( नीचे बठ जाता है । )

आशा घर । आप जमीन पर ही बठ गए । आप भो तन्त पर बठिए ।

सेवानन्द देवी जा । शिष्य गरु के बरामर आसन पर नहीं बठ सकता ।

आशा आपन ठोक कहा सेवानन्द जी । पर आप भूमि पर न बठें । ( महेश स ) आप दखन क्या ह जो ? भीतर स आसन जल्दी ल आइए ।

योगानन्द ( निपथ करते हुए ) नहीं । जाना मन पुरुष ! तुम्हार जान की आवश्यकता नहीं ह । ( आशा स ) शिष्या के लिए भूमि स बन कर आसन नहीं ह नारी । माता वसुधरा का आसन लकर ही बीज अकुरित होत ह । शिष्य भी उसी भाँति अकुरित हाग ।

आशा छमा कीजिए स्वामी जा ।

योगानन्द मरु किस रोगी का औपधि देना ह नारी ।

आशा य ह मर पति । कहन को ता तन्दुदन्त ह लकिन भीतर स बहुत कमजोर ह । घर का जरा सा काम करत ह तो थक जाते ह । सिर में दन् हो जाता ह । मन में कोई उत्साह नहीं ।

योगानन्द क्या पति स्वय घपना कष्ट नडा बतला सनता ?

आशा एव ही बात ह । म बतना रही हूँ ।

योगानन्द क्या उसमें बालन की भी शक्ति नहीं रही ?

आशा नहीं बोलते तो हूँ

महेश (घोष ही म) लज्जित मुझ बोलत नहीं िया जाता ।

योगानन्द (सीधता सा) तुम्हें बोलन से बीज राग सक्ता है पुण्य !  
बोलो—डार से बातो ! मरी प्रार दतो—मरी प्राँगा में  
देतो ।

( महेश योगानन्द की प्राँगा म देखता है । )

महेश ( मोहित सा होकर धीरे धीरे ) म आपनी प्राँगा से शक्ति  
पा र्ता हूँ ।

आशा यह शक्ति नहीं स्वामी जी ! इहें एमी जडा दीजिए कि य  
रूप परिश्रम कर सकें । यचार पक जान हूँ ! जिस तरह आपन  
मरी सखी किशोरी का जडी दी थी धमी ही कुछ इन्हें भी  
दीजिए । आपको जडी भ्रमोष ह ।

योगानन्द शक्ति की जडो ?

आशा हाँ स्वामीजी ! शक्ति की जपी ! उसका मूल्य तो हजार रुपय  
हो सक्ता ह किन्तु आप विश्व-कल्याण की दृष्टि से कुछ भी  
नहीं लते । आप धय हूँ !

योगानन्द विश्व-कल्याण एक महान् काय ह नारी ! आत्मा की  
आहुति शून्य का साधना शक्ति का ब्रह्म रघ्न म केद्री  
करण कडलिनी का जागरण और पटचक्र यथ ! सहस्रदल  
वमल में अनहन् नात् !

ज्या तिन माटी तन ह ज्या चकमक में प्राग ।

तरा साईं तुम्ह म जाग सब तो जाग ।

यह विश्व-कल्याण का रहस्य ह नारी !

आशा यह म कुछ नहीं समझ सकी योगिराज ! इनकी नाडी भर  
देख लाजिए !

योगानन्द इनकी नाडी देखने की आवश्यकता नहीं ।

आशा तो तो इहें कोइ भ्रौपधि ही दे दीजिए !  
योगानन्द पुरुष ! तुम भ्रौपधि खाओगे ?

महेश म कियो तरह बोमार नही हू योगिराज ! म किसी प्रकार की  
भ्रौपधि नही खाना चाहता । ये काम करान के लिए मुझे  
जबदस्ती भ्रौपधि खिनवाना चाहती ह । म योगिराज के सामन  
भूठ नही बोलू गा ।

योगानन्द ( हडता स ) तुम्हें भ्रौपधि की आवश्यकता ह ।  
आशा देखिए म ठीक कहता थी न योगिराज ? य कमजोर ह बहुत

जल्नी थक जात ह ।

योगानन्द ( महेश स ) तुम भ्रौपधि खाओग ।

महेश म नही खाना चाहता यागिराज ! मुझ डर लगता ह । तुम  
योगानन्द खाओ पुरुष ! यह डर लगना ही तुम्हारा रोग ह । तुम  
भ्रौपधि खाओ । पुरुष की शक्ति प्राप्त करो । लो यह  
भ्रौपधि ( झोली मे स एक जडी निकालते हुए ) यह लो,  
शक्ति-सजीवनी ! इसक खाते ही तुम्हार शरीर में पीरुष की  
तरंगे फन जाएँगी ।

आशा म कहती हूँ कि आप यह भ्रौपधि खाएग । म आदेश देती हूँ  
कि आप यह भ्रौपधि खाए ।

महेश आधी बात ह खाऊगा । आपके आदेश स खाऊंगा ।  
( योगिराज स ) योगिराज ! जसी चाहें वसी खिला दीजिए !  
म इनके आदेश से मर भी जाऊ तो कोई बात नही । दे दीजिए  
मुझ !

योगानन्द मरोगे नही पुरुष ! जोवित हो जाओग ! श्रीम नारायण वा  
स्मरखकर तुम यह भ्रौपधि खाओ ।

( हाथ फलाकर जडी देते हैं । )  
महेश ( जडी हाथ मे लकर ) खा जाऊ ?

आशा ही पीरत गा जाइए ।

महेश मुझ डर लगता है घारा जी ! तुम मुझ य<sup>न</sup> जड़ी क्या गिनवा रही हो ! या हो तुम जैगा कहोगी क्या काम करेगा । मुझ पर रहम करो ! धाय य<sup>न</sup> जड़ी गा लें ।

आशा यागिराज जा क गामन धानता धीर भरा धनमान मत कीजिए ! यह जग यागिराज न धायका गी है मुझ नहीं ! धायकी इगकी धावरयकता ह । इगे इमा समय रा जाइए ।

महेश ( उरे हुए स्वर म ) गाना ही पन्ना ! ( जड़ी को लहर देखता है ) बगो जडा ह । याना से याना भर हा जाऊगा धीर क्या ! धाया स्वामाजी ! गाऊगा । ( सवानन्द स ) सवान<sup>न</sup> जा ! क्या कहकर इग जग का राना पन्ना ?

सेवानन्द श्रीमन्नारायण !

महेश ( कापते शब्दा म ) गाना मना रायण । धाया स्वामी जी ! यह सागिए क्या कहें ?

आशा श्रीमन्नारायण ।

महेश धाया श्री मना रायण !

( श्रीमन्नारायण कह कर महेश जड़ी खा जाता है ।

विस्फारित नेत्रो स चारु और उरता हुआ दलता है । )

योगानन्द पुरुष ! भव प्रकृति का शक्तियाँ तुम्हारे भातर काय कर रही ह । ( कुछ ही क्षणों बाद ऐसा भात होता है जस महेश के शरीर में नवजीवन का संचार हो गया है । वह धीरे धीरे तनकर लडा हो जाता है । धीर मुद्रा में चारो ओर देखता है । उसका वक्षस्थल फल जाता है और वह जस सिंह की मत्त चाल स विश्वासपूर्वक सामने बढ़ता है । )

आशा ( उल्लास स ) वाह ! जग न पीरत हा काम किया ! ( योगानन्द से ) स्वामी जी ! धाय धय ह ! म जीवन भर

आपकी कदवा की भील कभा न भूछू गा ।

महेश ( घूम कर आशा की ओर घूरते हुए एक एक शब्द तील कर ) आशा ! योगिराज के सामन दाखी का समय रवखो ! भगे पानी नारी बने, भिखारिन न बन जाय !

आशा ( निराशा से हनप्रभ होकर ) यह आप किससे किससे कह रहे ह ? आप !

महेश यहाँ आशा नाम की कोई दूसरी स्त्री नहा ह ।

आशा ( योगिराज से ) देखिए योगिराज ! य तो एस तरह कभी नहीं बोलत थ । इहें क्या हो गया ?

योगानन्द जा होना चाहिए वही हुआ ह तारी ! परय म मुख्य की दाखी स्थान पा रही ह । शक्ति-सजीवनी शक्ति की किरणें फलानी ह ।

आशा यह ता म नहा चाहता थी योगिराज !

महेश और मैं भा यह नही चाहता था कि योगिराज के सामने य जूठे प्यान और तरतरियाँ पडा रहें । इन्हें झट्ट ल जाओ !

आशा ( हिचकिचा कर ) म ? म ल जाऊ ?

महेश ( दृढ़ता से ) हाँ तुम तुम ले जाओ !

आशा ( झट्टते हुए ) म मन यह काम कभी नहा किया ।

महेश सब करो यह सब झट्ट ल जाओ !

आशा ( सहम कर ) अच्छा सब सामान झट्ट चला जायगा ! अभी महरी आता हागी ।

महेश तुम उगा नर रक्वा ! आतिर भगवान न हाम किस लिए लिए ह ? तुम्हों कहनी थी—नाम न करना हमार हाथा का झप मान ह ।

आशा योगिराज धडे ह म क्या कहूँ ! ( रुककर ) पर, इस बार उठाप दता हूँ पर म इन्हें साफ नहीं कहूँगी ।

महेश भग गिर उगान के लिए बना है ।

आशा बहुत प्रफुल्लित ! मैं उगान में जाता हूँ ।

( प्यास लड़कियों का दू उठाने से जाती है । )

महेश ( योगिराज से ) योगिराज के शीघ्रगता में प्रणाम करता हूँ ।

( दोनों हाथ जोड़कर सिर झुकाता है । )

योगानन्द ( हाथ उठाकर ) स्वस्ति ! संतुलित रहना पुण्य ।

सेवानन्द पुण्य को संतुलित रहना ही धर्म है स्वामी जी ।

महेश योगिराज ! आपकी जड़ी न मुझ नीचे से जगा लिया ।

योगानन्द तुमन किमी दिन प्रोफेसर बनूँ से अपनी स्थिति मतलाई थी ?

महेश हाँ योगिराज ! प्रातःकाल दृष्टने समय उनसे प्रतिनिधि भेंट होती है ।

योगानन्द उन्होंने श्रीमता आशा को संकेत किया था कि वे मुझ अपने घर आमंत्रित करें ।

महेश तो आपके आमंत्रण का यह रहस्य है ? किन्तु आपके प्रभाव ने मेरी रक्षा कर ली । जब मैं आपको भौला से भौले मिलाकर देता रहा था तभी मुझ आपको संकेत मिल गया था ।

योगानन्द ( हाथ उठाकर ) यह बात समाप्त हो पुण्य ! सुखी रहो । स्वयं अपनी मर्यादा में रहो और दूसरों को मर्यादा में रक्खो ।

महेश आपकी शोषण में बहुत बड़ी शक्ति है, योगिराज !

योगानन्द विश्व का कल्याण हो ।

( महेश गान से दृष्टता है । आशा शिथिल घाल से आती है । )

आशा ( गिरे स्वर में ) योगिराज ! यह मेरा अपमान है ।

महेश योगिराज ! आप इनके मन को शान्त करने की कोशिश करें तब तक मैं स्वामी सेवानन्द जो के साथ कुछ देर के लिए बाहर जान की आज्ञा चाहता हूँ ।

ध्यात-बर हो गयो अब चार सड़कन की मगारी है। जय  
 कर्म धरने गाँव जान हा। तो गुण हा कि मरणा-बारे बाएँ  
 सबे सो निहाउत ह—( चिड़ाने के स्वर में ) बाएँ रसी  
 मोनी ! कुर्मी मीकवे घा जा रइ ! अब भैरा भैया ने घाहें ।  
 बे राय बगदुर साहब की बागी में मौकर हो गए हैं—अब  
 बड़िया के भूत भगाव का उपाव नीयाँ !

कामता तुम तो बढ गुनी घाामी मालूम हाने हो भैरव ! घाघा  
 ( रहस्यारमज ढग स ) देगा ! तुम श्याम माहन बाबू का  
 भूत भगा सकत हो ?

भैरव कौन श्याम मोहन बाबू ? दमा जू ? तो जा कौन मुसकल की  
 बात ह । घुटकी बजाउत में उनव भूत घोर भूत क बाप खा  
 भगा देऊँ । कितन भूता खा तो हम मरघट में जाके कील  
 माए !

कामता कील घाए ? यह कौन घाना बैसा भैरव ?

भैरव घर यामे कौन मुसकल की बात घाय ! भूत खा पकडो घोर  
 बाह न गए मरघट में । फिर हनुमान चामीसा पढ़ के सामन  
 ठाणै करी घोर पाँव में कील टोक क मत्र पढ़ के कही—

सब भूत प्रत पिताय सावनी डाकनीनां जत्र मत्रणा  
 वध-वध कीलय-कीलय मदय-मय्य चूरण-चूरण य ये म  
 विघोयतां सवताहरण दह दह मघय मघय गदा वज्येन भस्मी  
 कुह-कुह चूरणय-चूरणय, स्वाहा ! ॐ ह्रीं-ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं । श्री  
 नरसिंहाय नम ।

कामता अरे भरो ! तुम तो पूरे पन्ति मालूम होते हो !

भैरव ( नम्रता से ) अरे नइ सरकार ! इनइ घरमा के परताप से  
 कछू घोनामासी धम् जान लघो है मनो भूत प्रेत कीलवे के  
 खान बड़ी तिपस्या करने परत ह ।

कामता अब तपस्या की ता मात ही ह ! तो इमसे तुमने भूत कील दिया ?

भैरव हस्यो ! अब लो ठाठ वे मत ठुके भये ! ऐन मरघटा के बीच में । जेठ वमाख की घाम तप आँधी चल पानी बरस बिजली कडक, मना एक पाव में ठाठे ह वे भूत भया । केरा के पत्ता घाई भूतत रत ह एक्ई जाघा में ! एक मिनट खा कहू जा नई सकें !

कामता ता भाई, अगर श्याम मोहन का भूत मरघट में चला जाय तो सारी मुसीबतें दूर हो जाय ! रायबहादुर साहब खुश हाग, किशोरी की शांती श्याममोहन बाबू के साथ हो जायगी और दोना परिवार सुखा हो जायग ! तुम जितना चाहोग, उतना इनाम भी तुम्हें दिला दँग ।

भैरव ( हाथ झुलाकर ) अर राम कहो सरवार ! जतर-मतर को कछू इनाम होत ह ? आज तक एक पसा नइ लग्यो ! जौन त्तिना पसा लन लग हीं वा दिना से जतर मतर सब भूठे हो जट ! फिर जा बात ती अपन घर की आय ! जब हमने रती क वाप से डबल नइ लग्या तो अब अपन घर से—रायबहादुर साहब से पैसा लहा ? अर राम भजो भया ! जे तो सेवा भाव ह । गुसाई तुलसीनाम कह गये ह— पर हित सरिम घरम नहि भाई । घरम बणी बात ह सरकार ! पसा मारो कीन दिना काम भाह ।

कामता ता फिर श्याम मोहन बाबू का भूत भगा दा तो बडी बात हा जाय !

भैरव म ता तयार हों सरकार ! परायबहादुर साहब खा भूत प्रेत में बिस्वामइ नई हीं । क कहत ह—ज सब बन्धिया पुरान ह । अब बडे क म्हीं कौन लग ? टीक ह साहब ! जसी समझी फटी ।





कामता भव तपस्या का ता बात ही ह ! तो इसमे तुमने भूत कील दिया ?

भैरव हथो ! भवे सो ठाड व भूत टुके भये ! एन मरघटा क धीच में । जठ वसाव कौ धाम तप श्रीधा चल पाना बरस बिजली कडक, मनो एक पाँव में ठा ह व भूत भया । केरा के पत्ता धाई भूतत रत ह एकई जाया में । एक मिलट खा कहूँ जा नई सकें ।

कामता ता भाई अगर श्याम मोहन का भूत मरघट म चला जाय तो मागे मुनीबतें दूर हो जाय । रायबहादुर साहब खुश हागे, किशोरी की शानी श्याममोहन बाबू के साथ हो जायगी और दोना परिवार सुखी हो जायगे । तुम जितना चाहोग उतना इनाम भा तुम्हें िला देंग ।

भैरव ( हाथ झुलाकर ) भर राम कहो सरकार ! जनर-मतर कौ बछू इनाम होत ह ? आज तक एक पया नइ लभो ! जोन िना पया सन लग हौं बा दिना से जतर मतर भव भूठे हो जैह ! फिर जा बात तो अपने घर की भाय ! जब हमन रती के बाप सें डबल नइ लभो तो भव अपने घर स—रायबहादुर साहब से पैसा लो ? भर राम भजा भया ! न तो सवा भाव ह । गुसार्ई तुनसी-अस बह गय हैं—पर हिन सरिस धरम नहि भाई । धरम बढे यान ह सरकार ! पया सारो कौन िना काम भाह ।

कामता ता फिर श्याम मोहन बाबू का भूत भगा दा ता बने बात हो जाय ।

भैरव मैं ता तयार हा सरकार ! परायबहादुर साहब खा भूत प्रेन में बिस्त्रामई नई हौं । व कहत ह—जे सब बुडिया पुरान ह । भव बने व हौं कौन लग ? ठाक ह साहब ! जसा समझो कहौ ।

हम गाँव के आदमी ! आप जितनी विद्या थोड़ी पढ़े ह—मनो धरम खो तो मानत ह । बजरगबली की कोरतन करत ह—मगल सनीचर खो गुड-चना की परसा चढ़ा देत ह । हम अपन बाप दादा की सास्तर और पुरान तो मानत ह । वे बाहँ बुढिया-पुरान कहत है । अरे भलई बुढिया खा न मानँ बुढिया तो काल मर जह पुरान खा तो मान । पुरान भगवान के कहे भये ह । मना अब बडो के मुह कौन लग ।

**कामता** तुम चिन्ता मत करो भरव ! म सब प्रबध करा दूँगा । राय बहादुर साहब को समझा दूँगा । अगर तुम्हारे प्रयत्न से श्याम मोहन बाबू की बीमारी अच्छी हो जाती ह तो इसमें क्या हज ह ? दजनो डाक्टर दवा करते हैं एक दवा तुम्हारी भी सही !

**भैरव** जसो हुकम होय ! मना डाकघरी दवाई के साहँ हमाई दवाई का । प सरकार ! साँची मानो तो डाकघरी दवाई में भरो तो तनकई भरोसो नई ही ! आपई सोचो क अपन बाप-दादो के जमान से होरी के दिना में रग की पिचकारा चनत ती । कसी अच्छी ! लाल पीर बैजनी रग की । गीतो की लहर में डफ मजीरा के साथ जब पिचकारो की धार चलत ती तो का कहिए भया ! कपडो के साथ तन मन लीं सुरंग हो जात ते । अब बई की नकल डाकघरा न करी ह । पिचकारो में लाल पीरे रग की जाँघाँ दवाई भर कें वे सूजी छेदत है । जो असर टमू के रग कौ होत हवो वो छोटी-छोटो सीसी में भरे निचाट पानी में हू है ? मनो का कहँ बखत की बलिहारी है भया ! होरी की पिचकारो ही न रही डाकघर की पिचकारो रह गई !

**कामता** सच कहत हो, भरोलाल ! अब जमाना एसा ही आ गया ह !

लकिन भव यह बतलाया कि तुम श्याम मोहन बाबू का भूत  
कैसे भगाओगे ?

भैरव भगाव की तरकीबें तो बहुत ह सरकार ! जब चाहें तब भगा  
दें । मनो स्याम माहन बाबू स हम मिल सकत ह ?  
कामता भर व अभी आ रह ह रायबहादुर साहब से मिलन के लिए !  
रायबहादुर साहब न उनस शाम को मिलन के लिए कहा था ।  
व लोग भान वाल ही हाग । रायबहादुर साहब तो लडके की  
देखन के लिए ही आए ह ।

भैरव तो जौन बखत स्याम मोहन बाबू रायबहादुर साहब से मिलवे  
के लान आयें बई बखत उन प भूत चड़ जाय तब तो बात  
ह ।

कामता भव या हमशा तो उन पर भूत नहीं आता लकिन कभी-कभी  
एसा हो जाता ह । देखो मामा जी की कोई चरचा चलाएग  
शायद उससे कुछ हो जाय ।

भैरव आधी बात ह सरकार ! कई उपाव करो चाइए । मैं सोई  
भीतर जाव महावीर स्वामी का गढा भपनी बाह में बांध  
लऊ ।

कामता लकिन सावधानी से काम करन की जरूरत ह । मिच की धूनी-  
बूनी की जरूरत नहीं ह । कही श्याम माहन जी का भपमान  
न हो जाय ।

( ब्रजकिंगोर का प्रवेश )

भन ( आते ही ) कसा भपमान ? मरा भपमान ? भरे मरा  
भपमान तो हो ही गया कि म आपके शहर में सुवह से आया  
हूँ और कोई पुरसां-हाल ही नहीं । शाम की बाबू मूलचं जी  
और श्याम माहन के भाने की बात थी व भी नहीं आए ।

कामता भव आते ही होंगे वे दोना ।

ब्रज भागवत लोगा को टाइम का सेस बिलकुल ही नहीं रह गया । लोग के पास अब कुछ बरबाद करने लिए नहीं रहा तो टाइम ही बरबाद किया जाय । गाँव में घडा नहा थी । लेकिन शहरा की घडी भा बंद हो गई । अब मूलबन्द जी और भरा एक तरह से टाइम की बल्यू भूल गए !

कामता लेकिन रायबहादुर साहब ! भरो इस तरह बात करता ह कि इतना टाइम कैसे निकल गया पता ही नहीं चला । वार्ते बड मज की करता ह और आपका ताराफ तो उसके प्राणा में बसी ह ।

( भरो नभता प्रदर्शित करता है । )

ब्रज क्या भरो ? पुराना भामी ह मभ समभता ह । इसीलिए उसे साथ ले भाया ।

भैरव सरकार तो देवता-सरूप ह । इनकी सेवा करी तो जाना साधू महात्मन की सेवा करी । सरकार ! भीतर एक जरूरी चीज देखन ह अगर हुकम होय तो

नज हीं हीं जाओ । देखो थोडी देर में बाबू मूलबंद और श्याम मोहन बाबू भावेंग । जलपान और पान इलायची का इतजाम रह ।

भैरव सरकार ! काम पहले हुकम बाद में ।

( शीघ्रता से प्रस्थान )

अन बात करन में तो बस एक ही ह । एसी वार्ते करता ह कि देवता तक निहाल हा जाते ह ।

कामता और साध-भाष बडा गुती भी ह रायबहादुर साहब !

अन हीं लाग बहत ता ह मन कभी ध्यान नहीं किया । न जान कितन जन मन जानता ह । साध क—विद्यु क—बुत्तार के—भूत प्रेता के । मभ ता हमी छाती ह । मैं भूत प्रेता में विश्राम

नहीं करता बाबू कामता प्रसाद ।

कामता आप विश्वास न करें लेकिन अगर लोग कहते हैं कि भूत प्रेत  
हैं तो आप उनसे प्रमाण लीजिए । और अगर लोग कहते हैं  
कि श्याम मोहन बाबू पर भी किसी आत्मा का असर है तो  
उसकी पूरी जांच होनी चाहिए ।

अन जब मझे विश्वास ही नहीं है तो जांच किस बात की करूँ ?

कामता अच्छा आप जांच न करें हम लोग का तो प्रमाण लन का  
असर दे सकते हैं ?

ब्रज मुझ उसमें क्या पतराज हो सकता है ? हाँ जिज्ञा की इच्छा  
पर कोई जांच नहीं माना चाहिए ।

कामता नहीं आभगा रायबहादुर साहब । इतमाना रविए । यह  
डिम्मा मेरा ( छाती पर हाथ रखकर ) रहा ।

ब्रज तो फिर आप भूत का प्रमाण कैसे लेंगे ?

कामता भरोलाल मे मन बात कर ली है । उसे मत प्रती का बचा  
पुराना अनुभव है, मने ही वह गलत हो । लेकिन हमको उसके  
प्रमाण की असलियत तो मान्य हो जायगी ।

अन और अगर किसी आसव का बात न निवनी, तो मूलच न जो  
बरा मान सकते हैं ।

कामता व बुरा क्या मानेंगे ? उन्हें तो भूत प्रेतों के होने का पूरा  
विश्वास है ।

( बाहर जाने की आहट होता है । )

अन क्या फिर कोई दरवाजा खटलता रहा है ?

कामता शायद बाबू मूलच न जो श्याम मोहन बाबू क साथ आ  
गए हा ।

अन दरवाजा तो खला है । ( आधा छ देकर ) धर मोहन लाल ।  
मुनी इधर । य मराशय तक स बनारस क कपडे ही संभाल

रह ह !

( मोहन लाल का शीघ्रता से प्रश्न )

मोहन कहिए सरकार !

ब्रज तुम तब से कपडे ही सम्हाल रह हो ?

मोहन ( धिघघाते स्वर मे ) जी ! सामान जहाँ रख लिया था वहाँ मिला ही नहीं । बड़ी मुश्किल से एक कोन में मिला, वहाँ मैं रखा ही नहीं था ।

ब्रज रखा ही नहीं था ? ( कहकहा लगाते हुए ) भरे बाबा यहाँ सामान धूने वाला कौन ह ? ( हसता है । ) य महाशय सामान रखते कही ह और ढूँढते कही ह । देखो यादनाश्त की कुछ दवा करो ।

मोहन गाँव पहुँचन पर कर लूँगा सरकार ! लेकिन सारे कपडे में धूल पड गई ह । जन्ही पर बहश बर रहा था ।

ब्रज तुम्हें धूल ही धूल दिखाई देती ह ! भरे बाहर जाके देखो शायद मूलक जी और श्याम मोहन बाबू आए हो !

मोहन बहुत घबड़ा सरकार ! ( शीघ्रता से बाहर जाता है । )

ब्रज इन महाशय को धूल की बड़ी चिंता ह । अभी एक घट से ये जनाव हारमानियम साफ कर रह थ । अब कपडे साफ कर रह ह ।

कामता गाँव के ग्रामी काम की जिम्मेदारी सम्भले हैं ।

ब्रज क्या साक सम्भले ह ! मन इनसे कहा कि तुम्हें धूल की बड़ी चिंता ह । कहीं तुम्हारे निमाण में भी धूल न भर गई हो ! इस पर य महाशय अपना सर टटोलन लगे अपना सिर ( हसते हैं । )

कामता ( हँसते हुए ) अपना सर टटोलन लगे ?

( दोनों जोर से हँसते लगे कर हसते हैं । एक क्षण

बाब बाहर स बाबू मूलचन्द की आवाज आती है । )

मूलचन्द धरे रायबहादुर साहब ! बडे कहकहे लग रहे हैं ?

( दोनों उठकर स्वागत करते हैं । बाबू मूलचन्द और श्याम मोहन का प्रवण । मूलचन्द अघेड अवस्था क आदमी हैं । शेरबानो और धोती पहन हुए हैं । तिर पर चौकीर टोपी । पर में स्त्रीपर । श्याम मोहन २२ वष के युवक हैं । देखने स अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक ! वे नीले रंग का सूट और काल बूट पहन हुए है । नीले रंग की रेशमी टाई । बाल सुन्दरता से सवारे हुए है । सेंट की छगबू से सारा बन्दरा गमक उठता है । अजबिगौर और बामता प्रसाद आगे बढ़ कर दोनों से हाथ मिलते हैं और कुर्सियों पर बिठलाते है । बाबू मूलचन्द कुछ नाच से बोलते हैं । )

मूलचन्द ( बोलते हुए ) बडे कहकहे लग रहे थे रायबहादुर साहब !

अज कुछ नहीं साला साहब ! आपने इन्तजार का वक्त बाबू बामता प्रसाद जी क साथ किसी तरह काट रहा था ।

मूलचन्द माफ कीजिए मैं कहा, रायबहादुर साहब ! मुझे आपकी सेवा में धान में कुछ देर हो गई । दस तरह की कम्पटें और जान अवेली मत कहा ! दस कम्म भा न घने कि बीस आम्पिया न मैं कहा, कि पर लिया । साला जी यह बात ह, 'लान्ता जी वह बात ह, मैं कण—धरे भूल गया माफ़ काजिए, मने कहा—ये रहा मेरा नहीं—नहीं आपका श्याम मोहन ।  
( श्याम मोहन दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करते हैं । )

अज आपसे मिल कर मुझ बहुत प्रसन्नता हुई ।

श्याम मैं कृताय हुमा, रायबहादुर साहब !

मूलचन्द अब य बहुत शुद्ध हिन्दी बोलना ह, रायबहादुर साहब ।



कहता ह हिन्दी राष्ट्र राष्ट्र क्या कहते हैं उसे, मैं कहा—

श्याम राष्ट्र भाषा बाबू जी ।

मूलचन्द हा राष्ट्र भाषा । मुझसे ता कहते ही नहीं बनती मन कहा ।  
( कुछ यादकर ) हाँ रायबहादुर साहब । आपको कोई  
तकलीफ मन कहा कोई तकलीफ तो नहीं हुई ? सुबह  
आपसे मिल कर गया तो बक क मनेजर मैं कहा—आ  
गए । पाँच लाख के पावन की बात मन कहा थी ।

ब्रज आपका कारबार ही इतना ऊचा ह लाला जी । कि आपको  
एक बात पाँच लाख की ह ।

कामता बहुत धूम ह लाला जी की हिन्दुस्तान भर में ।

मूलचन्द लेकिन इसको कम लोग समझत ह मैं कहा । रायबहादुर  
साहब । हिम्मत तो मेरी मैं कहा वो ट कि आधी बात पर  
हिन्दुस्तान में तहलका मने कहा मचा हूँ लकिन रायबहादुर  
साहब । मरा बड़ा श्याम मोहन इतना होशियार ह कि कार  
बार में थोड़ी भी दिलचस्पी ल ल मन कहा तो बक इधर-से  
उधर हो जाय—डबिट क्रेडिट और क्रेडिट डबिट जो ( गव से  
देखकर ) लकिन कामता प्रसाद । श्याम मोहन अफसर होना  
चाहता ह । इतना बडा होकर मन कहा इम्तहान में बठता  
ह । मन कहा—बचपन की आत्त जल्दी नहीं छूटती रायबहादुर  
साहब । बचपन में भी इम्तहान और मैं कहा जबानी में भी  
इम्तहान ! और शायद बुनापे में और भी कोई इम्तहान होगा  
मन कहा । अच्छा बाबा । बठो इम्तहान में मन कहा बठो ।  
म बगैर इम्तहान के ही भला ह ।

कामता अजी इम्तहान पानी भरत ह आपके कारोबार के भाग ।

ब्रज सही ह लकिन कुछ जन-पान । ( पुकारकर ) अरे मरा !

भैरव ( नेपथ्य से ) भाय सरकार ! ( भरव आता है । )

मूलचन्द नहीं-नहीं रायबहादुर साहब ! जलपान की विलकुल जरूरत नहीं है मन कहा ! अभी अभी जनपान करके आए हैं हम लोग गद्दी से उठते हैं मन कहा—सीधे घर पर जलपान करते हैं । उसी में तो हमें देर लग गई मन कहा ! माफ़ कीजिए ! और फिर बिना लखमी जी को भोग लगाय मन कहा—म कुछ खाता भी नहीं हूँ ! मन कहा ! लखमी जी का ही सब कुछ है । ब्रज हैं यह तो ठीक है । अच्छा श्याम मोहन जी ! आप कुछ जलपान करें ?

श्याम धयबाद ! रायबहादुर साहब ! अभी बाबू जी के साथ जलपान किया है ।

ब्रज अच्छी बात है । कोई तकलुफ़ न हो ! ( भरपूर से ) अच्छा भरो ! पान इलायची ही लें आओ ।

भैरव जसी भजा । ( प्रस्थान )

मूलचन्द खान का रिवाज हिन्दुस्तान में बहुत है मन कहा ! सुबह खाना दोपहर को खाना मन कहा और शाम को खाना और कामता प्रसाद जब मिल जाय तब खाना ! रायबहादुर साहब ! रिवत भी खाना और अगर पकड़ गए मन कहा तो जलखाना ! पानइ खाना है । लोग मैन कहा कामता प्रसाद ! कसम खाते हैं और जब कसम खान में घोसा खाते हैं तो फिर मार खाते हैं देख लो इसके खाते के खाते खुल हैं मन कहा ।

कामता आप तो बड़े पते की बातें करते हैं लाला जी । मूलचन्द पते की भलाई हों इस्तहान की नहीं है । मन कहा—श्याम मोहन को तो इस्तहान ही अच्छा लगता है । रायबहादुर साहब ! माफ़ कीजिए मैन कहा—सब बातें में ही कर रहा हूँ ! आप भी बहुत होगे मैन कहा कि साक्षात्की बात तो नहीं करता साक्षात्की बातें करता हूँ ! नीजिए म चुप हो जाता हूँ

बाबू कामता प्रसाद ! ( मुह पर हाथ रख लते हैं । )

कामता नहीं नहीं आपकी बातें बड़ी मशरार होती ह ।

श्याम बाबू जो वाता-वाता में बड़ी बातें कर जात ह । मरी परीक्षाया का तो बड़ा परिहास करते ह ।

ब्रज आप किस परीक्षा में बठ ह श्याम मोहन जी । गत वष आप एम० ए० तो पाम कर चुके थे ?

श्याम जो इस वष आई० ए० एस० में बठा हूँ । अब परीक्षा फल निकलने ही वाला ह ।

ब्रज मुझे ता उम्मीद ह कि आप शतिया कामयाब होग । आपका करियर तो शुरु से आठवार तक फस्ट क्लाम का ही ह । म अभी से आपका कॅम्प्युलट करता हू ।

श्याम बहुत बहुत धन्यवाद रायबहादुर साहब । यह सब आप जसे पूज्यो का हा आशीर्वाद ह ।

ब्रज नहीं-नहीं यह ता तुम्हारी लियाकत ह । मन अखबारा म पता था कि तुम यूनीवर्सिटी भर में पहले नम्बर प्राप्त य और तुम्हें क्वीन विक्टोरिया जुबिली गाल्ड मडल भी मिला था । तुम तो यूनीवर्सिटी के बस्ट स्टूडेंट मान गए ।

मलचंद मूनचंद अरे ता लम्का किसका ह रायबहादुर साहब । मन कहा मरा ही ना ? मैं बिजनम म हूँ य पढाई में । दाता मारचै, मन कहा अगई घर में देख लो । (सिसक्कर) घर म फिर बाल गया । मन कहा मुझ चुप रहना चाहिए ना ?

कामता कोई बात नहीं लाला जी । आप-बन्द दोना ही नियाकतम ह ।

श्याम लकिन मैं समझता हूँ कि जो कुछ भी मैं कर सका हूँ वह पिता जी और आप जसे पूजा का ही आशावादी ह । एम एटामिक एज म आशीर्वाद का भी प्रभाव पण्डा ह । मानसिक

विज्ञान के अनुसार विचारा का भी तरंग होती है और उनकी गति का प्रभाव होता है। आशीर्वा भी विचारा की एक तरंग है और यन् विचारा की तरंग का प्रभाव है, तो आशीर्वा की तरंग का भा प्रभाव है। ब्रह्मानिब दृष्टि से भी सिद्ध किया जा सकता है कि आशीर्वा में बड़ी शक्ति है।

कामता बाबू श्याम माहन जी के विचार कितने सुन्दर हुए हैं और इनका हिन्दी भाषा कितना मधुर है !

मूलचन्द्र धरे, तो लड़का भी तो मन कहा आप ही का है। ( झट से मुह पर हाथ रत लेते हैं। हँसी होती है। भरो पान इलायची खाता है। राय बहादुर साहब तन्तरी हाथ में लेकर खड़े होकर पान देने के लिए बढ़त हैं। कामता प्रसाद शिष्टाचारवश कहते हैं— लाइए मुझे दीजिए ! ( लेकिन राय बहादुर ही इन के लिए उठते हैं। )

श्याम ( तन्तरी हाथ में लेकर ) भ्रम आप छुद क्यों कष्ट करते हैं ? यह काम तो मुझ करना चाहिए। लीजिए रायबहादुर साहब ! ( तन्तरी भागे बढ़त हैं। )

भ्रज भाप लोग तो मर कमर में घाए ह। इस बात का भाप मेर मान ह मैं नहीं। यह उलटी खातिर !

मूलचन्द्र कीर्दे बात नहीं, राय बहादुर साहब ! मन कहा भव तो मेर घर और आपने घर में फरक ही क्या रहा ! गंगा-जमना में जमना-नागा में। मन कहा, यह तो सगम है !

भ्रज आपका कहना भी ठाक है। कामता प्रसाद ! तुम सब को पान ले।

कामता मैं तो पहले उठा ही था। ( फिर उठते हैं। )

श्याम नहीं नहीं ! आप बँठिए, कामता प्रसाद जा ! छोटी के रहते बड़ा को कष्ट करने की आवश्यकता नहीं।

( सबको पान इत्तायची बाँटते हैं । )

मूलचन्द ( पान सेते हुए ) म भी नू ? धाधा । रायबहादुर साहब । भगवान के जमाने से पान चल रहा ह । बाबा तुलसीदास न भी रामायन में लिखा ह —

दरस परस मजन अर पाना । हर पाप कह बेद पुराना ।  
गुसाईं तुलसीदास जी कहते ह मन कहा कि दरस-परस करके  
यान आपस म मिल-जुल के दातो का मजन करना चाहिए  
और पान खाना चाहिए । मन कहा इससे सब पाप मिट जाते ह ।

कामता आपका कहना बिलकुल सही ह लाना जी !

( श्याम मोहन मुस्फुराते हैं और इत्तायची लेकर तश्तरी  
टबल पर रखते हैं । )

ब्रज यह सुनकर भी तुमन पान नहा तिया श्याम मोहन बाबू ?  
श्याम मैं पान नहीं खाता । भरे गुरुदेव डा० रामकुमार वर्मा पान  
बहुत खाते ह । एक दिन मन उनसे कहा—गुरुदेव ! म अपने  
पान भी आपको समर्पित करता हू ।

ब्रज (हसकर) बहुत खूब बहुत खूब । वड गुरु भक्त हो । मैं तुमसे  
मित्रवर बहुत प्रसन्न हुआ श्याम मोहन ! जितनी तारीफ मैं  
तुम्हारी सुनी थी उसे अधिक भव म खुद कर सकता हूँ । आज  
के जमान में तुम्हार जैसे लडके समाज और देश के भूषण ह ।  
मूलचन्द भव रायबहादुर साहब ! तारीफ तो आप वरों ही मन कहा ।  
एव नाख रुपया नगाया ह मन उसके पढ़ान में । हाँ परा  
एक साख मन कहा । तकिन इसके मान ये नहीं ह मन कहा  
कि मैं रुपया की बातें कर रहा हूँ ।

कामता भजी आप रुपयों की बातें कहाँ कर रहे हैं ।

श्याम पिता जी स्नह से ही ऐसी बातें कहत हैं । सबसे व यही कहते

ह । या वे भ्रष्टी तरह जानते ह कि प्रेम के सम्बन्ध रूपों से नहीं धाँके जाते । मने ता पिता जी से निषेधन किया ही था कि हमारे देश क समाजवादी दृष्टिकोण में रूपों का सचय देश के हित में कभी नहीं होगा । फिर प्रेम के सम्बन्ध में रूपों को आगे रखने का भय होगा कि हम मानवता से अधिक धन का महत्व दते ह ।

मूलचन्द्र ( "श्याम मोहन से ) ब" । तरा बात तो, मने कहा कभी-कभी भरी समझ में भी नहीं आती । ( हेसी )

ब्रज नया जमाना नई बातें । भव हमें नये खयालाती की समझन के लिए नये नये पमान चाहिए ।

( भय कामता प्रसाद की धाँखों से इशारा करता है कि किसी घटना की चर्चा छताई जाय । )

कामता रामरहाडुर माह्व ! नये खयालाती का प्रचार आप जैसे बड़ धादमियों क व्याख्याना से ता हा ही मकता है लेकिन सब से भ्रष्टा साधन होगा—सिनमा । मनोरजन के साथ हा शिछा दी जानी चाहिए । अगर सिनमा इस नये सिद्धांत को अपने हाथ में ल ले ता देश बहुत जल्द तयार हा सकता ह । या फिर बाबू श्याम मोहन जैसे बुद्धिमान नौजवान ऐसे लेख लिखें कि जनता उसे ठाक तरह से समझ ले ।

श्याम जनता में पहल शिछा का प्रचार होना चाहिए ।

कामता हाँ, शिछा का प्रचार बहुत जरूरी ह । लेकिन धातकल तो जनता गिवाय गजल और फ़िल्मा गाना के कुछ समझती ही नहीं ।

श्याम गजल और फ़िल्मा गाना की ?

कामता ( खोर देकर ) हाँ तरह तरह का गजलें गजलें और गजलें ( दरवाज़ पर खटखट की धायाड होती है । )

ब्रज ( भरव से ) यह दरवाजा कौन खटखटा रहा ह भरव ?  
 भैरव म अबई देख के भाउत हा । ( गोप्रता से जाता है । )  
 ब्रज दरवाजा तो खला होगा ।

( दरवाजा पर फिर खट-खटाहट । दो-तीन बार  
 बिजली का करेंट धीमा और तेज होता है । )

मूलचन्द ( यप्रता से ) यह तुमन कसी वान कही कामता प्रसाद !  
 मन कहा ।

कामता कुछ नहीं चाला जी ! आजकल जनता में गजनों और गजनों  
 और तरह-तरह की गजलों ही गाई जाती ह । ( दरवाजे पर  
 फिर खटखट की आवाज होती है । )

मूलचन्द ( तीक्ष्णता से ) अरे तो एसी बातें मुह से क्या निकालते हो  
 मने कहा !

( भरव लौटकर आता है । )

ब्रज क्या क्या बात ह ? बाहर कौन ह ?

भैरव बाहर कोई नइ दिखानो सरकार !

ब्रज बाहर कोई नहीं ह ? फिर यह खटखट की आवाज कसी ?  
 ( श्याम मोहन की भगिमा बदल जाती है । उनकी आँखें  
 सुन्न हो जाती है । ये सहसा कुर्सी पर भुक् जाते हैं । )

श्याम ( चीखकर ) ओह ! मर पजा में पजा में बहुत बहुत दद  
 ह ! बहुत दद बहुत दद ह ॐ

मूलचन्द ( उठ कर ) जूत खोचो जूत खालो मन कहा ! कामता  
 प्रसाद ! बाहिमात आन्मी तुम बाहिमात आन्मी हो । इसी  
 से डरता था वही बात वही वान । ( श्याम के जूते खोलन  
 के लिए भक्त ह । )

श्याम ( एँठकर ) पजा में दद

ब्रज ( अप्रतिभ होकर ) भरा ! श्याम बाबू के जूते खोचो ।

भैरव जो हुठुम सरकार ! ( भैरव झट से जूते खोलता है ।  
 "याम मोहन जूते खुलने पर अट्टहास करता है । फिर कुसी  
 से उठकर घूमता हुआ जैसे शराब के नशे में बोलता है । भरव  
 बड़ ध्यान से श्याम मोहन को घूर कर प्रसन होता है । )  
 श्याम गजलें गजलें गजलें जो लुत्फ गजलो में ह वह  
 जिदगी के किसी तसव्वर म नहीं ह हुजूर ! किसी शायर न  
 क्या खूब कहा ह—

हम बंद किए आँख तसव्वर में पड हों ।  
 इतन में कोई धम-से जो भा जाय तो क्या हो ?  
 तो क्या हो (अट्टहास) तो क्या हो ! हुजूर ! बतलाइए  
 ता तो क्या हो १ १ १ ।

(मूलचन्द हत प्रभ होकर कुसी पर झील पड जात हैं ।  
 कामता कौतुक से भरव की ओर देखत हैं । भरव अपनी  
 भाव-भगिमा में बहुत प्रसन्न होता है । )

म्रज ( आश्चय से ) यह क्या बात ह श्याम मोहन जी ?  
 श्याम ( विहृत स्वर से ) श्याम मोहन ? भरे भाई ! मैं फूलचन्द  
 हूँ फूलचन्द ! आक्रतावे गजलगी । वो गजलें आपको मुनाऊँ  
 वो गजलें सुनाऊँ कि विहिरत की हूँ आपकी खिन्मत में  
 हाजिर हो जायें ( अट्टहास ) ह ह ह ह ह ! विहिरत की  
 हूँ ! ( शक्कर ) हाँ जरा मुझे पानी का एक गिलास इनायत  
 फरमाए, रायबहादुर साहब ! बहुत प्यास लग रही ह ।  
 म्रज ( किञ्चित्पविमूढ़ होकर ) भरो ! जल्दी से एक गिलास  
 पानी लाओ !

भैरव ( समझकर सिर हिलाता हुआ ) बहुत अच्छी सरकार !  
 ( शीघ्रता से जाता है । )

श्याम गजल का मिठरा याद कर लू !



( गुणगुनाते हुए सिर हिलाकर झालें धड़ किये सोचते हैं । )

ब्रज ( मूलचन्द से ) क्या बात है मूलचन्द जी ! श्याम मोहन जी किस तरह बातें कर रहे हैं ? किसी डाक्टर को बलवाया जाय ? ( कामता प्रसाद से ) कामता प्रसाद ! किसी डाक्टर को जल बुनाओ !

कामता ( उठकर ) भरो जाता हूँ !

मूलचन्द ( गिरे हुए स्वर से ) नहीं नहीं डाक्टर कुछ नहीं कर सकेगा ! मैं सब डाक्टरों को लिखला चुका हूँ । य कामता प्रसाद नहीं मन कहा एसी बातें करो एसी बातें करी ।

ब्रज कसी बातें ?

मूलचन्द अब क्या कहूँ रायबहादुर साहब ! कामता प्रसाद को कुछ तो सोचना चाहिए या मन कहा ।

कामता मुझे माफ़ कीजिए लालाजी ! भगवत कोई शलती हुई हो । अपने जान तो मुझे कोई बमदबी नहीं हुई ।

ब्रज हाँ बाबू कामता प्रसाद मैं तो कुछ नहीं कहा ।

मूलचन्द रायबहादुर साहब ! मुझे माफ़ करें । मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ ।

( भरव पानी लाता है । श्याम मोहन झपटकर पानी पीते हैं । )

श्याम ( पानी पीकर मूलचन्द को देखते हुए ) शर्मिन्दा ? ( सिर को झटका देकर उठाते हुए ) शर्मिन्दा ? किस बात पर शर्मिन्दा ! बाबू मूलचन्द जी ! गजल सुनने से आपको शर्म आती है ? ( हसकर ) शर्म आती है ? अच्छा ! शर्मिए ! आपको अपनी जवानी के दिनों की याद आती है ? जिन्गी में रायबहादुर साहब ! शर्म भी अच्छी चीज है देखिए ! मैं आपको एसी गजल सुनाऊँ कि बाबू मूलचन्द जी शर्म जाय और आपसे

नजरें न मिला सकें ! देखिए तरन्नुम में प्यता हूँ —

जो तगे नाज का बिस्मिल नहीं ह

हमारी राय में बह त्लि नहीं ह ।

कभी उनकी भक्क देखी थी मन—

मेरे बाबू में भव तक त्लि नहीं ह ।

यह खो जाए कि रह जाए तुम्हें क्या ?

हमारा ह तुम्हारा त्लि नहीं ह ।

जरा और फरमाइए हजूर ! शर कहता हू—

जरा भाँखें मिला कर फिर तो कहिए—

हमार पास तेरा दिल नहीं ह ।

सुनिए साहब !

वह ह मुटठी में क्या कहत हो यह क्यों  
नहीं ह दिल नहीं है त्लि नहीं ह ।

भाखिरो शेर सुनिए—

अगर दिल ह तो त्लि में ह मुहब्बत

मह त्त फिर वहाँ जब त्लि नहीं ह ।

इसी दिल पर दूसर दो मिमर सुनिए—

वो हिष्वा के सग्में उठाए हुए ह

कि हाया से दिल को दबाए हुए है ।

सुनिए हजूर ! वो भेँ- क्या दिस्ताण मराठर में मुभक्को—

जा भाँखें अभी से चुराए हुए ह ।

चुराए हुए है भजा चुराए हुए है  
( हसत है । ) -

मूलचन्द्र भव यहाँ बठा नहीं जाता ! राय बहादुर साहब ! हमें इजाजत  
दीजिए । ( श्याम मोहन से ) चलो श्याम !

श्याम ( भाँखें फाटकर ) श्याम ? अच्छा स जाइए श्याम को । मै  
तो राय बहादुर साहब की शब्दलें सुनाऊगा ! सुनिए रायबहादुर

साहब ! हमारे मशहूर शायर बिस्मिल इलाहाबादी ने एक गजल कही है— चिराग जलता है । उन्हीं के तरनुम में सुनाता हूँ । मुलाहजा हो—

आह से दिन का दाग जलता है ।

यह हवा में चिराग जलता है ॥

सुद ब खुल्लि का दाग जनता है ।

भरे बे जलाए चिराग जलता है ॥

खानए दिन में दाग जलता है

बन्द घर में चिराग जलता है ॥

सुनिए साहब ! दागे दिल काम धापा भरने पर ।

कब्र में भी चिराग जलता है ॥

भरे, गर के घर वो जान वाले हैं ।

रह गुजर में चिराग जलता है ॥

उसकी कू दरत का बाह ! क्या कहना

धासमा पर चिराग जलता है ॥

मर रहे हूँ पतिगै जल-जल कर

इसी मम में चिराग जलता है ।

और सुनिए शाम से सुबह तक शबे फुरकत ।

साथ मेरे चिराग जलता है ।

देखिए मझे प्यास लगी है । प्यास का चिराग भी हमेशा गले

में जलता रहता है । एक गिलास पानी ।

म्रज ( गभीरता से ) भरो एक गिलास पानी ।

भैरव जसो सरकार को हुक्म । ( प्रस्थान )

मूलचन्द चलो घर चल कर जितना चाहो मने कहा, उतना पानी पी  
सेना । यहाँ क्या तमाशा कर रहे हो ?

श्याम तमाशा ? बँसा तमाशा ?

हमने माना कि बहुत देखे हैं मरने वाल ।  
 भाप मरने का हमारे भी तमाशा देखें ॥  
 गौर फरमाइए हुजूर ।  
 हमसे भोरा से जमान में सरोकार नहीं ।  
 तू िखाए जो तमाशा, वह तमाशा देखें ॥  
 मैं तो कहता हू साहब । कि  
 भाइना सामन रख लीजिए झुल जाय भभी ।

जी ! झल जाय भभा ई  
 भाप क्या खोज ह यह भाप तमाशा देखें ॥  
 घौर दिखलाऊँ तमाशा भापको ?  
 भातिशे इश्क से लिल खाक हुमा जाता ह  
 घर किसी का जल घौर भाप तमाशा देखें ।

( भरख पानी लेकर आता है । )

श्याम पानी ल भाए ? ( पीते हुए ) भब मेरे पीन का तमाशा  
 देखिण ! भाई ! क्या नाम ह तुम्हारा ? भरो ? उरा एक गिलास  
 पानी घौर ।

भैरव भबई लो सरकार ! ( गिलास लेकर जाता है । )

श्याम रायबहादुर साहब के दशानो से प्यास बुझती ह । पानी तो  
 रौर पानी ह ।

ब्रज ( श्याम से ) भन्धा भाप खडे-खडे थक गए होंगे । तशरीफ  
 रलिये, पानी भा रण ह ।

श्याम ( बठकर ) बहुत बहुत शुक्रिया ! देखिये रायबहादुर साहब !  
 भाप समझें कि जिन्दगी का राज क्या ह । जो हसरतें जिन्दगी  
 में पूरी नहीं होती वे कभी पूरी नहीं होतीं । ( भरख पानी  
 लेकर आता है, वह श्याम को अनजोब तरह से घूरता है । )  
 भन्धा ! तुम से भाए पानी ? शुक्रिया । ( पानी पीते हैं । )

पीकर ग्लास देत हुए ) मसलन देखिए यही पानी की बात  
ह । जिन्दगी में अगर प्यास नहीं बुझी तो कभी बुझती भी  
नहीं ह । हजार बार पानी पियो लेकिन प्यास जो पहल थी  
वह अब भी ह । पानी पानी को प्यास आपका क्या खयाल  
ह रायबहादुर साहब !

ज ठीक ह प्यास तो प्यास ह ।

हम क्या बात कही ह आपन ! प्यास तो प्यास ह । वाह  
रायबहादुर साहब प्यास तो प्यास ह ! मरी तारीफ कीजिए  
कि मरी प्यास सिफ पानी की ह । और नोशा की प्यासों तरह  
तरह का होती ह । कभी हुस्न की प्यास कभी शराब की  
प्यास ! शायर कहता ह कि

पूना का रंग और कुछ अगूर का अरक  
कोई हराम चीज नहीं ह शराब में ।  
मात्रा जा महरबा ह तो पान का जिन्न क्या  
निबन्हा गा मकदे से नहा कर शराब म ॥

और हजरत दाग ता कहत ह कि

ए शख जो बताय मय अरक का हराम ।  
एस का दा लगाए भिगी कर शराब में ॥

( हसकर ) भिगी कर शराब में ! ( चित्र की ओर संकेत  
कर ) आप देखत ह उमर लैयाम का ? इमो शराब के घूट  
पर उमर अपनी जिन्गी क हर लमह को गिना ह । लेकिन  
मैं ? मैं ता उमर लैयाम क परों का घूल भा नहीं ! हाँ घूल  
भा नहीं ! मुझ ता सिफ पानी का प्याम ह सिफ पाना की ।  
हुस्न और शराब की प्याम निर पर बन कर बोनती ह । सिर  
पर रायबहादुर साहब ! पर मरा प्याम ता सिफ गल पर बड़  
कर रह जाता ह । सिफ गल तक ! ( हसत हैं । ) देखिए

इधर देखिए ( गला दिखलाते हैं । ) हाँ एक गिलास पानी  
भीर चाहता हूँ ।

प्रज कोई बात नहीं । भरो ! एक गिलास पानी भीर ।

कामता ( बोध हो में ) भरो ! तुम कुछ कहना चाहते थे ?

भीरव सरकार ! अगर हुकम होय तो भरपास करों । जा प्यास  
मामूली जल से न बुझूँ गंगा-जल से बुझूँ ।

श्याम ( उछलकर ) वाह गंगा जल ह । ती गंगा जल लागो ।

भीरव ( हाथ जोड़कर ) मनो गंगा जल इस नई प्रा सक् सरकार !  
भरो ठाकुर जा क साही धरो ह । उतइ चटक पान पडह ।

श्याम मतलब ये कि वहीँ चल कर पीना पडगा ?

भीरव हमा सरकार !

कामता ता तुम्हारे ठाकुर जो कहाँ ह ?

भीरव व वर कमरा में तिराजे ह ।

कामता यहाँ नहीं प्रा सक्ते ?

भीरव ( झोले फाड़कर ) नइ सरकार ! ठाकुर जो दरोगा साहब  
घोडा ह क चाहे जस चल जाय । व तो तीन तिरलोक धरमहाड  
के स्वामी जी हैं । उनई क सेवा में चलो चाहिए । बाबू साहब  
उतई चल ६ पीले तो उनकी प्यास बुझूँ जह ।

श्याम तुम्हारे कह ६ का मतलब यह कि म उधर हाँ चल के पीलूँ ता  
मरी प्यास बुझ जायगी ? गंगा-जल से हमशा के लिए प्यास  
बुझ जायगी ? मेरी प्यास बुझ । दो भरव लाल ! म कहीं भा  
चल सकता हूँ । मरी प्यास बुझ बहुत परशान करती हूँ ।  
इजाजत ह रामबहादुर साहब ?

प्रज बिलकुल ! तबिन आप क्यों तकलीफ करेंगे ?

कामता जान दीजिए न रामबहादुर साहब ! एक बार भरा का वान  
भी मान लीजिए ।

भरो बहुत हीरा भादमी ह । देखो कितना ऊचा टीका लगाया  
ह । मानूम होता ह सुबह का सूरज ह मरी जिन्गी की सुबह  
का सूरज । चलो भरव । तुम्हें एसी एसो गजलें सुनाऊंगा कि  
तुम मरे माथे में भी टीका लगा दोग । मेरी प्यास जरूर बुझा  
दो भरो लान । रायबहादुर साहब के सामन बार-बार पानी  
पीन में शम भी आती ह । शायर कहता ह—

गरश से ह काम साकी म से कुछ मतलब नही ।

तू पिला दे काश अपने हाथ से पानी मुझे ॥

हजरत ! कहता हूँ कि

यों सदा देता ह आहिद आपके मखान के पास

मैं बहुत प्यासा हूँ पिनवा दे कोई पानी मझे ।

पानी पिला दो भरो लाल ।

देखो शुद्ध गंगा-जल पिलाना । जान दीजिए रायबहादुर  
साहब । बार-बार पानी पीन से इन्हें आपके सामने शम आती  
होगा ।

अधो बात ह । भरो ! इज्जत के साथ ले जाना ।

बहुत इज्जत के साथ सरकार । (श्याम से) चलिए बाबूसाहब !

( प्रसन्न होकर ) बखुशी चलेंगे भरो लाल । वाह ! कितना

अच्छा नाम ह तुम्हारा । एसा मानी पिलाओ कि कभी

प्यास न लग । वाह शायर भी क्या कहता ह । ( स्वर से )

आए हैं वह खींच कर मकतल में तरो आवतार ।

सर स उचा भव नजर धान लगा पानी मझे ।

मौर सुनिए साहब !

यात्र भव आती नर्मी जिन् की परशानी मुझे ।

मुस्सुरा कर उसन एसा कर लिया पानी मझे ॥

( गात गात प्रस्थान )

( ब्रजकिंगोर और मूलचन्द किरकत्तध्यविमूढ़ से बठे देखते रह जाते हैं । )

कामता ( मौन भगकर ) क्या ह यह सब मूलचन्द जी । बहुत दुखी हो गए हम यह देखकर ।

मूलचन्द ( सर पर हाथ रखकर ) म क्या कहें साहब । मेरी तो इज्जत मिट्टी में मिल गई, मैंने कहा ।

ब्रज इसमें इज्जत मिट्टी में मिलने की बात तो नहीं ह। इसमें आपका कुसूर ही क्या ह ? श्याम मोहन इतना शिष्ट और सज्जन लडका ! कुछ देर पहल कितनी अच्छी बातें करता था ! एकाएक उसे यह क्या हो गया !

मूलचन्द म क्या बताऊ रायबहादुर साहब ! इसे अभी तक किसी तरह की बीमारी नहीं हुई मन कहा । एक दिन इस कमरे में आया, यहाँ की मन कहा सफाई करवाता रहा । शाम को लौटा मन कहा तो ऐसा ही हाल हो गया । अपनी मा को मन कहा गजला पर गजल मुनाता रहा ।

ब्रज आपन तो अच्छे स अच्छे डाक्टर को िखलाया होगा ?

मूलचन्द रायबहादुर साहब ! बड-बड शहरा के डाक्टर बुलवाए मने कहा । इसे दिखलाया तरह-तरह के इलाज किए मैंने कहा । लेकिन जरा भी फायदा इसे नहीं हुआ । बाबू कामता प्रसाद इसे जानते ह मन कहा ।

कामता जी हाँ म बहुत बार डाक्टरों की बुलाकर नाया ह ।

ब्रज ( सोचत हुए ) बाबू श्याम मोहन की हालत हमेशा तो एसी रहती नहीं । अभी जब आपने साथ आए थे तो कितनी अच्छी बातें करत थे । अचानक उनका दिमाग न जाने क्या हा गया ।

मूलचन्द पता नहीं, किस धरन उनकी तबीयत बिगड जाय ! बहुत बार



वह इस कमर में आया ह मन कहा तब उसकी तबीयत नही विगडी मन कहा म भी समझता था कि पिछली बात खत्म हो गई नहीं तो इस कमर में न आपको ठहराता न यहाँ उसको लेकर आता मन कहा ।

कौन सी पिछली बात ?

( सम्हलकर ) यही यही तबीयत विगडन को मन कहा । बहुत गिनो से इसकी तबीयत खराब नहीं हुई न कोई चक्कर आया मन कहा ।

मन भी यही सुना था कि बाबू श्याम मोहन को चक्कर आते हैं लेकिन आज का यह ढंग तो अजीबो-गरीब ह !

म भा यही समझता था कि चक्कर ही आते ह । इसीलिए मन आपका चक्कर आने की बात लिखी था—लेकिन इस चक्कर में तो कोई दूसरा ही चक्कर ह !

मुझको उसका बहुत अफनास ह रायरहादुर साहब मन कहा । लेकिन आप यह न समझें कि मन आपको धोखा दिया । आप चाहें तो शांता का रिश्ता तोड़ सकते ह मन कहा । मुझ कोई शिकायत मन कहा नहीं होगी ।

मैं बहुत हरान ह जाना जी । म रिश्ता तोड़ तो सकता हूँ लेकिन श्याम मोहन मझ निहायत पसन्द ह । म इसे छोडना भा नहीं चाहता और अपनी जानकी की जिन्दगी भा बरबाद नहीं करना चाहता । म क्या करूँ कुछ समझ ही में नहीं आता । मैं शांता पक्का करन के लिए यहाँ आया था लेकिन यह भी जान लेना चाहता था कि यह चक्कर का बीमारी क्या है ? अगर इजाजत हा तो मैं उस अपन साथ गिल्ली के नतिंग होम में ले जाऊँ ।

आप न जा सकते हैं मैंन कहा । लेकिन हमारा तो इस चक्कर

भाबे नहीं। चक्कर न भ्रान की हालत में इससे बढ़कर कोई तदुस्त लडका नहीं ह, मन कहा।

भ्रज अच्छा, लाला जी ! यह बतलाइए कि इन्हें कभी डायबिटीज या डायबेटिक कोमा तो नहीं हुआ ?

मूलचन्द कभी नहीं मन कहा—कभी नहीं। न डायबिटीज और न डायबेटिक कोमा ! कोमा न तो आदमी बेहोश हो जाता है। उसको यादशत खत्म हो जाती ह मन कहा।

कामता ठीक ह आपन राहुल साहृत्यायन जी का नाम सुना होगा। डायबिटीज की आखिरी स्टेज में उनकी यादशत ता विल्कुल हो खत्म हो गई थी ! उन्हें राष्ट्रीय सरकार न पय भूषण का उपाधि दी तो उन्हें इसका कुछ पहसास ही नहीं हुआ। चरुस ने जाए गए—लकिन वहा के प्लाज से भा कोई पायप्य नहीं हुआ। उनकी यादशत जो एक बार खत्म हुई तो फिर कभी ठीक ढग से लौटी भी नहीं।

भ्रज तो ऐमा ता श्याम मोहन जी के साथ कुछ नहीं ह। उन्हें तो न जान कितन तरह की गजबें याद ह। हर बात पर एक नई गजल सुनाने ह। मन डायबिटीज की बात इसलिए कही कि उन्हें ध्याम बहुत नगती ह।

मूलचन्द हमेशा तो नहीं लगतो मन कहा। ऐसे ही भोका पर मने कहा—वो पानी पीता ह।

भ्रज माक बीजिए—कभी ऐपीलपसी यानी मिरगी तो नहीं आई ?

मूलचन्द कभी नहीं मन कहा रायबहादुर साहव ! मिरगी में तो आत्मी चक्कर खाकर गिर पडता ह। उसके मुँह से फेन निकलने लगता ह। यह बेहोश हो जाता ह—मन कहा।

कामता इनको तो बस नश-असी हालत हो जाती ह। ऐसी कि कोई शराब पीकर गजबें सुनाना शुरू कर द !

ब्रज बड़ो चुभती हुई गजनें सुनाते ह—तबीयत होता ह कि उनके पढन की दादू नकिन दिल म अजीब उलभन होती ह । कहा श्याम मो न बाबू की पहली बातें और कहा बाद की । मसा उनकी ता शक्षियत ही बान जानी ह ।

बद जा ही बिलकुल मैन कहा । अब म क्या बतलाऊ । मैन कहा । घर के लोग कुछ और ही समझत ह—मन कहा और म भी बसा ही समझने लगा ह ।

ब्रज यह क्या गाला जी ?

बद आप मुझम कहाना ही चाहते ह ? मन कहा—अच्छा तो कहता ह । सुनिए । रायबहादुर साहब । श्याम मोहन के मामा इसे बहुत चाहते थे । व वसा कमर में मरे मन कहा और इस घर से उहें इतना मोह था कि वे यह घर नहीं छोड सके ।

ब्रज यानी उनकी आत्मा यती ह वे भूत बनकर यहाँ रह रहे ह ?

बद जो ही मैन कहा और वही भूत कभी-कभी श्याम मोहन के सिर पर आ जाता ह ।

ब्रज देखिए गाना जा । मे भूत-बगैरह में कोई विश्वास नही करता । बाबू कामता प्रसाद जी भी इसी तरह की कुछ बातें कह रहे थ । यह सन मध विश्वास ह ।

बद हा सकता ह रायबहादुर साहब । मन कहा । सकिन कुछ बातें एसी ह कि बिश्वास करना पता ह मन कहा ।

ब्रज व क्या ?

बद व एसी है मैन कहा कि श्याम मोहन व मामा जी बहुत गजलें गात थ । वहा आप श्याम माहन स सुनत है ।

ब्रज कहत है कि मामा जी को हजारा तरह की गजलें याद थीं । व कभी कभी गजलें लिखत भा थ ।

ब्रज ममकिन ह बाबू श्याम माहन को मामा जी की गजलें याद हों ।

मूलचन्द रायबहादुर साहब ! श्याम मोहन कभी मामा जी के साथ रहा ही नहीं मैंने कहा । जब मामा जी मरे वह बहुत छोटा था । और मन कहा, श्याम मोहन कभी गजलें पसन्द भी नहीं करता ।

ब्रज कुछ समझ में नहीं आता लाला जी !

मूलचन्द एक बात और है रायबहादुर साहब ! घर के लोग कहते हैं, मैंने कहा, कि जब मामा जी का हाटफन हुआ तब वे बहुत प्यासे थे मन कहा । यही वजह है कि जब श्याम मोहन पर मामा जी का भूत सवार होता हुआ वह पानी बहुत पीता है ।

कामता आपन लाला जी ! किमी घोभा का नहीं लिखलाया !

मूलचन्द घोभा खर इस भूत स डर के भाग गया ! मन कहा—घोभा भी गजले गाने लगा ! उसकी हालत और खराब हो गई, मैंने कहा । वो तो नाचने भी लगा मन कहा !

कामता मामा जी बहुत जबदस्त मालूम होत है ! घोभा तक से गजलें पढवाल है ।

ब्रज ये सब बातें मेरी समझ में नहीं आतीं !

( इसी समय नेपथ्य से एक हलकी सीटी की आवाज सुनाई देती है जो क्रमशः तेज होती जाती है । बिजली की बत्ती दो-तीन बार धीमी और तेज होती है । बाबू मूलचन्द और कामता प्रसाद घबराकर नेपथ्य की ओर देखते हैं । दोनों अपनी कुर्सी से उठ खड़े होते हैं । रायबहादुर साहब बिजली के बल्य की ओर देखने लगते हैं । फिर एक क्षण के लिए स्टेज पर अंधकार हो जाता है । प्रकाश होने पर मूलचन्द और कामता प्रसाद जमीन पर निपिलता के साथ गिरे हुए नजर आते हैं । वे दोनों उठने की चेष्टा करते हैं । )

ब्रज ( खड़े होकर ) आप लोग जमीन पर कसे गिर पड़े ?

वन्द रायबहादुर साहब ! आपको तो मन कहा, कुछ नहीं हुआ ?  
वज नहीं—क्या क्या बात ह ?

वन्द (बठते हुए) मुझे मालूम हुआ रायबहादुर साहब ! मैंने कहा,  
जसे कोई मेरी कमर पकडकर घसीट रहा ह ! मैं समझा  
कामता प्रसाद जी तो नहीं ह ?

कामता (बठते हुए) मैं आपको क्यों घसीटता ! मैं तो समझा कि  
आप मरे कान पकड रहे ह ! मैं कोई कुसूर तो किया नही !  
वज ये बातें क्या हो रही ह !

( इसी समय नेपथ्य से धीरे धीरे श्याम मोहन प्रवेश  
करते हैं । उनके मंह पर हरा रुमाल बधा हुआ है ।  
कामता प्रसाद मूलचन्द और ब्रजकिशोर भ्रवाक होकर  
देखते हैं । सब को देखत ही श्याम मोहन शीघ्रता से रुमाल  
की गाँठ खोलकर अपने मुह से रुमाल हटा लेता है । )

वन्द (आश्चर्य से) ये कसो बात मैंने कहा ?

वज (हतप्रभ हो) क्या बात ह ?

कामता भरो का इलाज मालूम होता ह ।

वज शमा कीजिए रायबहादुर साहब ! मरे किसी व्यवहार से  
आपको कष्ट हुआ हा ! ( शमा की मझा में हाथ जोड़ते हैं । )

वज अब आपकी तबीयत बेसी ह ?

वज मैं ठीक हूँ । मैं स्वयं नहीं जानता कि आप योगी को यहाँ बठा  
हुआ छोड कर मैं क्या भीतर चला गया था !

वज आप ता पाना पीन के लिए गए हुए थ—गंगा-जल !

वज क्या गंगा जन ! मझ तो प्यास नहीं लगी थी । और शिष्टता  
क धनधार ता पहन मुझे आप योगी से पानी क लिए  
पूछना चाहिए । ( अपना पट टटोलत हुए ) मुझे आश्चर्य ह  
कि मैं पाना पिया नहीं और पट भरा भरा मालूम देता ह ।

( अपने आप ) और मेरे जूते कहाँ हैं ? ( पर देखते हैं । )  
 कामता आपके जूते यहाँ ह ! आपके परो में जोर से दब हुआ था ।  
 श्याम दब ? मुझे तो किसी तरह का दब नहीं हुआ ! और पर में  
 तो कभी कोई दब हुआ ही नहीं । और एसा दब कि जूते उता  
 रने पड़े ?

[ अपनी कुर्सी के पास आकर जूते पहनते हैं । ]

ब्रज ( सोचते हुए ) दब तो हुआ था ।

श्याम चमा करें रायबहादुर साहब ! आपकी बात कैसे काटूँ,  
 लेकिन इस बीच में कोई भ्रम अवश्य हुआ है और आश्चय  
 तो मुझे इसी बात का है कि मेरे द्वारा ही यह भ्रम हुआ !  
 मेरी समझ में कुछ नहीं आता । यदि कष्ट न हो तो समझाए  
 कि मुझसे कौन सी भूल हुई ?

मूलचन्द मेरे भूल करनेवाला तो कोई और है मैंने कहा ! और ये  
 भूल रायबहादुर साहब के सामने इसी वक्त, मन कहा, करना  
 था ?

श्याम तो यह भूल करनेवाला कौन है ?

ब्रज ( कुछ स्वस्थ होकर ) भरो कहाँ है ? ( पुकारकर ) भरो !  
 ( नेपथ्य से ) भा गमो सरकार !

ब्रज ( श्याम से ) आपके जूते भरो ने उतारे थे !

श्याम भरो उतार भर पर क्या छुए ? अच्छा ! मरा तिर कुछ भारी  
 मानुम होता है आता हो तो मैं वायरूम में जाकर अपना मुँह  
 धो आऊँ ।

ब्रज हाँ, यही के वायरूम में मुँह धो लीजिए ।

मूलचन्द नहीं श्याम ! यहाँ फिर से जान की मन कहा खरखर नहीं  
 है । थोड़ा और बढ़ के अपने वायरूम में अच्छी तरह गिर  
 धो लेना ।

याम ( मुस्कराकर ) अच्छी बात है अपने ही बायहम से होकर  
भी आता है । ( हाथ जोड़कर ) नमस्कार करता हूँ ।  
( प्रस्थान )

ब्रज श्याम मोहन बाबू फिर पहल जैसे सुशील और मज्जन हो  
गए । गञ्जल पढन वान श्याम मोहन और इन श्याम मोहन में  
जमीन आस्मान का अन्तर है ।

चन्द बस मरे बट को कभी कभी ऐसा ही हो जाता है मैं  
कहा ।

मत्ता देखिए भरव का इस बार में क्या कहना है । ( पुकारकर )  
भरव लाल !

( समीप ही नेपथ्य से ) आ गयो सरकार ! ( भरव  
का प्रवेश भरव बड़े उत्साह से आता है । उसके हाथ में एक  
गगाजली है जो सोट की तरह है । उसका मुह घुमावदार  
दृक्कम से बन्द है । यह गगाजली का कडा हाथ में लिए हुए  
सम्हालकर पकड हुए है । उसके मुख पर अभिमान की  
मुद्रा है । )

ब्रज तुम्हें धान में दर क्या लगी ?

भैरव सरकार ! माफा चाहत है । घरती प चक्कर खींच के एक  
मत्र पढ़ रहो थो ! अपूरो मत्र नइ छोडो जाय । हमारे मुख  
न हमें एसई सिखामो थो ! माफा नई जाय ।

मत्ता अच्छा ! और श्याम मोहन बाबू के मुह पर हरा रुमान क्यों  
कसा हुआ था ! यह तुमन कसा था ?

भैरव सरकार ! धिमा चान्त है । मामाजी को भूत बडो बँभड  
हती ! जासे रुमान बांधनी पडो !

ब्रज भूत ? यह क्या अन्तमाजी थी !

भैरव आ अन्तमाजी नाही सरकार ! भूत प्रेत के मामता में अ

तमीजी मदतमीजी नई देखी जाय ऐसे हमारे गुह जी कहत हते ! भूत प्रेत जो चाहें, सा कर ! सां हम सोई जो चाहें सो कर ! भत प्रेत ती

ब्रज भूत प्रेत ? फिर भूत प्रेत ?

भैरव सरकार ! आपसे नई कह ! आप कौन भूत प्रेत मानत हैं ! कामता परसाद जी से भा केह रही हों !

मूलचन्द मुझसे भी तो कहौ भाई ! मर बेट की बात मन कहा !

भैरव लाला जी ! श्याम बाबू के मामा जी बड़े चानाक हते ! मना हमसे पार ने पा सके । अपनी सी भौत करी उनने मनो हमने सोई अपनी कला लिखाई ! नरसिंह कवच पढके मन मामाजी को भूत पकल्लमो, बाह बंद कल्लमा !

ब्रज बंद कर लिया ?

भैरव हाँ, सरकार ! बड़ी चालाकी से कैद करो ! ( कामता परसाद से ) बताओ, कामता परसाद जी ! मामाजी कहाँ ह ! ( सिर हिलाता है । )

कामता म क्या जानूँ, कहाँ ह ।

भैरव मामा जी जा गगाजली में ह । ( गगाजली हाथ से ऊपर उठाकर ) जा गगाजली में मामाजी बडे ह ।

कामता गगाजली में ?

मूलचन्द भरे इसी गगाजली में ? मन कहा !

भैरव हाँ सरकार ! जई गगाजली म । मन हजारो भूता सा ये पार से भो पार कर दमो ! मामाजी कहाँ के हुसियार हते । उहें जई गगाजली में बिठार दमो !

ब्रज ( आश्चर्य से ) क्या मतलब ?

भैरव सरकार ! आप नाराज न हाय ( गगाजली को टबल पर रखकर ) धार-जतन से सुनें, तो बताया मै ।



कामता हाँ हाँ बतलाओ ।

मूलचन्द्र भया । बतलो म भी सुनना चाहता हूँ मने कहा ।

भैरव स्याम मोहन भया जू न तीन दार मो सा पानी मगाओ धौर  
न जान कित्ती बार पानी जान परतो । सो मैन सोच लई क  
स्याम माहन भया जू को मूड प मामाजी आए हूँ धौर व भौत  
प्यासे है ।

मूलचन्द्र हाँ हाँ प्याम तो बहुत लगती थी मन कहा ।

भैरव सो मन गगाजल की बात धा कह दई । मोरे पास जा  
धुमावटार ढक्कन की गगाजली हूँ सो जई की खबर मोह धा  
गई ।

कामता यह तो तुम अपन साय लाए थे ।

भैरव भारे ठाकुर जू क सग जई तो चलत ह । मुहठ तक गगाजल  
से भरी भई ह ।

ब्रज ता तो क्या हुआ !

भैरव मैं स्याम मोहन भया जू खा अपन सग ल गयो । पहल तो बे  
भौत यडलें ब्रजलें गाउन ते जय भारे कप्ररा में धाए तो  
मैन नरसिंग जू को मत्र पत्र केँ उन प तीन फू केँ मारी । जत  
उनक मन्ड प फू केँ सगी ब चुप मार गए । बडो-बडो धौखन  
में मरा तरफ धूरन गग । मबरी गजलें भूल गए ।

मूलचन्द्र फिर क्या हुआ भया । मैन कहा । तुम तो बड गुनिया मानुम  
पन्त हो मैन क्या ।

भैरव सुनत जाओ जाना जो । फिर मैन हनुमान-चानीसा मनइ  
मन म पत्र उनका धौथा स धौथे मिलाइ धौर बही—प्यास  
लगा हूँ मामाजा । पाना पा नो । उनन कहा—गगा-जन पिना  
दा भाई । मैन कहा सरकार । गगाजनी को ढक्कन खाना धौर  
उत चुपचाप पाना पी नो । जमई ब पानी पीन को बड केँ

मने तुरतई स्याम माहन जू क खासा में जो हरीरी उरपाल  
हती बाह निकार व उनके मुँहडे पै कस दमा । मत्र पढ़कें ।

ब्रज यह क्या बततमीजी थी ।

भैरव बततमीजी नइ, सरकार ! भूता प आपको बिसवास नइ ही,  
जई सँ भाप बततमीजी भा कत ह । मन स्याममोहन जू के  
महड प उरपाल नइ बाँधो मामाजी के मुहड प बाँधो । बा  
बलत स्याम मोहन जू कौन अपन चापे म हत !

मूलचन्द्र तो मुह पर रुमाल बाँधन से क्या हुआ ? मन कहा !

भैरव अब जई तो सोचवे की बात ह । मामाजी न उरमाल से  
छुटव की कुप्र-मुन्न भौत करी मना मन तो मत्र पढ़कें कस  
कें उरमाल बाँधो हता । बड जोर स साँस रेंकें मूड हलाउन  
लग—जई सँ माटी सी सुनाई परा हती और उजियारो धोयो  
पड गयो हतो ।

ब्रज हीं लाइट पिलकर तो जरूर हुआ था । कुछ दर को भघेरा भी  
हो गया था ।

मूलचन्द्र उसी वक्त किमी ने मुझे वमर पकड़के घसीटा था मन कहा ।  
शापन मामाजी रुमाल खोलने में मेरी मन्द चाहत हागे,  
मैन कहा ।

कामता भौर मर कान क्या पकडे गए साहब ?

ब्रज ( हसकर ) क्या किसी पुरान मास्टर साहब की याद था गद,  
आपको ? अरे खान कान का डककर बाँधा गया हागा तो  
उस छुडाने के लिए आपके कान का इशारा किया होगा, मामा  
जो के भूत न ।

भैरव सरकार ! मामा जी बड़ी दार तक मूड हलाउत रहे, मनों  
उन्हें बड जोर की प्यास लगा हती । जब उनने देख लई कि  
व स्याम मोहन जू के मूँटों से पानी नई पी सकें तो घबडान !

वे स्याम मोहन जू के मँड प से उतरे गगाजल तो उहें पीन हतौ सो ब गगाजली में खिसके ।

कामता तुमन यह कसे जाना कि मामा जी श्याम मोहन जी के सिर से उतर कर गगाजली में आ गए ह ?

भैरव अब जा तौ सरकार ! मत्र विद्या की बात ह जा कसे बताए—मना एक तो स्याम मोहन जी की झल्लें असली रग प भाउन लगी और दूसर गगाजली क ऊपर हलकी सी घुमाँ लिखानो । जैसेई वो घुमाँ गगाजल की सतह प भाओ में जान गओ क मामा जी म्हों के बिना जल तो नई पी सक मना गगाजल से सीतल आ हो रह है—मन तुरतई गगाजली को ढक्ना बंद करके कस दओ । मामा जी भीतर और स्याम मोहन जू बाहर !

मूलचन्द शाबास भरा भया ! तुम बढ गुनिया ही नहीं बढ होशियार भौ हा ! मन कहा ।

कामता भरा न सबमच बहुत बहादुरी का काम किया ।

भैरव सरकार ( ब्रजकिशोर को सकेत कर ) के चरना को परताप ह । म तो चाकर हों । मना ढक्ना एमो कसकेँ बन्द करो ह क अब मामाजी जामें से निकर नई सकें । ( गगाजली उठा कर ) ज दलों जामें मामा जी बन्द ह । ( मूलचन्द से ) सरकार ! धिमा दई जाय ।

मूलचन्द घर बाह ! तुमन इतना हाशियारी का काम किया तुम्हें तो मैं बन्द बडा इनाम दूगा मन कहा ।

भैरव ( हाथ जोडकर ) सरकार ! एन बात में इनाम नई सघो जाय ! बस सरकार की और आपकी किरपा बनी रह ।

प्रश्न ता तुम्हारा एस गगाजली में मामा जा का भूत ह ? देखें जरा !  
( भरोँ ब्रजकिशोर के हाथ म गगाजली देता है । )

भैरव सरकार ! ढकना न खोलियो, नई तो फिर मामा जा पकड़ में ने घाहें ।

ब्रज ( जोर से हँसकर ) अच्छा ये रही गगाजली ! इसमें तुम्हारे मामा जी ह । ( तिरछा सीधा करके देखते हैं । )

भैरव ( हाथ से मना करते हुए ) नइ सरकार ! गगाजली टेडी ने करो । मामा जी सीधे बठे ह । टेड करब स उलट जहें । उन्हें तकलीफ हह ।

( सब हसते हैं । )

ब्रज ( गगाजली सीधी कर के ) अच्छा, अच्छा सीधा ही रखेंग । तुम्हारे मामा जी को कोई तकलीफ न हो ।

श्यामता भरोँ तो बहुत तजुरबकार मालूम हाता ह । गगाजता में मामा जी के उतरते ही श्याम मोहन जा बिलकुल पहल जसे हो गए ।

मूलचंद सचमुच ! भरोँ लाल ! तुम तो बड़ गगिया निक्ने । तुमने मामा जी को बडी होशियारी स पकटा । श्याम मोहन ता बिलकुल ही डीक हो गए । अपने हाथ से जूते पहन कर मुँह घोन चल गए ।

ब्रज हाँ लाला जी ! श्याम मोहन जी को अच्छा देख कर मुझ भरव की बात पर विश्वास करना ही होता ह । ( भरव से ) अच्छा भरव ! इस गगाजली का क्या होगा ?

भैरव सरकार ! ( गगाजली हाथ में लेकर ) जा गगाजली में मामा जी ह । उनकी मुक्ति भग्नो चाहिए । तो फिर अब जा गगाजनी खा गगा जी में बिसजन करो चाहिए । खास सगम की घीच घर में । मामा जी खो जब तक गगाजल पाब की हौस रह गगाजता में रहें । जब पानी क जार से गगाजली की ढकना खुलह तब सगम के भीतर रहन लगह । गगा ज,

उन्हें तार दें। एक कबराज कहत ह—

जम की सब त्रास विनास करी मुख ते निज नाम उचारन में ।

गिरधारनजू कितन विरचे गिरधारन धारन धारन में ॥

मूलचन्द घरे, वाह भरो लाल ! मने कहा, कि तुम तो कविता भी जानते हो ।

कामता हमारा भरो लाल क्या नहीं जानता ?

अन भरव लाल सचमुच काम का आदमी ह ।

भैरव आपका चरना की घूरा हा सरकार !

अज अछ्छा तो ल जाओ इस गगाजली को गगा जी की धार में ।

भैरव जसो आपकी अना । ( गगाजली को देखकर ) चलो मामा जी ! तुम्हें गगा जी के दरसन करा दऊ ! मनो तुमाए साथ हमाई गगाजनी सोई चली !

मूलचन्द घर भरो लाल ! तुमन वा काम किया ह मन कहा, कि तुम्हें सोन की गगाजली दू ।

कामता असली नही चौह करट की ।

भैरव जा आपन वा कही ? चौह करट ? जा का कहाउत ह ?

जौन लोग सोन की कम कस कौ रट नगाउत ह उनई ह दो करट परट । माह कछु नई चाउत ।

मूलचन्द घर तुम्हारा तो मैं पूजा करूंगा भरो मैन कहा ।

भैरव पूजा तो सरकार ( ब्रजकिशोर को लक्ष्यकर ) की करो चाहिए ।

मूलचन्द अछ्छा वान ह । सरकार की पूजा किसी देवता की पूजा से कम न हागा मैन कहा ।

भैरव अत्रा वात्र ह ता में चनो । चनो मामा जी ! ( गगाजली को ऊपर उठ कर जाता है । ) ज बजरंग बनो !

( प्रस्थान )

मूलचन्द आपके भरो साल ने बड़ा काम किया, रायबहादुर साहब !  
श्याम मोहन तो बिलकुल भ्रष्ट हो गए ।

कामता भरो का कहना बिलकुल ठीक निकला ।  
मूलचन्द अब आप कुछ तिन मन कहा रायबहादुर साहब ! यहाँ रहिए ।  
( श्याम मोहन का प्रवेश )

श्याम क्षमा कीजिए मुझ कुछ देर लग गई ।  
प्रज कोई बात नहीं अब तो आपकी तवीयत बिलकुल ठीक है ?

श्याम जी हाँ बिलकुल ठीक । न जान क्यों सिर कुछ भारी भारी  
मालूम होता था । सिर धो लिया तो अब बिलकुल ठीक हूँ ।  
मूलचन्द श्याम मोहन ! मन रायबहादुर साहब से बिनती की है मने  
कहा कि वे कुछ तिन यहाँ और ठहरें ।

श्याम इससे बढ़कर प्रसन्नता की क्या बात हो सकती है !  
प्रज भ्रष्टी बात है तो इसी बात पर आप कोई गजल भ्रष्टी-सी  
गजल सुना दाजिए ।

श्याम गजल ? मन तो आज तक कोई गजल गाई नहीं । गजल जानता  
ही नहीं हूँ । मुझ पसन्द भी नहीं है । गजलों की अपेक्षा तो  
मुझ शास्त्रीय संगीत में अधिक रुचि है ।

प्रज हाँ ( समझकर सिर हिलात हुए ) मुझ ख शी है कि आप  
शास्त्रीय संगीत में रुचि रखत हैं । भ्रष्टा म अपन बारि-दे  
मोहनलाल से आपको शास्त्रीय संगीत सुनवाऊंगा । ( पुकार  
कर ) मोहनलाल !

( मोहनलाल का प्रवेश )

मोहन आज्ञा सरदार !

श्याम य मोहनलाल जी क्या बहुत भ्रष्टा गात है ?

प्रज हाँ अगर हारमोनियम का स्वर खराब भी हो तो उसी खराब  
स्वर से सदा भी गा लते हैं । (मोहनलाल से) तुम हारमोनियम

पात्र

सेठ अमोलक चद

वैवनाथ

रामघनी

श्यामकिशोर

लीला

ताँगावाला

[ सेठ धर्मोत्तम चंद के बगल का एक मज्जा हुआ कमरा । बजनाथ रामधनी से बात कर रहे हैं । तैपय्य म मुर्छे की आवाज ने उनके बाव बिल्ली की आवाज । ]

बैजनाथ ( रामधनी से मुह म धान दबाकर जिस स्वर से बोला जाता है उस स्वर से ) ह ह ह सेठ जी का मवान भी एक मुनीबत ह । मुर्छे को दाना दा, कुत्ते के लिए बिम्बुट का इनजाम करो और बिल्ली के लिये डरी का दूध ! जितना घर के दस भ्रात्रियों के इतजाम में मेहनत करनी पतते ह उतनी सिरु इन जानवरा की त्रिफाजत के लिये चाहिए समझे न रामधनी ! सेठ जी ने महीना के लिये बलकत्ते क्या धन राय, म जानकर हमार गिस्तेगर बना गये । इनको खिलाओ, पिलाओ और खशामद करो !

रामधनी ए मुनीब जा ! ऊ कौनो बाबू भाव का रहे ? जिनकर तबाला हिमा हुइ गवा ह । सेठ जी भी तो उनकर नाम लेते रह । भला मा नाम ह उनका ( सोवकर ) हाँ स्वामकितोर । ऊ हिया रह के बदे भावका रहे ऊ नही भाय का ?

बैजनाथ चिट्ठी तो छोड भये थ, लकिन ग्यारह वज रह ह और उनका पना ही नहीं है । जान कहीं रास्ता भूल गये । कौन इस महल के बगलान में आकर रहगा रामधनी !

रामधनी ( बाहर देखकर ) ऊ कौना बाबू भाय रहे ह हियाँ । साथ में बहू जा ओ दिवाय रहा ह ।

बैजनाथ हाँ ! ठीक ह, वही तो ह । सामान भी उतर रहा ह । वही ह, वही ह वही ह । देखो रामधनी जरा हसन का काशिश करा । ( घुब हसता है ) हा हा हा हा !



कि उठों न मर लिए अपन बगले में जगह खाली कर दी । २  
लीला सचमुच ! आपके सेठ जी बड़ उदार सज्जन ह । नहीं तो  
आजकल कौन किसको पूछता ह ।

वैजनाथ नहीं श्रीमती जी ! सेठ जी न सारा बगला आपके लिए दिया  
ह । आप जैसे चाहें इसमें रहें । हाँ, कुछ छोटी सी तकलीफ  
क्या रामधनी ! सब सामान रख लिया ? सामान मेज पर रख  
लिया ह ना ? अरे हाँ हम लोग का सामान जमीन पर रहता  
ह तो बड़ आत्मियों का सामान ऊँची जगह पर रहना  
ठीक ह ।

श्याम किशोर क्या बात कहने ह मुनीम जी ! हाँ आप कोई तकलीफ  
की बात कर रह थे । इस मकान में मुझ कौन तकलीफ होगी ?

वैजनाथ कोई खास बात नहीं । सेठ जी सब अपन हाथ से करत ही  
य आप भी कर ही देंग । तकलीफ कसी ! बात यह ह कि  
सेठ जी जरा शौकीन तबियन के ह आप भी हाथ ।

श्याम किशोर म सीधा साग आत्मी हँ मुझ क्या शौक ह ?

लीला यह शौक किम बात का ह मैं जान सकती हू ?

वैजनाथ घर यही बड़ आत्मी ह एक जनी भी ह ।

लीला जनी ! यह जनी कौन ह, कोई ऐंग्ला शिपिन लडकी ह ?

वैजनाथ ( हँसकर ) घर साहब ! ऐंग्लो-इण्डियन लडकी कहाँ ? और  
सेठ साहब तो सीधे सादे आत्मी ह यह जनी उनकी क्या  
नाम ह ? अलसेशियन कुतिया ह । नकिन साहब क्या प्रबुब  
की कुतिया ह ! बड़ी-बड़ी औरतो का मान कर देती ह ।  
सेठ साहब क परों क पास एम बग्गी रहती ह जैसे जनम-जनम  
की सगिनि हो ! और एसी सीधे सागी कि आप चाहें ता उमका  
तकिया बना क सो जाय । बग उमके लिय दूध और बिस्कुट  
का इतबान करना ह, भो क आप कर ही देंग ।

श्याम किशोर हाँ हाँ ! इसमें क्या बात है । दूध बिल्कुट घर में  
 आयेगा ही तो थाडा उस भी दू मिया जायगा ।

बैजनाथ बाह बाह ! क्या कहना है । भाखिर भाप उनके मित्र  
 ठहर । जना का ख्याल भापको न होगा, ता किसको होगा ।  
 ( हसता है । )

श्याम किशोर ठीक है ! ठीक है ! कोई बात नहीं ।

बैजनाथ और साहब ! एक बडी प्यारी पूमी भी है । आहा हा ! क्या  
 कहना है उसका ! बिल्कुल दूध में घोई है ! बिल्कुल सफे !  
 जब मीठे स्वर में म्याऊँ कती है ता घरवाली का मैं आऊ  
 कहना भी मात हा जाता है ! उसक त्रिण भी कोई महा एक  
 पाव भर दूध का इन्तजाम सुवह और शाम हो जाय ।

लीला अरे, आजकल दूध देखन को ता मिलता नहीं । आन्मिया को  
 दूध नसीब नहीं होता तो इतने लिय कहाँ से आयेगा ?

बैजनाथ अजो भाप फिर न करें । डरा बाना दे जायगा । महीने के  
 भाखिर में बाबू साहब उमका बिल धुकता कर देंग ।

श्याम किशोर हूँ ! सर, कोई बात नहीं । इतन बड बगल में रहन  
 का एवज में धान-मान खर्चें क्या है ?

लीला इन कुत्ते त्रिन्निया क अलावा और भी काँ शौक है, भापके  
 सठ जा को ।

बैजनाथ अजी, साहब ! हमार सठ जा का एक शौक है ! लकिन अपने  
 शौक की चीजें बहुत सी साथ स गय है । इन्हें क्या से जात !  
 हाँ साहब ! भापका अहों से तो परहज नहीं है ?

श्याम किशोर मुझ ! मुझ क्या परहज हागा, मैं ता मभी कुछ खाता  
 - हूँ ( लीला को ओर सजत कर ) यह जहर कुछ धुमाधून  
 मानती है ।

धैरनाथ धरे तो इनके पूजाघर में मर्गिया घोड़े ही जायेंगी । साहब ! सेठजी के इस धमने में बीस मुर्गे मर्गिया ह । क्या किसम किसम की मर्गियाँ ह । सेठ जी न इक्कट्टी की ह कि देखत ही बनता ह ।  
 -- धीर हर रोज ऐसे धडे देती ह कि मालूम हो कि विलापती रसगुल्ल ह ।

लीला विलापती रसगुल्ल ?

धैरनाथ हाँ धीर क्या बिल्कुल जसे मशीन के बन हुए ह । य बड बड ! ( हाथ से बतलाता है । ) इसीलिय सेठ जी साहब इन मुर्गिया को इतना प्यार करत ह कि अपन हाथ से उन्हें दाना चुगात ह धीर साबुन स उनके पख साफ करत ह ।

लीला ( श्याम किशोर से ) कहिय आप उन्हें हाथ से दाना चुगायेंग और साबुन स उनक पख साफ करेंग ?

धैरनाथ धरे श्रीमती जी ! अगर आप उनको देखिएगा ता अपन हाथ स दाना चुगाव्यगा । धीर साहब ! क्या खूबसूरत शरा ह ।  
 श्याम किशोर शरा ! यह शरा कौन ह ?

लीला क्या सरक्स का भा शीर ह सेठ जी को ।

धैरनाथ नहीं साहब ! क्या खूबसूरत मुर्गा ह ! अगर वह न बोन तो मूरज की मजाल ह कि निक्कन धाए ! गन्न उठाकर एसा बोलता ह कि किसी कानज का प्रफेंसर हो ।

श्याम किशोर ( मस्कुराकर ) कितना दाना लगता ह इन प्रोफेंसरा को ।

धैरनाथ यही कोई दो-तीर सर ! उससे ज्यादा क्या लगेगा । कोई ज्यादा खच न्ना ह बड धानमियों क ता धान-भोन खच सगे ही रहत ह साहब ! यह तो शीर ह शीर ।

श्याम किशोर इस तरह का शीर ता मन्क रहा नहीं । ( फीकी हँसी । ) मन्क क्या पता था कि सः धमानकचन् धब वतनी शीरान तवायन क हा गय ह ।

लीला यह शौक आपके ठाई सी रुपयो में पूरे हो जायेंगे ? दान घोड  
से रुपया के किस किसे खिलाइयेगा ?

बैजनाथ धरे श्रीमती जी ! आप भी क्या कहती ह ! बाबू साहब क  
हाथ में बरबकत ह । यह तां अपन साथ पचासो आदमियो का  
पेट पाल सकत हैं । ( हँसता है ) और यह रामधनी ह ह हैं  
ह ! यह नो आपसे बढी भाशा लगाए ह । यह कहा रहगा ?  
धरे आपके ही घरना में पडा रहगा । एसा काम करने वाला  
प्रगर और कहीं होता तो अपनी खिन्मत के सो रुपय लता,  
सकिन बाबू साहब ! सेठ जी के साथ रहत रहते हीरा बन  
गया ह, हीरा । सिर्फ पचास रुपये और खान-कपडे पर अपनी  
जिन्दगी काट रहा ह । आपसे कुछ ज्यादा नहीं लेगा । इतन  
रुपया में वह आपक घरनों में अपनी जिन्दगी काट लेगा ।  
( हसकर ) भन्दा ! अब तो मुझे भाजा दीजिए । म चलूँ ।  
सेठ जी का हुकुम था कि आपको यहीं ठहरा देना, कोई  
सकलीफ न होन पाव । जिस चीज की जरूरत हो, आप  
मुझस कह दीजियेगा । यहां पढास में ही रहता ह । रामधनी  
जानता ह । यह सेभालिए चाकिया का गुच्छा । रामधनी !  
जरा जाके पानी गरम कर । तून बाबू साहब का बिस्तर लगा  
लिया ह कि नहीं ?

रामधनी हाँ हजूर ! सेठ जी के पलग प बाबू साहब का बिस्तर लगाव  
दिहेन हुई और पानी गरम होइके बढ प दीन हइ ।

बैजनाथ बाह ! बाह ! क्या कहना ह रामधनी ! तू किस स्कूल में पडा  
था र ! किसन सिल्लाया था तुमे यह सब ? बढा होशियार  
है । देखो ! इसी तरह काम किय जाना तनखाह क साथ  
बखसोस भी मिलगी माहब से ! बढ दान-यालु हैं ! जरा बहू  
जी की भी खुरा रखना । भन्दा ज राम जी की बाबू साहब !

जै राम जी की, बहू जी ! यह चाबियों का गुच्छा संभालिए  
( मेज पर चाबियों के रखने की आवाज ) ज राम जी !

( प्रस्थान )

लीला यह खूब रही । यहाँ आपके अच्छी आफत गल पड़ी । कुत्ते को  
विस्कुट खिलाओ बिल्ली को दूध पिलाओ । मुर्गे-मुर्गियों को  
दाना चुगाओ ।

श्याम किशोर सचमच अजीब आफत ह ! म क्या जानता था कि  
सेठ जी इतन शौकीन हो गये ह ।

लीला अजो ! अभी क्या हुआ ह । भाग देखिए घोर घोरे सेठ जी के  
कितन शोका का आपको पता चलेगा ।

श्याम किशोर इतन शोक की चीखा से ही मुसीबत हो रही ह । और  
बाता का पता चलगा तो न जान क्या होगा ।

लीला ( ध्यग्य से ) आपके मित्र के ही तो शोक ह । साथ-साथ खले  
ह पत्त हैं गालियाँ खाई ह और न जान क्या-क्या किया ह ।  
भव निमाइय आप ही ।

श्याम मैं क्या निवाह सकू गा ! इससे अच्छा तो यही था कि हम  
भोग बीस-पच्चीस रुपय क मकान में रहते खुद ही खान-पीन  
की चिन्ता करत । यहाँ तो इन अजायब घर की खाजा को  
खिनान पिनान में कहीं अपने खाने-पीन की यात् ही न भूल  
जाय ।

( नेपथ्य में चीनी क बतनों के गिरने और टूटने की  
आवाज )

श्याम किशोर यह क्या हुआ ! देखो खरा अन्दर जाके ( लीला सेड़ी  
से अन्दर जाती है । ) अजीब परेशानी है ! आते देर नहीं हुई  
कि चीजों का टूटना-फूटना शुरू हो गया ! अच्छे हैं सेठ जी !  
कुत्त बिल्ली भगियाँ और न जान क्या-क्या ! पहल इनको

खिलामो, तब खामो। रामधनी की तनएवाह के साथ बरशीश दो और शायद मुनोम जो को भी तनएवाह देनी पड। लीला ( जल्दी से हाँकते हुए प्रवेश करके ) शजब हो गया। श्याम किशोर क्यों-क्या खर तो ह ?

लीला खूब शौक्त्र है सेठ जी के। नया टी-सेट जो आप दिल्ली से लाए धन वह टबिल पर रखा हुमा था। सेठ जी की पूसी ने दूध के लालच में सारे सेट को जमीन पर गिराकर चूर-चूर कर दिया। एक मिनट में अस्तो रूपये का नुकसान। बाज भाए घर के मकान से।

श्याम किशोर क्या वह नया टी-सेट टूट गया ?

लीला जो। इस बड घर में भाने पर कुछ निछावर तो करना चाहिये। कर दी आपन, पूसी की निछावर। और वह लाडली बनी आपके विस्तर पर तकिया बनी बठी ह। और मन देला, किचिन में भुगिया की सभा लगी हुई ह। मैं बाज भाई एधे प्रहसान से। घर ही का मकान ह ! मित्र का मकान ह !

( नेपथ्य में बजनाथ की आवाज )  
 बजनाथ ( खाँसते हुए ) भरे बाबू साहब ! मन आपको सब चाबियाँ तो दे दीं, पर यह एक चाबी ( घोडे के अस्तबल की रह ही गयी ! आवाज ) है ह है। घोडे के अस्तबल की रह ही गयी ! आपको उसको भी फिकर रखना जरूरी ह। तो मन सोचा कि लगे हाथ आपको यह चाबी भी देता चलूँ। यह लीजिए।

श्याम किशोर नहीं नहीं ! यह चाबी आप अपने पास ही रखिये। और वह लीजिये चाबियाँ का गुच्छा आप ही इसको सँभा लिए। मुझमें इतनी हिम्मत नहीं ह कि मैं आपन को सेठ साहब के बगले का मालिक समझूँ।

चैजनाथ है ! ह ! यह आप क्या कह रहे ह ? आप सब लायक ह ।  
सेठ जी के मित्र होकर आपम इतनी नम्रता तो होनी ही  
चाहिए । ह ! कभी-कभी सेठ जी भी ऐसा ही कहत ह ।

लीला मुनीम जी ! यह नम्रता सेठ जी को ही शोभा दे सकती ह,  
हम लोग को नहीं । एक मिनट में अस्सी रुपय का नुकसान  
हो गया ।

चैजनाथ नुकसान ! कसा नुकसान ?

श्याम किशोर कुछ नहीं मुनीम जी ! हमारे लिए तांगा भगवा  
दीजिय हमार लिए घमशाला की वह कोठरी बहुत अच्छी  
ह ।

लीला चलिए ! जल्दी चलिए !

चैजनाथ है ! ह ! यह वसे होगा साहब ! वैसे होगा !

( नेपथ्य में मुर्गे के घोलने की आवाज़ फिर  
कुत्ते के भोंकने की और अंत में विल्ली की म्याऊँ । )

( पर्दा गिरता है । )



## साहित्यिक

वर्षा विहार  
मन मस्त हुआ तब क्या बोले !  
सूर-सगीत  
भारतेन्दु-मडल  
प्रसाद-परिचय  
छायावाद-युग  
कविता का युग-पथ





# वर्षा-विहार

( गीति-नाट्य )

पात्र

उद्घोषक  
स्त्री  
चार पुरुष  
भारती  
विद्यापति  
कबीर  
सूरदास  
तुलसी  
'वषा'  
मीरा

( वर्षा ऋतु है। आकाश से भेष छाए हुए हैं। कभी-कभी हलकी गरज हो जाती है और जल बरसने की ध्वनि होती है। )

बद्धोपक सृष्टि-मजना में इस पावस की कृपु ने  
 भाँति से हा प्राप्त विमा यश मात-पद का  
 पेड लता, फूल बला पत्र किसलय में...  
 नूतन हरीतिमा का जीवन सजाती है।

जल बिन्दु जम ले, न जान किस क्षण में  
 बनते हैं जीवन के दिव्य द्रुत गति से  
 तद्रिल शिथिल मौन सधु बाल-बीजों को  
 मृत्तिका की गान में विपुल बाहु भरत।

और तब किञ्चनय गात किस लय में  
 जावन का गात मद वायु की तरंग में  
 पाकर अक्षयिभा का अगम्य प्रेम से  
 कलिका के साथ साथ सौरभ में हँसते।

पावस का पत्र नव-मृष्टि का प्रमात ह  
 चतना स्वपल धूमता ह कण-कण को  
 और तब पावस की रिमझिम शीतिका  
 गानी ह उमग मरी उत्सव की रागिनी।

सौ स्वर बान्त का एक मीनत धावरण लकरे ।  
 दसो मह वर्षा-देवि कितनी उदास ह ?  
 पठा हुई नील नम के सुदूर कौन म  
 भाँसुपों का धार रह-रह गिर जाती ह ।

क्याकि

क्याकि जन कवि कठ मुखरित हुआ नहीं  
 वर्षा-गीत गाने को अनक नय छन्दो में  
 जनता के जीवन के हेतु वर्षा रानी की  
 मोतिया सी बूदा की अपार दान राशियाँ—  
 छय छय गिरती हैं तख तक हय से—  
 उनको समेटते हं निज लघु अको में  
 किन्तु इस उत्सव में जन कवि मौन ह ।  
 कसे सजना का पव विस्मृत हुआ उन्हें ?

( बादलों का गजन )

बादल बेचारे व्यथ नम में गरजाते  
 मन चल यक्ति इन बात्सा को देख के  
 और कभी सुन कर उनका गरजना  
 करते विनोद अथ भर यग-वाक्या में ।

एक स्वर धो हो य बादल । य बोझ बन योम के  
 घुमते हं फिरत हं और निशाहीन हं  
 विजना क पाछे बन बावन निसज्ज है  
 जस मन् पान कर करते प्रताप हं ।

दूसरा स्वर देखो ! इस बादल न वानप्रस्थ न लिया  
 सब कुछ छाड घुमता हं शूय व्योम में  
 फिर भी न वासना को छोड सका मायावी  
 विद्युत के रूप में तहप उठनी हं जा ।

तीसरा स्वर बात्सल ? यह प्रेम भरा मरा ही उर हं  
 सङ्घित और कभी विस्तृत हो जाता हं

किन्तु जब मुझसे नहीं हो तुम, मिलते  
भाँसुपो के रूप में बरसता ह धीर-से ।

चौथा स्वर बादल घुँए का रूप लेकर गगन में  
धूमता है जैसे कोई झलझल जगाता ह  
किन्तु जब क्षम बरस खलता ह उसका  
भू पर पतित होता वह पानी पानी ही ।

छठी स्वर यह परिहास सुन वर्षा दुख मग्न ह  
उसके सहस्रदृग भ्रश्रुपूण हा गए  
व्याकुल यमित बनी वह नत जानु हो  
भुक् गई जैसे नील पक्कज विनम्र हो ।

करती उपासना ह शारदा की प्रम से  
भ्रश्रु रूपी हाय उठे उनमें सजी हुई—  
थदा और भक्तिपूण माला इद्रघनु की  
शुभ्र जल विन्दु माना, भ्रचना के फूल ह ।

पूजा वीणापाणि की निरन्तर ही होती ह ।  
धन-वाप्य पुज मानो होम धूम छाया ह

चातको के कठ बार-बार गूज जाते ह  
माना यह थदा और भक्ति की विनय ह ।

( बादल की गरज )

सहसा प्रकाश हुआ विद्युल्लताम्रा का  
जसे ही प्रसन्न उठी महादेवि भारती  
और विष्य बादलों के मूडु मद्र घोप सा  
एक बरदान कठ से स हास निकला ।

भारती स्वस्ति ! देवि वर्पा रानी ! तुममे प्रसन्न हूँ  
 उर की समस्त भावनाएँ जानती हूँ मैं  
 तुम्हें दूगी कवियों को एसी म परम्परा  
 जिममें तुम्हारा यश गौरव से गूँजगा ।

काय महाकाय गीत नव-भव रूपा में  
 जनता के कठ से महान् कवि गावेंगे ।  
 विश्व की शिक्षा में तुम्हारी विष्णुवली  
 जननी के गौरव की भाँति सज्ज गूँजगी ।

देखा ! चन्द्र मण्डल की भाँति यह कौन ह ?  
 उठित हुआ ह कवि काय के चित्तज से ।  
 घाहा ! सोम्य वश रूपवान् सस्मित मुख  
 कवि-कुत-कठहार वीणा-स्वर-कठ ह ।

यह विद्यापति जन भाग्य में पलावली  
 गा रहा ह । मियिला के कुज का ह काकिल  
 प्यारे हरि मयुरा गए ह राधा मीन ह  
 बन्ना का बाणी वर्पा रूपक में गूँजी है

विद्यापति ( मधर कठ से )

हरि हरि विलपि विलापिनि रे लोचन जल धारा ।  
 तिमिर विकुर घन पमरन रे तनि विजुनि धकारा ।  
 मान बमन तन बाँधल रे उर मातिक हारा ।  
 सजल जन कत भपिव र हगमग कह तारा ॥

उठि उठि स्रमय कत जागिनि र विधिपा जुग जाती ।  
 पवन पनट पुनि भाघोन र जनि भाँव राती ।  
 दामिनि ममकें बरननि र विरहिन पिक वामा ।  
 समसए बढ पिक धनुभव र धोरज घह रामा ॥

भारती घोरज रखो हूँ देवि ! कितना मधुर गान—  
 गूँज उठा जन-कवि विद्यापति-कठ से !  
 घोर ये महान् सत, देखो य कबीर हूँ,  
 गा रहूँ तुम्हारा गान रूपक में प्रम से ।

कबीर गगन गरजि बरस भ्रमी बाल गहिर गभीर ।  
 चहुँ दिशि दमक दामिनी भीज गस कबीर ॥

सतगुरु हम सँ रोन्नि करि, एक कह्या परसग ।  
 बरस्या बादल प्रेम का भीजि गया सब भग ॥

कबीर बादल प्रम का हम परि बरस्या भाइ ।  
 भतरि भीजी धातमा हरी भई बनराइ ॥

भ्रंवर कुजा कुरलिपाँ गरजि भरे सब ताल ।  
 जिन पै गाविद बीछुर तिनके कौन हवाल ॥

नना नीकर लाइया रहट वह निशि जाग ।  
 पपिहा ज्युँ पिउ पिउ करौँ कव र मिलहुग राम ॥

झिरिभिरि झिरिभिरि बरसिया, पाँहण ऊपरि भह ।  
 माटो गलि क जल भई पाँहण बोही तेह ॥

भारती राम स कबीर मिन पूण भक्ति भावना में ।  
 किन्तु देखो देवि ! यह कौन श्याम भक्त हूँ ?  
 भक्ति-मुख तत्र बल दावते महाकवि के  
 बोछा के स्वरा में गान करता हूँ प्रम से ।

य है मुरदास-जोकि मानस-दूगा से ही  
 श्याम धवि पान कर मुधि भूल बठ हँ ।



सूरदास सखी ! इत ननन तें धन हार ।

बिनही रितु बरपत निसि बासर सदा मलिन दोउ तार ।  
ऊरध स्वास-समीर तज भति सुख अनक द्रुम डारे ।  
दिसिन सत्न करि बसे बचन-खग दुख पावस के मारे ।  
सुमिरि-सुमिरि गरजत जल छोडत असु सलिल के धारे ।  
बूडत ब्रजहि सूर को राख बिनु गिरिवर घर प्यारे ॥

भारती आ गए श्याम ब्रज किंतु राम की भी सुधि  
एक महाकवि रेणु करता ह प्रेम से  
जिसन कि प्रेममय मानस के बीच में  
राम को कमल के समान सजा रक्ता ह ।  
व ह देवि ! तुनसीनास जा जन बाखी म  
राम की विरह दशा बणन ह करत ।

तुलसीदास वर्षाकाल मेघ नभ छाए । गजत नागत परम सुनाए ।  
लक्ष्मिन देखहु मोरगन नाचत वारिद पेख ।  
गूही विरति रत हरष जम विषण भगत बहु देख ॥  
धन धमड नभ गरजत धारा । प्रियाहीन डरपत मन मोरा ।  
दामिनि दमकि रही धन माही । खन क प्रीति यवा थिर नाही ।  
बरपहि जन भूमि नियराए । जथा नवाहि बुध विद्या पाए ।  
बुन अघात सहहि गिरि कसे । खल के बचन सत सह जसे ।  
सत् नती मरि चलि उतराई । जस धारहु धन खल इतराई ।  
भूमि परत भा डाबर पानी । जिमि जीवहि माया नपटानी ।  
सिमिटि सिमिटि जल भरति तनावा । जिमि मगुन सजन पहि आवा ।  
सरिता-जन जननिधि महुँ जाई । होहि अचन जिमि जिव हरि पाई ।  
हरित भूमि तून सकुल समुक्ति परहि नहि पय ।  
जिमि पाखड बात्तें गपुत होहि सत्-अय ॥

भारती दरान करो हे देवि ! ऐसे महाकवि के  
 जिनसे वृत्ताय हुई मेरी ध्वनि शक्तियाँ  
 काव्य में महाकवि ह भक्ति में सुभक्त हैं  
 जनता के मध्य प्रम धम में घुरीण हैं ।  
 वर्षा देवि ! मैं वृत्ताय हुई भाज से सुखी हूँ मैं  
 इन जन-कविया की सुन के प्रशस्तियाँ  
 इनके स्वरा में लीन होक हुई धय ह  
 इनकी सदव पूजा करती रहूंगी मैं  
 किन्तु

सरस्वती      हाँ हाँ बोला देवि !  
 वर्षा

कैसे कहूँ भारती !  
 क्या न कोई नारी-बूठ गूज सका मुझमें ?  
 ( सरस्वती की मद हसी )

भारती आ गइ स्वजाति पर ? देखो देखो देवि ! न  
 भक्ति की पयस्विनी सी प्रेममयी नारी को  
 जिसन प्रसन्न किया गिरिघर गोपाल को  
 बैसा गान भाज वह गा रही ह भयु से  
 भीरा सुनी मैं हरि भावन की आवाज ।  
 महल चढ़ि-चढ़ि जोऊ मोरो सजनी कव आवे म्हराज ।  
 दादुर मोर पपीहा बाल कोइल मधुरे साज ।  
 उमयो इद्र चहूँ निष्ठ बरस दामिनि छोडी साज ।  
 धरता रूप नवा नवा धरिया इद्र मिलन के बाज ।  
 मोराँ के प्रभु गिरिघर नागर बगि मिलौ म्हराज ।  
 सुनी म हरि भावन की आवाज ।

धर्या धय ! धय ! धय ! मोरों ! तुमने रगो है साज  
 सारी गारि जाति बी ! मैं तुमसे कृपाय हूँ !

भारती इस भाँति चलती है वाग्य की परपरा  
 जन भाषा कविया की ! कितने सुकवि हैं  
 जो तुम्हें कभी न कभी कविता मुनावेंगे  
 धीर निज वाग्य में तुम्हारी रिमिम्भित से  
 गान वे करेंगे नित्य नये-नये भाव से  
 तुमको करेंगे सग गीत-गुण-मण्डिता ।

धर्या मैं हुई कृताय देवि ! मरी यह वन्दना  
 प्रेम से स्वीकार करो ! तुमन ही वाणी दे  
 कविया को कोमल कला से सम्पन्न कर  
 साधना दी एसी वे पुजारी हँ प्रकृति के ।  
 देवि ! यह वन्दना की रागिनी हो मेरी ही  
 मद्र मेघ-स्वर से मैं करती प्रणाम हूँ ।

( हलके बादलो की गरज )



मन मस्त हुआ तब क्या बोले

[ रूपक ]

## पात्र

निर्देशक

सेठ धनपत एक नगर श्रृष्टी

सोमदत्त सेठ का मुनीम

नाथ-पथी साधू

चार मदिरा पीने वाले

मदिरा बेचने वाली

पहित पचानन पाडे

एक यात्री

निर्देशक मन मस्त हुआ सब क्या बोल इस धमर वाणी के गायक  
 सत कबीर हं जिन्होन धम और नाय दोनो क्षेत्रों में क्रान्ति  
 उपस्थित की और ऐसे प्रयोग किये जो सत्य की कसौटी पर  
 आज भी कवन की लोक की भाँति उज्वल और अमिट हैं।  
 पन्द्रहवीं शताब्दी का युग। चारों दिशाओं से झोके उठे और  
 बीच में तिनके की जसी दशा होती है वही ही दशा विविध  
 धम सिद्धान्तों के बीच में यकित की हो रही थी। तमो  
 सत कबीर न एक छोटी सी साखी कह दी—

उठा बगूला प्रम का तिनका उठा अकास ।  
 तिनका तिनके से मिना तिनका तिनके पास ॥

उन्होंने उन हवा के बगूला की प्रेरणा प्रम में देखी और  
 यकित रूपी तिनके जसी सामान्य सत्ता में ब्रह्म की सत्ता का  
 शकेत किया। एक ओर अपने कम-काठ को लेकर वण्णव धम  
 या तो दूसरी ओर हठ-योग को लेकर नाथ सम्प्रदाय था। एक  
 ओर रोना-नामन की विधियाँ को लेकर इस्लाम था तो दूसरी  
 ओर मात्र और अभिचारों को लेकर कौल सम्प्रदाय था। प्रत्येक  
 धम के साथ बाहरी मायताएँ थीं। यद्यपि सब धर्मों का सत्य  
 सत्य का पहिचानना ही था तथापि इन बाहरी मायताओं न  
 उनमें भ्रम उत्पन्न कर लिये थे और परस्पर द्वेष के बीज बो  
 लिये थे। मत कबार न बाहरी मायताओं को जड़-मूल से  
 उखाड़ लिया और एक मात्र सत्य की अनुभूति उनके सामने  
 उभर आई। सत्य और धम का मूल विश्वास में है। विश्वास  
 के अन्ति में प्रेम है और अन्तमें ध्यान। कबीर न अपने  
 सत्यगत धम की भूमि में प्रम और ध्यान के पुष्प विकसित

किय। सत्य क प्रति प्रेम और मान-दही रहस्यवा की  
 अनुभूति के अंग ह। इसीलिए उन्होन इस प्रेमान-द की  
 अनुभूति में कहा—

मन मस्त हुआ तब क्या बोल

हाँ एक बात और ह। सत कवीर न प्रेम और मान-द  
 की जितनी बातें कही व सब जीवन की सामान्य गतिशीलता  
 से हो की ह। उलान कल्पना स कोई काम नहीं लिया। उनकी  
 ऊँची मे ऊँची अनुभूति जीवन की सहज और स्वाभाविक  
 घटना में बिखरी पड़ी ह। जिस तरह छोटी सी चीटी धूल म  
 बिखरे शकरा के कण को चुन लती ह उसी प्रकार सत कवीर  
 ससार में बिखरी हुई मान-द की अनुभूतिया को ग्रहण कर  
 ने ह और गम्भीर मे गम्भीर बात सहज उदाहरण से कह  
 देत ह।

श्रेष्ठी धनदत्त ( दबे कठ से ) कोई यहाँ ह तो नहीं सोमदत्त ?

सोमदत्त मैं देख जाता हूँ। ( कुछ क्षण बाद ) कोई नहीं ह ! काह  
 महाराज ?

श्रेष्ठी भर बड़ा गुप्त बात ह। किसी मू कहन की नहीं।

सोमदत्त मुझ भी नहीं ? भर महाराज। मैं तो भापी का हूँ मैं तो  
 बान्सी नही। म ता गुप्त बात की इकाई समझता हूँ श्रेष्ठी  
 जी !

श्रेष्ठा भर ता मैं तुझ ता कही दूँगा पर किसी मू कहन की  
 नहीं ह।

सोमदत्त तो श्रेष्ठी जा मैं किसी के सौँहो गान ता जाऊगा नहीं सिर्फ  
 आपकी बजाना जानता हूँ।

श्रेष्ठी तो किसी मू कऱिया मती।

सोमदत्त भर स्वाम कऱो महाराज ! भला जुवान प भा सकती है ज

बात ?

श्रेष्ठी अचछा तो फिर खबरदारी स दखना ! देखो ! ( डिब्बो खोल कर दिखलाता है । ) जे का ह ?

सोमदत्त ( चौंकर ) भरे श्रेष्ठा जी ! वाह ! जे कहीं से पा गये ?

श्रेष्ठी ( डाँटकर ) भरे जोर सू नही जोर सू नहीं ! दीवार भी कान की कच्ची और मूढ़ की पक्की होती है ।

सोमदत्त छिमा करो श्रेष्ठा जी ! ( धीरे से ) वाह ! क्या चमक ह । मूरज की किरन भँक रही ह घ-द्रमा करवट लकर बढा जान पड । वाह क्या कहना ह । पर ज आप पा कहीं से गये ?

श्रेष्ठी ( मह की हसी दबाते हुये ) नइ बताऊंगा नइ बताऊंगा !

सोमदत्त भर, श्रेष्ठी जी ! बतान से इसक पख थोड निकल आयेंग । और गुप्त बात की वार्ता तो लक्ष्मी जा की क्या ह क्या ।

श्रेष्ठी ( आँखें फाड़कर ) ऐं क्या ह, क्या ? तो कहें ? पाम भा जाओ ! जरा पास ! ( फुसफुसाहट के स्वर म ) किसी सू कहना मती । एक गाहक आया था गाहक ! हाथ में पहन था, ये भँगूठी । हमन नाक सिकोड के कहा—वाह, ब्यापारी जी ! लखपती होय के काँच पहरे हो काँच ? उसने कही—श्रेष्ठी जी ! हीरा ह हीरा ! हमन कही—नाक रुपये का दाँव ! लच्छमी इस पार मा उस पार । हाँ ! काँच, निबक काँच । सक्ते में भा गया बपारी । जोहरी बुनाया । बोई लाला बुलाखी लाल । धपना आत्मी । दिन को रात कह दे । मेरी भाँख की कोर दबी देखी क बोना—बपारी जा इसमें लच्छमी नहीं ह ! ज तो मुह दखन का शीशा ह शीशा । तो वो भी पासपान से गिरा ! बस पाँच हजार का हीरा पाँच रुपये में ठोक लिया !

सोमदत्त वाह श्रेष्ठी जी ! क्या शीशा छिन्नाया ह ! तो वो गाहक दे गया, पाँच रुपये में ?



श्रेष्ठी भरे, झगूठी उतार के फेंक लो उसन । पाँच रुपये तो उसकी खातिरों में खच कर लिये थे । सोने की कीमत रोकड जमा ए रोकड जमा ।

( नपय्य से भलख निरजन भलख निरजन ॥ )

श्रेष्ठी भरे कोई आया । इधर लामो झगूठी इधर लामो । हाँ अब किसी को क्या मालूम

सोमदत्त भर ये तो बठके में ही चला आया ।

( नाथ पथी साधू का प्रवेश )

नाथ भलख निरजन ! ( हृत्ता से ) बच्चा ! तेरा उपकार करन आया हूँ ।

श्रेष्ठी स्वामी जी ! हमार बड भाग !

सोमदत्त हाँ उपकार करना तो सता का सुभाव ठहरा ।

नाथ बच्चा ! बोन ! तू क्या चाहता ह ? भनख भनख भनख ! जाग मच्छर गोरख आया गोरख आया गोरख आया ! बान क्या चाहता ह ?

श्रेष्ठी महाराज !

नाथ तुलाह का मून दू भछूने को छून दूँ निपूने को पूत दूँ । सच्चा अबधून हूँ ! गिन को सोय रात का चन आकाश का बिरवा पानान में पन उजन में अघर का दीपक जन ! भलख निरजन ! बोल !

श्रेष्ठी स्वामी जी ! आप ता सबमच ब महात्मा ह ।

सोमदत्त तीन राव में घूमन ह काह न मगात्मा हाय ।

नाथ देल में एक बान पूछू ? पूछू ? तर पास हीरे की झगूठी ह ?

श्रेष्ठी ( घबराकर ) अब हीरे की झगूठी ह ? हीरे की झगूठी ता

सोमदत्त हीर का झगूठी कहाँ है ?

नाथ श्रेष्ठी घनदत्त के पास । क्या ? हीरे की भंगूठी ह ? सच बोल नहीं तो ( हाथ उठाता है । )

श्रेष्ठी ( घबराकर ) नहीं, नहीं स्वामी जी ! ह ! ह ! हीरे की भंगूठी ।

नाथ घाटा पहर छतीस जोगनी गुह की कर खवामी ।

माया की काया गहि राखा ऐसी मरी कासी ॥

बोल होरे की भंगूठी ह ?

श्रेष्ठी ( कांपते हुये स्वर मे ) ह स्वामी जी ! ह । अब आपसे क्या छिपा ह ?

सोमदत्त बाह स्वामी जी ! हीरे की भंगूठी में कितना दूरकी कौड़ी लाय ।

नाथ ( जोर से ) भलख ! सता की डयोड़ी में हसना बाल में फनना । माया मोड दे जग का बचन तोड दे । हीरा काँच समझ के छोड दे !

श्रेष्ठी ( डरते हुये ) ह, महाराज !

नाथ गुपत मान ह गुपत माल ह मन्वन्तर का जाल ह, गोरख की बाल ह । बोल दूना कर दूँ इसे ?

श्रेष्ठी स्वामी जी ! दूना हो जायगा । यह हीरा दूना हो जायगा ?

नाथ बच्चा ! गोरख का नाम ! त्तिन को दूना रात चौगुना ! क्या समझा ! ( सोमदत्त की ओर देखकर ) इसकी माँखा में माया है । बाहर गोरख ! कहीं घुप कहीं छाया ह । बच्चा ! दून का काय भवेन में । गुह की धून का वाम अकेले म । इगकी ( सोमदत्त की ओर सकतकर ) यहाँ से जाना पडगा ।

श्रेष्ठी ( लालच से ) एक हीरे के दो हीरे हो जायेंगे ?

नाथ ( जोर से ) भलख निरजन !

श्रेष्ठी माँछा सोमदत्त ! जाओ स्वामी जी कहत है तो जाओ !

नाथ बस्ती न सुन सुन न बस्ती भ्रम भ्रमोच्चर ऐसा ।  
गगन मडल में बालक बोल ताका नाव धरोग कसा ?  
अलख निरजन ।

सोमदत्त भ्रष्टा स्वामी जी ! मुझ डर भी लगता ह । म जाता हू ।  
परणाम ।

( प्रस्थान )

नाथ ( अटहास करके ) चला गया न ?  
भद्र देखिया देखि विचारिवा भ्रष्टि राखि बचोया ।  
पातान की गगा ब्रह्माड चलाइया तहाँ विमल रस पीया ॥  
कहाँ ह तरा हीरा ?

श्रेष्ठी ( हीरा निकालकर ) य ह स्वामी जी !

नाथ जसा नाथ का भ्रमोल नाम तमा भ्रमोल हीरा ।  
प्रेम की मन्मथार दूबा गग जमुन तारा ॥  
तून इसको तिन में बीस पचीस बार खोला ?

श्रेष्ठा हाँ स्वामी जी ! तिन में बीस पचीस बार तो खोला ही होगा ।

नाथ अलख निरजन ! दस बारह भ्रामिया से इसकी बात कही ?

श्रेष्ठी हाँ स्वामी जी ! दस-बारह भ्रामिया से जरूर कही होगी ।

नाथ ( जोर से ) कहा होगा नही ! कही ।

श्रेष्ठी ( कांपते हुए ) हाँ स्वामी जी ! कही ।

नाथ ( अटहासकर ) दस-बारह भ्रामियो से भीर हर एक से  
कहा विसा से कहना मत । ए ! ( अटहास )

श्रेष्ठी हाँ स्वामी जी ! कहा तो ऐसा ही ।

नाथ भ्रष्टा बतना मन्म वस पता चला !

श्रेष्ठा भव स्वामी जी ! यह मैं कैसे कहूँ ? उहाँ दस बारह भ्रामियों  
में से किसी न

नाथ ( चीखकर ) ध्यान मन्मन् गोरख की सुत्र में ज्ञान और  
भाषा मन्मन् का ध्यान । नाथ का भ्रमण करता ह ? उलट

दूंगा—पलट दूंगा । गुप्त माल का ढका, मन में रहने काई  
सका । पूत मछिन्दर का गुह गारख बका ।

श्रेष्ठी नहीं स्वामी जा । छिमा काजिय ।

नाथ गुह गारखनाथ हिमानय में दन्तू—गुह मछिन्दरनाथ छिपत में  
दखू धीर थोपा का हारा न दन्तू ! बात उनतू दूँ तेरा  
सिहासन ? गुप्त माल लेते की मजा द दूँ ? माया का नाक  
का दूँ ? श्रेष्ठी को बारह वा दू ?

श्रेष्ठी नहीं स्वामी जी । आनक चरनों का नास दू ।

नाथ अच्छा अच्छा आग्निनाथ के माये प गगाजल । एक घान में  
गरम दूमरा घान में मातल । आदरा आग्नि, आग्निनाथ ।  
आदरा कहीं हूँ तेरा हारा ?

श्रेष्ठी ये रहा, स्वामी जी !

नाथ इसे रख दे भूमि पर । पृथिवी पृथिवीपति का जाने । दान्ति  
जाता भीतरि धान । बात एक हीरा का दो हारा हो जाय ।

श्रेष्ठी एक हीरा का दो हीरा हो जाय ।

नाथ बात—भरी सक्ति गुह की भक्ति ।

श्रेष्ठी भरी सक्ति गुह की भक्ति ।

नाथ एक हारा का दो हीरा हो जाय ।

श्रेष्ठी एक हीरा का दो हारा हो जाय ।

नाथ भाँस बर कर स ।

गगत मदन म प्रया कृपा तहाँ इमृत का बापा ।

मुगरा हाँ सा भर भर पाव निगुरा जाइ नियाया ।

सब के जार से एक हीरा दो हीरा हो जाय !

सब बने र प्रवधू । सब बने । सब का जाय देख में

मन में । धीर न बर दू घषा । आर दून मर कहे दिन प्राँस

सोनी तो प्रया । जनम जनम का धरा ।

श्रेष्ठी स्वामी जा । हमन प्राँस बँब कर जा ।

नाथ खोलगा तो नही ?

श्रेष्ठी नही स्वामी जी ।

नाथ हीरा तरे सामने ह । भाँख बन् कर ल । सबद जोर से मन भर ले । एक होरा दो एक गोरख दो मछन् र एक आकाश दो पाताल एक बोज दो पेड भाँख बन् ह ? नाथ पीछे हट सबद भाग बने । हम पीछे हटेंग सबन् भाग बन्गा । भाँख बन् ह ?

श्रेष्ठा हाँ स्वामी जी ।

नाथ ( जोर से ) भलल निरजन ! प्रगट की गाय प्रगट में बूदे गुप्त का बन्वा गुप्त में जाय । भलल निरजन !

चार डग भागे घरु एक डग पाछे ।

हीरा दो बाँध लाऊ मूद नयन भाछे ॥

मूद नयन भाछ भनल निरजन !

चार डग नाथ पीछे हट सबद भाग बढ़े ! चार डग ( भागे बढ़ता हुआ ) एक दो तीन चार ( धीरे धीरे गिनने की ध्वनि दूर होती जाती है । )

श्रेष्ठी ( धीरे से ) भव भाँखें खोनु स्वामी जी ?

नाथ ( दूर से बोलता हुआ ) धोर न कर तू घघा । मर बहे दिन भाँखें खाना तो जनम जनम का घघा ।

( अधिक दूर गिनने की आवाज आती है । )

श्रेष्ठी ( कुछ जोर से ) भव भाँखें खालू स्वामी जी ?

( कोई उत्तर नहीं मिलता । )

श्रेष्ठा ( कुछ और जोर से ) भव भाँखें खालू स्वामी जी ?

( कोई उत्तर नहीं मिलता । )

श्रेष्ठी ( जोर से ) नानना हूँ स्वामी जा ! एक हीर से हो गए दो ! ( भाँखें खोलता है । ) हाय ! स्वामी जी कहाँ गए ! ( दान क स्वर में ) धोर धोर मरा हीरा कहाँ गया ?

( जोर से पुकारकर ) भरे, सोमदत्त ! दौड़ो-दौड़ो म लुट गया । भर, वो स्वामी जा घतघर्षान हो गए मेरा हीरा भी ल गए ! हाय मरा हीरा ! भर स्वामी जी ! हाय, हीरा जी ! म तो लुट गया !

( सोमदत्त का प्रवण )

सोमदत्त श्रेष्ठी जी क्या हुआ ।

श्रेष्ठी हुआ क्या । लालच मुझे खा गया । स्वामी जा ने एक हीरा को दो करन क लिए कहा । हाय । भाषा भी नहीं रहा । हाय । मरा हीरा ! स्वामी जी न अपने जाग बल स भाये म ठाक लिया ।

सोमदत्त स्वामी जा ता मच्चे मालूम पड़ते थ श्रेष्ठी जी । हीरा ही नेकर गायब हो गए । अब किस पर भरोसा किया जाय

श्रेष्ठी अपनी बकूकी पर । भरे, दौड़कर स्वामी जी का पता ल हारा लवर चम्पत हा गया ।

सोमदत्त अभी जाता हूँ, श्रेष्ठी जा ! पर एसा भी तो साचना चाहिए कि उन्होंने आपको माया-मोह स छुड़ा लिया ।

श्रेष्ठी भर, माया-माह क घच्चे ! भाड में डाल, अपना ग्यान । मरा ऐमा अन्धा हीरा-जैसे धरत खोल के मुझे देखता था । हाय ! ल गया, वह जागडा ।

सोमदत्त अच्छा, म देखता हूँ जावे । ( प्रस्थान )

श्रेष्ठी तू क्या देखगा ! उस जाग का शरारत में तू भी शामिल होगा ! नहीं तो उसे पता कैसे चलता ? हाय । हाय ! मरा हीरा ! मन उसे दूमरो को निचलाया ही क्यों ! उस भे को क्या खोता ! हाय हीरा हाय हीरा !

सोमदत्त ( नेपथ्य से ) भर श्रेष्ठी जा ! य जोगडा वही गाहक था जिसे घोखा देकर आपन हारा हथिया लिया था । वही भेस

बल्ल कर आया था और अपना हीरा लकर चम्पत हो गया ।

श्रेष्ठी हाय हीरा चम्पत हाय हीरा चम्पत ।

निर्देशक यहो हीरा ईश्वर का नाम ह । यह घाखे से नहीं लिया जा सकता उसका यापार नहीं किया जा सकता । उसका खिलावा कमा ? दुमरा पर उमका रहस्य खोलना कमा ? सन कबीर न कहा ह —

(नेपथ्य मे सगीत का स्वर)

हीरा पाया गाठ गठियायो बार बार वाको क्या खोले ?

मन मस्त हुआ फिर क्या बोल !

मन मस्त हुआ फिर क्या बोल !



## दृश्यांतर

[ एक मदिरालय का दृश्य । कुछ लोग शराब पीकर भूम रहे हैं । कुछ लोग तिपाण्यों पर बठे हुए शराब के नग्ने के मजे ले रहे हैं । कुछ लोग आपस म मस्ती से बातें कर रहे ह । दूकान के मध्य में मदिरा बेचने वाली की खगट है जो इस वकत वहाँ नहीं है । दूर से मस्त बातों की भनक सुनाई पडती है ।

एक ( भूमते हुए स्वर में ) जरा ये शर सुनना भाई !

साकी तू न्यि जा मय जिस जिस को न्यिा चाहे ।

सन ( दुहराते हैं ) साकी ! तू न्यि जा मय जिस जिसको न्यिाचाहे ।

एक घर-मब में वो सोहागिन ह जिसको कि न्यिा चाहे !!

( वाह वाह क्या शर कहा है ! बहुत खुब, ! 'बहुत खुब ! की खनियाँ )

सब 'सब में वो मुग्धगन है, जिसको कि पिया चाहे ।  
 दूसरा हाजरीन ! जरा मेरे शेर की भी दाँ दीजिए ! कहता हूँ कि  
 तू आज दुभा साकी गर मेरी लिया चाहे ।  
 तीसरा बाह ! किस मन्त्र से बात कहा गई ह—( बुहररले हुए )  
 तू आज दुभा साकी गर मेरी लिया चाहे ।  
 दूसरा भरे ली इम डब से पिया दे मय पीते हा पिया चाहे ।  
 (बाह, बाह की धूम—बाह ! पाठ हा पिया चाहे  
 क्या बात कही ह—पीत ही पिया चाह ! )  
 तीसरा अब जरा इधर भा शीर करमाए ! कहता हूँ कि  
 दिल पास था जो मेरे( हाय उठाकर ) मुनिवे हूजूर !  
 दिल पास था जो मेरे शिबर को लिया मन ।  
 अब जान भी हाजिर ह जाना जो लिया बाह ।  
 (बाह बाह की ध्वनि) घर जान ता उसन पहल ही ले ली ।  
 (छटहत्हास)

चौथा हूजूर ! मेरे हाल पर मो रहम हो ! य कहता हूँ कि  
 मय पीत ह मस्तान हम इरक क दीवान !  
 मय बाह ! क्या बात कहा ह—मय पीत ह मस्तान, हम इरक के  
 दीवान !

( सब की सम्मिलित आवाज )

चौथा मय पीते ह मस्ताने हम इरक के दीवान ।  
 कान को तू मखाना कर दे  
 ( सब सम्मिलित स्वर म ) जा किया चाहे ॥  
 बाह बाह मिया ! तुमन तो शरब कर लिया । कावे को  
 मखाना बना लिया !  
 ( सुभान अल्लाह सुभान अल्लाह की सम्मिलित ध्वनि । )  
 पहला भई, मय का डिक निच मस्तो स किया गया ह लकिन वो मय



क्या जो जबान पर आकर गल तक न पहुँच जाय ।

दूसरा सिफ गले तक नहीं दिल और दिमाग तक । लाना भई, सागर और पमाना ।

तीसरा लकिन साकी कहाँ ह ? सिफ काली काली बोटलें दिखाई देती ह !

यह काली काली बोटलें जो ह शराब की ।

रातें ह उनमें बर हमार शबाब की ॥

चौथा बात तो खूब कहो लकिन उन राता को रोशन करने वाली साकी घाए—बाकी सब चला जाए ।

पहला हाय ! सात्री का घर भी कितनी दूर ह !

काश ! घर तेरा भरे घर के बराबर होता ।

तू न घाता तेरी घावाज तो घाया करती ।

दूसरा सही बात कहते हो दोस्त !

न जान बात यह क्या ह उसे जिस त्ति से देखा ह ।

मेरी नजर में दुनियाँ भर हसी मालूम होती ह ।

तीसरा म्या तुम्हारी नजर को क्या कहें—लकिन नजर सम्हाल के डाला करो—

पन्धी सूरत भी क्या बुरी श ह

जिसन डाली बुरी नजर डाली ।

दूसरा भर भरे हाल पर भी तो नजर कर कि

तेर हुस्न की हमने इरजत बढ़ा दी ।

जमान की नजरों में खुद को गिरा कर ।

चौथा और भरा हाल तो यह ह कि

तरी गनी में घाके यू सों गए हे दोनो ।

त्ति ममको डूबता ह मैं त्ति को डूबता हूँ ॥

पहला घरे भरी हालत ता इमम भी गई बीनी है दोस्त !

जिंदगी ये किसी मुफलिस की कबाह जिसमें  
हर घड़ी दद के पबद लगे जाते ह ।

दूसरा लेकिन दास्त ! यह भी कोई जिंदगी ह ?

यह भी कोई जिंदगी ह जान हम खोने रहें ।

लोग हम पर मुस्कुराएँ और हम रोते रहें ?

तीसरा ( सहसा ) देखा—सुनो—वह साकी की आवाज आ रही ह ।

चौथा साकी की ? यह ता घुपघमा की रुन्धुन ह । ( रुन्धुन  
होती है । )

पहला साकी ही नाचती हुई आ रही ह ?

दूसरा हाँ हाँ, वही तो आ रही ह !

चौथा लेकिन वह नाचेंगी क्यों ?

तीसरा म्याँ ! वह हम सब लोगों से जियाह खुश रहना जानती ह ।

पहला और भाज ता उसन भी पी ह—ऐसा मालूम होता ह ।

दूसरा सब दिन ता वह हमें पिलाती ह भाज उसने खुँ ही पी ली  
तो क्या गुनाह किया, उसन ?

तीसरा गुनाह ? भरे हम पर करम किया ह करम, उसने । पीकर  
पिलायगी तो शराब का मज्जा ही दूसरा होगा ।

पहला भाज उसने दो मन शराब पी ह । एक अपने मन भर और  
दूसरा हमार मन भर ! ( खिलखिलाहट की हसी )

( नाचते हुए साकी का प्रवेश )

साक्री ( तरलुम में ) बहूनी के साज पर गान का मौसम आ गया ।

आ गया पीकर बहक जाने का मौसम आ गया ।

सब सुभान भल्लाह ! सुभान भल्लाह ॥

साक्री लिखकर हमार नाम जमीं पर मिटा दिया ।

उनका या खल खाक में हमको मिला दिया ।

चौथा क्या बात कही ह—

उनका था खल छाक में हमको मिला दिया ।

सब सुभान अल्लाह ! सुभान अल्लाह !

दूसरा गजब है ! आज ता साकी ऐसे बखुनी के आलम में है  
गोया सागर से भी म छलक उठी है ।

साकी ( भावते हुए गाती है । )

कोई देख मरा जुनून तलब  
उनको अपना बना रही हूँ म  
शायद अब इरक हो गया कामिल  
गम में लज्जत सी पा रही हूँ म  
देखिए किम सितम का हो आगाज  
फिर उन्हें याद आ रही हूँ म ।

( रुककर )

जो मैं एना जानती प्रीति किय दुख होय ।  
अरे नगर दिंदोरा पीटती प्रीति करो जिन कोय ॥

( गात गात बेहोश हो जाती है । )

प्रीति... करो जिन कोय ।

निर्देशक इस प्रकार आमा जब तक जीवन की रगोनिया में डूबी  
रही वह साझा बनकर दूसरा को शराब पिलाती रही वह  
जब स्वयं हरि क प्रेम में मस्त हो गई फिर पितान का ध्यान  
कहाँ ! फिर तो वधर आगाज के खुन ही पीने लगे । पीकर  
मस्त हो गई ।

( नेपथ्य में खीर का स्वर )

हलकी था जब चना तराज पुरी भई तब क्या तोले ।  
सुरति बनारा भई मतवारी, मन्वा पी गई दिन तोले ।

मन मस्त हुआ तब क्या बोले ।

मन मस्त हुआ तब क्या बाले ॥

## दृश्यान्तर

( एक ध्वजतरे पर हरि गया । तीन-चार भक्तगण बठे हैं । पडित पचानन पाएडे जी प्रवचन कर रहे हैं । पहले शब्द और फिर घटा बजने की आवाज आती है । फिर जय ध्वनि—शकर भगवान का जय ।

दम भोल की जय ।

स्वामी ना महाराज की जय । )

पचानन राजना । अब प्रायना जो ह शो प्रारंभ करत है—

( स्वर से )

कर पूर गोर कइ नाव तार ।

शिन शार अशार भुज गेंद हार ।

शान बशन्त हो दया र बंद ।

भाव भवना शहि तुम नमामी ॥

राजनी । यहाँ जा ह शो गुशार्द जा महाराज भवानी जी की अशुनि करे ह । कश करे ह जो ह शो 'कर पूर गोर । कर कलि हाय शो शम्पूछ रूप श गोर ह । भवानी जी बहुत गोरी ह तो उनक हाय भा बहुत गारे ह । निन्हीं से गुशार्द जी महाराज कहत ह कि कइ नाव तार कि हमारी नाव जो ह तिशको शशार क अब शागर के पार लगाकर हमको तार देवो । क्याकि शशार जो ह शो अशार ह । शिनशार अशार और ह भवानी । तुम जो हो शो अपनी भुजाभा में गेंद कहिए ब्रह्माण्ड शो तिनक हार पहन हो । जब गेंद की तरह ब्रह्माण्डा के हार तुम अपनी भुजाओं में धारण किये हो तो ये अशार शशार तुम्हार सोझी क्या है ? और आपके यहाँ तो, शान बशन्त अर्थात् हमेशा ही बशन्त जालु धार्द रहती

ह । तिरा करके जो आपके मन में जो ह शो, दयाक बदे दया ह उसी से भक्तगण आपकी वन्दना करते ह और हे भवानी ! तुम अपन भक्ता के भाव कुभाव को सह जाती हो— भाव भवानी सहि तुम । इसलिए हम आपको नमामी करते ह अर्थात् प्रणाम करते ह ।

एक भक्त बाह महाराज आपन बडी अच्छी टीका की । कितनी अच्छी तरह से समझाया जैसे दपन में रूप लिखा गया ।

दूसरा भक्त महाराज । यह बात समझ में नही आई कि भवानी जो भजामा में कैसे हार पहनती ह ?

पचानन अभी रहते पर नहीं ग हो भगत जी ! पचानन जो ह शा धीर धीरे ही दूर होता ह जैसे दीमक जो ह शो काठ को धीर धीर ही काटती ह । अरे भगत जी ! य तो दुनियाँ क लोग ह जो गन में हार पहनत ह । भवानी जो जो ह शो उनका शरीर जो ह शा दिव्य ह । उनके तो चरनार बिन्दु तक माला पहन शक्त ह जो ह शा भजा ता भुजा ह । विध्याचल की अष्ट भुजा देवी को देखा ह ? हरक भुजा में जो ह शो कल्प विरघ की माला झूलती रहता ह ।

दूसरा भक्त शका का समाधान हा गया महाराज !

पचानन मुझ तुमन कोई मामूली पढित शमभा ह जा ह शो अरे मैं पचानन हूँ पचानन । कुछ भक्त लोग पचानन भी कह देते ह क्योंकि मैं बड श बड पढित श पजा लडा शक्ता हूँ । जब अपना पजा बढ़ाना हूँ ( दिखलाकर ) इसलिए तो बड से बड पट्टवान पढित जो ह शा न न कहन लगते ह । शो पचानन ता नाग टीक जा है शा कहत है ।

तीसरा भक्त एक बात और समझा लीजिए महाराज !

पचानन यह बरता में पचानन का अर्थकार बन्त फला हुआ ह । मुझे

अपने ज्ञान का पत्रा फिर बचाना पड़ेगा ।

तीसरा भक्त आपसी बड़ी कृपा होगी महाराज । ये जा आपने भुज गेंद हार' में ब्रह्माण्ड को गेंद क... िया सा कस ? गेंद तो छोटी होती ह और ब्रह्माण्ड बड़ा । और गेंद को माला कैसे होती ह '

पचानन माँव रहत हुए भी तुम उशरो काम नहीं लते । हाय ! हाय ! तुम कश भगत हो ! गेंद का माला म तुम चलक गए ! जो ह शो अरे तुमन गंदे का फूल देखा ह ? गेंदे की माला देखी ह ? ता यहाँ गेंद जा ह शा गेंद क फूल श मेल खानी ह जो ह शा ! शमभ ?

तीसरा भक्त य बात आपन ठोक कहा पंडित जी ।

पचानन दूसरी बात भी शमभ ला जिशरा मल न जायो । जो ह शो । तुमन भूगोल की किताब पढ़ी ह । हमन पढ़ी ह । उशमें दुनियाँ गेंद की तरह ह कि नहा ? तो भुज गेंद हार का प्रथ इश तरह शमभना प...गा कि गेंदे के फूल को खुशबू लिए हुए गेंद की तरह ब्रह्मांडा की माला भुजाया में ह । अब शमभ गए ? भवानी को गेंदे का फूल पश... ह ।

तीसरा भक्त बिलकुल समभ में धा गया पंडित जी ।

चौथा भक्त पंडित जी ! आप मस्तुत म ता धावाय हाने ?

पचानन बच्चा ! तो आप लाग मेरा परीक्षा, जा ह शो ले रहे ह । यहाँ भगवान का भयैरा कैना हुमा ह । अब इस नगर में मैं बिलकुल नहा रहूँगा । यहाँ तो डमड डमड डमड ज्वलल्लाट फट्ट पादुके लोग पूछने लग । अब पूछो पादुके कसो फट्ट बोलती ह ।

पहला भक्त नहीं महाराज ! आपका बोलना ही काफी ह । इन लोगों के प्रपराध के लिए मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ ।

पचानन तुम्हारे कारन ही में रुका हूँ नहीं तो अभी तक यहाँ श जो हूँ श चला जाता। गोशाह जी न भी कहा हूँ मो भी विभी पराभी कारन। यही कारन हूँ।

पहला भक्त अच्छा तो मैं इन लोगों को यहाँ से हटा देता हूँ। भाइयो! तुम लोग यहाँ से जाओ।

चौथा भक्त अच्छा बात हूँ। तुम्हीं इनका ज्ञान सुनो। (दाकी लोगों से) चला भाइयो! इन दाना को पजा लगान दो।

शेष लोग चलो चला कुरती लडत हूँ कि कथा बाँवत हूँ।

(प्रस्थान)

पचानन देखा य लाग पायनागा करके नहीं गए।

पहला भक्त मूख ता हूँ ही य लोग।

पचानन यथाय में बड़ मूख हूँ जो हूँ शो धम में विश्वास नहीं हूँ। चल गए अच्छा हुआ भव कहा जाने मरा मन शान्त हुआ। तुम बठ के अपना शका समाधान करो।

पहला भक्त म राज आपका स्वरूप शतना जिन्य हूँ कि आपको देखते ही मरा शकाए आपस आप समाधान हो गई जैसे अच्छे तरन वाल के हाथा के नगन स तानाद का काई फट जाती हूँ।

पचानन वाँ वाँ तुम तो शक भगन हूँ जो हूँ शो बहुत अच्छी बात कहते हो।

पहला भक्त आपका आशावाँ हूँ मन्ताराज! आप कहीं से आ रहे हूँ?

पचानन मरो क्या पूछत हो भगत! बन्ने दूर श आ रहे हैं आत्माराम जो हूँ शो। आ हूँ शो। आरकापुरी। पहन गए आरकापुरी वाँ वाँ विश्व भगवान मन्ताराज करा के बठ गए शमु र के विनार। अब जा बन्ने कि क्या बन्ने गए शमन्त के विनारे ता शमन्त ला जा हूँ शो—महाभारत का गर्मों को शान्त करने के लिए। बड़ा गर्मों था महाभारत में। आग बरसती थी रात

घोर दिन । अग्नि बान एसे चलत थे कि आशमान में उनालड़ उजाला । घर रात और न्ति का फग्व घाड मानूम होता मा । वा ता शमका लडाई तव बन् हाता था जब अग्नि-वान खतम हा जाते थे । दूसर दिन फिर अग्नि मान चलाय जात थ ।

**पहला भक्त महाराज ।** आपके कहन स एसा मानूम होता ह कि आपन महाभारत का सडाई दखी ह ।

**पचानन** भर जे शव भगती का प्रताप ह जो ह शो ।

**पहला भक्त** क्या कहना ह महाराज । फिर द्वारकापुरी से आप वहाँ गए ?

**पचानन** द्वारकापुरी श गए रामश्वरम । अग हा । रामेश्वरम् में जा धनुष कोटी ह तो ऐसी धनुष का काटी खिची हुई ह जसे राम न भभा रावण को मारा ह ।

**पहला भक्त** महाराज । वहाँ से कुछ लाए ?

**पचानन** भरे भगत जा कयाकुमारी की बालू । हाय, हाय, जरा चावल क दान । हाय । कयाकुमारी का ब्याह नही हुआ जा ह शो तो ब्याह का शव चावल बिखर गिया और वही जो ह शो इतन बरसा में सूख क रत हा गया । हाय, हाय ।

**पहला भक्त** सचमुच सूखा हुआ चावल मालूम होता ह । इसे खा लू महाराज ?

**पचानन** भरे भगत ! इसके खाने वाले और जो ह शो इस हजम करन वान लाग भा चल गए । अब तो बरा परनाम कर लो परनाम जो ह शो ।

**पहला भक्त** परनाम महाराज ! आपको और इन आवसा को ।

**पचानन** फिर उगक बान गए जगरनाथ । तो ह शो, बाह । कशो मूरत ह । कर विनु करम कर विघ नाना । गोशाई जी कट गए हैं । हाय नहीं ह प हजार हाथों श चावल बाँटत है बाह । बाह जो ह शो जगरनाथ का भान खाव शाता जात ।



**पहला भक्त** आप घब्र ह महाराज ! आपके दराना से मुझे घर बठ तीरथों का पुत्र परताप मिल गया । कित्ते दिन लगे होयग सब जगह जान में ?

**पचानन** घर सब जगह जा ह शो थोड जा पाया है प्रभा जो ह शो सभी वटरोनरायन श्वामी जी की तरफ जाना ह । तब चारो धाम होयगे ।

**पहला भक्त** आपन बडी तपस्या करी महाराज ! चारो धाम करन म बड त्रि लगत ह ।

**पचानन** सब भगत जी ! इम एकाशी को पूर ग्यारह महीन हो जायग जो ह शो । सब भगवान अपन हूँ सब भगवान अपन । श्री रामश्वरम में हमारी चोरी भी हो गई । कोई भागवान हमारी भोली लकर चना गया । सब भगवान अपन ! घर जिरन त्रिया ह वह ने ल तो हमारा क्या बश ! हमारा क्या बश जो ह शा !

**पहला भक्त** और महाराज ! कहत ह कि भगवान हमार मन में ह फिर बाहर जान स क्या फायदा !

**पचानन** घर ता फायदा क त्रिए भगवान की पूजा करत ह जो है शा ! फिर भगवान क ी नगी ह । सब जगह ह फिर भगवान न तारथ क्या बनाए ? जो ह शो तीरथ बनान का मनबल जे कि वही जाक घरम करा । घर बठ कहीं घरम हाता ह ? घरम हाता ह मन्तन-मशक्कत श ।

**पहला भक्त** मन्तन मशक्कत स घरम हाता ह ? हागा म त्राज ! मन्तन मरा मन क ता ह कि मन्तन मशक्कत स बाहर जान का मनबल ज ह कि भगवान क भजन करन का वयत चलन किरन में खाया । नाम का घन तो न मिने पाम का घन चोर ल जाय । भठ पत्रारिया को पूजो और

पचानन ( बीच ही में ) भगत ! आगे मत बट । जिस बात को न जाने,  
चुप रहा कर । अब देख श्री जगरनाथ जी की मूर्ति लाया है  
कितनी शु दर ह !

( झोली से मूर्ति निकालते हैं । )

पहला भक्त महाराज ! आपकी मूर्ति तो बड़ी सुंदर होगी ।

पचानन ( मूर्ति देखकर ) भाय ! य मूर्ति ( रोने के स्वर में )  
किशने तोड़ दी ? हाय ! भरी मूर्ति टूट गई ! हाय ! मेरे  
भगवान टूट गए !

पहला भक्त भगवान टूट गए ! घर मूर्ति टूट गई ? लेकिन भगवान कस टूट  
सकते ह ?

पचानन ( हसता में ) घर तेरा तो त्तिभाग फिर गया ह जो ह शो !  
( फिर मूर्ति देखकर रोते स्वर में ) हाय मेरे अच्छे भगवान  
ये ! एसी अच्छी आँख ऐसा अच्छा शिर हाय ! मेरे कितने  
अच्छे भगवान ये !

पहला भक्त तो क्या अब भगवान नही रह ? जा भगवान बिछुड़ा को मिला  
देता ह टूट हुमा को जोड़ देता ह वह खुद कैसे टूट सकता  
ह ? महाराज ! छिमा कीजिए ! आपका ज्ञान अभी कच्चा  
ह । यहाँ-वहाँ जान स कुछ नहीं होता । तीर्थों में धक्के खान  
से कुछ पायदा नहीं । अपने घर में बठो और भगवान् का  
भजन करो । तुम्हारे भगवान तुम्हारे मन में ही ह । मुना  
नहीं, सत कबीर जी न कहा ह—

जिन पायन भुइ बहु फिर, धूम देस बिदेस ।

पिया मिलन जब हाइया आंगन भया बिदेस ॥

पचानन मेरे मुँहो को जान शिलाता ह जो ह शो ! मूरख कहीं बा ।  
यहाँ मेरे भगवान् टूट गए और तीर्थों को बिदेश बताता ह !  
हाय ! अब फिर जगरनाथ जाऊ मूर्ति लन के लिए ! हाय !

हाय ! मेरे भगवान !

पहला भक्त तो घब भगवान के लिए नहीं मूर्ति के लिए रोइए । नमो नारायण !

( प्रस्थान नेपथ्य में कबीर का पद )

हसा पाये मान-सरोवर ताल तलया क्यों डोले ।

तरा साहब ह घट माही बाहर नना क्या सोले ॥

मन मस्त हुआ तब क्या बोले !

( नेपथ्य में दूर कबीर का पद गूजता रहता है । )

निर्देशक इस भाँति सत कबीर न अपन युग में फल हुए घम के घाटम्बर को दूर किया । उहान तिल की घोट पहाड देखा—जीवन की छाटा से छोटी घटना में ब्रह्म के दर्शन किए । कबीर सत ही नही परम सत थे भक्त ही नही परम भक्त थे !

( नेपथ्य में गीत गूजता है । )

कहत कबीर मुनो भाई साधो, साब मिल गए तिल धोल ।

मन मस्त हुआ तब क्या बोल क्या बोले ।



सुर-सगीत

पान

निर्देशक  
हरिराय जी  
सूरदास  
महाप्रभू  
स्त्री  
थालक

( पण्डनूमि म दूर पर कीतन के स्वर प्रभु मेरे भवगुन  
चित्त न धरौ—गाती हुई मडली दूर चली जाती है। स्वर  
धीरे धीरे और दूर होता जाता है। )

निर्देशक महाकवि सूरदास ! तुमने नेत्र रहित होकर भगवान का जो  
सौम्य दया ह वह संसार के तादृश नेत्रा वाला न भा नहीं  
देखा। भगवान कृष्ण को उनके भलीकिक रूप को तुमने  
शत शत रत्नाभा में साकार किया ह शत शत कला में  
स्वरित किया ह। जिन राग और रागिनिमा में तुमन भजन  
श्याम को लोलाभा का गान किया ह, उनमें प्रेम का सागर  
सहराया ह। वह प्रेम का सागर जो नशा की भगणित  
यमनाभा द्वारा पोषित होकर तरंगित हुआ ह। वहा ता  
सूरसागर ह। ससार के साहित्य में ईश्वर मानव के इतन  
समीप कभी नहीं आया। उसने मानव जीवन के छोटे-छोटे  
कार्यों में भाग लेकर ससार को अपनी स्वामाविकता से चकित  
कर दिया। महाकवि ! तुमन भजन श्याम को मानवता के  
रत्नाकर में लीन कराकर भी रत्ना की भाँति स्वच्छ और  
ज्योतिमय रक्ता। तुम्हारे श्याम यशोत्तम की गोले में जिस  
जिस क्षण बठ उसी क्षण उनकी गाल में ससार की समस्त  
माताभा की गोले लीन हो गई। राधा के प्रेम नगा धामुभा  
म सारे ससार के नशा की कछुआ बिखर दी और गोप  
गोपियों के हृदय हृदय नहीं थ, व तुम्हारे प्रेम के भक्तुर थ  
जिनमें मानवता के कयालुता विशाल बट वृक्ष की छाया  
सिमटी हुई थी। उस तुम्हारे श्याम की जो कृपा था वही तो  
हमारा पुष्टि माग था। साहित्य में तुमन ब्रजभाषा को

अमर कर लिया। महाकवि। वह ब्रजभाषा जिसका प्रत्येक शब्द ही अमर का दाना है जिसमें अनन्त मानुष भरा हुआ है उस ब्रजभाषा में तुमने अपने श्याम का माधुय भर दिया। माधुय में माधुय। उस राधा ने अपने अघोरामृत से अमृतमयी कृष्ण का लीला का गान किया हो। या श्याममया यमुना ने अनन श्याम के रूप के प्रतिबिम्ब को अपना अजन बना लिया हो। तुम धन्य हो महाकवि।

**हरिराय जी** सा सूरदास जो लिता क पास चारि कोस करे म एक मीही गाम है जहाँ राजा पराशर के बेटा जनमेजय ने सप यज्ञ कियो है। सा ता गाम म एक सारस्वत ब्राह्मण के यहाँ प्रकट। सा सूरदास जो के जन्म ही सा नत्र नही है। सो या भाँति सौ सूरदास जा को सरूप है। सो तीन बेटा या सारस्वत ब्राह्मण के भागे क हत। और घर में बहोत निष्क चन जाता। वा सारस्वत ब्राह्मण क घर चौथ सूरदास जा प्रकट। सो जब उनके नत्र न देखे आकार हू नाही। सो या प्रकार देखि के वा ब्राह्मण ने अपने मन में बहोत साच कियो और दुख पाया।

**दूसरा खबर** सो य सूरदास जो महा प्रभुन क ऐसे कृपा पात्र भगवनीय हत। तामें उनकी दाता को पार नाहा सो कर्ताई कहिये।  
**हरिरायना** सो या प्रकार ब्राह्मण ने अपना मन में बहोत दुख पायो। सो बाह तें जा जन्म पावे नत्र जाय तिनको आधरा कहिये मूर न कनिये। और य सो मूर है सो माता पिता घर क सब कार्य बानत नाहीं। जानें जा नत्र बिना को पुत्र कहा। तामें इन सौं कोई बानता नाही। सा एमे करत सूरदास जा वरस धर्म के भय तब पिता का वा ग्राम क एक श्व-पात्र कृपा जन्मान ने दोष भोहोर दान में दीनी।

ता पाछें रात्रि को एक कपडा में बांधि के ताक में धरि के मोयो । तब रात्रि को दीय माहोरन का मूमा ने गय । सो धर को छाति में मिल्ल में धरि दीनी । तब सवार उठि क देख तो मोहार नहीं ह । सो तब ता मूरदास के माता पिता छाती कूटन लागे और रावन लाग । सो देखि क मूरदास जो माता पिता सों बान तुम एना दुख बिताप क्यों करत हो । जो था भगवान का भजन सुमिरन करो तासों सब भलो होय ।

**दूसरा स्वर** सो य मूरदास जो मन्नाप्रभुन के ऐसे कृपा पात्र भगवनीय हते । तातें इनकी वार्ता का पार नाहीं सो कहौताई कहिये ।

**हरिराय** जा तब माता पिता न मूरदास सा कौ जा तू एमा घडी को मूर जनम्यों ह सो हमको बाही तिन सा दुख हा में जाम बीतत ह । जो हमको बाहू तिन मुख नाहीं भयो और हमको भर पट भ्रम ह नाहीं मिलत ह । तब मूरदास जो बोले जो तुम मोका पर में न राखी सो में भव ही तिहारी मोहोर बताय दैठ । तब यह मुनि क माता पिता न मूरदास सों बायो जो और हम की कला चालियत ह जो तू हमका मोहोर बनाय नउ और हमारी मोहोर पाव परि तर मन में भाव तहाँ नू जाइयो । हम तौकों बरजेंगे नाहीं । तब मूरदास बोल जो छाति में मिल्ल के मोहूर्द पर धरी ह । तब यह ब्राह्मण तौनि क मोहोर पाय । और मूरदास जो तौ हाथ में एक लाग लैक पर सों निबस ।

**दूसरा स्वर** सो य मूरदास जो मन्नाप्रभुन के ऐसे कृपा-पात्र भगवनीय हत तात इनकी वार्ता को पार नाहीं सो कहौताई कहिये ।

**हरिराय** जी सो सीते लें चल । सो चार कौस ऊपर एक गाव हती, तहाँ



एक तलाब गाम बाहिर हती । सो वहाँ एक पीपर के वृक्ष नीचे सूरदास जो आय बठ । यह सुनि क सब लोग गाम के आवन लाग । तब सूरदास की बड़ी पूजा चली । भीर लगी रह । स्नान पान भली भक्ति सा आवन लाग्यो । या प्रकार सूरदास तलाब प पीपर क वृक्ष नीचे बरस झठारै क भय । सो एक दिन रात्रि को सोवत हते, ता समय सूरदास की वराग्य आयो । तब सूरदास जो अपन मन म बिचारें जो दली में श्री भगवान क मिलन अथ वराग्य कर के घर सो निकस्यो हती सो यहाँ माया न प्रसि लियो । मोकू अपनी जस काहू को बढावनो हती । जो म श्री प्रभु को जस बढावती तो भायो । और यामें तो मरी बिगार भयो तासा अब कब सवारो होय मैं यहाँ सू कूष करू ।

दूसरा स्वर सो य सूरदास जा महाप्रभुन क ऐसे कृपा पात्र भगवनीय हत तात उनकी वार्ता को पार नहीं सो कहीताई कहिय ।

हरिराय जी सो एस कत मवारो भयो । पाछ सूरदास एक वस्त्र पहिरि कै लाठी ल क उहाँ त कूच जिय । सो सूरदास मन में विचार जो ब्रज ह सो श्री भगवान को धाम ह सो उहाँ चलिये । तब सूरदास उहाँ त चल सो श्री मयुरा जी में आय । तहाँ विथात घाट प रहि क सूरदास न विचार कियो जो मैं मयुरा जी में रहूगो सो यहाँ हूँ मरा माहात्म्य बढूगो और यह श्रीकृष्ण को पुरो ह सो यहा मोकी अपनी माहात्म्य प्रकट करनी नाहीं । सो यह विचारि क सूरदास मयुरा क और भागरै के बीचों बीच गऊघाट ह तहाँ आय क श्री यमुना जी के तोर स्थल बनाय कै रह । सूरदास को कठ बहोत सुन्दर हती । सो गान विष्णु में चतुर और सगुन बतायबे में चतुर । सो उहाँ हू बहोत लाग सूरदास जो क पास आवत । उहाँ हू सेवक

बहोत भय सो सूरदास जगत म प्रसिद्ध भये ।

**दूसरा स्वर** सो य सूरदास जो महाप्रभुन क ऐसे कृपा-पान्न भगवतीय हते,  
तात इसकी वार्ता को पार नाहीं सो कहाँताई कहिय ।

**हरिराय जी** सो गऊघाट ऊपर सूरदास रहत तब कितन क दिन पाछ श्री  
भाचाय जी महाप्रभु घ्रापु भडल त ब्रज कू पाव धार । सो कछु  
दिन म श्री भाचाय जी घ्राप गऊघाट पधार । ता समय  
श्री भाचाय जो क सग सेवकन को बहोत समाज हतो सो  
मब बणव सत्त श्री भाचाय जी घ्रापु श्री यमुना जो म स्नान  
किय । ता पाछ सव्या-वत्न करि पाक करनको पधार ता  
समय एक सेवक सूरदास को तहाँ भायो । सो वान जाय के  
सूरदास को खबरि करो

**तीसरा स्वर** सूरदास जो । आज यहाँ श्री बल्लभाचाय जी पधार ह । जो  
जिनन काशी म तथा दक्षिन में मायावाद सडन कियो ह, श्रीर  
भक्तिमाण स्थापन कियो ह ।

**सूरदास** महा हा । श्री महाप्रभु श्री बल्लभाचाय जी पधार ह । जब  
श्री बल्लभाचाय जा भोजन करि के निश्चितता सो गादी  
तकियान क ऊपर विराजे ता समय तू हम को खबरि करियो ।  
जो म श्री बल्लभाचाय जो क दशन को चलूगी ।

**हरिराय जी** सो जब श्री भाचाय जी घ्रापु भाजन करि क गादी तकियान प  
विराज श्रीर सबक हूँ सब घ्रास-गास घ्राय बठ, तब वा सेवक  
न जाय क खबरि करी । तब सूर इस वाही समय घपन सग  
सभर सेवकन को लवै भाचाय जो क दशन को घ्राय । सो  
तब घ्राय क श्री भाचाय जो सो साप्याग दडवत करत ह ।

**सूरदास** श्री महाप्रभुन को सूरदास साप्याग दडवत करत ह ।

**महाप्रभु** नमामि हृत्य शये लीला श्रीरब्धि शायिन ।

सत्त्वा सहस्र लोलाभि सव्यमान कलानधिम् ॥

महाप्रभु सूर । माओ कछ भगवत जस वणन करो ।  
सूर दास जो भाजा, महाराज ।

( राग घनाश्री )

प्रभु हा सब पतितन को टीकी ।  
घोर पतित सब त्रिबस चारि के हौं तो जनमठ ही की ।  
बधिक अजामिल गनिका तारी घोर पूतना ही की ।  
मोहि छाडि तुम घोर उधारे मिट सूल बयो जो की ।  
कोउ न समरथ अथ करिब को खैचि कृत हौं लोकी ।  
मरियत लाज सूर पतितन म हमहू त को नीकी ॥

महाप्रभु बहुत सुन्दर गायो सूरदास । प सूर ह्वन एसो विधियात काह  
को ह ? सो तासों कछु भगवल्लीला वणन कर ।

सूर दास महाराज । म कछु भगवल्लीला समुभक्त नाही हू ।  
हरिराय जी तब सूरदास प्रसन्न होय क श्री यमुना जी में स्नान करि कै  
अपरस ही म श्री आचाय जी पास आय । तब श्री आचाय जी  
न कृपा करिब सूरदास को नाम सुनायो ता पाछे समपन  
करवायो । पाछे आप दसम स्कंध की अनुव्रमणिका करी हती  
सूरदास को सुनाय । सो सगरी श्री सुबोधिनी जी की ज्ञान श्री  
आचाय जी न सूरदास के हृदय में स्थापन कियो । तब  
भगवल्लीला जस वणन करिब को सामथ भयो । तब सूरदास  
न श्री आचाय जी क भाग यह पद करिब गाय

सूर दास

( राग देवाधार )

खई री धनि धरन-सरोवर जहाँ न रनि विमोग ।  
निगिनि कृष्णवाम रम पूरन भय रज नहि दुख सोग ।  
जहाँ सनक स मान हंस सिव नस रवि प्रभा प्रकास ।  
प्रफुलित बमम निमित्त नहि समि उर गुजत निगम सुवास ॥

जिं सर सुमग मक्ति मुक्ताफल सुकृत धमून रस पीज ।  
 सो सर छाडि कुबद्धि विहगम इहाँ कहा रहि कीज ॥  
 सक्ष्मी-सहित हाति नित ब्रीडा सोभित सूरजनास ।  
 भव न सुगत विषय रस छोलर, वा समुद्र को घास ॥

**महाप्रभु** बहुत सुन्दर गायो मूरदास ! भव नीला को धम्यास करो ।  
 कछु नान्य को लोना गावो । ओ नन्दाय के घर को  
 बखान करो ।

**सूरदास** जा भ्राजा महाराज ।

( राग घनाश्री )

जसाण हरि पालन भुलाव ।  
 हलराव दुलराइ मल्हाव जाइ मोई कछु गाव ।  
 मेरे लान को घाउ निरिया काह न घानि सुराव ॥  
 तू काइ न बगिहि भाव तोकी बाह बुलाव ।  
 कबहूँ पलक हरि मूँ सत है कबहूँ भधर फरकाव ।  
 सोबत जानि मोन हूँ के रहि करि-करि सन बनाव ॥  
 इहि अतर प्रकृताइ उठ हरि जसुमनि मधुर गाव ।  
 जो सुख सूर भभर मुनि दुवभ सो नद भामिनी पाव ॥

**महाप्रभु** बहुत भावो गायो सूरदास ! एसी प्रसन्नता भई माना सूर  
 नान्य को लाला में निकट ही ठाढ़े ह । सो एसे भन्खी  
 बातन गायो । भव हम तुमकू पुष्पोत्तम सदसनाम सुनावेंगे ।  
 तव रागर आ भागवत की लाला तिहारे हृदय में स्फुरगी ।  
 तामें प्रथम स्वयं श्री भागवत सी द्वांश स्वयं सेयत हो गयो  
 तामें दान लीला मान लीला भाँति की बखान बनि पढ गा ।

**हरिराय जी** ता पाछें गठपाठ ऊपर श्री भाचाय जो आप तीन दिन रहे ।  
 मो तब सूरदास न जितन सेवक किय हते सो सब श्री भाचाय  
 जी के सेवक कहाय । ता पाछें श्री भाचाय जो आप ब्रज में

पधारें । तब सूरदास हू श्री भ्राचाय जी के सग ब्रज में घाये ।  
 सो प्रथम श्री भ्राचाय जी महाप्रभु घाप गाकुल पधारें । तब श्री  
 भ्राचाय जी न श्री मुख सा कह्यो जा सूर । श्री गोकुल को  
 दशन करो । तब सूरदास जी ने श्री गाकुल को साष्टांग दडवत  
 किये । सो दडवत करत ही श्री गोकुल की लीला सूरदास के  
 हृत्प में स्फुरी तब सूरदास जी अपन मन में विचार ।

**सूरदास** श्री गोकुल की लीला म वरनन कसे करौं । सो बाहू ते जो  
 श्री भ्राचाय जी को मन श्री नवनीत प्रिया जी के स्वरूप के  
 ऊपर धामकन हू सो श्रीनवनीत प्रिया जी को कीतन श्री  
 गोकुल की बाल लीला को वरनन गायो चाहिये ।

( राम शिलावल )

सोभित कर नवनीत लिय ।

घट्टा घलत रन-तनु मन्ति मुख दधि रूप किये ।  
 चारु कपोत लोल सोचन गौरोचन तिलक न्ये ।  
 लट-लटकनि मनु मत्त मधुप गन माक मन्हि पिय ॥  
 कठुना-कठ घञ्ज केरि नख राजत रुचिर रिय ।  
 घय सूर एकी पल यत् मुख का सत कल्प जिय ॥

**महाप्रभु** बहुत भाषी गान करयो सूरदास । अब यह बात विचारो जो  
 श्री गोवधन नाथ जी को मंदिर तो समरायो और सेवा की  
 महान भयो तानें तुम्हें श्रीनाथ जी के पाम रहौ पाटिय । तब  
 सम सम के सगर कीतन ममान होगयी और सो घाग बख्खव  
 जन तुम्हार पत्त गाय व कृताय बहात होयग ।

**सूरदास** जो घाना महाराज ।

**हरिराय जी** तब यत् कह क सूरनाम कू सग ल क श्री भ्राचाय जी घाप  
 श्री गोवधन पधार सो ऊपर पधार क श्री नाथ जी क दशन  
 किय । तब श्री भ्राचाय जी घाप श्रीमस सो सूरदास सो कहें

महाप्रभु सूर । श्रीगोवधननाथ जी के दशन करी और कीतन गावो ।  
सूरदास जो भाना महाराज ।

( राग घनाश्री )

अब हौं नाच्यो बहुत गोपान ।

काम क्रोध को पहिरि चोलना कठ विषय की माल ॥

महामोह को नूपुर बाजत निग्न शब्द रसाल ।

भरम भरयो मन भयो पवावज चलत कुमगत चाल ॥

मण्णा नाद करत घट भीतर नाना विधि द ताल ।

माया को कटि फेंटा बांधो लोभ तिलक त्रिपी माल ॥

कौटिक कला बाधि खिराई जन धल सुधि नहि काल ।

सूरदास को सब अविद्या दूरि करी नलाल ॥

महाप्रभु सूरदास । अब तो तिहारै मन में कछु अविद्या रहा नाहीं जो  
तिहारी अविद्या सा प्रथम ही शोनाय जो न दूर कीनी ह ।  
तासा अब सुम भगवल्लोना गावो जाई माहात्म्य पूर्वक स्नह  
होम । अब तुमको पुष्टि मारग को विद्वान्त फलित भयो ह,  
तासो अब सुम श्रा गोवधन धर के यहाँ समय-समय के कीतन  
करी । नित्य प्रात काल व जगायबे त सक समय पयत के  
जानत पत्र कहौ ।

निर्देशक इस प्रकार धारे धीरे सूरसागर का निर्माण हुआ । जिस प्रकार  
सहस्राल कमल को एक एक पंखुने विकसित होती ह ।  
सूरदास न श्रामदभागवत के दशम स्कंध में श्राकृष्ण  
की चाला बड़ विस्तार से कहा ह । सूरदास न बाल्य  
गोवन के सखा विश्व बड मुकुमार भाव से विश्रित  
किए ह । शिशु जनना परिजन सखा सखी, ग्राम  
बचुप्रों के प्रेममय मनाविमान का छटा महाकवि के नेत्रो ने  
देख कर ममार को उपहार स्वरूप प्रदान की है । धाय

सूरदास जी के इस मनोवैज्ञानिक शृंगार रस में प्रवगाहन कीजिय । माता यशोदा श्रीकृष्ण का चलना दख कर बड़ा सुख प्राप्त कर रही हैं

( राग घनाश्री )

श्री कृष्ण चलत देखि जसुमति सुख पाव ।

ठुमक ठुमुक् धरनी पर रेंगत जननी देखि खिलाव ॥  
 देहरी लो बलि जाति बहुरि फिर फिर इतही को भाव ।  
 गिरि गिरि परत बनत नहि नापत मुर मुनि सोच करावै ॥  
 काटि ब्रह्मड करत छिन भीतर हरत विलब न लाव ।  
 ताको निय नद की रानी नाना रूप खिलाव ।  
 तब जसुमति कर टकि श्याम को ब्रम-ब्रम क उतराव ।  
 सूरदास प्रभु देखि-देखि मुर नर मुनि बुद्धि भुलाव ॥

निदर्शाक जिस ब्रह्म न समस्त ब्रह्माण्डो का निर्माण किया वह देहरी भी नहीं लांघ सकता और फिर लौट कर माता यशोदा के समीप आ जाता है । कृष्ण का इससे अधिक मानव रूप और बना हो सकता है । कृष्ण बड़ हुए तब माँ यशोदा न उनसे कहा —

( राग घनाश्री )

श्री कृष्ण बजरा का पय गियहु लान तरि चोटा बन ।

सब लखिन में मुन मुन्तर सुत ता थी अधिक बड़ ॥  
 जस देखि भोग ब्रज बालक त्यो बल-बस बन ।  
 कस केशि बक बरिन क उर भनुनि अनल उठ ॥

यह मुनि क हरि पावन लाग त्या त्यो लियो लट ।  
 अचवन प तातो जब साग्यो रोवत जीम उठ ॥  
 पनि पीवत ही रुवि टक्डोरत भूडे जननि रद ।  
 मूर निरखि मख हमत जमोना मा मुन उर न बड़ ॥

निर्देशक श्री कृष्ण ने अपनी छोटी बढाने के लालच में दूध पीना प्रारम्भ किया । किन्तु जब छोटा नहीं बनीं तो कृष्ण न कहा —

( राग रामकली )

बाल कठ मया कर्वाह बढगो छोटी ?

कित्ती बार मोहि दूध पियत भई यह भजहू ह छोटी ।  
तू जा कहति बल की बनी ज्या हूह लाबी-मोटा ॥  
काढ़त गुहत नडावत झोछत नागिनी सो न्व लाटी ।  
काचा दूध पियावत पचि पचि देत न माखत रोटी ॥  
सूर श्याम चिरजीवो दोऊ भया हरि-हलधर की जोटी ।

निर्देशक इस प्रकार जननी और बालकृष्ण के परिहास में जीवन का विस्तार होता गया । श्रीकृष्ण न खाल-खाला के माय अपनी वा-यावस्था का विकास किया । माखन उन्हें बहुत अच्छा लगता था । वे माखन के लिये गोपियों के घर भी जान लग और अपने बाल बधुषा के साथ माखन खान लगे । गोपियो न माता यशोदा के घर भाकर उनाहना लिया —

( राग बिलावल )

स्त्री कठ तरो लाल मगे माखन खायो ।

दुपहर त्विस जानि घर मूनो ढ डि ढडोरि भापही भायो ।  
खान किवार सन मन्दि में दूध रह सब सखन खवाया ॥  
गीके बाढ़ि खाट खनि मोहन कछु खायो कछु ल ढरबायो ।  
तिन प्रति हानि होत गोरम की यह डोटा कौन ढग लायो ॥

। सूरदास कहती ब्रजवारी पूत भनाम्ना त ही जायो ।

निर्देशक इस प्रकार घर के स्वाभाविक वातावरण में श्रीकृष्ण विशार हुए । वे समस्त गोकुल के प्रीति पात्र बन । वृषभानु किशोरी राधा न कृष्ण के जीवन में प्रेम की सरिता तरंगित की । हमारे साहित्य और दर्शन में राधा का प्रेम भक्ति की धरम



सीमा ह । सूर सागर की सबसे कोमल और गर्तिशील लहर राधा के प्रेम की ह ।

( राग कामोद )

सूरदास नयो नहु नयो गहु नयो रस नवल कुम्भरि वपभानु किशोरी ।  
नयो पीताबर नई घनरी नई-नई बृदनि भीजति गोरी ॥  
नय कज अति पुज नए द्र म सुभग यमन जल पवन हिलोरी ।  
सूरदास प्रभ नव रम विलमत नवल राधिका योवन भोरी ॥

निर्देशक श्रीकृष्ण न गोकुल में अनक लीनाए कर गोकुल वासियो को सुख लिया । उल्लेख कस क भज गये असुरों का वध कर सब को रक्षा की । रूयिया में प्रस्त जनता की इन्द्र पूजा का निषेध कर गोवधन का पूजा का और जब इन्द्र न द्रज पर प्रत्य वर्षा की तो गोवधन धारण कर उल्लेख लोक रक्षा का उज्वल भाग उपस्थित किया । कृष्ण सवप्रिय थ । अपनी मधुर बशी के स्वर म व प्रत्यक्ष को अपनी ओर आकर्षित कर लेत थे । उल्लेख राधा और गोप गोपी जनो के साथ यमुना-तट पर रास रचाया । सूरदास न कितन मधुर स्वर से उसका बखान किया ह —

( राग देवगधार )

सूरदास दोउ राजत रमामा रयाम ।

ब्रज युवता मडनी बिराजत देवति सुरगन वाम ॥  
धय धय वपवन को सुख सुरगुर वीन वाम ।  
धनि वपभानु मुना धनि मोहन धनि गापिन को नाम ॥  
इनकी को नामो सरि हू ह धय शरत को याम ।  
बनहु मूर जनम ब्रज पाव यह सुख महि तिहुँ धाम ॥

निर्देशक मधुमव । श्रीकृष्ण के राग में जा मुख था वह ताना लोकों में नहीं था । रग मुख और ध्यान में विघ्न हुआ । कस न

कृष्ण को मथुरा बुलान के लिये भ्रमर को भेजा और कृष्ण अपना प्रेमी गोकुल वासिया को छोड़कर मथुरा चल गये । राधा माता, गोप और गोपियाँ सब विरह में मग्न हो गई । इस प्रसंग का वखान महाकवि सूरदास ने अनक भाँति से किया ह । सहस्रा पदा में यह खोजना कठिन ह कि कौन सब से अधिक सुंदर पद ह —

( राग सोरठ )

खी कठ मेरे कुवर कान्ह विनु सब बछु बसेहि घरयो रह ।  
को उठि प्रात हात ल माखन को कर नेत गह ॥  
सून भवन यशोदा सुत के गुनि गुनि शूल सह ।  
नि उठि घेरत ही घर ग्वालनि उरहन कोउ न कह ॥  
जो भ्रज में मानन् हुतो मुनि मन बाहु न कह ।  
सूरदास स्वामी विनु गोकुल कीडी हूँ न लह ॥

निर्देशक कृष्ण मथुरा से चोट कर नहीं आए । गोपियाँ न उन्हें भ्रगणित सदेश भेज किन्तु परिस्थितियावश कृष्ण गोकुल नहीं आ सके । उन्हें नन्द यशोदा राधा और गोपियाँ के हृदय की अनुभूति थी । उन्हें पय देन के निय कृष्ण न उद्व को भेजा कि व सासारिक मोह में न पड कर ब्रह्म की सच्ची उपासना करें, योग करें । किन्तु गायिया का प्रेम योग सभी योगों से बढ़कर निकला । राधा के समीप उद्वत हुये भ्रमर को सवेतकर सूरदास ने उद्व और कृष्ण पर पटित होन वाल जो भ्रमरगीत लिख ह, व भावना जगत में भ्रमर ह । सूरदास ! तुम जीवन के महाकवि हो ! आज शताब्दियों के बीत जान पर भी तुम्हारा काव्य-जीवन को अनंत अनुभूतियाँ लिए हुए ह !





भारतेन्दु-मण्डल

## पान

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र  
श्रीनिवास दास  
कार्तिकप्रसाद सत्री  
बदरीनारायण चौवरी 'प्रेमघन'  
ठाकुर जगमोहन सिंह  
प्रतापनारायण मिश्र  
राधाकृष्ण दास  
धालकृष्ण भट्ट  
किशोरीलाल गोस्वामी  
मल्लिका  
निदेशक

काल सन १८७३

स्थान पेनी रोडिंग कनव

समय सध्या समय सात बजे

निर्देशक निज भाषा उन्नति अह, सब उन्नति को मूल ।

बित निज भाषा पान के मिटत न हिय को मूल ॥

भारतन्दु बाबू हरिश्चन्द्र युगान्तरकारी साहित्यकार थे । अरना प्रतिभाशालिनी दृष्टि से उद्दान परम्परा और परिस्थिति दाना का ही परखा और भाषा को शक्ति सम्पन्न कर उद्दान जो साहित्य लिखा वह युग वाणी के रूप में माय हुआ ।

सध्या समय सात बजे भारतन्दु हरिश्चन्द्र कक्ष में बठे हुए साच रहे हं । उन्होंने इस पेना रोडिंग कनव में अपने साहित्यिक मित्रा को आमत्रित किया ह जिनमें सवधो आनिवास दाम वार्तिकप्रमाण सधो वन्दरीनारायण चौधरी प्रमधन ठाकुर जगमोहन सिंह प्रतापनारायण मिश्र राधा कृष्ण दाम बालकृष्ण भट्ट तथा किशारामाल मास्वामी प्रमुख हं । भारतन्दु के साथ य साहित्य के नवरत्न ऐसे हैं जिन्का ज्योति साहित्य के इतिहास में कभी घूमिल नहीं होगी । इस समय भारतन्दु की चिन्ता धारा इस प्रकार प्रवाहित हा रही ह —

भारतेन्दु ( सोचते हुए ) राजा शिवप्रमाण सितार-ए हिन्द न 'राजा भाज का सपना लिखते हुए जगह-जगह पर एमी भाषा लिखी ह— इसा भरस में चाबदार न पुकारा । चौधरी इन्द्रजित निगाह रूबरू था महाराज सलामत ! भाज न घाल उठाई ।'

महाराज भाज न हुए बांशाह सलामत जलानुद्दीन प्रकबर क सम्ब धी हो गय और राजा लक्ष्मण सिंह न अपन शकुंतला नाटक क अनुबां में लिखा— मानलि ! बतनाप्रो तो पूरब परिचम समन्ता के बीच यह कौन सा प्दाड ह जिससे सुनहरी धारा एसी निकलती ह माना सध्या क मय से भगला । इस लिखन की भाषा में बडा ऋगडा ह । कोई कहत ह कि उदू शां मिलन चाहिए कोई कहत ह सस्कृत शां होन चाहिए और अपनो अपनी रवि के अनुसार सब लिखते ह और इमक हतु कई भाषा कभा निश्चित नही हो सकती । हम एस स्थान पर बां नही किया चाहत कि कौन भाषा उत्तम ह और वही लिखनी चाहिए पर ही मभम कोई अनुमति पूछ तो म कहूंगा कि कुछ एसी भाषा लिखी जाय तो उत्तम ह —

पर मर प्रातम अब तक घर न आए । क्या उस देस म बरसात नही होता या किमो सौत के पं म पं गय । कहीं ता वह प्यार की बातें कहीं एक सग एसा भूल जाना कि चिट्ठी भी न भिजवाना । हा ! म कहीं जाऊ बसी बरू मरी ता एसी कोई म्बोली सहली भी नही कि उससे दुलडा रो रा सुनाऊ कुछ एधर उधर की बाता ही स जा बढलाऊ ! ( सोचते हुए ) मरी एसी भाषा प्रसिद्ध तो बहुत हो गई ह । साचता हूँ एसी में मैं अपनी चन्नावली नाटिका लिखूँ । भाज पनी राडिग बनब में मित्रा का जमाव ह । देखू उलान किस तरह मरी भाषा की स्वीकारा ह । एस समय मरी कविता की भाषा श्रजभाषा की तकर ही चल रही ह । ( नेपथ्य में स्त्री-बठ स घनाक्षरी की राग स पढ़ने की गुनगुनाहट ) यह तो मलिनका का स्वर ह !

मल्लिका ( नेपथ्य स घनाक्षरी स्वर से पढ़ती है । )

कान परे कोस चलि चनि यवि गए पाँव  
सुल बे बसाल पर ताले परे नस के ।

रोय राय नननि में हान परे जाल परे  
मन के पाले पर प्राण परवस बे ।

हरीचन्द भग हू हवाले पर रोगन के  
मोगन के भाले परे तन बन खसवे ।

पगन में धाले परे नाधिबे को नाल पर  
तऊ लाल लाले पर रावर दरस बे ।

हरिचन्द्र मल्लिके ! तुम्हारा कठ बढ़त मधुर ह । मैं तुम्हें इसीलिए  
तो चाहता हूँ कि तुम्हारे कठ में मरे प्रेम और भक्ति की

भावना उतरकर मुझे तपन में अपना रूप खिलता देती ह ।  
मल्लिका ( खिलखिलाकर ) अपना रूप ! तुम्हारा रूप तो ऐसा ह

कि कहन में आता ही नहीं ह । भक्ति की कविता प्रम की  
कविता और आजकल की कविता सब जगह तुम ही तुम तो

हो । तुम्हारी कविता सब बाता को छूकर ही चलती ह । अब  
देखो तुमन जो मुकरियाँ लिखी थीं व कितनी सच्ची और

चित्त को प्रसन्न करन वाली ह ! सुनाऊ ? अगरज की  
मुकरी !

भीतर भीतर सब रस चूसे,  
हँसि-हँसि के तन-मन धन मूसे ।

जाहिर बातन में अति तज  
क्यों ससि ! सज्जन ? नहि अगरज ॥

अगरजी पर सुनिए—

सब गुद-जन को बुरी बताव  
अपनी खिचड़ी भलग पकाव ।



भीतर तत्व न भूठी तेजी

क्या सखि ! सज्जन ? नहीं भोगरेजी ।

पुलिस पर सुनाऊ ?

रूप दिखावत सरबस लूट

फदे में जो पढ न छूट

कपट कटारी हिय म हूलिस

क्या सखि ! सज्जन ? नहीं सखि पुलिस

घोर रेल पर तो बड़ी विचित्र मुकरो ह —

सीटी देकर पास बलाव

रूपया न तो निकट बिठाव

ले भाग मोहि खलहि सल

क्यों सखि ! सज्जन ? नहीं सखि ! रेल ।

हरिश्चन्द्र मुझ तो अपनी कानून की मकरो मदा यात्र रहती ह—

नई-नई नित तान सुनाव

अपन जान में जगत फमाव

नित नित हमें कर बल सून

क्या सखि ! सज्जन ? नहीं कानून !

मल्लिका घोर मन तो आप का यह दोहा प्राण में बसा दिया ह —

( राग से ) भरित नह नवनोर नित बरसत सुरस घयो ।

जयति अमूरव घन कोऊ लखि नाचत मन मोर ॥

हरिश्चन्द्र मल्लिके ! लोग चाह जो कहें पर म तो यह कहता हूँ कि

मरी कृष्ण भक्ति तुम्हारी मधुर वाणी में सजीव हो उठती

ह । जब अपन प्यार कृष्ण की भक्ति करता हूँ तो तुम्हें बुला

सता हूँ । तुम्हारे मधुर कंठ में मेरी कविता—

‘नव उवन जनधार हार हीरक सो सोहति ।

मल्लिका ( हसकर ) तो मैं आपकी कृष्ण भक्ति की सखी हूँ ?

हरिश्चन्द्र तुम जा समझो ! किन्तु इस समय जाओ !

मल्लिका क्या ? क्या कृष्ण भक्ति समाप्त हो गई ?

हरिश्चन्द्र वह तो कभी समाप्त नहीं हो सकती, मल्लिके ! किन्तु आज  
'पिनी रीडिय बलब को बठक में म घपने प्रय मित्रा की  
भाषा सुनू गा । वे सब घा रह होंग ।

मल्लिका मैं भा साय रूह ?

हरिश्चन्द्र भक्ति एकान्त की भावना ह । उसे डके की चोट नहीं कहनी  
चाहिए ।

मल्लिका अन्धा यह मेरे हृदय की चोट ही सही ! मैं जाती हूँ ।  
तुम्हारी भक्ति को एक कविता ही कहती हूँ—

ब्रज के लता पता मोहि कीज ।

गोपी पद पवज पावन की

रज जाँ में सिर भोज ॥

[ गाते-गात प्रस्थान ]

हरिश्चन्द्र ( चिन्ता में ) मल्लिके ! तुम नहीं जानती और सारा सारा  
भी नो जानता कि हरिश्चन्द्र ने चन्द्रावली के रूप में ही  
मल्लिका को देखा ह ।

( बाहर घाने की ध्वनि होती है । ) सब लोग धा गये  
क्या ? म उनको द्वार पर लू ।

( श्री निवासदास, कातिकप्रसाद खत्री, बबरीनारायण  
चौधरी प्रमथन ठाकुर जगमोहन सिंह, प्रतापनारायण  
मिथ, राधाकृष्ण दास मानकृष्ण भट्ट और किशारीलाल  
गोरवामी का प्रवेग )

सब लोग वानू साध्व जय गापाल जी का ।

हरिश्चन्द्र जय गापाल जी की ! धाश्य । बडी दर से भाँखें बिधाए हूँ ।

श्रीनिवास भाँखें तो हम नागो की तरस रही हूँ भापके दशनों के लिए ।

प्रापन पेनी रीडिंग क्लब स्थापित कर हम लोग के लिए बड़ी सुविधा कर दी कि जा कुछ हम लोग साहित्य में लिखें वह एक दूसरे को मुना दें कि भाई, हम लोग राह-कुराह तो नहीं जा रह ह ।

**कार्तिकप्रसाद** राह-कुराह बस जायेंग बाबू साहब का पत्र कवि-वचन सुधा सतरी की तरह सब लागे का सच्चा रास्ता जा निखला रहा ह ।

**बदरीनारायण** और बाबू साहब न हिंदी-वर्द्धिनी सभा में हिंदी भाषा पर जो व्याख्यान दिया था उसने तो भाषा के भदान में हरिश्चंद्र की छाप ही ला दी ।

**प्रतापनारायण** भाई ! उसमें पूरा-पूरा हरिश्चंद्र जा न बारह हिंदी भाषा के जो नमून दिए हैं वे तो लाजवाब हैं । उसमें सातवें नम्बर की भाषा जो पुरबिया की बोली या काशी की देश भाषा है वह मझ बहुत अच्छी लगी —

‘व साहब आप कब्यो बलबत्ता गय ही कि नहीं । जो न गये हां ता एक बर हमर कह से आप ऊ सहर के जरूर देखो । देख ही नायक ह । आप से हम ओकी तारीफ का करी । आपन भांखों से देख बिना ओ का मज नहीं मिलता । आप तो बहुत परदेश जा थो । एक बर ओहरी भुक पडो ।

**कार्तिकप्रसाद** वाह ! क्या कहना है ! बलबत्त की बात तो मुझसे पूछो । हरिश्चंद्र ठीक है सोभाग्य से हिन्दी के प्रेमी सभी शहरों में हैं । य श्रीनिवासदास जी दिल्ली में रहते हैं तो कार्तिकप्रसाद जी बलबत्ते में । प्रतापनारायण जी कानपुर में तो ठाकुर जग मादन सिंह मध्यप्रान्त के विजयराघोगढ़ में । बदरीनारायण चौधरी मिरजापुर में रहते हैं और श्री बालकृष्ण भट्ट जी प्रयाग में । श्री किशारीनाथ जी और राधाकृष्ण दास तो काशी

में हा निवास करत ह ।

बालकृष्णभट्ट आपकी कृपा से जैसे नदिया का जल गंगाजी म मिलकर पवित्र हो जाता ह वसे ही आपके पास आकर हम सब पवित्र हो गए !

हरिश्चन्द्र भट्ट जी काशी ही में गंगाजी नहीं ह प्रयाग में भी ह ।

राधाकृष्ण दास यह बात तो आपन खूब बही ।

किशोरीलाल तो फिर आज इस पेनी रीडिंग बनब की गोष्ठी किसी उपयास की स्टारी की तरह होगी ?

हरिश्चन्द्र अगर आप उसके नायक बनना पसन्द करें ।

जगमोहन हाँ नायक तो किशोरीलाल ही बन सकत ह ।

प्रतापनारायण किशोरीलाल जी नायक यानी हीरो । मन 'कलि कोप में हीरो का भय दिया ह । ही यानी हमना जैसे ही ही ही ही और रो यानी रोना मतलब यह कि जो बात-बात में हसते रोन में बराबर हो वह नायक ।

बदरीनारायण तो इनके उपयासा में नायक लोग बारो-बारी से हसत रोते ही तो ह ।

हरिश्चन्द्र हमें ता रोना ह दूसरा के लिए और हसना ह आपन आप पर । लेकिन आज पेनी रीडिंग बनब में िन हिन्ती प्रेमिया ने जो कुछ लिखा ह वह सबके बीच में सुनाना चाहिए । देखें, जिस तरह की हिन्ती की कल्पना मं कर रहा हू उस तरह आप सागा की रचनासा में आ रही ह या नही ।

प्रतापनारायण आपकी हिन्ती न चलगी तो क्या वो चनेगी जा बनारस भखवार में निकलती ह ? अगर भगवार के ख को र और व करके पढे तो उनमें भरब पहुन ही आ जाता ह ।

किशोरीलाल अगर हमें प्रतापनारायण जी की प्रतिभा मिनतो ता हम बात-बात में उपयास लिख डालते ।

जगमोहन अच्छा तो अब बात-बात में ही हिन्दी की बात हो जाय जो बाबू साहब न करी ह ।

राधाकृष्ण अच्छी बात ह तो श्रीनिवास जी पहल आप सुनाइय ।

श्रीनिवास लखनऊ का तकल्लुफ यदि कर तो कहू—जनाब पहले । आप फरमाइय ।

कार्तिकप्रसाद यह पेनी रीडिंग क्लब ह लखनऊ नही । अच्छा श्री निवास जो सुनाए । आपका साहित्य जानन के लिए मेरी प्राँखें अलबार का कालम बन रही ह ।

यदरीनारायण अगर जल्दी नही सुनायेंग तो म प्रेमघन बनकर आपके सिर पर बरस पड गा ।

श्रीनिवास अच्छी बात ह । सुनाता हू भाई । सुनाता हू । देखिए मैं एक नाटक लिखन की बात सोच रहा हू ।

कार्तिकप्रसाद क्या कहना ह शिष्य हा तो एसा हो ।

श्रीनिवास अच्छा तो सुनिए । रणधार प्रेम मोहिनी नाटक का मैन जो प्रथम दृश्य लिखा ह उसमें चपा और प्रेम मोहिनी की बात बात ह । जरा भाषा पर ध्यान दीजिय —

[ पत्र हैं । ]

चपा इसमें सदेर नयी सब नगर निवासिधा के मन में उनका प्रेम छाप ना गई ह परंतु राजकुन निश्चय हुए बिना तो यह राजकुमारी क लापत नही टार सकता—

प्रेम मोहिनी ( मन मे ) यह सब बातें मन क्या सुनी मनुष्य का मन एक सरावर के समान ह । जस सरावर में तार आकाश चन्मा बल और पवतात्रि का भनक परछाँही पडती ह उसा तरह मनुष्य के मन में भी किसी बात का नया विचार घान स पहन के सब विचारा म नवन पत्र जानी ह । हा ! य सब जानन का दुष ह जो इस बात की भनक मरे

कान तक न पहुँची होती तो मुझका इस पचायती से क्या काम था ।

हरिश्चन्द्र बहुत सुन्दर, बहुत सुन्दर ! भापा रश्म के धामे में मातियों की तरह गुथी ह । यही हिन्ने प्राग चतगी ।

सम्मिलित रश्म बहुत सुन्दर !

किशोरीलाल सरल भापा में कितनी गहरी बात कह दा ह ।

हरिश्चन्द्र प्रच्छा वातिकप्रसाद जो खना । भव भाप भ्राना भापा का परिचय दाजिए ।

कार्तिकप्रसाद मन समय का वर्ताव नाम से एक तथा निबन्ध लिखा ह ।  
सुनिए —

‘प्रागामि कल यह वाक्य बड़ा हा भयानक ह क्योंकि इन दो शब्दों का भातर किन्तु ही पाप प्रतिपाद भग निराशाए कामों में डोल और जीवन की हानियाँ छिपा हैं कि जिन्हें सोचकर चकित होना पन्ता ह । किसी बुद्धिमान ने कहा ह कि प्रागामि कल यह शब्द केवल मूल और धन योगों के ही वाप में लिखा ह । सच ह नानी मनुष्य प्रागामि कल किस कहते ह यह जानत ही नहीं क्योंकि वह शब्द अभी तक उनके व्यवहार में नहीं आया ह । व ता बातें हुए कल और आज इन्हीं दाना शब्दों का भली भाँति से जानते हैं । इस कारण से जा दिन कि उनके हाथ से निकल गया ह और उमका उत्तम रीति से उनसे वर्ताव नहीं हुआ ह, उस पर व सत् करव आज भयाव वतमान समय को अच्छे कामों में लगाकर दूने उताह और साहज के साथ काम का प्रारम्भ करत ह ।

हरिश्चन्द्र बहुत सुन्दर भापा का प्रवाह ह ।

वालकुम्भ निबन्ध लिखा जाय तो इस प्रकार निम्ना जाना चाहिए !

यह पत्र का अग्रनेत्र होगा !

जगमोहन सिंह सचमच कल का खर आज की प्रतिना होनी चाहिए !  
हरिश्चन्द्र अन्धा ठाकुर जगमोहन सिंह जी ! आप अपनी रचना सुनाइए !  
जगमोहनसिंह जसी घाना ! बहुत दिना से एक स्वप्न लिखन की  
बात सोच रहा था ।

राधाकृष्ण राजा शिवप्रसाद सितार हिन्द की भाँति राजा भोज का  
सपना !

किशोरीलाल हा आप भी राजा साहब ह ।

जगमोहनसिंह नहीं कहाँ व और कहा म ! मैं श्यामा-स्वप्न लिखने की  
बात साच रहा हू । उसके प्रथम याम का स्वप्न इस प्रकार ह

आज भार यत्ति तमचार के रोर से जो निकट की  
खोर हा में जोर से सोर किया नोद न खुन जाती तो न जान  
क्या-क्या वस्तु देखन में आती । इतन में ही किसी महात्मा  
न एमी परभाता गई कि फिर वह आकाश-सम्पत्ति हाथ न  
आई । बाह र ईश्वर ! तर सरीखा जजालिया कोई जालिया  
भा न निकनगा । तर रूप और गुण दाना वखन के बाहर  
ह । आज क्या-क्या तमाशा लिखनाए । यह तो व्यय था  
क्याकि प्रतिनिन इस समार में तू तमाशा लिखलाना ही ह ।  
काई निराशा में निर पीट रहा ह कोई जीवाशा में भूला ह  
का मिथ्याशा ही कर रहा ह कोई किसी से नत्र के चन का  
प्यामा ह और जन विहान दीन-मीन व सत्स तनफ रहा ह—  
बम वन सब वाना का क्या प्रयाजन ?

हरिश्चन्द्र याह ! हम गद्य में तो पद्य का ही घान ह । इननी मधुर  
भाषा हिन्दी में और कहा शायद ही मिल । आप अपना  
श्यामा-स्वप्न शायद ही पूरा काजिए ।

श्रीनिवाम यत् स्वप्न सच हो जाय तो क्या कर्ना !

बालकृष्ण बड़ी सरम भापा ह ।

हरिश्चन्द्र अच्छा बालकृष्ण भट्ट जी । अब आप अपना गठ हूमा गद्य सुनाय्य ।

बालकृष्ण जसी भाता पुष्ट्य अहरी की स्त्रिया अह्र ह ।

प्रतापनारायण बहुत सोच समझकर आपन नाम जाधा ।

बालकृष्ण सुनिए — एक बड़ी पुरानी कहाना ह । शिशुता के भलक के मिटते ही ज्याही तरुनाई की गरमाहट का संचार होन लगता ह कि यह अहरी चारी और अपन अहर की खोज में भाखें दौडाने लगता ह । यह लाचार केवल इतन ही से हो जाना ह कि किसी किसी अवस्था में समाज के जटिल बंधन ऐसे ऐसा जकड़ लतै ह कि यह अपन स्वच्छावार को अर्था में नहीं ला सकता ।

हरिश्चन्द्र मनुष्य की प्रकृति का कितना सुन्दर चित्रण आपन किया ह । अब प्रतापनारायण जो अपना मनोरञ्जक गद्य सुनान की कृपा करें ।

राधाकृष्ण प्रतिभापूण मनोरजन का ती आपको बरदान ह ।

प्रतापनारायण बशर्ते कि बर का अर्थ दुनहा न हा । (हसी) अर्था तो सुनिए । मन नारी पर एक लख लिखा ह ।

किशोरीलाल आपने मर मन का विषम चुता ।

प्रतापनारायण किशोरीलाल जो कहिए तो नारी को किशोरी स बन्दू है । सुनिए —

न का अर्थ ह नहीं और अरि कहते ह शत्रु को । भावार्थ यह हूमा कि न यह शत्रु ह न इमसे अधिक कोई शत्रु ह । जहाँ तक हो इन्हें स्वतंत्रता न सोंपो । अच्छे बच्चा के द्वारा पध्यापध्व विचार द्वारा, म्यूनिसिप्यलिटी द्वारा सत्पदेश द्वारा नारी मान को अनुकूल रखना ही अर्थस्वर ह । तनिफ



भी यतिक्रम पाओ तो वचनराज से कहो—महाराज नारी देखिए । मुल्ल के महतर से कहो कि चिलम पीन को यह पसा ना और नारा अभी साफ करा । घर की लक्ष्मी से कहो—नारी ! एसा उचित नही । कोई अफीम खा गया हो तो उसके मम्बवा से कहा कि नारी का साग पिलाना चाहिए । इसी प्रकार सदब नारी का विचार और भगवान मन्नारी ( कामदेव के मदननाथक शिव ) का ध्यान रक्खा करो नही महा अनारी हो जावोग ।

हरिश्चन्द्र बाह ! आपन ता ससार को ही नारीमय कर लिया ।

किशोरीलाल नही तो कहत ह—महा अनारी हो जावोग ।

बदरीनारायण बाह ! गद्य म भा अलकार का छटा ह ।

हरिश्चन्द्र विशारालाल जी ! अब आप कुछ सुनाइए ।

किशोरीलाल मन ता उपयास निख ह । इतन थोड समय में न सुना पाऊगा । किशोरीलाल पेना राडिग बनव का सखुण नि लूगा ।

प्रतापनारायण विशारालाल जी क चरणा म ता सम्पूर्ण जावन अर्पित किया जा सकता ह ।

हरिश्चन्द्र बाहो बात ह । ता अब बदरीनारायण चौधरा प्रेमधन को कविता का ध्यान लिया जाय ।

बदरीनारायण पण राधाकृष्णदास जो आपन नाटक का अर्थ सुना दें ।

राधाकृष्णदास भया क मामन मुनान का साहम नहीं हाता । फिर कभा सुना दूगा । आप सुनाए प्रमधन जी ।

बदरीनारायण जगद्व्या । देखिए मन भूल को एक कजनी निखी ह — भूतन कानिशा क कूनन भूतन कनिए नानिशा । कानवन कुमुदिन कम्ब की कुजनि नाचत मोर ।

ब्रूकत क्रीडल चहँकत घातक दादुर कीने शोर ।  
सरस मुहावन सावन आयो बहरत धिरि घन घार ।  
अधियारी अधिकात चचला चमकि रही चित चोर ।  
मन भाई छाई छवि सा छिति हरियाली चहुँ ओर ।  
सहरावत द्रुमलता चलत पुरवाई पवन भकोर ।  
चलो उत जनि विमल करो मन ठानत हठ बरजोर ।  
प्रिया प्रेमघन ! बरसावहु रस द आनद अयोर ।

हरिश्चन्द्र वाह ! वा ! वाह ! शब्दों के ध्वनि में ही अथ ध्वनित हो गया । कितनी मधुर कविता है !

किशोरीलाल इस कविता से बदरीनारायण जी का उपनाम प्रेमघन साधक है ।

प्रतापनारायण प्रेमघन क्या प्रेमघनाघन होता तो और भी अच्छा था (हसी) प्रेमघनाघन !

बदरीनारायण अपना मिर बचाए रहियेगा ।

कार्तिकप्रसाद अब हम सब भारत-दु जी से प्रायना करेंगे कि वे अपनी एक सरस रचना सुनावें ।

श्रीनिवास बाबू साहब ! आपन लडो वाली में कविता लिखी हो तो वह भा सुनावें ।

हरिश्चन्द्र कुछ तो लिखी है ! एक बर एक दोहा लिखा था —

भजन करो श्रीकृष्ण का मिलकर के सब लोग ।

सिद्ध होयगा काम श्री छूटगा सब सोग ॥

अब देखिए यह कितनी भौंदा कविता है । मैंने इसका कारण सोचा कि सखी बोनी में कविता मीठी क्या नहीं बनती । तो हमको सबसे बड़ा यह कारण जान पड़ा कि इसमें क्रिया इत्यादि में प्राय दोष माना होता है । इससे कविता अच्छी नहीं बनती । आप लोग को स्पष्ट हो जायगा कि

कविता की भाषा निम्सदह ब्रजभाषा ही है और दूसरी भाषाओं की कविता इतना चित्त को नहीं पकती ।

बदरीनारायण सत्य है सत्य है आप ब्रजभाषा की ही कविता सुनाइय ।

जगमोहनसिंह अपने प्रिय विषय चन्द्रावली की ही एक कविता सुनाइए ।

हरिश्चन्द्र जसी आप लोग की इच्छा । ( स्वर से सुनाते हैं । )

जग जानत कौन है प्रेम दिया

केहि सा चरचा या वियोग की कीजिए ।

पुनि को कही मान कहा समुझ काउ

क्या बिन बात की रारहि लीजिए ।

नित जो हरिचन्द जू बीत सह

कहि न जग क्या परतीरहि छीजिए ।

सब पूछत मौन क्या बठि रहा

प्रिय प्यार ! कहा इह उत्तर दाजिए ॥

सम्भलित स्वर बाह बाह ! बहुत सुन्दर !

जगमोहनसिंह प्रेम की इस गंगा में जो नहाय वह धाय !

प्रतापनारायण एक और सुना दीजिए प्रभ !

बदरीनारायण ही एक और । एक से प्यार नहीं बन्नी ।

हरिश्चन्द्र मुनिए—

इन दुखियान का न मुख मपन है मिथ्यो

यो हा सग व्याकुल विकल अकुलायेंगी ।

प्यार हरिचन्द जू की बीती जानि मोधि जो प

ज प्रान तऊ य ता सग न समायेंगी ।

देख्यो एव बारदू न नन भरि तोहि यात

जौन जौन ताक जह तौ पछितायेंगी ।

विना प्रान प्यारे भये दरस तुम्हारे हाय,  
देख लीजो छाँखें ये खुली ही रहि जायेंगी ।

सम्मिलित स्वर बाह, अत्यन्त सुदर ! कितनी सुदर !  
जगमोहनसिंह देखि लीजो छाँखि य खुली ही रहि जायेंगी ।

बालकृष्ण भट्ट कितनी मम-बघी बात कहो ह !

किशोरीलाल इससे आगे कोई और क्या लिखेगा ।

श्रीनिवास हमारे बाबू साहब हिन्दी भाषा में अमर हागे ।

कार्तिकप्रसाद सब सज्जन के मान को कारन इक हरिचन्द्र ।

जिमि सुभाब दिन रन को कारन नित हरिचन्द्र ॥

हरिचन्द्र यह सब सरस्वती देवी की कृपा ह ।

निर्दशक इस भाँति भारतेन्दु हरिचन्द्र ने हिन्दी भाषा का रूप अनेक प्रकार से सँवारा । अपने प्रेम और सौजन्य से उन्होंने हिन्दी के अनेक सेविमा को प्रोत्साहित कर उनसे साहित्य की रचना कराई । वे हरिचन्द्र ये सूय और चन्द्र दोना ही । और उन्हान हिन्दी भाषा और साहित्य को सूय की भाँति पोषित कर चन्द्र की भाँति अमृतमय बना लिया ।

परम प्रेम निधि रसिक-वर अति उत्तम गुणखान ।

जग-जन रजन आशु कवि को हरिचन्द्र समान ॥





प्रसाद-परिचय

पात्र

कर्ण

दुर्योधन

विदूषक

राक्षस

दुःशासन

पद्मावती

उदयन

वामवदत्ता

दासी

पर्यदत्त

नागरिक

द्वयसेना

स्वदगुप्त

प्रतिन्यास

[स्थान—काशी, सन १८८५, । सूधनी साहु के नाम के प्रसिद्ध घराने में एक शिशु उत्पन्न हुआ । उसका नाम रक्ता गया जयशंकर, जो प्राये चलकर श्री जयशंकर प्रसाद के नाम से हिन्दी का सबसे बड़ा नाटककार प्रसिद्ध हुआ । पन्द्रह वय की अवस्था में ही जयशंकर 'प्रसाद' ने लिखना शुरू कर दिया और उनकी रचनाएँ 'भारतेन्दु' और 'इन्दु' में जगमगाने लगीं । यह कविता की कली है यह कहानी का फूल है, यह उपमास का फल है और यह नाटक की क्यारी है । जयशंकर 'प्रसाद' सभी कुछ लिख सकते थे । उनकी प्रतिभा सूरज की एक किरण थी जिसमें साहित्य के भीत भीत के रंग छिपे हुए थे ।

दोहाएँ, ये प्रसाद जी के नाटक हैं । ये छंद आपके सामने बोल सकते हैं— ]

एक स्वर शायत्री ।

दूसरा स्वर विशाल ।

तीसरा स्वर भजातशत्रु ।

चौथा स्वर जनमजय का नाग-धन ।

पाँचवाँ स्वर ध्रुव स्वामिनी ।

छठा स्वर स्कन्दगुप्त ।

सातवाँ स्वर चन्द्रगुप्त ।

आठवाँ स्वर एक घुँट ।

प्रतियोग्य इनमें तीन नाटक पुराने हैं जो छुट्टे नहीं बोल सके । मैं उनके नाम मुनाता हूँ । वे हैं सत्रय प्रार्थारिचत और कामना । इस तरह कुन ग्यारह नाटक हैं । इन नाटकों में तीन तरह के रंग हैं—तारा का प्रकाश, उषा और सूर्योत्थ । इन तीनों की भाँकी देखिए —



यह सस्कृत के बाग वा पीघा ह । इसम नादी पाठ  
 झार प्रस्तावना के पत्ते ह गद्य और पद्य की कलियाँ और  
 फूल ह । इन कलियों म ब्रजभाषा की सुगंधि ह । विद्रूपक  
 और की तरह गुनगन कर रत्ना ह इसम अनकारो के रग ह  
 और रस का मकरन्द भरा हुआ ह । इसका नाम ह सज्जन  
 पट-मण्डप में दुर्योधन दुःशामन कण शत्रुनी आदि बठे ह ।  
 नाच हो रहा ह । गान वाली गाती ह ।

गानेवाली सग जुग जुग जाप्रो महाराज ।

सुखी रहो सब भाति अनन्ति भोगो सब सुख साज ।

नित नव उत्सव होय मगन मन विनव राज समाज ।

कण वा कथा अच्छा गया

दुर्योधन ( अगूठी देकर )—मित्र कण पाण्डवो को हमारे भान का  
 पता लगा कि नहीं ?

कण अवश्य ही उन्हें ज्ञात होगा ।

दुःशामन पाँचा इस समय अकेल हाग समय तो अच्छा ह ।

कण चुप ही हमार बभव का देख कर व अवश्य ईर्ष्या से जलते  
 हाग और हम लागा व भान का तात्पर्य भी तो यही ह ।

दुर्योधन ( गहरी साँस लेकर ) जब से अजुन के अस्त्र प्राप्ति की बात  
 हमन सुनो ह तब से हमार मन म बड़ी आशका ह ।

कण कुछ आशका नहीं ह ।

जा चड भाव भ्रष्ट रहे सहार  
 ह नित्य नतन हिए मह भ्रात्र धार  
 उद्याग ना विरत होय कबो न हनी  
 लक्ष्मा सग रहत तामु बनी सुचेती

दुर्योधन क्यों न हो मित्र कण ! तुम एसा न कौण तो कौन कहेगा ?

प्रतिन्यास और विदूषक अलग कदम रहा है—देखो केवल कण से सलाह लन वाले मनुष्या का क्या दशा होती है। मनुष्यो ! तुम्हें ईश्वर न भ्रांति भी निया है उससे काय लिया करो। हमारे राजा दुर्योधन के ता केवल कण हो मित्र हैं और होना भी चाहिए क्योंकि धृतराष्ट्र के पुत्र है।

कर्ण प्रा क्या बडबडाता है ?

विदूषक जी घमावतार ! कुछ नहीं।

कण झूठ बोलता है और मुझे सामन।

दुर्योधन चला जा सामने से।

कर्ण जा मैं मत लिखा।

प्रतिन्यास विदूषक मुँह बनाकर मुझे फर लेता है।

दुर्योधन ( झिडककर ) बाहर जाओ।

विदूषक जाता है सरकार।

प्रतिन्यास विदूषक बाहर जाता है।

कर्ण इसके सामन मत्रणा करना ठीक नहीं है।

प्रतिन्यास ( गडुनी कहता है ) मत्रणा क्या है। मृगया खलन चलोगे न ? परु भी तो इसी धन में है।

कर्ण और दुर्योधन हाँ हाँ ठीक है।

प्रतिन्यास इसी समय विदूषक को पकड़े हुए एक राक्षस आता है। कण प्रोधित होकर पूछता है।

कर्ण तू कौन है ? नहीं जानता कि किसके सामन खड़ा है !

राक्षस जानता है बुद्धि का जिसे भ्रजोण है और जिसे केवल कण का सहारा है उस कौरवाधिपति के सामने।

कर्ण र नाथ मोक्ष तब वग नगोच भाई  
जा कौरवाधिप समीप कर डिठाई।

क्यो हूँ अभीत इत भावन दुष्ट की-हो  
देन चत्ताव मम खटग वीन ची-हो ?

दु शासन क्या तू क्यो यहाँ आया ह ?

राक्षस महाराज गधर्वाधिराज चित्रसेन न कण ह कि दुर्योधन से कहा  
कि मृगया के ससन का विचार यहाँ न करें । उसव कर  
चुके । अब यत्नि अपना कुशल चाहें तो यहाँ से हस्तिनापुर को  
प्रस्थान करें ।

कण ( क्रोधित होकर ) जा अपन स्वामी से कह दे कि हम लोग  
अवश्य मृगया खलेंग ।

राक्षस भ्रच्छा ।

प्रति-यास राक्षस सिर हिनाता हुमा जाता ह और विदूषक की टांग पकड  
कर खींचता ह और विदूषक कहता ह ।

विदूषक भर छाड । मत दुख दे म तो जिसकी विजय होगी उसी के  
पक्ष में रहूगा ।

प्रति-यास यह रही पहली भाँकी संस्कृत नाटक के इसम प्राण ह तो  
पारसी थियेट्रिकल कंपनी का शरीर ह । एक बरबटर गाना  
गाता ह दूसरा बविता पढता ह और तासरा जोर से बोलता  
ह । कथा पुरानी ह लकिन इसमें प्राण नहीं हैं । यहाँ प्रसा  
जो संस्कृत क पुरान और हि ी के नए नाटको के रास्त पर  
बल रह ह । भाइए अब हमके बाट को दूसरी भाँकी देख ।  
इसमें पश्चिम नाटय-कला आ गई ह लकिन यह कथा अधिक  
तर एनिडबयन-कान की कला स भरपूर हैं । इसमें स्वगत  
कथन और अभिनयात्मकता का विशय प्रभाव ह । इसका  
सबस भ्रच्छा उन्हाहरख बजातसत्र ह । इनका भी एक चित्र  
दखिए मगध की राजकुमारी और उन्धन की रानी पद्मावती  
का बमरा ह । पद्मावता बीषा बजाना चाहती ह । कई बार

प्रसास करन पर भी नहीं सकन होती । वह कहती हूँ ।

पद्मावती जब भीतर की तन्नी बकल हूँ तब यह कैसे बजे ? मरे स्वामी  
मरे नाय यह कमा भाव हूँ प्रभु ।

प्रति-यास यह फिर बाणा उठाती हूँ और रख देती हूँ फिर गान  
लगती हूँ ।

मोड मत तिच वीन के तार ।

नित्य उगनी अरी ठहर जा ।

पल भर अनुकम्पा स भर जा ॥

यह मूर्छित मूर्छना चाहती ।

निकलगी निस्सार । मोड मत०—

छेद छेद कर मूक तत्र की ।

विचलित कर मधु मौन मात्र की ॥

निबारा दे मत शून्य पवन भा ।

लय हा स्वर गाकार । मोड मत०—

मनत्र उठेगा सकरण वीणा ।

किमी हृदय की होगी पीडा ॥

नृत्य करगा नग्न विकसता ।

परदे के उस पार । मोड मत०—

यह सौभाग्य हा हूँ कि भगवान गौतम ध्या गए हूँ  
धायया पिता की दुखस्वस्था सोचने सोचत तो मेरी बुरी धवस्था  
हो गई थी म आश्रमण का समोध मात्स्वना मभू धय देती हूँ ।  
किन्तु म यह क्या सुन रहा हूँ स्वामी मुझमे असन्तुष्ट है !  
भला क्या बतना मुझमे क्या मन्ने जायगी ! क्या धार दासी  
गई किन्तु क्या हा तब ही एसा हूँ कि किमी अनुलय विनय  
का साहम ही मन्ने होता । फिर भा कोई चिन्ता नहीं । राज  
भक्त प्रजा को विद्राही होने का भय ही क्यों हो ?

हमारा प्रेम निधि मुक्त सरन है ।

अमृतमय ह नही वनम गरल ह ॥

[ नेपथ्य में—भगवान बट्ट की जय ! ]

पद्मावती अहा सध सहित करुणानिधान जा रह ह दशन ता करु !  
प्रतिन्यास और पद्मावती भगवान बट्ट को खिडकी से देखती ह । उसी  
समय उदयन आत ह ।

उदयन ( क्रोध से ) पापीयमी देख न यह तर हृय का विष तरी  
वामना का निष्कप जा रहा ह । इमीलिए न यह नया भरोवा  
वना ह ।

प्रतिन्यास पद्मावती चौककर खडी हा जाती ह और हाथ जोटकर  
कहती ह ।

पद्मावती प्रभ ! स्वामी ! क्षमा हा । यह मति मरी वासना का विष नही  
किन्तु अमृत ह । नाव जिसके रूप पर आपको भी असीम  
भक्ति ह उमी रमणो रत्न मागधा का भी निहान तिरस्कार  
किया था शांति के सत्वर करुणा के स्वामी उन बट्ट को  
मांस पिन्ने की भी आवश्यकता नै ।

उदयन किन्तु मरे प्राणा का ह । कपो ? इमलिए न वीणा में मांस का  
बचा धिगाकर भजा था ? तू मगध की राजकुमारी ह  
प्रभव का विष जा तर रवन में घुमा बन जितनी ही हत्याए  
कर सकता ह । दुराचारिणी ! तरी चान का दाव मझ पर  
नही चला । अब तरा अन्त ह सावधान !

प्रतिन्यास और उदयन तनवार निकान उन ॐ ।

पद्मावती म कौशम्बी नरेश की राजभक्त प्रजा हूँ स्वामी ! किमी  
घनना का आपस मन पर अधिकार हो गया ह । वह बनक  
मर मिर पर हा मने । विचार की दृष्टि में यदि अपराधिनी  
है तो एए भा मझ स्वीकार ह । और वह एएड वह शांति

दायक एंड यदि स्वामी के कर कमलो से मिले तो मेरा  
सौभाग्य है। प्रभु! पाप का दण्ड ग्रहण कर लेने से वही पुण्य  
हो जाता है।

प्रतिन्यास पद्मावती सिर झुका कर घुटने टकती है।

उदयन पापीयमी! तेरी बाखी का धुमाव फिराव मुझे अपनी ओर  
नहीं आकर्षित करेगा मुझे इस हलाहल से भरे हुए हृदय को  
निकालना ही होगा। प्राथना कर ल!

पद्मावती मरे नाथ! इस जन्म के सबस्व और उम-जन्म के स्वर्ग! तुम्हीं  
मरी गति हो और तुम्हीं मेरे धर्म हो जब तुम्हीं समझ हो  
तो प्राथना किसकी करूँ? मैं प्रस्तुत हूँ।

उदयन अन्ध।

प्रतिन्यास और उसी समय उदयन तलवार उठाता है वासवदत्ता प्रवेश  
करती है।

वासवदत्ता ठहरिए मागधी को दामो नवीना आ रही है जिमने सब  
अपराध स्वीकार किया है। आपका मेरा नाम राज मन्दिर को  
सीमा के भीतर इस तरह हत्या करने का अधिकार नहीं है।  
मैं इसका विचार करूँगी और प्रमाणित कर दूँगी कि अपराधी  
कोई दूसरा है। वह इसी बुद्धि पर आप राज्य शासन कर  
रहे हैं? कौन है बुलायो मागधा और नवीना को।

दासी महादेवी जी धाना चाहती हैं।

उदयन देवी मेरा तो हाथ ही नहीं उठता है! यह क्या माया है।  
वासवदत्ता प्राय पुत्र! यह सती का तज है सत्य का शान्त है,  
हृदयहीन मद्यप का प्रनाप नहीं। देवी पद्मावती! तू पति के  
अपराधा को क्षमा कर।

पद्मावती (उठकर) भगवान् यह क्या? मेरे स्वामी! मेरा अपराध  
क्षमा हो। नसें चढ़ गई होंगी।

प्रतिन्यास पद्मावती उदयन का हाथ सीधा करती है, इसी समय दासी घाती है ।

दासी महाराज ! भागिए महादबी ! हटिए वह दलिये भाग की लपट इधर ही चली आ रही है । नर्क महारानी के महल में भाग लग गई है और उनको पता नहीं है । नवीना मरती हुई कह रही थी कि मागधी स्वयं मरी और मन्म भी उदयन मार डाला ! वह महाराज का सामना नहीं करना चाहती थी ।

उदयन क्या पश्यत्र ! भरम क्या पागल हो गया था ! दबी ! भय राघव चला हो ।

प्रतिन्यास उदयन पद्मावती के सामने घुटने टकते हैं ।

पद्मावती उठिए उठिए महाराज ! दानी को लज्जित न कीजिए ।

वासवदत्ता यह प्रणय लीला दूररी जगह होगी । चला हटो यह देखो लपट फल रही है ।

प्रतिन्यास वासवदत्ता दोनों का हाथ पकड़ कर खींचकर खड़ी हो जाती है पर्दा हटता है । मागधी के महल में भाग नहीं हुई दिखाई पड़ता है ( कुछ रुककर ) यह रही दूररी भाँकी विचारा की सत्यता और अभिनय की मनोरमता प्रारम्भ से अन्त तक बराबर चला आता है । इसमें जावन का संगीत और सधय दोना है । अनातशत्रु नहीं जयशंकर प्रसाद की प्रथम थला का नाटककार घोषित कर दिया ।

भय उनके तीसरी और आखिरी भाँकी भा देखिए । उगम परिचय का नाटय कला का स्वतंत्र प्रभाव है । इसमें प्रसाद का मौलिकता अपनी अतिम सामा पर पहुँची हुई है । उसमें मानवगतिक मरसता का पूण उदय हो गया है उसे पणुमानी का चीन है । स्वतन्त्र नाटक में अभिनय पूण है । स्वतन्त्र का मी मन्मदबी का समाधि के समीप अकेला पूण त

टहलत हुए आता ह ।

**पर्यादत्त** सूखी राटिया बना रखना पटती ह जिहें कुत्ता को देते हुए सकाब हाता था उही कुस्मित अन्ना का सचय अक्षय निधि व समान । उन पर पहरा दना ह । म रोज़गा नहीं परन्तु यह रक्षा क्या केवल जीवन का वाक्य बहन करन के लिए ह ? नहीं पछ रोना मत । एक बूँ भी आसू आँखा में न दिखाई पड, तुम जीत रही । तुम्हारा उद्देश्य सकल होगा । भगवान मरि होंगे तो कहेंगे कि मरी सष्टि म एक सच्चा हूँय था । सतोप कर । उछलते हुए हूँय । सतोप कर । तू रोटिया व लिए नहीं ह तू उसका भूल दिखाता है जिसने तुम्हको उत्पन्न किया ह, परन्तु जिस काम का कभी नहीं किया उसे करत नहीं बनता स्वर्ग भरत नहीं बनता दश के बहुत स दुदशा प्रस्त धार हृदया का सेवा क लिए करना पडगा । म सत्रिय हैं । मरा यह पाप ही आपद्धम हागा साक्षी रहना, भगवन् ।

**प्रतियास** एक नागरिक प्रवेश करता ह ।

**पर्यादत्त** बाबा कुछ दे दा ।

**नागरिक** और वह तुम्हारी कहीं गई वह

**प्रतियास** नागरिक इशारा कर रहा ह ।

**पर्यादत्त** मरी बटी ? स्नान करन गई ह । बाबा । कुछ दे दो ।

**नागरिक** मुझे उसका गान बडा प्यारा लगता है अगर वह गाती तो तुम्हें अवश्य कुछ मिन जाता । अच्छा फिर आऊगा ।

**प्रतियास** नागरिक चला जाना है ।

**पर्यादत्त** (बाँत पीसकर) नीच ! दुरात्मा ! विलास का नागकीय बीडा । बाला को संवारकर अच्छे कपड पहनकर भव भी घमड स तना हुमा निकनता ह । कुल बधुमा का अपमान सामन करत हुए भी भकड कर चल रहा ह । भय तक विलास और नीच



वासना नहीं गई। जिस देश के युवक ऐसे हैं उसे अवरय दूसरा के अधिकार में जाना चाहिए। देश पर यन् विपत्ति फिर भी यह निरानी घा।

प्रति-यास इसा समय देवसेना आती है।

देवसेना बाबा ! क्या चिन्त रह हो ? जान लो जिसन नहीं दिया यह कुछ तुम्हारा तो नहीं ने गया।

पर्यदत्त देवसेना ! अन्न पर स्वत्व है भूखा का और धन पर स्वत्व है देशवासिया का प्रकृति न उन्हें हमारे लिए हम भूखों के लिए रख छोड़ा है। वह याती है उसे लौटान म इतनी कुटिलता। विनास के लिए उमरे पास पुष्कल धन है और दरिद्रा के लिए नहीं। आयाम का समयन करते हुए तुम्हें भूल न जाना चाहिए कि

देवसेना बाबा ! क्षमा करो आने दो। कोई तो देगा।

पर्यदत्त हमारे ऊपर सकडा घनाय बौरा के शानका का भार है। बेटो ! व युद्ध में मरना जानते है परन्तु भूख से तड़पते हुए उन्हें दाय धर आँखा स रक्त गिर पडता है।

देवसेना बाबा ! मृष्टान्धों की समाधि स्वच्छ करती हुई जा रही है। कई जिन स भाम नहीं आया मातगुप्त भी नहीं सब कहाँ है ?

पर्यदत्त आवगें बेटो ! तुम बठो म अभी आता है। (पर्यदत्त जाता है।)

देवसेना मगीत-मभा की धतिम नहन्दार तान धूपगान को एक छाण गध घूम रखा कुचन हुए फूनों का म्यान सौरभ और उत्तमव के पीउ का घवगाँ इन मद्रा की प्रतिकृति मरा क्षम नारी जोवन ! मर प्रिय गान अत्र क्या गाऊँ और क्या सुनाऊँ ! इम बार बार के गाए हुए गीता में क्या आनपण है ! क्या बल है जा खीचना है ! देवा गुनन ही की नहीं प्रत्युत जिसने

साथ अनन्त काल तक बठ मिला रखने की इच्छा जग जाती  
ह ! ( देवसेना गाती है । )

शून्य गगन में खलता जस चन्द्र निराश ।  
राका म रमणीय यह किसका मयूर प्रकाश ॥  
हृदय तू खोजना किसको छिपा हू कौन-सा मन्मथ ?  
मचलता हू बता क्या दू छिपा तुझ से न कुछ मन्मथ में ॥  
रस निधि में जीवन रहा मिटी न फिर भा प्यास ।  
मैं खान मवनामपो सापो स्वागत भ्राम ॥  
हृदय तू हू बना जलनिधि लहरियाँ खलती तुझ में ।  
मिला भ्रव कौन सा नव रत्न जो पहले न था तुझ में ॥

[ गाते हुए चली जाती है । ]

प्रतियास वश बन्दल हुए स्कन्धगुप्त का प्रवेश ।

स्कन्द जननी ! तुम्हारी पवित्र स्मृति को प्रणाम !

प्रतियास स्कन्धगुप्त समाधि के समीप घुटन टेक कर फूल चढ़ाते हू ।

स्कन्द माँ क्षतिम वार आशार्वाङ्ग नहीं मिला इसी से यह कष्ट,  
यह अपमान । माँ ! तुम्हारी गोत्र में पलकर भी न मर सका !

प्रतियास दवसेना प्रवेश करती हू ।

देवसेना हाँ राजाधिराज ! घाय भाग्य भ्राज दशन हुए !

स्कन्द देवसेना बड़ी-बड़ा कामनाएँ थीं ।

देवसेना सम्राट ।

स्कन्द क्या तुमन यज्ञ काई कुटो बना लो हू ?

देवसेना हाँ महीं गाकर भीष माँगती हू और आय पण्डित के साथ  
रहता हुई मन्त्रियों की समाधि परिष्कृत करती हूँ !

स्कन्द भालवश कुमारी दवसेना ! तुम और यह काम ! समय जा चाहे  
करा ल ! कभी हमन भा अपन काम का क्रम बनाया था !  
( दबकर ) देवसेना, यह सब मरा प्रायश्चित्त हू । भ्राज

म वधुवर्मा की आत्मा को क्या उत्तर दूंगा जिसन नि स्वाप भाव से सब कुछ भर चरछा म अपित कर दिया था उससे क्या उम्हण हाऊगा ! म यह सब दखता हू और जीता हूँ !

**देवसेना** म अपन लिए हा नही मांगती नव । आय पणत्त न साम्राज्य के बिखर हुए सब रत्न एकत्र किए ह । व सब तिरवलम्ब है किसी के पास टूटी हुई तलवार हा बची ह तो किमी के पास जीण वस्त्र खड । उन सब की सेवा इमी आश्रम में होती ह ।

**स्फुट** वद पणत्त । तात पणत्त । तुम्हारी यह दशा । जिमके लोहे स आग बरसती था वह जङ्गल की लकड़ियाँ बहोरकर भाग सुनगाता ह । दयसेना । अब उसका कोई काम नहीं । चलो महादेवा की समाधि के सामन प्रतिश्रत हा । हम तुम अब अलग न होग साम्राज्य ता नही ह म बचा हूँ । अब अरना ममत्व तुम्हें अपित करव उम्हण हाऊगा और एकातवास करेगा ।

**देवसेना** ता न हागा सम्राट । म दासी हूँ मालवन जो देश के लिए उत्पन्न किया ह उसका प्रतिशान नकर मत आत्मा का अमान न करेगी । सम्राट देखा मही पर सती जयमाला का भी छाटा-मा समाधि ह । उसके गौरव की भी रक्षा होनी चाहिए ।

**स्फुट** दवमना यधु वधुवर्मा की भी तो यी इच्छा थी ।

**देवसेना** परंतु समा हो सम्राट । उस समय आप विजया का स्वप्न दखत थ अब प्रतिशान नकर में उम महत्व को कनकित न करेगी । मैं आश्रवा दामी बना रहूंगी परंतु आपके प्राध्य में भाग न लूंगा ।

**स्फुट** दवमना । प्तान में किसी कानन के बोन में तुम्हें देखता हुआ जीवन व्यनत करेगा । साम्राज्य की इच्छा नहीं, एक

बार कह दो ।

**देवसेना** तब तो और भी नहा । मानव का महत्व तो रहेगा ही परंतु उसका उद्देश भी सफल होना चाहिए । आपको एक मरम बनाने के लिए देवसेना जीवित न रहनी । सम्राट् ! सम्राट् ! इस हृत्प में आह बहना ही पडा स्कन्दगुप्त को छोड कर न तो कोई दूसरा आया और न वह जायगा । अभिमानी भक्त के समान निष्काम होकर मझे उसी की उपासना करने दीजिए उसे कामना के भवर में फँसा कर क्लुपित न कीजिए । नाथ ! मैं आपको ही हूँ मन अपने को दे दिया हूँ । अब उसके बल में कुछ लिया नहीं चाहती ।

**प्रतिन्यास** देवसेना स्कन्द के परो पर गिर पडती है और स्कन्द सबोध देते हुए कहता है ।

स्कन्द उठो देवसेना ! तुम्हारी विजय हुई ! आज मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं कुमार-जीवन ही अर्पित करूँगा । मेरी जननी की समाधि इसमें साधी है ।

**देवसेना** हैं हूँ यह क्या किया ।

स्कन्द कल्याण का योगणश । यदि साम्राज्य का उद्धार कर सका तो उसे पुरगुप्त के लिए निष्कटक छोड जाऊँगा !

**देवसेना** ( गहरी साँस लेकर ) देवदत्त ! तुम्हारी जय हो !

**प्रतिन्यास** यह प्रसाद की तीसरी भाँकी है । जीवन बसा है यह प्रसाद जो मे बडो मुत्तरता से पात्रा के मुख से बहला दिया है । उनके नाटका में स्त्री सबसे बडो शक्ति है जिसके बल पर कभी जीवन नीचे गिरता है कभी ऊपर उठता है और जब स्त्री ऊँचे भाँश की होती है तो वह सार जीवन पर प्रकाश डालती है । कुरुखा की रागिनी में गूँजकर उसकी वाणी जीवन को उच्च

बनान का अमर सदेश देती ह ! प्रसा<sup>न</sup> के पुण्य-पात्रा में अमर बल ह तो स्त्री पाना में तज । और देवसेना तो सार भारतीय साहित्य को उनको अमर बन ह !



छायावाद-युग

पात्र

निर्देशक

विराट

मृदुल

मनोज

तीन विद्यार्थी

प्रोफेसर

साहित्य सरस्वती

नवयुग

निर्देशक हिन्दी-साहित्य के इतिहास में छायावादी युग अपनी प्राधुनिकता और नवानता के कारण युगांतरकारी युग समझा जा सकता है। मान लीजिए किसी शरद की संध्या में बादल लाल होकर सार आकाश में छा जाय और दिन फूल उठे लेकिन कोई यह न समझ सके कि इतनी लानिमा कहीं से आकर आकाश के कण कण में समा गई और कसे समा गई ! इसी प्रकार जब यह छायावादी नवीन युग की अरुणिमा लेकर उठा तो वह बहुता का समझ में नहीं आ सका। फूल का सौंदर्य समझने के लिए निरप्य अर्गुनियों न पत्तुडियों की अलग अलग कर धाला लेकिन इससे फूल, फूल ही नहीं रहा। छायावादी युग को समझने के लिए भी उसकी पत्तुडियाँ अलग अलग तोड़ी गई लेकिन इससे छायावादी-युग खड खड होकर रह गया सौंदर्य-हृत हो गया। हिन्दी-साहित्य का कोई युग इस भाँति भाँतिया से जजरित नहीं हुआ जितना छायावादी-युग।

और जब कोई युग किमा बनौपधि की भाँति समय की भूमि पर उग उठता है तो उपवन का सरसक माली उसकी उपयोगिता न समझकर उसे अपने फावड़े से खोकर दूर करना चाहता है उसी भाँति युग की सपूण सबदना लिए हुए जब छायावादी उभरा तो साहित्य-समानोचका न भी उसे सदेह की दृष्टि से दखा और उलाह पवना चाहा। छायावादी किमी शिशु की भाँति यन् नहीं बतला सवा कि दन् किम जगह है। बाकुरा न नरतर पर नरतर लगान शुरू कर लिए। पर मैं दन् हान पर उहौन मिर का भापरशन किया और मिर में दद होन पर पर का। इस प्रकार छायावादी अत विद्यत



होकर रह गया ।

छायावाङ्मय युग-सभत था । वह किसी व्यक्ति विशेष की प्रवृत्ति नहीं थी । कुछ प्रमुख साहित्यकारों की प्रतिभा का कवच पहिनकर वह साहित्य क्षेत्र में अवतरित हुआ । समालोचकों के साथ स्वयं कुछ कवियों ने उस नहीं समझा । अतः छायावाङ्मय के शत्रु राजयक्ष्मा के कीटाणुनाश की भाँति छायावाद के अतगत ही थे ।

देखिए य छायावाङ्मय के नाम से पकार जान वाला कुछ कवि-गण हैं जो किसी कवि-सम्मेलन के बाद चाय पीने के लिए एक कमरे में बैठे हुए बातें कर रहे हैं । कुछ की आँखों में मुरझा हुआ आँसू में लिपस्टिक नहीं-नहीं सिगरट्ट है । कंधे तक बदन की चट्टा में है यद्यपि अभी कथा तक ही है । वे नाग बाणा भवन की पवित्रता रखने का प्रयत्न करते हुए नीटका के घरातल पर उतर आते हैं ।

एक ( कृत्रिम हँसी उत्पन्न हुए ) हि हि धन्य हो विराट जी ! कवि सम्मेलन में आपकी कविता के श्रवण मात्र से हृत्तशा के तार अहा हा हा एक से दस दस से सौ और सौ से सहस्र-सहस्र हो गए ! आतामो को आँखें कभी मूँदती थी कभी मपनी थी कभी भूँदती थीं । आहा ! क्या पक्ति है ! और आपन पत्नी भी कितने सुन्दर दग से ? जम आमतो सरस्वता दवी न दस पक्ति का ही अपनी बाणा का तार बना लिया हो । आहा ! इसी तरह मन भा एक पक्ति लिखा है ( स्वर से ) मैं आई हूँ द्वार तुम्हारे ए ए

विराट वन्द्य सुन्दर ! मृदुल जी ! अनुभूति से रहित होकर काव्य रचना नहीं हो सकती । आपन अनुभूति के स्वच्छ कण रज कण में खोजें हैं । तभी ता आपका नखनी एसी पक्तिर्या

लिख सकती ह । आपकी रचना बहुत ही सुंदर थी ।

मृदुल ( नम्रता दिखाते हुए ) हाँ या ही लिख लेता हूँ । म एक दिन राजदा पट रहा था । रूप चित्रण वह कुछ कर नहीं सकता । मन उसी की एक पक्ति लेकर सौंदर्य की सृष्टि की थी —

प्रियतम, जावन-तत्री लकर,

म आई हूँ द्वार तुम्हारे ।

पीढा का ससार छिपा ह,

गाले ह तारा क तार ।

विराट् बाह वा ! तारा के तार क्या बात कही ह । तारो के तारे भी गील ह खूब ।

मृदुल और मा सुनिय सुनिए मनाज जी ! ( अत्यंत कोमल स्वर में )

पीढा मेरा घायल हाकर

साँसो में बठी ह सूनी ।

वह अनंत की प्यास लिए ह

पूरी ह पर ऊनी ऊनी ।

मनोज बाह, बाह ! पूरी होकर भी ऊनी ! बाह !

मृदुल जा यह रहस्यवाण ह । छोटा-सा गीत ह । मरी अपनी अनुभूति ह ।

मनोज बहुत अच्छा ह और विराट जी ! आपका वह कौन सा गीत ह ? अनन्त की प्यास वाला ।

विराट् वह तो मेरा पुराना गीत ह । इपर नया कुछ नहीं लिखा ।

मनोज भजा आपका पुराना भी नया ह । सुनाइये न ।

मृदुल मेरी कविता तो पूरी हुई नहीं ।

मनोज यह बात मैं सुन ली जायगी ।

मृदुल ( क्षोभ से ) अच्छा ।

मनोज हाँ सुनाइए विराट् जी!

विराट् म सुनाऊ ? अच्छा तो सुनिए । ( गुनगुनाते हैं । स्वर से गाते हुए )

यह अनन्त की प्यास माँगती ह  
ग्राँसू की धारा रे ।

मृदुल बाह क्या ग्राँसू की धारा मागो ह !

विराट् यह अनन्त की प्यास माँगती ह  
ग्राँसू का धारा रे ।

कमी न डबा मस्तक के उस ग्रहण  
विदु का तारा रे ॥

मनोज बाह बाह ग्रहण विदु का तारा रे ! क्या बात कही ह !  
यद्यपि अनन्त की प्यास और ग्रहण विदु के तार में कोई  
सम्बन्ध नहीं मालूम होता फिर भी बात खूब कही ह । देखिये,  
मरा भी एक धृ ह । ( अत्यन्त मधुर स्वर से )

यर पात्र प्यासी प्यासी ह  
म जीवन धारा सींच रहा ।

तुम मरी साँसा में बटो हो  
इससा साँसें सींच रहा !

मृदुल ( चिड़कर ) साँसें सींच रहा ! साँस न हुई रस्ता हुआ !

मनोज आप मस ह ! चार कविता त्रिषु उन से कोई कवि नहीं बनता ।

मृदुल आप भूय हैं कविता त्रिषुना रस्ता सींचना नहीं ह ।

विराट् शांत ! शान्त !

निर्देशक इन कविया न ही छायावाङ्मयी वङ्गनाम किया । दूसरी  
धार समानोचका का ऐसा वग था जो छायावाङ्मयी भाषा  
वाङ्मयी और जायावाङ्मयी से जाह कर एक धार तो कविया की  
शृंगार-चष्टामा का हीन-वृष्टि से देख रहा था दूसरी धार

छायावाङ्मय के स्वानुभूतिमूलक स्वच्छन्द भावा को तारतम्यहीन समझकर अनन्त को धार जैसे परिहास-मूख शब्दों से लादित कर रहा था। देखिये ये समालाचक जो सयोग से प्रोफेसर भी हैं अपने क्लास में नेक्चर दे रहे हैं

प्रोफेसर त्रिविद्य युग की इतिवृत्तात्मक कविता में द्विविद्यी युग के वस्तुवाङ्मय के चित्रण में एक समोहन या एक उमगमय प्रयोग था जिसमें परिस्थिति का स्थूलता अपने चमकाले रंग में उभर रही थी जैसे किसी बालक ने चमकान और रंग बिरंगे पत्थरों को अपने टबल पर सजा कर रख दिया हो। यह कविता एक प्रदर्शना थी जिसमें कहीं रवि वर्मा के चित्रों के आघार पर पौराणिक कथाओं पर कविताएँ थी और वहीं कृपक कोयल और वसन्त ढाक के तान पात की तरह अलग अलग भूम रहे थे विलकुल अलग जस मेरो ये उगलियाँ हैं एक दो तीन। एक विद्यार्थी प्राङ्गमर साहब ! ढाक के तीन पात की तरह से क्या मतलब ?

प्रोफेसर जस आप आपकी पुस्तक और आपकी पढ़ाई तीनों अलग अलग हैं जिनमें परस्पर काइ सम्बन्ध नहीं है।

( क्लास की हँसी )

प्रोफेसर हाँ तो मैं कह रहा था कि त्रिविद्यी युग की कविता बाहरी थी भीतरी नहीं। वह बेचैन अचर-अलक्ष्य थी उसमें निवास करने वालों मुस्कान नहीं। वह गति थी, गति की मस्तो नहीं, वह मानसरावर थी हस नहीं।

दूसरा विद्यार्थी वह प्रोकमी थी प्रेजेस नहीं।

( हँसी )

प्रोफेसर हाँ ऐसा ही समझ लीजिये। तो कविता बाहरी रूपरेखा से भीतरी रहस्या में जाना चाहता है। प्रकृति के अंतराल में, जो

विश्वात्मा की विभूति है, पून के हृदय में जो सुगंधि है  
 वसंत के क्रोध में जा मलय पवन है आकाश के विस्तार में,  
 जो उषा की लानिमा है कीमल रूपा में जा लाज भरा  
 सौंदर्य है (बीच ही में एक विद्यार्थी से) क्या आप सो  
 रहे हैं ?

तीसरा विद्यार्थी (चौककर) ए जो नदी जो नदी ! मैं  
 मैं तो

दूसरा विद्यार्थी स्वप्न नोक में उड़ जा रहे हैं ।

प्रोफेसर इसी तरह छायावाणी-कवि उड़ जा रहे हैं । समझते हैं कि  
 वे प्रकृति के अंतरान में प्रवेश कर रहे हैं लेकिन वे प्रवेश  
 करते हैं मच्छड़ा की तरह । गनगुनाते हैं तो समझते हैं सप्त  
 स्वरा की सरिता बहा रहे हैं । सुंदर शरीर के एक अंग से  
 उड़ कर दूसरे अंग पर बैठते हैं और अपने दशन का तीव्र नोक  
 से शरीर के भीतर प्रवेश करना चाहते हैं । कहते हैं—मैं स्थूल  
 से सूक्ष्म में प्रवेश कर रहा हूँ । मैं कर्ता हूँ वे छायावाणी नाम  
 का मंत्रिया फना रहे हैं यह मंत्रिया जो सक्रामक है । पास  
 के पत्र निम्ना को जगता है और वे भी छायावाणी बन जाते  
 हैं जो । पर छायावाणी । जो चाहता है इन मच्छड़ा पर मैं  
 पिलट छिड़कना शुरू कर दूँ । और हजारा की सख्या में य  
 जा छायावाणी मच्छड़ उत्पन्न हो गये हैं इन्हें एक ही स्त्रे में  
 दरअसन अनंत की धार भज दूँ ।

पहला विद्यार्थी अनंत का धोर क्या प्राप्ति साहब ?

प्रोफेसर अनंत का धार ए प्रिय ! स्वकवान घाँ ! तू चत अनंत की  
 धार । आज के युग में कोई भी अनंत की धोर से कम छत्राग  
 भरता ही नहीं । इन छायावाणी कवियों ने स्वकवाना को भी  
 अनंत की धार चलन का सक्त किया है । अनंत की धोर

'जिन्हें अपन अन्त का भी ज्ञान नहीं, उन्हें अन्त का क्या पता होगा ? जि दगी में डूब हुए हैं सिगरेट पीते हैं सिनमा देखकर एक शिल के हजार टुकड़े करते हैं एक इधर गिराते हैं एक उधर और कविता में लिखते हैं 'बल अन्त की धार । अन्त की धार जान में साधना चाहिये, तपस्या चाहिये ।

दूसरा विद्यार्थी लकिन प्रोफेसर साहब । हम ध्यायावाद का रूप तो स्पष्ट नहीं हुआ ।

प्रोफेसर जब ध्यायावाङ्मय ही स्पष्ट नहीं है तो उसका रूप क्या स्पष्ट होगा ? सारी कविता पढ़ जाइए अगर मतलब आपकी समझ में आ जाए तो आपको भी रूप्य दू । कविता समाप्त करने के बाद आप विचार करें कि आप क्या पढ़ गये तो मालूम होगा जैसे रस-वास में घाट दौड़ कर न जान कहीं से कहीं पहुँच गये । मन ऐसा हो जाता है जैसे किसी फुटबाल में से हवा निकल जाय । या जैसे ताली चूने में पाती हुई दीवाल आपके सामने आ जाए बिलकुल साफ शून्य ।

पहला विद्यार्थी लकिन प्रोफेसर साहब । वह स्वर से भी तो पढ़ी जाता है ।

प्रोफेसर तो समझ लीजिये जैसे बलगाड़ी दूर चली जाय और बला के गल से घटी की आवाज

[ घट की आवाज होती है । ]

तीसरा विद्यार्थी ( धोक्कर ) देखिए यह ध्यायावाङ्मय बोला ।

[ हसी ]

प्रोफेसर बल टाइम इतना अप ।

निर्देशक इस प्रकार कविया और समालोचका न धारण में ध्यायावाद की बिल्ली उड़ाई । लकिन यह अनुचित था । किसी ने ध्याया

वाक् को समझन की चपटा नहीं की । यदि किसी ने साहित्य की गति समझन की चपटा की होती तो वह उनके चरण चिह्न पर चनकर छायावाद के सिंह-द्वार पर पहुँचन में समर्थ हो सकता था ।

यह— साहित्य सरस्वती । (धीरगा की ध्वनि) इनके मधुर-बन्ध से साहित्य की गति विधि आपके सामने स्पष्ट हो जायगी ।

साहित्य सरस्वती मरी कीर्णा व स्वर निरन्तर गतिशील है । इन तारों में मानव जीवन की अपार सवनाएँ ध्वनित हो रही हैं । कितने कवि हैं जो इन तारों के स्वर में स्वर मिला कर गा रहे हैं । भिन्न भिन्न दशकालों में कवियों की वाणियाँ मानव-जीवन की अभिव्यक्तियाँ में पवित्र बनाई हैं । मसाल की भाषाओं में सबसे मधुर ब्रजभाषा विश्व-काव्य की भाषा है । इसमें कल्प वृक्ष के फूलों की सुगंध है । नन्दन वन के मलय की गति है घोर इन्द्र की शक्ति का सम्मोहक रूप है । भाषा के माधुर्य का निखार रीति-काल के कवियों ने बड़ी साधना से किया । इसके अतिम काल में यह है भारत-दुःख हरिश्चन्द्र का काव्य जिसने ब्रजभाषा के माधुर्य में मन के भावों का माधुर्य मिला दिया है ।

( पहले नूपुरों का नृत्य द्रुत गति से होता है, फिर यह मन्द पदों के धीमे नृत्य में परिवर्तित हो जाता है । उस धीमे नृत्य की पृष्ठभूमि में वह पड़ी जाती है । )

ज्ञान पर वास चरि चलि धरि गए पाय  
सुख व वसान परे तान पर नस के ।  
राय राय नननि में हान पर जाल परे  
मन के पाल पर प्रान पर बस के ॥

'हरीचंद्र अग्नि हवाले परे रोगन के,  
सोगन के भाल पर, तन बल ससके ।  
पगल में छाल पर, नाधिव को नाले पर,  
तऊ लाल लाले पर रावरे दरस के ।

सा० सरस्वती युग परिवर्तन हुआ । साहित्य महारथी महावीर प्रसाद त्रिवेणी नक्षत्रभाषा में पूरा आस्था रखत हुए भी खड़ी बोली को काव्य में सम्यक् विधि से प्रवेश दिया । किन्तु खड़ी बोली नक्षत्रभाषा के माध्यम से बहुत दूर थी । वह प्रयोग की वस्तु थी । गद्य की पक्षपता लिए हुए था, फिर भी श्री आर्यभट्टशरण गुप्त ने उस पक्षपता को कम कर उसे माध्यम से सीचना आरम्भ किया । उहीन जयद्रव वध में उत्तराध्वं कश्यप कठ से जो मम-व्यथा की तरलता व्यक्त की है वह खड़ी बोली काव्य के आरम्भिक काल में अनुपम है ।

( कश्यप स्त्री-कठ से )

ह जीवितेश ! उगे उठा यह नील कौमी घोर ह !  
ह क्या तुम्हारे योग्य यह तो भूमि-सेज कठोर ह ।  
रस शोश मर भ्रम में जो जटते ध प्रीति से  
यह लटना प्रति भिन ह उस लेटने को रीति से ।  
कितनी विनय म कर रही हूँ कनरा से रोते हुए  
सुनते नहीं हा किन्तु तुम बमुष्य पड सोत हुए ।  
अप्रिय न मन स भी कभी धन तुम्हारा ह किया

हृदयश ! फिर इस भाँति क्या निज हृत्प्य निर्य कर लिया ॥

सा० सरस्वती खड़ी बोली काव्य का विकास होता गया । श्री आर्यभट्ट शरण गुप्त के साथ श्री अयाध्यासिंह उपाध्याय, श्री गोपाल शरण सिंह श्री रामनरेश त्रिपाठा आदि हिन्दी काव्य में नये नये प्रयोग करत गए किन्तु ये प्रयोग पौराणिक धार्मिक,



एतिहासिक सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में होते रहे। इन प्रयोगों पर अंग्रेजी कविता संस्कृत काव्य साहित्य हिन्दी की पुरानी काव्य धारा तथा बंगला कविता का विशेष प्रभाव पड़ता रहा। इस प्रकार खड़ी बोला इन प्रभावों को परिधि में आकर अधिकाधिक काव्य के उपयोगत बनती गयी। अब इसमें इतिवत्तात्मकता के साथ कल्पना भावना और अभिव्यक्ति जना भी आने लगी। किन्तु खली धोनी काव्य का विकास अभी और आगे होना को था और फलस्वरूप छायावादी-युग का आविर्भाव हुआ। इस युग का आविर्भाव कैसे हुआ यह मैं स्पष्ट कर दूँ।

यह १९१४ का प्रथम युद्ध।

संसार का दो मानव शक्तियों अपनी संपूर्ण तयारी से युद्ध के म्यान में एकत्रित हुई और युद्ध की ज्वाला संसार के एक कोन से दूसरे कोन तक पहुँच गई। सांस्कृतिक विकास स्थगित रह गया और विज्ञान अपने दायें चरणों से मानव-जीवन को रौंटाता आगे बढ़ने लगा। राजनीतिक और सामाजिक जीवन को मरसून मायतायें सैन्य विज्ञान हो गयीं और राजनीति रक्त के सिंहासन पर बैठ गई। जब यह युद्ध समाप्त हुआ तो संसार नए एक नया प्रकाश देखा। दूसरे के बदन पर रक्त होना देश के लिए घातक है। भारत न विदेशियों के घातक में अपनी निवृत्तता का अनुभव किया और राष्ट्र चेतना की एक नई लहर आनामिलित हो उठी।

भारत का संस्कृति अत्यंत प्राचीन है। यह विश्व कल्याण के प्रशस्त पथ पर बनी है। उसने राष्ट्र चेतना में प्रेम और अहिंसा का स्वान किया। अशक्ति सामन आया और उसने मानवतावाद को सामन रखकर प्राचीन सकोण परिपाटियों से

- जीवन को मुक्त करन का सदेश लिया। वह स्वानुभूति की अभिव्यक्ति के लिए जागरूक हुआ और उसने काव्य नाटक उपन्यास और कहानियाँ में यह स्वच्छन्द प्रवृत्ति प्रतिष्ठित कर दी। उसने अपने सामन नय मानदण्ड रखे उसन समाज की नवीन कल्पना की और अपनी भावना की अभिव्यक्ति के लिये उसन नय मूल्य अर्पित किए। दत्तिए। यह नवयुग बोल रहा ह।

**नव युग** मेरा युग सक्रांति युग ह बड अतद्वद् का युग ह। एक और तो प्राचीन सस्कृति और उसमें निहित दर्शन की देश काल निरपेक्ष्य महानता क प्रति आरूपण ह और दूसरी और क्षण क्षण में बदलन वाल युग के नय मूल्या और नयी माय तामा का आग्रह ह। फलस्वरूप साहित्यकारो न प्राचीन साहित्य स चिन्तन ग्रहण किया बलता हुई परिस्थिति से नवीन दृष्टि और अनुभूति तथा अपनी आश या यथाय प्रियता से कल्पना। इस प्रकार मेरा युग काव्य के क्षेत्र में एक मानवतावाङ् स्वच्छन्द परिचयना का युग ह जिससे क्रान्ति का थय मित्रा ह। यह क्रान्ति चिन्तन नवीन दृष्टि की अनुभूति और कल्पना से उत्पन्न हुई ह। चिन्तन, नवीन दृष्टि और कल्पना ने अभिव्यजन-पद्धति ग्रहण की, और इस अभिव्यजन-पद्धति में प्रतीक और चित्रात्मकता की शक्ति आप स आप धा गयी ह। विश्व प्रेम और मानवतावाङ् न मुक्त दारानिकता प्रदान की ह। इस दारानिकता की अभिव्यक्ति में तौकिक और अलौकिक प्रेम क दोना ही क्षेत्र लीन हो गए और इस सास्कृतिक चेतना का समस्त अभिव्यजना को छायावाङ् का नाम लिया गया ह। प्रस्तुत की व्यजना अस्तुत से होने क कारण अथवा मूल का अमूल से उचित करन के कारण

मुझ छाया शब्द दिया गया और मेरा नाम छायावादी पडा। मर नाम का सब प्रथम प्रयाग आ मुकुटपर पाडय न सन १९२२ म किया था।

यह मरा युग ह। चाहे तो मुझे आप छायावाद-युग कह सकत ह। छायावादी स आप केवन काय-शुली हो न समझे इमे आप मानवतावाद की स्वच्छ-दृष्टि कह दें जिससे म व्यक्ति की सब-नामा को नये-मूल्या में मांकना चाहता हूँ। मेरी इस छायावादी चतना में कविता, नाटक उप-यास और कहानी सभी का समावेश ह। यदि आप देखना चाहे तो म सबप्रथम आपको कल्पना क्षेत्र में ले चलूँ जहाँ प० सुमित्रानन्दन पत न छाया को सम्बाधन कर मरा छाया वाद नाम साधक किया ह।

( पुरुष कठ से छाया शीयक प० सुमित्रानन्दन पत की कविता का पाठ )

कौन कौन तुम परिहृत वसना  
 म्यान मना भू पतिता सा  
 वात-ता विच्छिन लता सा  
 रति-श्याता व्रज-वनिता सो  
 निमनि वचिता भा-य रहिता  
 जजरिता प-ल्लिता सो  
 धूनि घूमरित मकर कुतना  
 किसके चरणा की दासी ?  
 वही कौन हो दमयती-गी  
 तुम म के नीच सोई ?  
 हाय ! तुम्हें भा त्याग गया क्या  
 मलि ! नल-मा निष्ठर कोई ?

पाले पत्ता की शया पर  
 तुम विरक्ति सा मूर्छा सी  
 विजन विपिन में कौन पड़ी हो  
 विरह मलिन दुख विधुरा-सी ?  
 गूँ कल्पना सी कविया की  
 अनात्ता के विस्मय सी  
 ऋषियो के गभीर हृदय सी  
 अच्चा के तुतने भय सी  
 आशा के नव इन्द्रजाल सी  
 सजनि, नियति-सी अतर्धान  
 कहे कौन तुम तरु के नाथ  
 भावा सी हो छिपी अज्ञान ?  
 × × ×  
 गाभो गाभो विहग बालिक ।  
 तरुवर से मृदु मगल गान,  
 म छाया में बठ तुम्हार  
 कामन स्वर में कर लूँ स्नान ।  
 हाँ सखि आमा बाँह छाल हम  
 सग कर गने जुडा नें प्राण ।  
 फिर तुम तम में म प्रियतम में  
 हो जावें द्रुत अतर्धान ।

नवयुग य नवीन-रूपनाएँ य नवान भायताए यह नवीन मानवीकरण  
 मेरे युग का प्रथम लक्षण ह । अत आप मेरा स्वच्छन्दवाद  
 श्री सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की 'जूहा की बनी में देखें  
 ( सुदृढ़ पुरुष-जठ से जूही की कत्ती का पाठ )  
 विजन वन ध्वनरी पर

सोती थी सुहाग भरी स्नह स्वप्न मग्न  
 कमल मोमल तनु तरुणी जुही की कलो  
 दृग बन् किय शिथिल पत्रांक में ।  
 वासता निशा थी  
 विरह विधुर प्रिय सग छोड  
 किसी दूर देश में या पवन  
 जिसे कहत ह मलयानिल  
 आई यात्र बिछुडन से मिलन की वह मधुर बात  
 आई यात्र काँता की कपित कमनीय गात  
 आई यात्र चादनी की धुली हुई आधी रात  
 फिर क्या ? पवन  
 उपवन सस्सरित गहन गिरि बानन  
 कुज लता पुजा का पार कर  
 पट्टवा जहाँ उसन की केलि खिली कसी साथ  
 सोती थी जान कहो कसे प्रिय भागमन वह ?  
 नायक न चूम कपोत  
 डोल उठी कलनरो की नडी जसे हिंडोल  
 इस पर भी जागा नहीं चूक घमा माँगी नहीं  
 निगानस बकिम विशान नत्र मूदे रही  
 किवा मतवाली थी यौवन की मन्त्रिा पिय कौन कहे ?  
 नवयुग जुगो की कनी का इतना मनोवचानिक और निस्तकोष  
 चित्रण सभवत किसी साहित्य में न हो । भव चिन्तन और  
 चिन्तन को स्मृति का भाँकी थी जयशंकर प्रसाद के गीत  
 में दक्षिण

व कुछ दिन कितन सुन्दर थ !

जब साधन धन साधन बरसते

इन झाँखा की छाया भर थे  
 व कुछ दिन कितन सुन्दर थे ।  
 सुर धनुरजित नव जलधर से  
 भर क्षितिज यापी अम्बर से  
 मिल चूमत जल सरिता के  
 हरित कूल युग मधुर अघर थे  
 वे कुछ दिन कितन सुन्दर थे ।  
 प्राण पपीहा क स्वर वाली  
 बरस रही थी जब हरियाली  
 रम जलकन मालती मकुन से  
 जो मन्माते गध विधुर थ

व कुछ दिन कितन सुन्दर थे ।  
 नवयुग जीवन की चितनमयी लालसा इससे अधिक और क्या हो  
 सकती है ? अब मर युग की अनुभूति की रसात्मकता श्रीमती  
 महादेवी वर्मा के साध्यगीत में देखिय —  
 ( नारी-कठ से महादेवी वर्मा के 'साध्यगीत का पाठ )  
 जान किस जावन का सुधि ल

लहराती आती मधु बपार ।  
 रजित कर दे यह शिविल चरण  
 ल नव अशाक का अरुण राग  
 मर मदन को आज मधुर ला  
 रजनोगचा का पराग  
 यूया की मोलित बनिया से  
 अलि द मरो कबरी सवार ।  
 पाटल के सुरमित रगा से  
 रंग दे हिम-सा उज्वल दुबून

मयाग से उसा बवन एक कटा हुआ बनकीया हमारे  
 उपर से गुजरा । उसकी डार लटक रही थी । लडका का एक  
 गाल पीछ पीछ दौडा चला आता था । भाई साहब लम्ब ह  
 हा । उछल कर उसकी डार पकड ला और बतगशा होस्टल  
 की तरफ दौड । म पीछ पाछ दौड रहा था ।

**नवयुग** कितनी सरलता स्वाभाविकता और विनाश के साथ प्रमच न  
 दा भाष्या के मनाविज्ञान का मनमाहक चित्र खीचा ह । घातक  
 डालन म जब अमफलना मिलना ह ता दशा किननी दयनीय हो  
 जाती ह । यद्यपि स्नह व आधार पर हमार मन में उसके प्रति  
 श्रद्धा उत्पन्न हाती ह । प्रमचद न समस्त परपराया से मुक्त  
 हाकर वनात्मक रूप से मनाविज्ञानिक यवित व का उभारा  
 ह । कितना स्वच्छ किना लाकरजक दृष्टिकोण ह । नाटकी  
 के क्षेत्र म भी छाया थी अभाव ह । या ता भारताय रगमच  
 विस्मृति का वस्तु हा गया था किन्तु था भारतु हरिश्चद  
 न नाटक रचना कर एस साहित्य का पन अकुरित किया ।  
 पौराणिक और ऐतिहासिक आधार पर नाटक रचना कर  
 उतान जैसे नाटक का ज्ञान व घरातल तक ना दना चाहा ।  
 लेकिन साहित्य की माधना शत किया की था और नाटक प्रयोग  
 शला मात्र । भारतु क प्रदत्ता का कलात्मक धनान का  
 काय था जयशर प्रमाण किया । उतान भा घपना नाटक  
 साहित्य इतिहास व सापान पर प्रनित्त किया किन्तु एति  
 हासिक घटनाया और यवितया म उतान इतनी स्फूर्ति प्रेरणा  
 और कल्पना भरी कि व हमारी श्रद्धा और सम्मान व प्रतीक  
 बन गय । मनाविज्ञानयण और अन्त का कला उनक पात्रा  
 में ह । ऐतिहासिक सूत्र लकर उतान पात्रा की स्वाभाविकता  
 और व्यक्तित्व का पण प्रतिष्ठा की । पात्रों की विरलपण

शली इस युग के फल-स्वरूप ह। आप देखें कि 'स्कन्दगुप्त' नाटक के अंतिम दृश्य में नाटककार 'प्रसाद' न देवसेना का चरित्र कितनी उन्नत दृष्टि से चित्रित किया ह —

हृदय का कोमल कल्पना ! तो जा । जीवन में जिसकी सभावना नहीं, जिसे द्वार पर आए हुए लौटा लिया था उसके लिए पुकार मचाना क्या तर लिए कोई अच्छी बात ह ? आज जीवन के भावो सुख भाशा और आकाचा—सबसे म विना सती ह ।

आह ! बन्ना मिला विनाई ।

**नवयुग** यह मरा सर्वत्र म परिवर ह । काय उपास कहानो मार नाय के मायम से ध्यावाय युग को जो देन हे भाशा ह, उनके सवय में आपके मन में कभी कोई भ्रान्ति न होगी ।

**निर्देशक** ध्यावाय युग का स्वप्नोकरण स्वय नवयुग ने आपके समक्ष किया । हिन्दु सान्त्वित्य के इतिहास में लडो वाला का माधुय और भोज वास्तव में ध्यावाय-युग द्वारा ही विकसित हो सका । इसको साधना करन वाला में अनक कलाकार ह जो अपन मन दृष्टिकाण से जीवन का मूर्त्याकन करने में समथ ह । यह ध्यावाय युग आधुनिक हिन्दी साहित्य का एक महत्वपूर्ण युग समझा जायगा ।







# कविता का युग-पथ

[एक नाटकीय-परिसवाद]

## परिसवाद के सदस्य

श्री सुमित्रानन्दन पन्त

डा० रामकुमार वर्मा

श्री 'वचन'

श्री चात्त्यायन 'अज्ञेय'

श्री शिवमगल सिंह 'सुमन'

[ यह परिसरवाद आकाशवाणी इलाहाबाद केंद्र पर हुआ था। कवियों द्वारा कहे गए सवालों का ध्वनि आलेख कर लिया गया था। आकाशवाणी के सौजन्य से ही यह प्रथम बार प्रकाशित हो रहा है। ]

( आकाशवाणी के कक्ष में श्री सुमित्रानन्दन पन्त बैठे हुए डा० रामकुमार वर्मा का पुस्तक कब्रों का रहस्यवादी पढ़ रहे हैं। उनकी मुत्त मुद्रा गंभीर है। कुछ देर में डा० रामकुमार वर्मा आते हैं। )

पन्त जी आइए डा० रामकुमार आइए। आपकी पुस्तक कब्रों का रहस्यवादी मुझ मिन गई बहुत धयवान्। मेरी प्रति खो गई है।

डा० रामकुमार आप नहीं खो गये पन्त जी! यही बहुत है।

( हास्य )

पन्त जी कौन जान ? अचानक यह तो बतनाइए डाक्टर रामकुमार ! आज की हिन्दी कविता की रहस्यवादी भावना कब्रों की रहस्यवादी भावना से किस प्रकार भिन्न है ? अज्ञात बचन जो ! नमस्ते ! ( बचन जी का प्रवेश ) आइए बठिए हैं तो ? ( बचन जी बठते हैं। )

डा० रामकुमार पन्त जी ! रहस्यवादी के सम्बन्ध में या ही कुछ कह देना बना बठते हैं क्योंकि वह अतजगत् का विषय है। इसको भाषा द्वारा व्यक्त करना कविता के नियम सन्तुष्ट बठते रहते हैं। उमका सम्बन्ध उनकी अनुमति से रहता है।

बचन जी आपका तात्पर्य है शायद मूल्य अनुमति से ?

डा० राम० अनुमति ता मूल्य होना ही है मरा अभिप्राय है सूक्ष्म विषयों...

की अनुभूति से। रहस्यवादी-कवि कबल बाणा के ही वर-पुत्र नहीं रहें व महान साधक भी रहे ह और कबार तो महान् साधक हा नहीं महान सिद्ध भी थ। उनकी साधना चतना के उच्च म उच्चतम सापाना पर चढ़ कर उमके रहस्यपण शिखरों की अनिवचनीय अनुभूति को भीना भीनी बीनी चदरिया क रूप म अभिप्रेत करन म समथ हुई ह।

पन्त जी अनेय जा आ गए ह। (अज्ञेय जी का प्रवेश) आप इधर बठिए अनेय जी (अज्ञेय जी बठते हैं।) रहस्यवादी पर चर्चा चर रही ह।

डा० रामकुमार एक सच्च रहस्यवादी का तरह कवीर की सूक्ष्म अनुभूतियों का सम्बन्ध सदैव हृत्पय-तत्त्व तथा उच्च कोटि की आनन्द भावना से रहा ह।

पन्त जी लेकिन आधुनिक छायावादी कविता की रहस्य भावना के बारे म आप क्या सोचत ह ?

बच्चन जी हाँ रामकुमार जी। इसके सम्बन्ध में बतलाइए।

डा० रामकुमार आपको जान ही ह कि इस युग की विपन्न परिस्थितियों के कारण आज के कवियों को इस प्रकार की अन्तर्मुखी भावना के लिये विशप अवसर नहीं प्राप्त हो सका ह और उनकी रहस्यात्मक अनुभूति भी शायद उतनी ऊँच अथवा गहन नहीं हो सकी ह। वस कवि की प्रतिभा अथवा विशप दृष्टि सभी अवस्थाओं तथा परिस्थितियों में विरग तथा जड़ को भी भेद कर उसक भीतरी सत्य को सत्ता का अंशन कराती रही ह। और आज क काव्य में जो हमके अन्दर उगाहरण मिन सकत हैं।

बच्चन जी अच्छा रामकुमार जी। तो आप अपनी कोई रचना सुनाइए जिसम आधुनिक-काव्य सम्बन्धी आपका दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाए।

अज्ञेय जी निश्चय ही ।

डा० रामकुमार म यह कैसे कहूँ कि मैं उस गहराई तक पहुँच सका हूँ जिस गहराई पर आकर कविता रहस्यवात् क अतगत भा सकती ह । किन्तु साधना की निशा से म अपरिचित नहीं हूँ । और आपको म अपनी एक एसी रचना स्वर से सुनाता हूँ —

( मौन कण्ठा )

म तुम्हारी मौन कण्ठा का सहारा चाहता हूँ ।

जानता हूँ इस जगत् में

फून की ह आधु कितनी

और जीवन की उभरती

साँस में ह वायु कितनी ।

इसलिए आकाश का विस्तार

सारा चाहता हूँ ।

म तुम्हारी मौन कण्ठा का सहारा चाहता हूँ ।

प्रश्न चिह्नों में उठी है

भाष्य सागर की हिलोरें

पाँसुधो से रहित होंगी

क्या नयन की नमित कोरें ?

जो तुम्हें कर दे प्रवित

वह अथु धारा चाहता हूँ ।

म तुम्हारी मौन कण्ठा का सहारा चाहता हूँ ।

जोड़ कर कण-कण शृणु

आकाश न तार सजाए

जो कि उज्ज्वल ह सही

पर क्या किमी क काम आए ?

प्राण ! मैं तो माण्डशक

एक तारा चाहता हूँ ।  
 म तुम्हारी मीन करुणा का सहारा चाहता हूँ ।  
 यह उठा क्या प्रमजन ।  
 जुड़ गयीं जैसे दिशाएँ ।  
 एक तरणी एक नाविक  
 और कितनी आपत्ताएँ ।  
 क्या कहूँ मभधार म ही  
 म विनारा चाहता हूँ ।  
 म तुम्हारी मीन करुणा का सहारा चाहता हूँ ।

पन्त जी बहुत सुन्दर !

बच्चन जी और अज्ञेय जी बहुत सुन्दर वाह !

पन्त जी डा० रामकुमार ! आपन काव्य म रहस्य भावना के सम्बन्ध में जो कुछ कहा उससे मैं यह समझा कि रहस्यवादी के अन्तर्द्वार का अनुभूति से अविच्छिन्न सम्बन्ध है । किन्तु आपकी अनुभूति के ता अनक स्वरूप और अनक स्तर हो सकत ह न ?

डा० रामकुमार इसमें क्या सन्देह है ? बच्चन जी की मधुशाला को ही राजिय बच्चन जा ने अपनी अन्तर्भावना में जैसे उमरखयाम का नवीन रूप से हमारे सामने रच दिया है ।

बच्चन जी उमरखयाम की अन्तर्भावना से प्रारम्भ में अक्षरय बहुत कुछ प्रभावित हुआ है किन्तु मरी प्रेरणा के स्रोत और भी रहे हैं । उमर में एतिका मुक्त की भावना अधिक मिलती है । किन्तु मन भारतीय होन के कारण प्राध्यात्मिक अन्तर्भावना को ही अपना सत्य बनाया है । यद्यपि जावन के सुत्रों को त्यागकर मैं प्राध्यात्मिक अन्तर्भावना नहीं चाहता ।

डा० रामकुमार यह स्वाभाविक भी है।

धृञ्चन जी और मुझे इन दोनों में कोई विरोध भी नहीं लिखाई देता।

जैसे मरी मधुशाला का एक खाई लाजिए

म मंदिरानय क अन्तर हूँ

मेर हाथा में प्याला,

प्याने म मन्दिरालय विवित

करन वाली ह हाता,

इम उधेड-वन म ही मरा

सारा जावन बीत गया—

म मधुशाला क अन्तर या

मर अन्तर मधुशाला।

अक्षेय जी लकिन वचन जा। उमरलयाम को भा मात्र सुखवा  
ही का उपासक नहीं क। जा सकता।

धृञ्चन जी यह ठाक है। किंतु उमर बुद्धि के स्तर से ऊपर नहीं उठ  
सका है और मुझे आध्यात्मिक प्रेरणाया से भी सहायता  
मिला है।

पत जी आज तो आप अपनी कोई नवानतम रचना सुनाकर अपने  
हम ध्यान था और सुखवा के सामग्य को चरिताय  
काजिए।

डा० रामकुमार हाँ वचन जा। मं भी यहाँ कहने जा रहा था।

अक्षेय जी लाजिए मुमन जा घा गय।

( मुमन जी का प्रवेश )

डा० रामकुमार आइए मुमनजी वचन जी की कविता सुनिये। ( मुमन  
जी बठत हैं। )

धृञ्चनजी मैं आपको मिलन-यामिनी का एक गीत सुना रहा हूँ —



स्वप्न में तुम हो तुम्ही हो जागरण में ।

कब उजाल में मुझे कुछ घोर भाया,

कब अवर ने तुम्हें मुझसे छिपाया

तुम निशा में ओ' तुम्ही प्रात किरण म

स्वप्न में तुम हा तुम्ही हो जागरण में ।

जो कही मन तुम्हारी थी वहानी

जो सुनी, उसमें तुम्हीं तो थी बखानी

वात म तुम ओ तुम्ही वातावरण म

स्वप्न म तुम हो तुम्ही हो जागरण म ।

ध्यान ह केवल तुम्हारी ओर जाता

ध्यय म मेर नही कुछ ओर भाता

चित्त म तुम हो तुम्ही हो चित्तवन में,

स्वप्न म तुम हो तुम्ही हो जागरण में ।

रूप बनकर घूरता जो वह तुम्हीं हो

राग बनकर गूजता जो वह तुम्हीं हा

तुम नयन म ओ तुम्ही अत कारण में

स्वप्न में तुम हो तुम्ही हो जागरण में ।

डा० रामकुमार बाह, क्या मार्मिक अभिप्रेयना ह । यक्ति का घोर विराट

का सान्त और अन्त का क्या अन्त सामञ्जस्य तथा सम्बन्ध

खिलाया गया ह !

सब लोग निस्सन्देह !

पत जी आपने अक्सरमात आगमन स आज की गांधी ओर भी परिपक्ष

हो गई सुमन जा । हम अभी अभी आधुनिक हिन्दी-कविता के

सम्बन्ध में अपने विचारों का आन्त प्रगण कर रहे थ ।

सुमन जो इससे अच्छा क्या हो सकता है कि आप सब लोग से एक साथ ही बैठे हो गईं। कहिये वात्स्यायन जी ! अच्छी तरह है ? आपने भी तो हिन्दी-कविता में अनक सुन्दर और नवीन प्रयोग किये हैं। उनके सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण बतलाने का कष्ट करेंगे ?

अज्ञेय जी किस प्रकार का दृष्टिकोण ?

पन्त जी पहिले आप यह बतलाइयें कि आपके इन प्रयोगों के भीतर कौन-सी मूल प्रेरणाएँ काम करती रहीं हैं।

अज्ञेय जी आप का प्रश्न कठिन है।

अज्ञेय जी मूल प्रेरणाएँ ? वही जो सब कविता की होती हैं—अपने अहं की अभिव्यक्ति या सिद्धि। लेकिन अगर आपका प्रश्न प्रयोगों के बारे में है तो मुझे पहली बात यह कहनी है कि प्रयोग प्रत्येक कवि करता है। वाल्मीकि का 'मा निषाद' एक प्रयोग ही था जो अन्तिम काव्य बन गया।

डा० रामकुमार लेकिन आत्माभिव्यक्ति के प्रयोग, और टक्कनिक के प्रयोग में अन्तर है न ?

अज्ञेय जी हाँ भी और नहीं भी। टक्कनिक अपने में इष्ट नहीं है प्रयोग अपने आप में इष्ट हो सकता है। दोनों साधन हैं और क्या कि आज के कवि का व्यक्तित्व या अहं असाधारण जटिल है इसलिए उसकी अभिव्यक्ति के साधनों में नयी गहराई की जरूरत होती है। आज हम जिस तरह जटिल पन्थों के भीतर अणु शक्ति का आविष्कार कर रहे हैं कविता भी है और गीत भी उसी तरह हम शब्दों की अन्तर्हित शक्ति का भी उद्धारित और नियंत्रित करना चाहते हैं। सलवाड के लिये नहीं इसलिये कि हमारा पाग उस शक्ति के लिये काम है। शब्दों की शक्ति में समीप भी एक शक्ति है, तो

वह क्या नहीं उपभाज्य है ? स्वयं पत जी न और निराला जी न उसके सुन्दर और सफल प्रयोग किये हैं। ह कि नहीं ? कुछ कवि उस शक्ति का अधिक महत्व देते हैं कुछ कम। मैं अधिक मूल्य देने वाला मस हूँ। इसके अलावा स्वरा का मनविशेष उपयोग करना चाहिए। जिसके पीछे भारतीयतर कविता का अर्थ का भी प्रभाव है। भारतीय कविता में अष्टाश्रुत म रचना का ही प्रधानता रही है और एमान स डिसान न काता बाई स्थान हा नहीं रहा। यह ता श कौतूहल का वान हूँ।

**सुमन जी** तबिन इस कालू न स क्या का पान है। खतर म नही पड जाना ? यह केवल प्रतीका का ज म दता है और प्रतीक भी निर वादिक।

**अज्ञेय जी** दूसरा वान किंसा है तक ठाक है तबिन प्रतीका के वादिक हान स धान न नाम क्या कम हाना चाहिये ? मे ता मानता हूँ कि आज का कविता पाठक सामाजिक कम वादिक अधिक न और रमनिए वादिक प्रतीक कविता का उसक अधिक निकट जान है। आज के सम्य जीवन की अनुभूति प्रतीक का मार ना कहा जाता है क्योंकि आज का अनुभूतियाँ शब्द अनुभूतियाँ नी है अनुभूति और वितक और रशनलाभशन का एक जटिल सपुजन है।

**डा० रामकुमार** याना सम्यता वरदान नही एक सजा है जा हमें गुणा बना देना है ?

**अज्ञेय जी** धार क्या कह सकते हैं तबिन वह सजा नहीं वह निर वरविन क अधिक निरर हुए सामाजिक रूप का वाकापेक्षा नियन्त्रण है।

**पत जी** अब धार कोई कविता सुनाइए जिसमें इन बातों का स्पष्ट

करण हा ।

अज्ञेय जी नीजिए हरी घास पर सुनाता हू । यह प्रम ही  
की कविता ह लेकिन उसका कथ्य प्रम के अलावा उसका  
नाटकीय एकांकिम भी ह और बहुत से मानसिक घात प्रति  
घात और गुत्थिया भी ह —

आओ बठें

इसी ढाल पर

हरी घास पर ।

माली चौकादाग का यह समय गही ह

और घास ता

अधनातन मानव मन की भावना की तरह

सना त्रिछी ह—हरी योतली

काई आकर रोदे ।

आओ बठो ।

तनिक और सटकर कि हमार बीच स्नह भर का

यवधान रह धम;

न ी दरार सम्य शिष्ट जीवन की ।

चाह बोला ।

चाह धोर धार बोलो,

स्वगत गुनगुनाआ

चाहे खप रह जाओ

हो प्रकृतस्य तना मत कटो छटी उस बाड सरीली,

नमो खल खिलो सहज मिलो

धन्त स्मित धन्त समय

हरी घाम-सी ।

बल भर भुना सके हम  
 नगरी का बचन बुकती गहमहू घुनाट—  
 और न माने उसे

पलायन

बल भर देख सके

भाकारा घरा

दूर्वा, मधाली

पौधे

लता दोलती,

फूल

करे पत्ते

तितली भनगे

फुनगी पर पूछ उठाकर इतनी छोटी सी चिड़िया—

और न सहसा चोर कह उठे मन में

प्रकृतिवाह ह स्वलन

क्योकि युग जनवाणी है ।

( आदि आदि )

सुमन जी अत्यन्त सुखी यजता ह और एकत्र ही नवोन माध्यम ।  
 बरचन जी हममें सदेह नहीं !

डा० रामकुमार आशा पत्र जी । आपकी पूर्ववर्ती रचनामा में और  
 विशपकर 'पल्लव गुजन में जो आपका ध्वनि-सम्बन्धी  
 दृष्टिकाण रत्न ह क्या वह इन्हीं भावनामा से परिचालित रहा  
 ह जिनको व्याख्या अनेक जा न अभी की ह ?  
 पन्त जी बहुत कुछ ! म कविता में व्यजन-सगीत से स्वर-सगीत को

अधिक महत्व देता हूँ जसा कि मन पल्लव की भूमिवा में भी विस्तारपूर्वक कहा है। म शक्ति और अय शक्ति के सामंजस्य को सफल काव्य रचना के लिये अनिवार्य मानता हूँ। प्रारम्भिक रचनाओं से मरा शक्ति के प्रयोगों की ओर अधिक ध्यान रहा है।

२०० रामकुमार हमारे प्राचीन साहित्य में ध्वनि की जो परिभाषा दी गई है क्या आपकी परिभाषा उससे कुछ भिन्न है ?

पन्त जी अभिधा सच्छा यजना की दृष्टि से ध्वनि का अर्थ दूसरा होता है किन्तु जिस म चित्र भाषा कहता है उसमें मैं प्राचीन संस्कृत साहित्य से ही नहीं अप्रेजी साहित्य से भी प्रभावित हुआ हूँ। और स्वर-संगीत की ओर मरा ध्यान अप्रेजी काव्य साहित्य के ज्ञान से ही गया है।

सुमन जी पन्त जी इधर क्या आप ध्वनि-संगीत से दूर होकर विचार प्रधान नहीं बनत जा रहे हैं ?

२०१ रामकुमार एसी शका बहुतीं को है।

पन्त जी आप ऐसा कह सकते हैं। मेरी इधर की रचनाओं में विचार गाम्भीर्य अधिक होगा ऐसा होना स्वाभाविक ही है। किन्तु जसा मैं प्रारम्भ में कह चुका हूँ शक्ति और अय के सामंजस्य को धार मरा प्रयत्न सदैव रहा है। मेरी नवीनतम रचनाएँ भी ध्वनि-संगीत से शून्य नहीं हैं। यह अवश्य है कि उनका अर्थकरण उतना व्यवत न रहे कर प्रच्छन्न हो गया है।

सुमन जी क्या आप अपनी नवीनतम रचना सुनाकर इसकी पुष्टि कर सकते हैं ?

पन्त जी मैं बवल सुना सकता हूँ पुष्टि करना आपका काम है।

सुनिम मैं आपकी उत्तरा की एक कविता सुना रहा हूँ

सा घात्र भगगा ग उर क  
 फिर दब दूरा घात्र भोतर,  
 मुर घनुभा क म्मिन पंग गात्र  
 तब स्वप्न उतरत जन भू पर !

रग रग क धामा जन । मी  
 घाभा पगदिया पदतीं कर  
 फिर मना-नरिया पर तिरतीं  
 द्विध्वित मुर म्मरिया नि स्वर !

यह र भू का निर्माण कान  
 हसता नव जीवन भरुछो-य  
 न रही जम नव मानवता  
 भव खव मनुजता होती क्षय !

धू धू कर जलता जीण जगत  
 लिपटा ज्वाला में जन अतर  
 तम क एबत पर टूट रही  
 विद्युत प्रताप सा ज्याति प्रतर !

सघपण पर क सघपण  
 यह दविव भोतिक भू-कपन  
 उलित जन मन का समु  
 युग रक्त जिह्व करता नतन !

दह रह अघ विश्वाग शृग  
 युग बल रहा यह अह्य अहन ।  
 फिर शिखर चिरतन रह निखर  
 यह विश्व-सचरण रे नूतन !

यज रह घटिया से तरुण  
 छवि-ज्वान पल्लवित जग जीवन  
 नव ज्योति चरण धर रहा सृजन  
 फिर पुष्प वण्टि करत सुर गण !

अब स्वण इवित र अतनभ  
 भरते नीरव शाभा निभर  
 अवतरित हा रनी सूक्ष्म शक्ति  
 फिर मौन गुजरित उर अवर

वधता प्रकाश तम-वाहा में  
 सुर मानव तन करत धारण  
 फिर लाक चतना रग भूमि  
 भू-स्वग कर रह परिरमण !

डा० रामकुमार बहुत मुग्ध ! ( मुमन मे ) आप क्या सोचत ह मुमन  
 जी ! हिन्दी का मुक्त-काव्य ध्वनि-संगीत की रक्षा करन में  
 सफल हुआ ह ?

यच्छन जी हाँ इन पर अवश्य प्रकाश डालिए मुमन जी ! आपन छन्द  
 और छन्द मुक्त दाना तरु की सगल कविता की ह ।

मुमन जी मरा दष्टि में ध्वनि की उपयोगिता कबल भावना की अभि  
 पक्ति के निय ह । छन्द काव्य न केवन जावन के  
 मुग्ध और सातमय चला तथा भावनाया की ही वाणी  
 दी ह वह जीवन की विपमनाया तथा युग के मध्य के त्रि  
 और धाग का क्रांति और विनाय का भावनाया के निय  
 सगल तथा सगल माध्यम नहीं बन सबा ह । वह भाव  
 नाया के उभय का भी पूण स्वाभाविकता के साथ अभिप्रेरणा



करने में असफल रहा ह ।

पन्त जी और मुक्त काय ?

सुमन जी अगर तब या रिदम की दृष्टि से देखें तो मुक्त छन्द की भी अपनी एक लय है जो यग जीवन के प्रवाह का वहन करने में सफल हो सके है । उसके छोटे-बड़े चरण युग-जीवन का तथा विशृ खलता को अधिक अभिव्यक्त कर सके है । बड़े युग मन के आ-गैवन तथा असगति को सगति तथा प्रगति की और न जान म पूछत सफन हुई है ।

अज्ञेय जी यह यग की प्राणमय और शक्तिमय पुकार है ।

सुमन जी उसका नाटकाय आज तथा बबिन्ध जनता के स्वाभिमान को ही बाण न । दे सका है वह आज की बिखरी हुई वास्तविकता तथा विविधता में एकता तथा सगठन भी स्थापित करने में समर्थ हुआ है ।

डा० रामकुमार मुक्त छन्द के सम्बन्ध में आज आपन अनक बात अच्छी कही । अब आप मुक्त छन्द की अपनी एक कविता सुना कर आपन विचारा को मूर्तिमान भी बना दीजिए ।

अज्ञेय जी मरा भा यगे अनरोध है ।

सुमन जी अच्छी बात है । मैं आपका मुक्त छन्द से अपनी शरद-सी तुम कर रही होगी क्यो शृंगार शायद रचना सुना रहा है क्योकि मुक्त छन्द भी एक प्रकार से कविता का युग-यय ही है ।

किसी सी मरा व्यथा बिखरी चतुर्दिक

वाँ सा उमठा हृदयगत प्यार

मध भाग के अमाभम भर रहे जो—

शरद-सी तुम कर रही होगी कहीं शृंगार ।

लुट रहा ह

धुट रहा ह

रुद्ध क्षुब्ध प्रवाह

जीवन मुक्त अन्तर्दहि

मुलगता आकाश धरती पुलक माना

आज हरियाली गई पथ भूल ।

हृत् उमगा का भला कोई ठिकाना

खो गई सरि खो गये दो कूल ।

तप्त अन्तर म घुमडती तरलता त्रिय माण

गल गये पापाण

वप भर की वदना सिमटो

कि लहराया अतल उ-मुक्त पारावार ।

नील नभ स स्निग्ध निमल केश

गूये जा रहे हागे सवार सवार

पिम रही मेंहवा महावर रच रहा

तारिकावलि चन्द्रिका की हो रही होगी सहेज-समार ।

म प्रतीक्षा रत

घो रहा पथ

हसमान मुक्त व-नवार

शस्य-चामर चारु शनय-शफालिका का हार !

पत जी धयवान् ।





1

2

3

4

5

6